डाकोरकी (रणहरपुस्तकालयका) सूचीपत्र.

नाम.	कि. आ.
श्रीरामचरित्रमानस-मोटे अक्षरोंमें छापी है (नवाह्नि-कपाठविधिसमेत) ...	२-८
श्रीरामचरित्रमानस-छोटा गुटका लवकुशकांडसमेत	०-१०
...लसीकृतरामायण-सटीक ...० ज्वालाप्रसादजी कृत ...पाटीका वडा अक्षर ...जीवनीटीकासमेत। ग्लेज	८-०
...तथा उपरोक्तालंकारों ...त रफ कागज ...	७-०
...सीकृतरामायण-सटीक ...मध्यम अक्षरोंमें ग्लेज....	४-८
...था रफ कागज	४-०
...कृतरामायण-सटीक ...गुटका	२-४
...कृतरामायण- ...सह मझोले टाईपका ... कागज	२-०
...तथा रफ कागज	१-८
...सीकृतरामायण-बारीक ...टका ग्लेजकागद	१-०
... तथा रफ कागज ...	०-१४

नाम.	कि.
तुलसीदासकृतविनयपत्रिका-सटीक (जिसमें रामचंद्रजीके विनयके पद हैं) ...	
ब्रजविलास-मध्यम अक्षर ग्लेज	
" तथा रफ कागज	
वालमीकीरामायण संस्कृतमूल पंडितज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत अत्युत्तम पीयूषधारा भाषाटीका	
वालमीकीरामायणका सुंदरकांड	
अध्यात्मरामायण भाषाटीका	
अध्यात्मरामायण मूल गु०१०	
अद्भुतरामायण भाषाटीका....	
प्रवीनसागर-सटीक वडा अक्षरका यह अलंकार भाषा ग्रंथ सर्वोपरी है-इसके रचयिता राजकोटके ठाकोर साहेब मेरामणसिंहजीहैं-इस ग्रंथमें सर्व तरहके अलंकार हैं ज्यादा व्याख्यान की जरूरत नहीहै कविलोग और राजा महाराजा सब जानतेहैं अब ग्रंथ बहुत कम रहेहैं दुसरी दफे ऐसा ग्रंथ छपना असंभवहै	१२-

सर्व प्रकारके पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

वैष्णव. रामदासजी गुरु श्रीगोकुलदासजी.

(रणहरपुस्तकालय डाकोर.)

भजनरत्नावलीकी अनुक्रमणिका

॥ रविवारके मंगल ॥ १२ ॥

॥ सोमवारके मंगल ॥ १४ ॥

॥ मंगलवारके मंगल ॥ १३ ॥

॥ बुधवारके मंगल ॥ १५ ॥

॥जेवनकीगारी (राजभोग)१३॥

॥ आचवन ॥ ६ ॥

॥ पानकी बीरी ॥ ७ ॥

॥ पंचतकी धुन ॥ ७ ॥

॥ चारोधामकी बडीजे ॥

॥ ६६२ ॥ बोल है ॥

॥ सातोवारकी गौरी ॥

॥ गुरुवारकी गौरी ॥ १६ ॥

॥ शुक्रवारकी गौरी ॥ २१ ॥

॥ शनिवारकी गौरी ॥ १८ ॥

॥ रविवारकी गौरी ॥ १५ ॥

॥ सोमवारकी गौरी ॥ १९ ॥

॥ मंगलवारकी गौरी ॥ १३ ॥

॥ बुधवारकी गौरी ॥ २७ ॥

॥ शनिवारकी धुन ॥ १२ ॥

॥ रविवारकी धुन ॥ १२ ॥

॥ सोमवारकी धुन ॥ १२ ॥

॥ मंगलवारकी धुन ॥ ११ ॥

॥ बुधवारकी धुन ॥ १७ ॥

॥सयन समैका व्यारू ॥ १२ ॥

॥ दूध पिवन ॥ ४ ॥

॥ शयनकी आरती ॥ १ ॥

॥ शयन पौढणी ॥ २२ ॥

॥ हरि नारायण ॥ १ ॥

॥ स्तुति ॥ १२ ॥

॥ हिंडोरा (झुलन) ॥ ४६ ॥

शृंगार तथा शरद विहारके पद.

॥ दोहा लावणी शरदबिहारके ॥

॥ गजल ॥ २ ॥

॥ जगन्नाथजीके भजन ॥ १ ॥

॥बावन द्वाराकी नामावलि॥ १॥

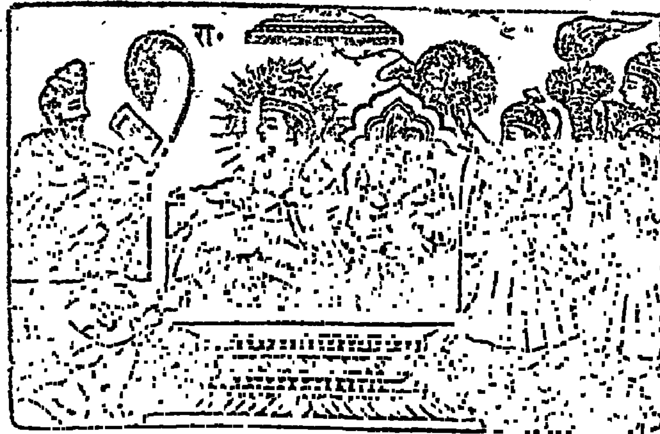
॥ इति अनुक्रमणिका ॥

दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ टेक—बिन काज आज महराज लाज गई मेरी ॥ दुःशासन वंशकुठार महादुखदाई । कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई ॥ अब भयो धर्मको नाश पाप रह्यो छाई लखि अधम सभाकी ओर नारि बिलखाई ॥ शकुनी दुरयोधन करण खडे खल घेरी ॥ दुखहरो० ॥ तुम दीननको सुधि लेत देवकी नंदन । महिमा अनन्त भगवन्त भक्तदुख भंजन ॥ तुम कियो सिया दुख दूर शम्भु धनु खण्डन । अति आरत हरण गुपाल मुनिन मन रञ्जन ॥ करुणा निधान भगवान करी क्या देरी ॥ दुखहरो० ॥ तुम सुनि गयन्दकी टेर विश्व अघनाशी । हनि ग्राह छुटाई बंदि काटिपग फांसी ॥ मैं धरों तुम्हारो ध्यान द्वारकावासी । अब काहे राज समाज करावत हाँसी ॥ अब कृपा करो यदुनाथ जानि चित चेरी ॥ दुखहरो० ॥ तुम पति प्रह्लाद दीन दुखटारो । भये प्रगट खम्भ नरसिंह असुर संहारो ॥ ब्रज खेलत केशी आदि बकासुर फारो । मथुरा मुष्टिक चाणूर कंसको मारो ॥ तुम मात पिताकी जाय कटाई बेरी ॥ दुखहरो० ॥ लियो भक्तनहित अवतार कन्हाई तुमने । नलकूबरकी जड्योनि छुटाई तुमने ॥ जल वर्षत महिमा अगम दिखाई तुमने । नखपर गिरिधारि ब्रजलियो बचाई तुमने ॥ प्रभु अब विलम्ब क्यों करी हमारी बेरी ॥ दुखहरो० ॥ बैठे सब राज समाज नीति जिन खोई । नहिं कहत धर्मको बात सभामें कोई ॥ पांचोपति बैठे मौन कौन गति होई । ले नन्द नँदनको नाम द्रौपदी रोई । कारि कारि विलाप संताप सभामें टेरी ॥ दुखहरो० ॥ सुनि दीनबंधु भगवान भक्तहितकारी । हरि भये चीरमें प्रगट हर दुखभारी ॥ खैंचत हारो मतिमन्द वीर बलकारी । रखि लई दीनकी लाज आप बनवारी ॥ हर्षत सुर वर्षत सुमन बजावत भेरी ॥ दुखहरो० ॥ क्या करी द्वारकानाथ मनोहर माया । अम्बरका लगा पहार अन्त नहिं पाया ॥ तिहुँलोक चतुर्दश भुवन चीर दरशाया । बंदित गणेश परसाद कृष्ण गुण गाया ॥ दीननके दीनानाथ विपति निरवेरी ॥ दुखहरो० ॥

Printed and Published by Khemraj Shrikrishnadas Proprietor Shri Venkateshwar Steam Press, Khetwadi 7th lane, Khambata Lane Bombay.

॥ श्रीः ॥

भजनरत्नावलीप्रारम्भ ।



॥ श्रीमतेरामानंदायनमः ॥ अथप्रभातीलिख्यते ॥
राग-जंगला ॥ आजसखीसपनेमैंदेखे रामलखनासि
याजनकललली ॥टेक॥ बैठोउठाडेसिंघपोरिपे मैंअपने
गृहसोनिकसी ॥ रूपदेखिव्याकुलभईसजनी मानो
कालभुजंगडसी ॥ १ ॥ कहाछबिबरणौ श्रीरामचंद्रकी
अमृतबूंदघटाउमगी ॥ मानौलक्ष्मण धनुषचढाये
ज्योंबादलबिजुलीचमकी ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकरा
कृतकुंडल चंदनखौर ललाट लसी ॥ लालकमानबान
करसोहैं पीतांबर सों कमरकसी ॥ ३ ॥ ब्रह्माजाकोपा
रनपावैं ध्यानधरेवाकोजतीसती ॥ तुलसीदासगंधर्व
गुणगावैंजन्मजन्मकी बिपति नसी ॥ ४ ॥ १ ॥

राग-भैरव ॥ श्रीजागियेरघुनाथकुँवर पंछीवनबोलैं ॥ ॥ टेक ॥ ससिकिरणशीतलभई चकईपीयमिलनगई ॥ त्रिविधमंदचलतपवन पल्लवद्रुमडोलैं ॥ १ ॥ प्रातभानुप्र गटभयो रजनीकोतिमिरगयो ॥ भृंगकरतगुंजगान क मलनदलखोलैं ॥ २ ॥ मुखको पटदूरिकरो मंदविहँसि मोदभरो ॥ छगनमगनप्यारेरामअँगनमेंकलोलैं ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिकधरतध्यान सुरनरमुनिकरतगान ॥ जागन कीबेरभईनयनपलकखोलैं ॥ ४ ॥ तुलसिदासअति अनंदनिरखिकैमुखारबिंद ॥ दीननकोदेतदान भूषण अनमोलैं ॥ ५ ॥ २ ॥

श्रीजागियेब्रजराजकुंवरनंदकेदुलारे ॥ टेक ॥ मथुरामेंजन्मलियोगोकुलासिधारे ॥ जोइजोइ हम पति तसुने सोइसोइ तुम तारे ॥ १ ॥ यमुनामें गेंदपरी ग्वालबालहारे ॥ कालिनागनाथिलाये कृष्णभयेकारे ॥ २ ॥ ग्राहतेगजराखिलिये देवताउबारे ॥ धन्य धन्य तुलसीकेस्वामी ध्रुवप्रहलादतारे ॥ ३ ॥ ३ ॥

राग-भैरव ॥ भोरभयेपंछीबनबोलेजागीजनककिशोरी ॥ टेक ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता देखपरस्परजोरी ॥ चोवाचंदनऔर अरगजा मुखमलभेकीरोरी ॥ १ ॥ बंदी जनगंधर्वगुनगावैं करिमृदंगटंकोरी ॥ पाटपितांबर खासामलमल रतनजडावकीचोली ॥ २ ॥ रुनकझुनक महलनबिचबिहरैंनूपुरशब्दकरोरी ॥ शब्दसुनतमुनि जनमनमोहैं अस्तुतिनिगमकरोरी ॥ ३ ॥ बंदीमालनि

शालबिराजैरविशशिद्युतिनिंदोरी ॥ घूंघुरवारेवारसु
सोहैं मधुकरभूलिरहोरी ॥ ४ ॥ कोउसखिअलंकार
संवारैंकोउदरपनलियेदोरी ॥ तुलसीदासछबिदेखि
मगनभये कहाबरणौंमतिथोरी ॥ ५ ॥ ४ ॥

भोरभयोसबहिलिमिलिनागरिकौशल्यापैआई ॥ टेक ॥
हमरोप्रीतमतुमरोढोटा बेगिजगावोमाई ॥ १ ॥ चक
ईमिलनचहैचकवासों हमहुँचहतरघुराई ॥ भानुउद
यबिनकमलनफूलै भँवररहैमुरझाई ॥ २ ॥ कनकभ
वनमैंरतनसिंहासनजहांसोवतचारोमाई ॥ रघुवरल
छिमनभरतशत्रुहन सोभाबरणिनजाई ॥ ३ ॥ इतनो
वचनसुन्योनागरिकोहरखिउठेरघुराई ॥ उठिपीतां
वरटाऱ्योमुखसों मधुरमधुरमुसकाई ॥ ४ ॥ ब्रह्मादि
कजाकोपारनपावैं निगमनेतियशगाई ॥ कान्हरला
हुकहांलगिबरणौं शेषसहसमुखगाई ॥ ५ ॥ ५ ॥

ठुमकिचलतरामचन्द्र वाजतपँयजनियां ॥टेक॥ कि
लकतउठिचलतधाय परतभूमिलटपटाय ॥ धायमा
तुगोदलेत दशरथकीरनियां ॥ १ ॥ अंचलरजअंग
झारि विविधभांतिकरिदुलारि ॥ तनमनधनवारिडा
रिबोलतमृदुवचनियां ॥ २ ॥ मोदकमेवारसाल मन
मानेसोलेहुलाल ॥ औरलेहुरुचिरपान कंचनरुनझु
नियां ॥ ३ ॥ विद्रुमसेललितअधर बोलतसुखबचनम
धुर ॥ नासाअरुअधरबीच लटकतलटकनियां ॥ ४ ॥

रेख कंबुकंठदेश सुखमानिधिकुटिलकेश ॥ कमलव
दन मंदसेहसनियां ॥ ५ ॥ हगविशाल भृकुटिभंग
कच्छनिकसेकटिनिषंग ॥ रेखात्रयउदरबीच सिंहसी
ठवनियां ॥ ६ ॥ अद्भुतछविअति अपारकोककविजो
बरणैपार ॥ कहिनसकतशेषजाके सहस्रहुरसनियां
॥ ७ ॥ तुलसीदासअतिअनंद निरखिकैमुखारवि
द ॥ रघुवरकीछविसमानरघुवरछविबनियां ॥ ८ ॥ ६ ॥
सीतापतिरामचंद्र रघुपतिरघुराई ॥ टेक ॥ रसनार
सनामलेत संतनकोदरसदेत विहसतमुखमंदमंद सुं
दरसुखदाई ॥ १ ॥ ऐनवैनहगविसाल दसनबीचचिम
तकार भृकुटिबीचअनलपक्ष नासिकासोहाई ॥ २ ॥
केसरकोतिलकभाल मानोरविप्रातकाल श्रवनकुंड
लझलमलात रतिपतिछविछाई ॥ ३ ॥ मोतिनकीकंठ
माल तारागणउरविशाल मानोगिरिशिखरफोरि सु
रसरिचलिआई ॥ ४ ॥ सुरनरमुनि सकलदेव शिववि
रंचि करतसेव कीरतिब्रह्मांडखंड तीनलोकछाई
॥ ५ ॥ संगसखासरयुतीर विहरतरघुवंशवीर हर
खिनिरखितुलसीदास चरणनरजपाई ॥ ६ ॥ ७ ॥

जागीश्रीजनककुंवारि अयोध्यापटरानी॥ टेक ॥ ज
न्मजन्मरमारूप अगमनिगमजानी ॥ सनकादिकध
रतध्यान परमहंसज्ञानी ॥ १ ॥ कोटिलखीकँवरकौर
प्रेमरससानी ॥ निकटसरयुगंगबहै मुक्तिभरैपानी ॥ २ ॥

तीनलोक प्रणतपाल सरणहैं तुम्हारी ॥ संतनको दरसदेत असुरनभयकारी ॥ ३ ॥ सुरनरमुनि धरत ध्यान योगेस्वरज्ञानी ॥ दासतुलसी सरण आये भावप्रीतिजानी ॥ ४ ॥ ८ ॥

जगमगाय उठेमहल जागीमातुजानकी ॥ टेक ॥ जानकीकेमहलउपर किरणउगैंभानुकी ॥ १ ॥ सर्व देवकरतसेव चौकीहनुमानकी ॥ कोटिसखी चँवर ढोरैं सेजसीतारामकी ॥ २ ॥ आसपासचंचरीक लियेपीकदानकी ॥ मानोचमेलिफूलिरही सुनोरसभानुकी ॥ ३ ॥ अवधपुरकी सरसनारी अपने अपने मनानकी ॥ सीयाजीको रूपनिहारैं कोटिशोभाभानुकी ॥ ४ ॥ चित्रकोट सुखविलास सोभाबनीरामकी ॥ प्रातकालकीबिनति तुलसीदासगुलामकी ॥ ५ ॥९॥

रुनुकझुनुक चलतिचाल जनकनंदनी ॥ टेक ॥ दामिनिद्युति चपलगात चरणधरत डगमगात मधुरबचनतोतरी त्रयतापभंजनी ॥ १ ॥ सोभितसुभ नीलवसन मंदहासरुचिरदसन झलकतउर मालजाल जगतदेवबंदिनी ॥ २ ॥ नूपुरपगबजतजात मानोसाम वेद करतगान क्षुद्रघंटिरुचिरनाद उरअनंदिनी ॥ ३ ॥ मंगलसबकरतगान सारदशशि संगफिरतदेखोअति राजति मिथिलेशनंदिनी ॥ ४ ॥ जगतमातु सखिनसंग बिहरत्तिबहुकरतिरंग बालानंद छबिनिरखि निरखि भव निकंदिनी ॥ ५ ॥ १० ॥

भोरभयो भूपतिकेद्वारे नौबत बाजनलागी ॥ टेक ॥
भयोकुलाहल कनकभवनमें जनककनंदिनीजागी ॥ १ ॥
द्रुमनद्रुमन पक्षीबनबोलैंतिमिरनिशाचरभागी ॥ अरु
णभयो रविकिरणप्रकासित कोकशोकभयत्यागी ॥ २ ॥
अरुणशिखाधुनि करतपरस्पर प्रेमप्रीतिरसपागी ॥ स
रयूतीर चलेमज्जनको गुरुप्रभुवैरागी ॥ ३ ॥ दासी
दास चलेदरसनको चरणकमलअनुरागी ॥ प्रथमहि
जायकमलमुखनिरखै सोईकान्हरबडभागी ॥ ४ ॥ ११ ॥

जगमगात कनकमहलमें जागीमातुजानकी॥ कौश
ल्याकेपाँयलागु जीवोजनकरायकी ॥ टेक ॥ आसपा
ससबसखिखडीं धुनन्पूरकी ॥ चंपेकीकलीमानौं फू
लीअसमानकी ॥ १ ॥ सकलदेवकरतसेव चौकीहनु
मानकी ॥ लक्ष्मणकुंवर चँवरढोरैं सेजसीतारामकी
॥ २ ॥ प्रातप्रीतम अपनेमहल रामलक्ष्मणजानकी ॥
साधुसंतकरतसेव औरबातज्ञानकी ॥ ३ ॥ अयो
ध्याकीसरसनारी अपनेअपनेधामकी ॥ सीयाजी
कोरूपमानो उगीकिरणभानुकी ॥ ४ ॥ चित्रकोट
सुखविलास अधिकमहिमारामकी ॥ उठतप्रातवि
नतिकरत तुलसीदाससीयारामकी ॥ ५ ॥ १२ ॥
श्रीरामानुज अवतारमनोहर सुन्दरसुभगशरीरं ॥टेक॥
अखिललोककेशोकविनाशन भयेकरुणाकरगंभीरं॥ १ ॥

खलखंडित रणमंडितपंडित कररुचिदंडत्रिदंडं ॥
तिलकश्रीचूरणशशिमुखझलकै कुंडलमंडितगंडं ॥ २ ॥
अरुणभँवरधरेचरणभुजायुत सरससुवर्णउदारं ॥
शांतिदांतिवेदांतक्रांतिमाहिमाअगमअपारं ॥ ३ ॥ तिमि
रप्रचंड वितंडविखंडन मंडनद्रविडविकासं ॥ आदि
सुब्रह्मसहोदरभूधरमुक्तिप्रतिपालविनीतं ॥ ४ ॥ सेवकरा
मनिष्कामस्वास्तिकृत भक्तिविभूषितगीतं ॥ ५ ॥ १३ ॥

जागोहो तुम नंदकुमार ॥ टेक ॥ बलिबलिजाऊं
मुखारबिंदकी गोसुतमिले औरकंसभूआर ॥ १ ॥
आजकहाँसोवत त्रिभुवनपति औरवारतुम उठतस
वार ॥ २ ॥ वारंवार जगावतिमाता कमलनयनभ
यो त्रिभुवनउज्यार ॥ ३ ॥दधिमथिहौं माखनतुमें
दैहौं संगसखाठाढेसबद्वार ॥ ४ ॥ उठिकेमोहनब
दनदेखावहु सूरदासकेप्राणआधार ॥ ५ ॥ १४ ॥

मोहनजागहो बलिगई ॥ टेक ॥ ग्वालबालसबद्वारे
ठाढे बेरवनकीभई ॥ १ ॥ पीतपटकरिदूरमुखते
छोडदेअलसई ॥ २ ॥ अतिअनंदितहोतयसुमति
देखिद्युतिनितनई ॥ ३ ॥ जागेजंगमजीवपशुखग और
ब्रजसबमई ॥ ४ ॥ सूरकेप्रभुदरसनदीजे अरुणकि
रणछई ॥ ५ ॥ १५ ॥

अथझांझकेसंगगानेकीप्रभाती ॥ प्रातसमैरघुबीरज
गावै कौसल्यामहतारी ॥ टेक ॥ उठोलालजी भोर

भयोहै सुरनरमुनिहितकारी ॥ १ ॥ इंद्रादिकब्रह्मादिदेव
ता सनकादिकऋषिचारी ॥ बाणीबेदबिमलयसगावैंर
घुकुलजसविस्तारी ॥ २ ॥ बंदीजनगंधर्वगुनगावैंनाचत
दैदैतारी ॥ सेनसहितशिवद्वारेठाढे होतकुलाहलभा
री ॥ ३ ॥ जागे भरत लखन रिपुसूदन जागीजनकदु
लारी ॥ अवधपुरीनरनारीजागेसरयूपंथनिहारी ॥ ४ ॥
भरतशत्रुहनचँवरछत्रलियेजनकसुतालियेझारी ॥ मे
वापानलियेकरलक्ष्मण भरिकंचनकीथारी ॥ ५ ॥ सुनि
प्रियवचनउठेरघुनंदन नयननपलकउघारी ॥ चितव
निसोंकियेअभयचराचर मुदितभयेनरनारी ॥ ६ ॥ करि
असनानदानन्हपदीन्हों गो गज कंचनझारी ॥ रतनसिं
हासनमध्यबिराजैं सुंदरअवधबिहारी ॥ ८ ॥ क्रीटमुकु
टकरधनुषबिराजैं कुंडलकीछबिन्यारी ॥ जयजय
कारकरतजनमाधोतनमनधनबलिहारी ॥ ८ ॥ १६ ॥

प्रातसमयउठि जनकनंदनी त्रिभुवननाथ जगावैं
॥ टेक ॥ उठोनाथममनाथप्राणपतिभूपतिभवनबुला
वैं ॥ १ ॥ हस्तकमलसोंचरणपलोटैं लैलैहृदयलगावैं ॥
जोपदपरसिनारिगौतमकी अभयपरमपदपावैं ॥ २ ॥
उरझीमाल गलेमोतियनकीकरअँगुरीसुरझावैं ॥ घूँघर
वारीअलकवदनपरपागकीपेंचबनावैं ॥ ३ ॥ कनककल
ससरयूजलझारीदांतुनदानकरावैं ॥ कमलनयनमुख
निरखिरामकोआनंदउरनसमावैं ॥४॥संतजननकीयही

विनती, आरतबचनसुनावैं ॥ कान्हरदास सिया रघुवरको, हरखिनिरखिगुणगावैं ॥ ५ ॥ १७ ॥

प्रात समय कौसल्यारानी, अपनो पुत्रजगावैं॥टेक॥ नीलअंगपर पीतझिंगुलिया, हरखिनिरखिपहिरावैं ॥ सुंदरस्याम कमलदललोचन, निरखिपरमसुखपावैं ॥ १ ॥ नेतिनेतिकहिवेदबखाने, ब्रह्माध्यानलगावैं ॥ सो इककरुणामय रामदयानिधि, दशरथपुत्रकहावैं ॥ २ ॥ कबहूंपलना घालिझुलावैं, कबहूंगोदखेलावैं ॥ कबहूँ पाँयनचलनसिखावैं, मातुसबैसुखपावैं ॥ ३ ॥ धन्य धन्यरानीकौशिल्या, दशरथधन्यकहावैं ॥ धन्यअयोध्यानगरनिवासी, तुलसी दरसनपावैं ॥ ४ ॥ १८ ॥

भयो प्रभात कहतकौशल्या,जागोरामपियारे॥टेक॥ उगे भानु कमलदल खोले, मधुकरकरतगुँजारे ॥ चरणकमल सुखनिरखिरामके, हरखतनयनहमारे ॥ ॥ १ ॥ जननीबचनसुनतउठिबैठे,नयननपलकउघारे ॥ गावैंगुणगंधर्वमुनीजन, द्विजवर निगमउचारे ॥ २ ॥ शिवसनकादि भेषधरि आवैं, दरसन हेतुतुम्हारे ॥ अनुजसखासबद्वारेठाडे, सोहतन्यारैन्यारे ॥ ३ ॥ करि अस्नानदानन्रपदीन्हो, भूषणवसनसँभारे ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी, लैसंतनउरधारे ॥ ४ ॥ १९ ॥

रामकृष्णदोउनाममनोहर, प्रातहिउठिकरध्यानधरो ॥ टेक ॥ गुरुनामकोखड्गबनाई, रामनामकोधनुषक

रो ॥ कृष्णनामकोबानचढाई, मारिपापसबदूरकरो ॥१॥ रामचन्द्रदशकंधरभंज्यो, असुरमारिमुनिशोकहरो ॥ यहांब्रजबासिनबहुसुखदीन्हो, कृष्णकंसविध्वंसकरो ॥ २ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नामहिसबपरमानकऱ्यो ॥ ध्रुवप्रहलादमहातपकरिकै, नामपकरिभवसिन्धुतऱ्यो ॥ ३ ॥ वेदपुरानबखानतमहिमा, शेषआदिनहिपारपऱ्यो ॥ गोकुलदासकहांलगिबरणौ, नामसुमिरिसंसारतऱ्यो ॥ ४ ॥ २० ॥ इ० रामकृष्णयुगलप्र०

प्रातसमयसरयूतटदेखो, विहरतराजदुलारे ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, प्रातहिसुरंगसंवारे ॥ झटपटझटपटचढेबाजिपर, संगसखाललकारे ॥ पीताम्बरकीकछनीकाछे, कीटमुकुटशिरधारे ॥ भालतिलकवैजंतीमाला, धनुषबाणकरधारे ॥ संगसखासबपरमभक्तहैं, प्रभुगतिलखिनहिपारे ॥ सन्मुखपवनकुमारबिराजे, परमरामकेप्यारे ॥ गोदनामेंगौतमकेआश्रम, रहहिसुनिनसुखकारे ॥ रामकृपानिधिपरमदरसदिये, पूरणभाग्यहमारे ॥ गोकुलदासछबिनिरखिरामकी, तनकीसुरतिबिसारे ॥ जय जय करतसुमनसुरबरसै, शंभुभयेमतवारे ॥ इति श्रीरामप्रभाती ॥ २१ ॥

प्रातहोतयमुनातटदेखो, बिहरतनन्ददुलारे ॥ टेक ॥ देवकिसुतमयेकृष्णचन्द्रजी, रोहिणीसुतबलभारे ॥ नन्दयशोदाहिबहुसुखदीन्हो, पुतनाप्राणसंहारे ॥ १ ॥

पीताम्बरकीकछनीकाछे,मोरमुकुटशिरधारे ॥ भाल
तिलकतुलसीकीमाला, मूरतिमदननिहारे ॥ २ ॥
इन्दरकोपिचढेब्रजऊपर, मेघसकललल्कारे ॥ पैठि
पतालकालीनागनाथै, नखपरगिरिवरधारे ॥ ३ ॥ कं
सआदिसबथरथरकांपे, कालरूपप्रभुधारे ॥ ग्वालबा
लसबमुखछबिनिरखे, निकटहिहलधरठारे ॥ ४॥ सु
रनरमुनिब्रह्मादिदेवता, स्तुतिविमलउचारे ॥ गोकुल
दासछबिदेखिमगनभये, तनकीसुरतिबिसारे ॥ ५ ॥२२॥
कवनहरैप्रबलपापगंगाबिनुमेरे ॥ टेक ॥ गंगाको
ध्यानकरतसुमिरिसुमिरिपाँवधरत, मंजनसोपापहर
त, कालफाँसतोरे ॥ १ ॥ सुरनरमुनिसकलदेव, गंगाकी
चरणसेव, पावतनहिशेषभेव, शंभुशिरधारे ॥ २ ॥ ह
रिद्वारप्रयागराज वाराणसिमुक्तिसाज, प्रवेसिआप
सिन्धुराज,सगरवंशतारे ॥ ३ ॥ऋषिनमुनिनसंतभीर
बैठेबहुतीरतीर, हरतिसबत्रिविधिपीरतनकपलफेरे
॥ ४ ॥ तारिदेतितीनलोक, हरणकरतिसंतशोक, गोकु-
लदासपदविलोकी, कवननचहतचेरे ॥ ५ ॥ २३ ॥
क्यौंसोवैगफलतकेमारे,जागजागनरजागरे ॥ टेक ॥
हरीभजेसोइहंसकहावे, कामीक्रोधीकागरे ॥ मान
सचोलाबड़ाअमोला, लगादागपरदागरे ॥ तनसरा
यबिचबसतमुसाफिर, करताहैंउन्मादरे ॥ समुझाये
समुझतनहिसज्जन,बिनाज्ञानवैरागरे ॥ मोहनिशामें

सकलसुलाना, नाहिकछुलगाहाथरे ॥ निशाशिरानी उठगयाडेरा, चलासबेराठाठरे ॥ सुतबनितादिदेखि जनिभूलैसपनेकैसासाथरे ॥ गोकुलदासकहैगुरु ज्ञानी,लगीगलेसैंफाँसरे ॥ इतिवैराग्यप्रभाती ॥ २४ ॥

योगीसोवै योगनिशामें, अनहद नौबतबाजेजी ॥ टेक ॥ सबजगदेखाधुँआधाहै, अन्दरतत्वविछाया जी ॥ सूरतिनिरतिकेछत्ताछाला, धूनीबुद्धिलगायाजी ॥ १ ॥ लोभमोहनहिंव्यापैतनको, कामक्रोधबहायाजी ॥ ऐसैरहातननगरीमें, स्वासोंशब्दलखायाजी ॥ २ ॥ शीतउष्णजेहिनिकटनआवै, क्षुधाप्यासधरिमाराजी ॥ तीनगुननसैन्यारैरहना, अवधूतज्ञानविचाराजी ॥ ३ ॥ पहिलेआसनहितकरिसाधौ, यमसंयमहिंदृढायाजी ॥ अष्टक्रियासोंकायासोधौ, आसनसिद्धलगायाजी ॥ ४ ॥ पानअपानदोउसमकिन्हा, सुखमनशंखबजायाजी ॥ मेरुदंडकोसूधाकिन्हों, उनमुनिध्यानलगायाजी ॥ ५ ॥ पूरकरेचकदोनौत्यागी, कुंभकसड़कबनायाजी ॥ नागिनिनागभेदसटचक्र, पारब्रह्मकोपायाजी ॥ ६ ॥ सहसपद्मदलतामैसदगुरु,अगमनिगमजेहिगायाजी ॥ ७ ॥ गोकुलदास कहैगुरुज्ञानी, सदगुरुपूरापायाजी ॥ ८ ॥ २५ ॥

गंगामेंजहौपापहमारौ ॥ टेक ॥ हौंअपराधीबहुतजन्मको,पावननामतुम्हारौ ॥ १ ॥ सुरपुरनरपुरना

गलोकपुर, तिहुपुरसुयशतुम्हारो ॥ २ ॥ शिवसनका दिआदिब्रह्मादिक, स्तुतिकरततुम्हारो ॥ ३ ॥ दामोदर जनदीनदुखितअति, आयोशरनतुम्हारो ॥ ४ ॥ २६ ॥

अथ दातुन करानेकी प्रभाती ॥ दातुनकीजैलाडिले, रघुनाथजीदुलारे ॥ टेक ॥ सरजूजीकोजलभरि लाइज नकदुलारी ॥ १ ॥ रत्नजडितकीचोकीपर, प्रभुजीआप पधारे ॥ सुरनरमुनिजनमोहिरहे, सबकौतुकनहारे ॥२॥ करदर्पणलक्ष्मणलिये, विधिसोपागसंवारे ॥ तुलसीदा सपरयोहिकृपा, नित्यदर्शनतिहारे ॥ ३ ॥ २७ ॥

आजराम जानकी, कृपालुसुंदरसोहै ॥ निरखतसु रनरवरमुनि, शिवविरंचिमोहै ॥ टेक ॥ रामजीकेशी शकीटरत्नटितधारी ॥ सियाजीकेशीशफूल कोटि चन्द्रवारी ॥ १ ॥ रामजीकेपीतांबर धनुषबाणराजे ॥ सि याजीकेकरकमलमुद्रिकाविराजे ॥ २ ॥ रामजीकेकुंडल कीकोटिशोभा ॥ सियाजीके करणफूल रामजीकोमन लोभा ॥ ३ ॥ रामजीके उरसोहैमोतियनकिमाला ॥ चारुहार रुचिरपहिरैजनककुंवरिबाला ॥ ४ ॥ रामजीके कटिकिंकिणि रुनुकझुनुकबाजे ॥ सियाजीके क्षुद्रघंटि का मदनमंत्रलाजे ॥ ५ ॥ रामजी घनस्यामवर्ण छबि अभिरामा ॥ सियाजी है कनकवर्ण लाजतशतका मा ॥ ६ ॥ सियाजीकी नखशिखछबि कहतनहीं आवै॥ कोटिशेषशारदा श्रुतिपारहुनपावै ॥ ७॥ एहिध्यानहीय

ते टरतनहिंटाऱ्यो ॥ दासअग्र युगलचरणपर वारिफे रीडाऱ्यो ॥ ८ ॥ २८ ॥ इतिप्रभाती और झांझकेसंग गानेकी प्रभाती और दातुनकरानेकी प्रभाती सं० अथ मंगलासमयकी मंगलाआरती ॥ आरतीजग न्नाथस्वामि,मंगलाकरी ॥ टेक ॥ निरखत मुखारविंद परसत चरणारविंद आपदाहरी ॥ १ ॥ कंचनमणि दीपदान, ज्योतिजगमगी ॥ जलत धूप अगरबाती पाव केजरी ॥ २ ॥ घनन् घनन् घंटबाजै बाजे, वेनुबांसुरी ॥ तालतोमृदंगबाजै, औरनादखंजरी ॥ ३ ॥ इंद्रदमन सिंन्धुगाजे, रोहिणीयाखडी ॥ मारकंडे सेतुगंगा; आनं दकीभरी ॥४॥ संतनाकिभीरभारी; जात्रासवजुरी ॥ वेत नकीमारपडे, कबकीखडी ॥ ५ ॥ सुरनरमुनिद्वारेठाढे ब्रह्मावेदउच्चरी ॥ धन्य धन्य माधोदास, आजुकीघरी ॥ ६ ॥ इतिजगन्नाथजीकी मंगलाआरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सातो वारके बालभोग लिख्यते ॥

अथ गुरुवारकेबालभोगप्रारंभ ॥ बालभोगकीजैरा मजीलला ॥ टेक ॥ तुममेरेप्राण जीवनधनवारे, नेकन न्यारेहोउलला ॥ १ ॥ बहुमेवा पकवानमिठाई, खाजाखु रमा औरफला ॥२॥ बहुतसुगंधमिलायकैमिसरी, और हंसरज्युगंगजला ॥ ३ ॥ ल्योनैलक्ष्मणकुंवरलाडिलै, भरतशत्रुहन चपलकला ॥ ४ ॥ जनअनूप संतनहित कारी,लीलानटवरअनंतकला ॥ ५ ॥ मात कौशल्या

करत आरति, अग्रदास बलिजातलला ॥ ६ ॥ १ ॥
बालभोगकिजै सियारघुवीर॥टेक॥अवधपुरीमेंरत नसिंहासन, बहतसुहावनसरजूनीर ॥ १ ॥ दाखब दामखोपराकेरा, दूधदही मेवाअरुखीर ॥ २ ॥ बैठीराम बामदिशिसीता, दहिनेबिराजै लक्ष्मणवीर ॥ ३ ॥ चा रोभैयामिलिजेंवनबैठे, गलैबिराजै मुक्ताहीर ॥ ४ ॥ रघु वरलक्ष्मण भरतशत्रुहन, दोउसांवरदोउ गौरशरीर ॥ ५ ॥ सारंगधनुषबानकरराजै, पीतांबरपहिरैपटची र ॥ ६ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, गलैबिराजैमुक्ता हीर ॥ ७॥ कौशल्याबलिजातरामको, पावत ओटकरै पटचीर ॥ ८ ॥ सनमुखपवनपुत्रकरजोरै, अग्रदासझारी भरिनीर ॥ ९ ॥ २ ॥ इतिगुरुवारकेबालभोग संपूर्णम् ॥

अथ शुक्रवारके वालभोग लिख्यते ॥ बालभोगकी जे वेंकटभोर ॥ टेक ॥ दूधैनहानो दूधैपानो, दूधैकेनाना रस भोग ॥ १ ॥ दाख बदामकोपराकेरा, माखनलागै नित्यउठिभोग ॥ २ ॥ घनन्‌घनन्‌धुनिघंटाबाजे शंख शब्दहोयसुन्दरघोर ॥ ३ ॥ देशदेशकेसाधुआये, दरसन पावैनित्यउठिभोर ॥ ४ ॥ फूलनके जामाअतिसोहैं, केसरतिलकसोहैशिरमौर ॥ ५ ॥ जनहाथिरामजीवें कटजीकेसरणे, चरणकमलपरचितरहैमोर ॥ ६ ॥ ३ ॥ वालभोगकीजे लक्ष्मणमहाराज ॥ टेक ॥ लक्ष्मीजीभो जन आपसंवारै, नारदलायेनिरमलनीर ॥ १ ॥ मे

वादामखबदामछोहारा, सेवरसालधरेफलसीर ॥ २ ॥ झूजैविजैदोउपौरियाबिराजै, सन्मुखहै श्रीहनुमतवीर ॥ ३ ॥ जनहाथिरामजीबंकटजीकेसरणे नित्यउठिगा वैगुणगंभीर ॥ ४ ॥ ४ ॥ इति शुक्रवारके बाल भोग

अथ शनिवारके बालभोग लिख्यते ॥ बालभोग कीजैनरसिंहलला ॥ टेक ॥ तुममेरैप्राणजीवनधनप्यारै नेकनन्यारैहोउलला ॥ १ ॥ बहुमेवापकवानमिठाई खाजाखुरमाओरफला ॥ २ ॥ बहुतसुगंधमिलायकै मिसरी, ओपुस्करणीगंगजला ॥ ३ ॥ जनअनूपभक्तन हितकारी, लीलानरहरिअनंतकला ॥ ४ जनप्रहला दआरतिसाजै, अभयदानमोहिदेवलला ॥ ५ ॥ ५ ॥

बालभोगकीजै नृसिंहमहाराज ॥ टेक ॥ सोवरनवे दिकारतनसिंहासन, तापरबैठेनृसिंहमहाराज ॥ १ ॥ कंचनथारमेवादिकभोजन, लक्ष्मीजीलेभरिआईथार ॥ २ ॥ शिवसनकादिकचंवरछत्रलिये, पानलियेनारद महाराज ॥ ३ ॥ रतनजडितकेवनेबिछौना, तापरबैठे नृसिंहमहाराज ॥ ४ ॥ हनुमानकरझारीलीन्है, अचव नकीजेनृसिंहमहाराज ॥ ५ ॥ लक्ष्मीनारायणस्वामी राखुमेरि, चरणकमलसेवककीलाज ॥ ६ ॥ इति शनि वारके बालभोग संपूर्णम् ॥

॥ अथ रविवारके बालभोग लिख्यते ॥

बाललीला खेलैरघुवीर ॥ टेक ॥ भोरहोतउठिभोज

नमांगे,सुखधोवनकोसरज्यूनीर ॥ १ ॥ दाखबदामको पराकेरा, दूधदहीमेवारसखीर ॥ २ ॥ रुनुकझुनुकप गनेपुरबाजै,गजगतिचाल चलेरघुवीर ॥ ३ ॥ रत्नज डितसिरटोपिबिराजै,गलैबिराजैमुक्ताहीर ॥ ४ ॥ नइनइचाल चलैचारु भैया, भरतशत्रुहन लक्ष्मणवीर ॥ ५ ॥ सुंदरवदन कमलदललोचन, सोहतरघुवर स्या मसरीर ॥ ६ ॥ शारंगधनुष बानकरराजै, पीतांबरपहि रैपटचीर ॥ ७ ॥ संगसखा सरज्यूतटबिहरै, भरतश त्रुहनलक्ष्मणवीर ॥ ८ ॥ सुरनरमुनिदरसनको आये, दसरथद्वारैहोरहेभीर ॥ ९ ॥ तुलसीदासहरिकोरूपनि हारे,नित्यउठिगावै गुणगंभीर ॥ १० ॥ ७ ॥

बालभोगकीजै कौसलचंद ॥ टेक ॥ कंचनथारसुधारि सुमित्रा, लैआईमधुरेफलकंद ॥ १ ॥ व्यंजनसकलसंवा रैसजनी,पावतदेत सरसरसगंध ॥ २ ॥ चारोंभैयामि लिजेंवनबैठे,दशरथसुत और आनंदकंद ॥ ३ ॥ पाय अचायचले खेलनको, रंगमहलमें चारोंबन्धु ॥४॥ राज काजगजबाजसंवारैं, सकलसुधारैं श्रीरघुनंद ॥ ५ ॥ ला लारामदासभजो पूरण, कौशल्यासुत आनंदकन्द ॥६॥ ॥ ८ ॥ इति रविवारके बालभोग समाप्त ॥

अथ सोमवारके बालभोग लिख्यते ॥

बालभोग कीजै श्रीमहाराज ॥टेक॥ सोवरणवेदीकी रत्नसिंहासन, तापर बैठेश्रीरघुराज ॥ १ ॥ कञ्चनथार

मेवादिकभोजन, जानकीलाईभरिभरिथार ॥ २ ॥ भरतशत्रुहन चँवरछत्रलिये, पानसंवारे लक्ष्मण युवराज ॥ ३ ॥ रत्नजडितके बने बिछौना, तापरबैठे श्रीमहाराज ॥ ४ ॥ हनुमान करझारीलिन्है, अचवन किजै श्रीमहाराज ॥ ५ ॥ लक्ष्मीनारायण स्वामिराखुमोरि, चरणकमलसेवककी लाज ॥ ६ ॥ ९ ॥

करतकलेउआप्रातहीं, मिलीचारौभाईहां ॥ ॥टेक॥कञ्चनथारसँवारिकै, मैयालेआईहां० ॥१॥व्यञ्जन बनेबहुभांतिके, दधिदूधमिठाईहां० ॥२॥ खेलतखातदुरायकै, झगरैचारौभाईहां० ॥ ३ ॥ राजादशरथजीकिपौरिमें, कुमकुमाउडाईहां० ॥ ४ ॥ रत्नकञ्चमकपगपयजनी, कछनीछबिछाईहां० ॥ ५ ॥ उरमणिहारविराजहीं, मोतियनछबिछाईहां० ॥ ६ ॥ अवधपुरीकेकुञ्जमें, विहरै चारौभाईहां० ॥७॥ सुन्दरमधुरैबोलहीं, मोहिलगतसोहाईहां०॥ ८ ॥ रामलखनलीलारचै, भक्तनसुखदाईहां० ॥ ९ ॥ अग्रदासश्रीरामकौ, मानौलेतबोलाईहां० ॥ ॥ १० ॥ १० ॥ इतिसोमवारकेबालभोगसंपूर्णम् ॥

अथ मंगलवारके बालभोग लिख्यते ॥ बालभोगकीजैहनुमानजीलला ॥ टेक ॥ तुममेरैप्राणजीवनधनवारै, नेकनन्यारैहोऊलला ॥ १ ॥ बहुमेवापकवानामिठाई, खाजाखुरमाऔरफला ॥ २ ॥ बहुतसुगन्धमिलायकैमिसरी, औरौनिरमलगंगजला ॥ ३ ॥ जनअनूप

रामहितकारी, लीलहनुमतअनंतकला ॥ ४ ॥ मातु अंजनीकरतआरती, रामदासबलिजातलला ॥ ५॥११॥

बालभोगकीजै अंजनीकुमार ॥ टेक ॥ सोवरणवेदी कारतनसिंहासन, तापरआयबिराजैमहावीर ॥ १ ॥ कंचनथारमेवादिकभोजन, लैआयेसबसन्तसम्हार॥२॥ दाखबदामकाश्राकेरा, दूधदहीमेवाऔअनार ॥ ३ ॥ मातुअंजनीकरतआरती, रामदासके प्राणाधार ॥ ॥ ४ ॥ १२ ॥ इतिमंगलवारके बालभोगसंपूर्णम्

अथ बुधवारके बालभोग लिख्यते ॥ बालभोगकी जैकृष्णलला ॥ टेक ॥ श्रीब्रजपूरणपुरुषोत्तम, नेक नन्यारैहोउलला ॥ १ ॥ मोतिचूर मगदकेलडू, मा खनमिसरीऔरफला ॥ २ ॥ दोनुमैयामिलिजेवन बैठे, गोरश्यामसुखद्दलकझला ॥ ३ ॥ संगसखापैरसा दिलीन्है, अचवनकिजैयमुनाजला ॥ ४ ॥ राधाकृष्ण दासहितकारी, बीरीपावौसुगंधमिला ॥ ५ ॥ मातुय शोदाकरतआरती, सूरदासबलिजातलला ॥ ६ ॥ १३ ॥

बालभोगकीजेगोकुलचंद ॥ टेक ॥ खोवामेवामा खनमिसरी, पेडाकिसमिसमीठेकंद ॥ १ ॥ दोनुमै यामिलिजेवनबैठे, रोहिणीसुतऔरबालमुकुन्द ॥ २ ॥ पायअचायचलेखेलनको, जमुनातटगयेग्वालनसंग ॥ ३ ॥ ग्वालबालसबकरतकोलाहल, कंसपछारैश्री

यदुनंद ॥ ४ ॥ रत्नजडितशिरटोपीसोहै, कौस्तुभ मणिअरुबाजूबंद ॥ ५ ॥ सूरदासहरिकोरुपनिहारे, भक्तिदानदीजैगोविंद ॥ ६ ॥ १४ ॥

बालभोगकीजे नंदकिसोर ॥ टेक ॥ भांतिभांति कैव्यंजनसोहन, केरानालियर मिठेबोर ॥ १ ॥ उत मैया मुखधोवनआई, हलधरकर अरुमाखनचोर ॥ २ ॥ हलधरगिरिधर जेंवनबैठे, ग्वालबाल बैठेचहुं ओर ॥ ३ ॥ माखनखावत मुखलपटावत, केलिकर त श्रीनंदकिसोर ॥ ४ ॥ रतनजडितकी बनिहै झिंगु लिया, मुरलिदेखि मोहिअनमोल ॥ ५ ॥ परमानंद दासहितकारी, रोहिणीसुतऔरजुगलकिसोर ॥ ६ ॥ १५ ॥

कनककटोराप्रातही, दधिघृतमिठाईहांहां ॥ टेक ॥ चौकीरत्नजडावकी, बैठेदोउभाई० ॥ १ ॥ दोलइआ अनमोलके, मैयालेआई० ॥ २ ॥ खेलतखातहुरायके, झगरेदोउभाई० ॥ ३ ॥ नंदबाजीकियौरिसें, दधिकी चमचाई० ॥ ४ ॥ महाढीठसानैनहीं, कछुलहुरबडाई ॥ ५ ॥ अरसपरसचुटियागहैं, हँसिबरजैमाई० ॥ ६ ॥ घरघरकीसबगोपिका, दरसनकौआई० ॥ ७ ॥ इतसों आईमैयारोहिणी, यसोदाबलिजाई० ॥ ८ ॥ रासकृष्ण लीलारची, संतनसुखदाई० ॥ ९ ॥ जगन्नाथधरणीधरे, माधोबलिजाई० ॥ १० ॥ १६ ॥ इति बुधवारके बा लभोग ॥ इति सातोवारके बालभोग संपूर्णम् ॥

अथ सातोवारकी मंगल आरति लिख्यते ॥

अथ गुरुवारकी मंगल आरति लिख्यते ॥ मंगल आरति सियारघुवरकी, रामरघुवरकी, गौरवरण घन स्यामसुंदरकी ॥ टेक ॥ मंगल रूप भूप दशरथके, सुर हित देहधरी नरहरकी ॥ १ ॥ मंगलकीट मुकुट शिर राजै, मंगलमाल बनीमोतियनकी ॥ २ ॥ मंगल भाल तिलक शिरसोहै, मंगलखौर बनीचन्दनकी ॥ ३ ॥ मंगल असनवसन आभूषण, मंगल चरणसरोज हरिकी ॥ ४ ॥ मंगल धनुषबान करराजै, मंगल सोभाराजकुंवरकी ॥ ५ ॥ मंगल भरतलखन रिपुसूदन, मंगल सीयसोभा सबघरकी ॥ ६ ॥ मंगल गानकरै सुरबनिता, मंगल हरखिसुमन सुरवरखैं ॥ ७ ॥ मंगल थारलिये कौशल्या, आरतिकरनचली रघुवरकी ॥ ८ ॥ मंगल नीरबहै सरज्यूको, मंगल बीथीश्रीअवधनगरकी ॥ ९ ॥ मंगल रूपवसौ तुलसीउर, हरहुसकल दुखदारुणजनकी ॥ १० ॥ १ ॥ इति गुरुवारकी मंगलआरति ॥

अथ शुक्रवारकीमंगलआरति लिख्यते ॥ मंगलआरतिश्रीवंकटकी, श्रीलक्ष्मणकी, शेषाचलपर आपबिराजै॥ टेक॥ मंगलशेषाचलअतिराजै, मंगलश्रीहरि आपबिराजै ॥ १ ॥ मंगलपांवन नेपुरबाजै, मंगलपीतपीतांवरराजै ॥ २ ॥ मंगलकटिपर किंकिनीराजै, मंगलमुक्तामणिछविछाजै ॥३॥ मंगलशंखचक्र करराजै, मंगलश्री

टमुकुट शिरराजै ॥ ४ ॥ मंगलअधर दशनकीसोभा, मंगलहास देखिशशिलाजै ॥ ५ ॥ मंगलमालगलेमोतियनकी, मंगलश्रवणमैंकुंडलविराजै ॥ ६ ॥ मंगलरूप देववरशोभित, मंगलसकलजगतछविराजै ॥ ७ ॥ रामचरणछबिदेखि मगनभये, मंगलशरण गयेप्रतिपालै ॥ ८ ॥ २ ॥ इति शुक्रवारकी मंगलआरती ॥

अथ शनिवारकी मंगलआरती लिख्यते ॥ मंगल आरति श्रीन्रसिंहकी, श्रीनरहरिकी, मंगलमोद उठे तरंगा ॥ टेक ॥ मंगलजन प्रहलादके कारण, प्रगट भये श्रीकरुणाकंदा ॥१॥ मंगल झांझ और करतालै, मंगल शब्दउठे बहुरंगा ॥२॥ मंगल ढोलमृदंग बजावै, मंगल बांसुरि अरुमुरचंगा ॥ ३ ॥ मंगल धूपदीप करजोरै मंगलमिलिगावैसारंगा ॥ ४ ॥ मंगलभोजन थारसंवारै, मंगलझारी भरिजलगंगा ॥ ५ ॥ मंगलआरतिकरमिलिन्हे, अरपणकरहि सच्चिदानंदा ॥ ६ ॥ मंगलकरहिप्रणामसबैमिलि, दंडवतकरही, परहिजिमिदंडा ॥ ७ ॥ मंगलउदय अमंगल नासै, मंगलप्रभु मिले परमानंदा ॥ ८ ॥ ३ ॥ इति शनिवारकी मंगलआरती ॥

अथ रविवारकी मंगलआरती लिख्यते॥ मंगलआरतीरामकृष्णकी, राधावर अरु, श्रीसीतावरकी ॥ टेक ॥ मंगलअवधपुरी सरज्यूजल, मंगलमथुरा जमुनाजलकी॥ १ ॥मंगलकौशल्या दशरथसुत, मंगलजसोदानंद

कुंवरकी ॥ २ ॥ मंगलक्रीटमुकुट शिरसोहै, मंगलसो
भामोरमुकुटकी ॥ ३ ॥ मंगलधनुषबान कर राजै, मंग
लमुरली मुखमोहनकी ॥ ४ ॥ मंगलकेसर भालतिल
कछबि, मंगलगौरोचन शिरछबिकी ॥ ५ ॥ मंगलसी
ता बायेंबिराजै, मंगलराधासोभाघरकी ॥ ६ ॥ मंगल
चरण आहिल्यातारी, मंगलरुचिर रुपकुबिजाकी ॥ ७ ॥
मंगलरावण असुरसंहारैं, मंगलकंसपछारन करकी
॥ ८ ॥ मंगलभक्त बिभीषणथापै, मंगलछत्रधारि उग्रसे
नकी ॥ ९ ॥ मंगलरूप वसोयहजोरी, रामदासनिरखै
याछबिकी ॥ १० ॥ ४ ॥ इति रविवारकी मंगलआरती ॥

अथ सोमवारकी मंगलआरती लिख्यते ॥ मंगल
आरती राघोजीकि कीजे, रामजीकीकिजे, तनमनध
न सब अरपणकीजे ॥ टेक ॥ मंगलआरती सदासुख
साजे, राजादशरथ गृहनौबतबाजे ॥ १ ॥ क्रीटमु
कुट करधनुषबिराजे, जनकसुता लियेआरती साजे
॥ २ ॥ भरतशत्रुहन लक्ष्मणभाई, रामजीकिसोभा
वरणिनजाई ॥ ३ ॥ सनकसनंदन पारनपावे, नारदा
दिमुनि गुणगनगावे ॥ ४ ॥ सेषसहस्त्रमुख रटतनिरंतर,
शिवचतुरानन ध्यानन आवे ॥ ५ ॥ मोहनदास द्वारझु
किगावे, विमल भक्ति श्री रामजीकि पावे ॥ ६ ॥ ५ ॥

मंगल आरती रामकुंवरकी राजकुंवरकी, संकट
मोचन सारंगधरकी ॥ टेक ॥ कनकथारमणिमानि

क मोती, कोटिभानु शशिसम द्युतिज्योति ॥ १ ॥ मंगल आरती सजैसुनयना, परमसुधारसवोलीबैना ॥ २ ॥ परमउदार दीनदुखमोचन, करुणासिन्धु कमलदल लोचन ॥ ३ ॥ वामभागमिथिलेश किसोरी, यहछबिवरणि सकैकविकोरी ॥ ४ ॥ छत्रलिये कर लक्ष्मणसोहैं, अंजनीसुत सनसुखकरजोडैं ॥ ५ ॥ भरतशत्रुहन चँवरढुरावैं, नारदादिमुनि गुणगणगावैं ॥ ६ ॥ तुलसीदास रघुवरछवि निरखैं, पुलकि गातलोचन जलबरखैं ॥७॥६॥ इतिसोमवारकी मंगल आरती ॥

अथ मंगलवारकी मंगल आरती प्रारंभ ॥ मंगल आरती सजनीसाजैं, मंगलमोद अनंदवढावैं ॥ टेक ॥ मंगलप्रिय प्यारीसुखपावैं, मंगल वचन रचनउरलावैं ॥ १ ॥ मंगलकेलि वेलिसरसावैं, मंगलकर कपोल परसावैं ॥ २ ॥ मंगलकोक केलिदरसावैं, मंगलउर लैं हृदय लगावैं ॥ ३ ॥ मंगल मंदमंद मुसकावैं मंगल अंग अंगलपटावैं ॥ ४ ॥ मंगल दसन कपोल विराजै, मंगल अलकैं मुखपरराजैं ॥ ५ ॥ मंगल अधर अरुणता भ्राजै मंगल मुखमंडलछुभराजै ॥ ६ ॥ मंगल अचवन उमगि करावैं, मोहनदास अतिसुख पावैं ॥ ७ ॥ ७ ॥ इति मंगलवारकी मंगलआरती ॥

अथ बुधवारकी मंगलआरती लिख्यते ॥ मंगलआरतिनंदकुंवरकी, जसोमतिसुत, श्रीराधावरकी ॥ टेक ॥

मंगलजन्मकर्मकुलमंगल, मंगलजसोमतिमाखनचोरकी ॥ १ ॥ मंगलमोरमुकुटकुण्डलछवि, मंगलमुरलिबजैघनघोरकी ॥२॥ मंगलब्रजबासीसबमंगल, मंगलगानकरैचहुँऔरकी ॥३॥ मंगलगोपिग्वालसबमंगल, मंगलराधानंदकिसोरकी ॥ ४ ॥ मंगलनंदजसोदामंगलमंगलसुतहिखेलावैगोदकी ॥ ५ ॥ मंगलगिरिगोवरधनमंगल, मंगलवृंदावनकीशोरकी ॥६॥ मंगलकुञ्जबासीसबमंगल, मंगलसोभाहै चहुँओरकी ॥ ७॥ मंगलस्यामजमुनजलमंगल. मंगलधारवहैअघहरकी ॥ ८ ॥ मंगलश्रीहलधरसबमंगल, मंगलराधाजुगलकिसोरकी ॥ ९ ॥ मंगलयामूरतिमनमोहै, चंद्रसखीबलिजाऊंचरणकी ॥१०॥ ८

मंगल आरति कीजे मोर॥टेक॥ मंगल मथुरा मंगल गोकुल, मंगलराधानंदकिशोर॥ १॥ मंगललकुटमुकुटवनमाला, मंगलमुरलिहै घनघोर ॥ २॥ मंगल नंदगामबरसानो,मंगल गोवरधन गिरिमोर ॥३॥ मंगल बंसीवटतटजमुना, मंगललताद्रुमकी चहुँओर ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, मंगलब्रजवासीनकीओर ॥ ५॥ ९॥

इति बुधवारकी मंगल आरती ॥ इति सातोवारकी मंगल आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सीतारामकीधुन लिख्यते ॥

जय बोलो सीतारामकी, जयबोलो हनुमानकी ॥२॥ सियाराम लक्ष्मणजानकी,जयबोलो हनुमानकी॥टेक॥ भरतलखनरिपुदलनसुजानकी ॥ २ ॥ १ ॥रघुपतिराघव

राजाराम, पतितपावन सीताराम ॥ २ ॥ जयरघुवरकी स्यामसुंदरकी, सीतावरकी बलिहारी ॥ ३ ॥ जयरघुनंदनजयसियाराम, जानकी वल्लभ सीताराम ॥४॥ जय रघुनंदन अवधबिहारी, जोरी सुंदर मंगलकारी ॥ ५ ॥ जयरघुनंदनलालकी, सबसंतनके रक्षपालकी ॥६॥जय रघुनंदन जानकीनाथा, सीतारामसकलसुखदाता ॥७॥ जय रघुनंदन जनककिसोरी, सीताराम मनोहरजोरी ॥ ८॥ जयरघुनंदन जनकदुलारी,जोरीसुंदर मंगलकारी ॥ ९ ॥ कमलाविमला मिथिलाधाम, अवधसरज्यू सीताराम ॥ १० ॥ रघुनंदन राघोराम सीयावर रामा, रघुनंदनराघोराम सीयावर रामा. श्रीरामराघव रामराघव रामराघव पाहिमाम्, श्रीजानकीवर मधुरीमूरति रामराघव रक्षमाम् ॥ श्रीरामसीताराम सीताराम रामराम, श्रीरामसीताराम सीताराम राम राम ॥ इति सीतारामकीधुन संपूर्णम् ॥ १ ॥

अथ रामजन्मकोछन्द ॥

भयेप्रगटकृपाला, दीनदयाला, कौशल्याहितकारी ॥ हर्षितमहतारी, मुनिमनहारी, अद्भुतरूपनिहारी ॥१॥ लोचनअभिरामा, तनुघनस्यामा, निजआयुधभुजचारी ॥ भूषणवनमाला, नयनविशाला, सोभासिंधुखरारी ॥ २ ॥ कहदुइकरजोरी, अस्तुतितोरी, केहिविधिकरौं अनंता ॥ मायागुणज्ञाना, तीतअमाना,

वेदपुराणभनंता ॥ ३ ॥ करुणासुखसागर, सब गुण आगर, जेहिगावहिंश्रुतिसंता ॥ सोममहितलागी, जनअनुरागी, प्रगटभयेश्रीकंता ॥ ४ ॥ ब्रह्मांडनिकाया, निर्मितमाया, रोमरोमप्रतिवेदकहैं ॥ ममउरसोवासी, यहउपहासी, सुनतधीरमति थिरनरहैं ॥ ५ ॥ उपजाजवज्ञाना, प्रभुमुसुकाना, चरितबहुतविधिकीन्हचहै ॥ कहिकथासुनाई, मातु बुझाई, जेहिप्रकारसुतप्रेमलहै ॥ ६ ॥ मातापुनिबोली, सोमतिडोली, तजहुतातयहरूपा ॥ कीजैसिसुलीला, अतिप्रियसीला, यहसुखपरमअनूपा ॥ ७ ॥ सुनिबचनसुजाना, रोदनठाना, होइबालकसुरभूपा ॥ यहचरितजोगावहिं, हरिपदपावहिं, तेनपरहिंभवकूपा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ॥ विप्रधेनुसुरसंतहित, लीन्ह मनुजअवतार ॥ निजइच्छानिरमिततनु, मायागुणगोपार ॥ १ ॥ वारबारवरमांगिहुं, हरखिदेउश्रीरंग ॥ पदसरोजअनपायिनी, भक्तिसदासतसंग ॥ २ ॥ इतिरामजन्मकोछंद समाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ राधेस्यामकीधुनलिख्यते ॥

जयबोलोराधेस्यामकी, जयबोलोयादवनाथकी ॥ माधोपुरुषोत्तम कुंवरकल्याणकी ॥ १ ॥ टेक ॥ यदुपतियादवराधेस्याम ॥ पतितपावनहरिकोनाम ॥ २ ॥ जयजदुवरकोस्यामसुंदरकी ॥ राधावरकीबलिहारी ॥ ॥ ३ ॥ जयजदुनंदनराधेस्याम ॥ रुकमिणिवल्लभसो

साधाम ॥ ४ ॥ जयजदुनंदन कुंजबिहारी ॥ सोभाअ
द्भुतमंगलकारी ॥ ५ ॥ जयजदुनंदनजयगोपाल, संतन
केतुमहोरक्षपाल ॥ ६ ॥ जयजदुनंदन लाडलीनाथा ॥
राधेस्यामसकलसुखदाता ॥ ७ ॥ जयजदुवरवृषभान
किसोरी ॥ राधेस्याममनोहरजोरी ॥ ८ ॥ जययदुवर
वृषभानुदुलारी ॥ जोरीसुंदरमंगलकारी ॥ ९ ॥ श्रीका
लिंदीमथुराधाम ॥ वंसीवट श्रीराधेस्याम ॥ १० ॥
श्रीकृष्णकेशव कृष्णकेशवकृष्णकेशवपाहिमाम् ॥ श्री
राधिकावरमधुरिमूरति, कृष्णकेशवरक्षमाम् ॥ इति
राधेस्यामकीधुनसमाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ कृष्णजन्मको छंद ॥

भये प्रगटगोपाला, दीनदयाला, जसोमतिकेहितका
री॥हर्षितमहतारी, रूपनिहारी, मोहनमदनमुरारी ॥१॥
कंसासुरजाना, मनअनुमाना, पूतनावेगिपठाई ॥ तहां
मनमुसुकाई,हर्षितधाई, गईजहांजदुराई ॥ २ ॥ तेहिजा
ईउठाई, हृदयलगाई, पैधरिसुखमेंदिन्हौ ॥ तबकृष्णक
न्हाई, मनमुसुकाई, प्राणताहिहरिलिन्हौ ॥ ३ ॥ तबइंद्र
रिसाये, मेघनल्याये, वासिकरौतेहीमुरारी ॥ गौवनहि
तकारी, सुरमुनिझारी, नखपरगिरिवरधारी ॥ ४ ॥कंसा
सुरमारी, अतिहंकारी वच्छासुरसंहारी ॥ बकासुरआ
यौ, बहुतडरायौ, ताकोबदनविदारी ॥ ५ ॥ तेहिअति
दीनजानि, प्रभुचक्रपाणी, तिनकौदिन्हेनिजलोका ॥
ब्रह्मासुरराई, अतिसुखपाई, मगनहुयेगयेसोका

॥ ६ ॥ यहछन्दअनूपा, हैरसरूपा, जोनरयाको गावै ॥ तेहिसमनहिकोई, त्रिभुवनसोई, मनवांछितफलपावै ॥ ७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नंदजसोदा तपकरौ, मोहीसोमनलाय ॥ देख्याचाहतबालसुख, रहौकछुकदिनजाय ॥ १ ॥ जिहिनक्षत्रमोहनभये, सोनक्षत्रपरौ आई ॥ चारुबधाईरीतिसब, करतजसोदामाई ॥ २ ॥ इति कृष्णजन्मको छन्द संपूर्णम् ॥ १ ॥

॥ अथ सातोवारके मंगल प्रारम्भः ॥

अथ गुरुवारकेमंगललिख्यते ॥ हे आजुमहा २ मंगलकौसलपुर, सुनिनृपके सुतचारिभये ॥ टेक ॥ सदनसदनसोहिलोसुहावन, नभअरुनगरनिसानहये ॥ १ ॥ सजिसजिजानअमरकिन्नरमुनि, जानिसमयसुभगानठये ॥ नाचहींनभअप्सरासुदितमन, पुनिपुनिवर्षहिंसुमनचये ॥ २ ॥ अतिसुखबेगीबोलिगुरुभूसुर, भूपतिभीतरभवनगये ॥ जातकिर्मकरिकनकबसनमणि, भूषितसुरभिसमूहदये ॥ ॥ ३ ॥ दलरोचनफलफूलदूबदधि, युवतिन भरिभरिथारलिये ॥ गावतचलीभीरभईबीथिन, बंदिनबांकुर बिरदवये ॥ ४ ॥ कनक कलस चाँमरपताकध्वज, जहांतहां बंदिनबारनये ॥ भरहिंअबीरअरगजाछिरकहिं, सकललोक एकरंगरये ॥ ५ ॥ उमगिचल्यौ आनंदलोकतिहुं, देतवसनमंदिर रितये ॥

तुलसीदास पुनिभरेदेखिये, रामकृपा चितवन चितये ॥ ६ ॥ १ ॥

हे अवधनगर २ चलीदेखोमेरिसजनी, राजादशरथ जीकैरामजीभये ॥ टेक ॥ कौनिघरीभारथभयेसजनी, कौनिघरीराजारामजीभये ॥ १ ॥ भोरहोतभारथभये सजनी, मध्यदिवसराजारामजीभये ॥ २ ॥ वाज ततालमृदंगझांझडफ, औरनौबतपरचोपदिये ॥ २ ॥ तंबुवनतंबुवननचततायफा, सबरघुबंसीमगनभये ॥ ४ ॥ हरेहरेगोबर अंगनालिपाये, मोतियनचौकपुरायरहै ॥ ५ ॥ अपने अपने भवनतेनिकसी, गजमोति यनके थारलिये ॥ ६ ॥ चैत्रमासनौमिकीपूजा सुखेसरोवर नीरभरे ॥ ७ ॥ कहत कबीरदया सत गुरुकी, घरघरमंगलचारभये ॥ ८ ॥ २ ॥

हेसुभगसेज २ सोहतकौशल्या, रुचिररामशिशु गोदलिये ॥ टेक ॥ बारबारविधुवदनविलोकति, लोच नचारु चकोरकिये ॥ १ ॥ कबहुंपोढि पयपानकरावति, कबहुक राखतिलाईहीये ॥ २ ॥ बालकेलि गावति हलरावति, पुलकित प्रेमपीयूषपीये ॥ ३ ॥ विधिम हेस मुनि सूर सराहत, देखत अंबुदओट दिये ॥ ४ ॥ तुलसीदास एसोसुख रघुपतिपै, काहूतो पायोनपीये ॥ ५ ॥ ३ ॥

हेनौमिके २ दिननौबतबाजै, सुतकौशल्या जायोरी ॥ टेक ॥ सातवरीदिनबितिगयोहै ॥ सखियनमंगल

गायोरी ॥ १ ॥ दशरथके आनंदभयोहै ॥ रघुवंशीगृ
हआयोरी ॥ विप्रबोलाय सोधनाकीनो ॥ अक्षयसं
डारलुटायोरी ॥ २ ॥ कंचनके बहुकलसभराये मोतिय
नचौकपुरायोरी ॥ घरीएकसोचि निगमयौंभाख्यो ॥
रामचंद्रगृहआयोरी ॥ ३ ॥ घरघरते कुलवधूबुलाई ॥ मं
गलगावत आयोरी ॥ रायअंगनमें डारिहुलीचा ॥ आ
दरकरि बैठायोरी ॥ ४ ॥ कंप्योसिंधु कंगुराथरहरे ॥
लंकाआगम जनायोरी ॥ सबलंकामें सोचभयोहै ॥
राजकुंवर कहुंजायोरी ॥ ५ ॥ दशरथ उठिभंडार
पधारे ॥ सारोसुरंगमंगायोरी ॥ जोजैसो जिनकेमन
भावे ॥ तिनतैसो पहेरायोरी ॥ ६ ॥ खासाझीना ची
रपीतांबर ॥ हरखित जनपहिरायोरी ॥ कमलानंदक
हांलगिबरणो ॥ तीनलोक जसगायोरी ॥ ७ ॥ ४ ॥
सुंदररामपालनेझूले, कौशल्यागुणगायोरी ॥ टेक ॥
बलिबलिजाउंमुखारविंदकी ॥ राजीवलोचनभावैरी
॥ १ ॥ दशरथपलनासरसघडायो ॥ सबचंदनकोसा
ज्योरी ॥ हीराजडितपाटकोडोरी ॥ रेशमबानबुना
योरी ॥ २ ॥ रातेचरणकमलकररातै ॥ सुभगस्याम
तनसोहैरी ॥ सबसखियनमिलिमंगलगावै ॥ दशर
थपलनाझुलावैरी ॥ ३ ॥ घूंघुरवालीअलकबिराजै ॥
मधुरहासमनमोहैरी ॥ घरघरमंगलचारअयोध्या ॥ रा
मजन्मभजवसोरी ॥ ४ ॥ कहतसुनतसबहोतकृता

रथ ॥ अवधनगरकेबासीरी ॥ तुलसीदासहरिकौरूप निहारे ॥ चरणकमलमनलागेरी ॥५॥५॥

अंगनामेंगोदखेलावे ॥ लक्ष्मणरामकौशल्यासुत माई ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन ॥ पलना माहिझुलावे ॥ १ ॥ घरतेपौरिपौरितेबाहिर ॥ पांव नचलनसिखावे ॥ २ ॥ हाथलियेचुँदियाँकेलड्डू कागसु सुंडचुगावे ॥ ३ ॥ कीटमुकुट मकराकृतकुंडल ॥ उर बनमालसोहावे ॥ ४ ॥ कटिकिंकिनी नूपुरधुनिबाजै ॥ ठुमकचाल मनभावे ॥ ५ ॥ इंद्रकुबेर शेषसनकादिक ॥ गंध्रवलीलागावे ॥ ६ ॥ जाहिजपत सुरनर मुनिशंकर ॥ ब्रह्मापारनपावे ॥ ७ ॥ ओंकाररूपअविनाशीठाकुर ॥ पलना माहिझुलावे ॥ ८ ॥ दशरथपुत्रपरमवडभागी ॥ हँसिहँसिकंठलगावे ॥९॥ जरकसिपाग केसरियोबागो ॥ हरखिनिरखिपहिरावे ॥ १० ॥ शेषसहस्रमुख रटतनिरंतर ॥ सोजाकोपारनपावे ॥११॥ तीनलोक औ रभुवनचतुरदस ॥ ठाकुरआपकहावे ॥ १२ ॥ तुलसीदास हरिकोरूपनिहारे ॥ हरखिनिरखिगुणगावे ॥ १३ ॥ ६ ॥

एकपदसरथकेपुनभयोसखि ॥ सुरपुरबजतबधाईरी ॥ ॥ टेक ॥ घरघरमंगलचारअवधपुर ॥ वंदनवारवंधाईरी ॥ १ ॥ चतुरसखिनामिलिसाथआदिले ॥ विधिसौं कवनबनाईरी ॥ २ ॥ चंदनचौकरच्योआंगनमें ॥ रतननभूमिजडाईरी ॥ ३ ॥ करतकुतूहलकौसलवासी ॥ जाचकआभरणपाईरी ॥ ४ ॥ कईलक्षधेनू

संकल्पी ॥ हस्तिसमूहलुटाईरी ॥ ५ ॥ अग्रदासरघुपति केआगम सबसंतनसुखपाईरी ॥ ६ ॥ ७ ॥

आजुसुनीसखिअद्भुतलीला ॥ कौसल्यासुत जायोरी ॥ टेक॥ सुंदरस्याम कमलदललोचन, निरखत नयनजुडायोरी ॥ १ ॥ सबसुखसदन वदनअतिराजैं, कोटिकाम छबिलाजैरी ॥ २ ॥ मानौंतिमिरनाशकेकारण, रविसुतआपबिराजैरी ॥ ३ ॥ घरघरमंगल बजतबधाई, आनँदउरनसमायैरी ॥ ४ ॥ गायकगुण गावतसुरमधुरे, बाजे विविधि बजायैरी ॥ ५ ॥ आनंद सिंधु बढ्यौराजाके, बहुविधिकेसुखपायैरी ॥ ६ ॥ राम लखणपर करी निछावरि, दियोजाहीजेहि भायैरी ॥ ७ ॥ रामसुयश गावैंपुरवासी, प्रेममगन लौलायैरी ॥ ८ ॥ गोकुलदास कुंवररघुवरके, चरणकमल मनभायैरी ॥ ९ ॥ ८ ॥

हंससुवंसरायदशरथके ॥ देहधरी अविनाशीहो ॥ टेक ॥ अंसनसहित करनसुखसंतन ॥ भञ्जनसबकी फांसीहो ॥ १ ॥ मधूमास दिन भौम नौमी तिथि, सुकल पक्षपरकासीहो ॥ २ ॥ जुगलजामवर परमपुनरवसु ॥ प्रगटे विश्वविलासीहो ॥ ३ ॥ प्रेममगनसुनि भयेमहामुनि ॥ सकलकौसलावासीहो ॥ ४ ॥ नाचत गावत लाज विसारी ॥ वस्तुअगोचर भासैहो ॥ ५ ॥ ध्वजाअवलिफहरातसुनौबत ॥ मृदुघहरात घंटासीहो

॥ ६ ॥ देत वाजि गजरतनअमोलै ॥ खोलैकोस जो खासीहौ ॥ ७ ॥ जेसुखसिंधुन लहतवेदविधि ॥ कंत समेत उलासीहौ ॥ ८ ॥ मनसुखनाथ अनूपदासकै ॥ अमितरुपरससरासीहौ ॥ ९ ॥ ९ ॥

अवधनगर बरनृपदशरथगृह ॥ देहदयानिधि धारीहौ ॥ टेक ॥ निरगुणनित्यनिरञ्जनजनहित ॥ हरणभारभुवभारीहौ ॥ १ ॥ अतिपुनीत मधुमासलगनग्रह ॥ नौमीसुभउजियारीहौ ॥ २ ॥ जुगलजामवर चढत पुनरवसु ॥ प्रगटैरामखरारीहौ ॥ ३ ॥ विसरैंसबै सदनकैकारज ॥ महामगन नरनारीहौ ॥ ४ ॥ सोहैभूरिभाग्यकौसल्या ॥ नाचत लाजविसारीहौ ॥ ५ ॥ बाजे बजतपढतगुणगायक ॥ पढतसुभाटपुकारीहौ ॥ ६ ॥ हयगजरथन लुटावतनृपजू ॥ रतनजडितकी झारीहौ ॥ ७ ॥ सुरनरमुनि जाकोपारनपावै ॥ संभुसमाधी टारीहौ ॥ ८ ॥ चिरंजीरहौ मनसुखकेस्वामी ॥ जल थलअवधविहारीहौ ॥ ९ ॥ १० ॥

चारौभाईपलनाझूलैजननीहरखिझुलावैरी ॥ टेक ॥ देवतामुनिगणध्यानधरतहैं ॥ ध्यानहुंआवतनाहींरी ॥ १ ॥ ब्रह्माशिवसनकादिकनारद ॥ निरखिपरमसुख पावैरी ॥ २ ॥ धन्यभाग्यराजादशरथके ॥ पुत्रनगोदखेलावैरी ॥ ३ ॥ पूरणब्रह्मअखिलअविनासी ॥ नृपसुतआपकहावैरी ॥ ४ ॥ भक्तवत्सलभक्तनहितकारी ॥ व

लगुणरूपदिखावैरी ॥ ५ ॥ देखिचरणमन भयोहैकृता रथ ॥ बलिपरमानंद दासीरी ॥ ६ ॥ ११ ॥

आजअवधमहाराजसदनसखि ॥ बाजत विविध बधाईरी ॥ टेक ॥ कुंवररूपधरि नृपगृहप्रगटे ॥ चार पदारथआईरी ॥ १ ॥ प्रमुदितफिरत सकलपुरवा सी ॥ मानौमहानिधिपाईरी ॥ २ ॥ हँसिहँसिमिलत उठेनरनारी ॥ छाँडिक्रोध अरिताईरी ॥ ३ ॥ क हिनजातसुंदरतेहिअवसर ॥ बहुविधिपुरीसुहाईरी ॥ ४ ॥ आइसांझदिन मांझसुनो सखि ॥ प्रभुहिमिलनजनुआ ईरी ॥ ५ ॥ अगरकपूरकि होतधूपगृह ॥ अंधकारअ धिकाईरी ॥ ६ ॥ उड़तअबीर गुलालमहीसब ॥ सह जसदनअरुणाईरी ॥ ७ ॥ गृहमणिगणउडुगणशुभ सोहै ॥ कलसइंदुछबिछाईरी ॥ ८ ॥ मागधवेद बंदि मधुरध्वनि ॥ मानौखगवरसुखदाईरी ॥ ९ ॥ शिशुको वदनविलोकिहरखिउर ॥ एकटकरहे लुभाईरी ॥ ॥ १० ॥ संध्यासमयकरतवंदनमुनि ॥ देहदसाबिसरा ईरी ॥ ११ ॥ चिरंजीव महाराजकुंवरवर ॥ चरणदास बलि जाईरी ॥ १२ ॥ १२ ॥

आजुसुदिन सुभघरीसुहाई ॥ कहाकहौ अधिकाई ॥ टेक ॥ रूपसीलगुणधामरामनृप ॥ भवनप्रगटभयेआ ई ॥ १ ॥ अतिपुनीतमधुमासलगनगृह ॥ बारयोग समुदाई ॥ २ ॥ हरषवंतचरअचरभूमिसुर ॥ तनरु

हपुलकजनाई ॥ ३ ॥ बरषहिंविबुधनिकरकुसुमाव
ली ॥ नभदुंदुभीबजाई ॥ ४ ॥ कौशल्यादिमातुसबहर
षित ॥ यहसुखवरणिनजाई ॥ ५ ॥ सुनिदसरथसुतज
न्मलियैसब ॥ गुरुजनविप्रबोलाई ॥ ६ ॥ वेदविहित
करिक्रियापरमसुचि ॥ आनंदउरनसमाई ॥ ७ ॥ स
दनवेदधुनिकरतमधुरमुनि ॥ बहुविधिबजतबधाई
॥ ८ ॥ पुरवासिनप्रियप्राणनाथहित ॥ निजसंपदालु
टाई ॥ ९ ॥ मणितोरणबहुकेतुपताकन ॥ पुरीरुचिरक
रिछाई ॥ १० ॥ मागधसूतद्वारबंदीजन ॥ जहाँतहाँ
करतबडाई ॥ ११ ॥ सहजसिंगारकियेबनिताचली ॥
मंगलविपुलबनाई ॥ १२ ॥ गावहिंदेहींअसीससुदित
चिरजियोतनयसुखदाई ॥ १३ ॥ वीथिनिकुमकुम
कीचअरगजा ॥ अगरअबीरउडाई ॥ १४ ॥ नाच
हिंपुरनरनारीप्रेमभरि ॥ देहदसाबिसराई ॥ १५ ॥
अमितधेनुगजतुरंगवसनमणि ॥ जातरूपअधिका
ई ॥ १६ ॥ देतभूपअनुरूप जाहिजोई ॥ सकलसि
द्धिगृहआई ॥ १७ ॥ सुखीभयेसुरसंत भूमिसुर ॥
खलगणमन मलिनाई ॥ १८ ॥ सबहिसुमनविकस
तरविनिकसत ॥ कुमुदविपीन बिलखाई ॥ १९ ॥
जोसुखसिंधु सुकृतसीकरते ॥ शिवविरंचिप्रभुताई
॥ २० ॥ सोसुखउमगिअवधरह्यो दसादिसि ॥ कौनजत
नकहौंगाई ॥२१॥ जेरघुवीरचरणचिंतक ॥ तिनकीगति

प्रगटदेखाई ॥ २२ ॥ अविरलअमल अनूपभक्तिदृढ ॥ तुलसीदास तबपाई ॥ २३ ॥ १३ ॥

आजुसखिमहाराजराजगृह ॥आनंदबजतबधाईरी॥ टेक ॥ प्रगटभये रघुनाथललाजी ॥ सुरनरमुनिसुखदाई री ॥ १ ॥ शुभनक्षत्रमहूरतहीं घरी ॥ योगबारसमुदाई री ॥ २ ॥ जयजयकार भयेतिहुंपुरमें ॥ देवनदुंदुभि बजाईरी ॥ ३ ॥ चौवाचंदन और अरगजा ॥ केसरकीचमचाईरी ॥ ४ ॥ दधिदुर्बारौचनफलफूला ॥ बंदनबार बनाईरी ॥ ५ ॥ नाचहिनभअप्सरामुदितमन ॥ अबीरगुलालउडाईरी ॥ ६ ॥ हरखैदेवसुमनबहुबरषे ॥ आनंदउरनसमाईरी ॥ ७ ॥ बाललीलारघुनाथलालकी ॥ शेषसहस्रमुखगाईरी ॥ ८ ॥ तुलसीदासछबि कहाँलगिवरणौ ॥ निगमपारनहींपाईरी ॥ ९ ॥ १४ ॥

रामजन्मआनंदबधाई ॥ टेक ॥ सुरतरुकामधेनुचिंतामणि ॥ अवधपुरीमेंघरघरआई ॥ १ ॥ प्रफुलितरहैंनगरकेवासी ॥ बालरुदनसबभाँतिसुहाई ॥ २ ॥ भईभीरनाचतनरनारी ॥ बाजेबहुतकहीनहींजाई ॥ ३ ॥ सुवरणकलसचौकमोतियनके ॥ द्वारेबंदनबारबनाई ॥ ४ ॥ शिशुकोबदननिहारिनारिसब ॥ आरतिकरिकरिलेतबलाई ॥ ५ ॥ रतनलुटावैकौशल्यारानी ॥ धन्य भाग्यकीरतीबडाई ॥ ६ ॥ दसरथरायआयभयेठाडे ॥कनकबसनअरुधेनुमगाई ॥ ७ ॥ परमपुनीतदेवपदबंदि

ता॥दानमानसोदेतबधाई॥८॥मागधसूतभाटबंदीजन॥ आजुनिधीमनवांछितपाई॥९॥तुलसीदासआनंदम गनन्नृप॥खुसीकियेपुरलोगलुगाई॥१०॥१५॥

आजु अवधपुर भारीभीर ॥ टेक ॥ निर्गुणब्रह्मस गुणवपुधारै ॥ संतनकेहितलायोरी ॥ १ ॥ रामज न्मदसरथगृहलिन्हो ॥ कौशल्यागुणगायोरी ॥ २ ॥ बड़ेभाग्यराजादसरथके ॥ जासुपरमसुखपायोरी ॥ ॥ ३ ॥ घरघरमंगलबजतबधाई ॥ ध्वजपताकछवि छायोरी ॥ ४ ॥ केसरकुमकुमऔरअरगजा ॥ ग लियनमांहिसिचायोरी ॥ ५ ॥ बाललीलाखेलैचारोभा ई ॥ जननिदेखिसुखपायोरी ॥ ६ ॥ संगसखासरज्यूत टबिहरै ॥ चपलतुरंगनचायोरी ॥ ७ ॥ रामचरणछ बिदेखिमगनभये ॥ बारबारबलिजायोरी ॥ ८ ॥ १६ ॥

आजुमहामंगलकौशलपुर॥श्रीरामचंद्रअवतारलि ये ॥ टेक ॥ अवधपूरिमेंरतनसिंहासन ॥ भूतलभार उतारिदिये ॥ १ ॥ आवततुरत ताडकामारी ॥ एक बान हरिप्राणलिये ॥ २ ॥ जयजयकार भयेसुरपु रमें ॥ देवनदुंदुभि बजायरहे ॥ ३ ॥ विश्वामित्रको यज्ञसुफलकिये ॥ गौतमनारीउधारिलिये ॥ ४ ॥ सब भूपनकोमानमथनकियो ॥ परसुराम मदमारिलिये ॥ ५ ॥ सीताब्याहि अवधहरिआये ॥ घरघरमंगल चारभये ॥ ६ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ शे

षसहस्त्रमुख गायरहे ॥ ७ ॥ मातुकौशल्या करत आरती ॥ तुलसीदास गुणगायलिये ॥ ८ ॥ १७ ॥

आजुअवधपुर भारीभीर ॥ टेक ॥ एकआवत एक जातबटौही ॥ एकठाढे सरज्यूकेतीर ॥१॥ एकन्हावत एकचंदनचढावत ॥ एकसुमिरतहै सियारघुवीर ॥२॥ एकनकेन्नृप दानदेतहै ॥ एकनके पहिरावतचीर ॥३ ॥ एकरघुपतिकौ रूपनिहारै॥एकगावतहै गुणगंभीर ॥ ४ ॥ एकदोऊकर जोरैठाढे ॥ एकढारतहै नयनसेनीर ॥ ५ ॥ तुलसीदास करजोरैठाढे ॥ भक्तिदान दीजैरघुबीर ॥ ६ ॥ १८ ॥ इति गुरुवारके मंगल समाप्त ॥

॥ अथ शुक्रवारके मंगल प्रारंभः ॥

हेआजुमहा २ मंगलशेषाचल ॥ घरघरबजतबधाईरी ॥ टेक ॥ जयजयकारभयेसुरपुरमे ॥ देवनदुंदुभीबजाईरी ॥ १ ॥ चौवाचंदनऔरअरगजा ॥ केसरकीचमचाईरी॥ २ ॥ दधिदुर्वारोचनफलफूला ॥ बंदनवारबधाईरी ॥ ३ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ उरवनमालसुहाईरी ॥ ४ ॥ कंबुकंठकौस्तुभमणिराजे ॥ सोभावरणिनजाईरी ॥ ५ ॥ आठपहरफूलनकौजामा ॥ पीतांवरछबिछाईरी ॥ ६ ॥ शेषसहस्त्रमुखरटतनिरंतर ॥ सोजाकौपारनपाईरी ॥ ७ ॥ जनहाथिरामजीवेंकटजीकेसरणे ॥ चरणकमलचितलाईरी ॥ ८ ॥ १ ॥

हे आजुमहा२मंगल शेषाचल॥श्रीवेङ्कटेस पधारेरी

॥ टेक ॥ मङ्गलशेष गिरीसुभराजे ॥ मंगलपद हरि धारेरी ॥ १ ॥ मंगलकटिपर किंकिनीराजै ॥ उरव नमाल सुहायेरी ॥ २ ॥ मंगलपायननूपुरबाजे ॥ वसन पीतांबर धारेरी ॥ ३ ॥ मंगलशंखचक्र करराजै॥भृगुपद अधिक सुहायेरी ॥४॥ मंगलमालगले मोतियनकी॥श्रवणकुंडल झलकायेरी ॥ ५ ॥ मंगलअधर दसनमुखसोहै ॥ शशिद्युति तिलकलजायेरी ॥ ६ ॥ मंगलकीटमुकुट सिरसोहै ॥ मंदमंदमुसकायेरी ॥ ७ ॥ मंगलतालपखावजबाजे ॥ मंगलसुरपदगायेरी ॥ ८ ॥ रामचरण बंकटसरणागत ॥ अभयपरम पद पायेरी ॥ ९ ॥ २ ॥

है चलोसखीरशेषाचलचलिये॥लक्ष्मणजहाँविराजेरी॥टेक॥वरषतपुष्पदेवमुनिहरखै ॥प्रीतिसदाउरछायेरी ॥ १ ॥ त्रिपतिमेंसीतारामजीविराजे ॥ लक्ष्मी जि अधिकसोहायेरी ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपविराजे ॥ सोभावरणिनजायेरी ॥ ३ ॥ जयविजयदोउपौरियाविराजे ॥ पुस्करणीमनभायेरी॥ ४ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ उरवनमालसोहायेरी ॥ ५ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजे ॥ स्यामसूरतिमनभायेरी ॥ ६ ॥ भोगमंडीमेंभोगलगतहै ॥ वेदनकीधुनिलायेरी ॥ ७ ॥ रामदास बंकटजीकेसरणे ॥ चरणकमलचितलायेरी ॥ ८ ॥ ३ ॥

है कंकंकं शुभकीटमुकुट शिर॥धारी लियेश्रीव्यंकटजी ॥ टेक ॥ चंचंचंचं चक्रविराजे ॥ शंशंशंखसुहा

योरी ॥ १ ॥ गंगं गदाहाथमेंलिन्है ॥ पंपंपद्मसुहायोरी ॥ २ ॥ जंजंजं करज रैठाडे ॥ झंझंझांझबजायोरी ॥ ३ ॥ घंघंघं घंटाकरबाजे ॥ भंभं भोगलगायोरी ॥ ४ ॥ छंछंछंमान्टत्यकरतहै ॥ इंद्रपुष्पझरिलायोरी ॥ ५ ॥ दंदं दंदंदयातुह्मारी ॥ बंबं बेदसुनायोरी ॥ ६ ॥ मंमंमा यामोहसबत्यागे ॥ शंशं शंकरगायोरी ॥ ७ ॥ हंहं हाथीरामजीखेलै ॥ संसं संगतुह्मारैरी ॥ ८ ॥ ४ ॥

हैप्रातसमय २ मधुवनकेभीतर ॥ मोहनबेनुबजायोरी ॥ टेक ॥ मोरमुकुट करमुरलीसोहै ॥ मधुरमधुरधु निलायोरी ॥ १ ॥ तनंतनं तनमोरवा बोलत ॥ सोवत मदनजगायोरी ॥ २ ॥ बंसीकिटेर सुनीब्रजबनिता ॥ करिसिंगार उठिधायोरी ॥३॥ झनंझनं झंझननंझननं ॥ नूपुर शब्दसुनायोरी ॥४॥ हिमऋतु वीत वसंत लागहै रसना वचनन आयोरी ॥ ५॥ सनंसनं संसननंसननं ॥ पवनमाधुरी वायोरी ॥ ६ ॥ सरंसरं संसररंसररं ॥ आरतबचन सुनायोरी ॥ ७ ॥ सूरस्याम ब्याकुल ब्रजबनिता ॥ ढूंढत स्याम न पायोरी ॥ ८ ॥ ५ ॥

भक्तिदानमोहेदीजीये ॥ व्यङ्कटमहाराज, लक्ष्मण महाराज ॥ टेक ॥ सखिकिटमुकुटमाथेबन्यौ, हीरारत्न जडाव ॥ केसरतिलक बिराजही, कुंडलछबिछाय ॥ १ ॥ सखिकमलनयन मुखचंद्रमा, अतिललितकपोल ॥ चितवनिमेंचितचोरहै, मधुरमिठेबोल ॥ २ ॥ सखिरत्न

जडित गलेगुंजहै, मुक्तामणिहार ॥ बैजंतिमालगले, अ च्छेसरस सिंगार ॥ ३ ॥ सखिबाजूबंद विराजहि, अ च्छेबाहुविशाल ॥ करकङ्कन पहुंचीबनी, मुदरीहीरा लाल ॥ ४ ॥ सखिभृगुलक्षण उरराजही, नासिरुचिर गम्भीर ॥ नीलकञ्ज मणिराजही, अच्छेगौरशरीर ॥ ५ ॥ सखिकटिकींकीनी पगपैजनि, धुनिअधिक सोहाय ॥ ठुमकचालठगीनीबनि, मनलियोहैचुराय ॥ ६ ॥ सखिचरणकमल परगुंजहै ॥ संतनमनभृङ्ग ॥ रामदासहृदयवसो ॥ स्वामीपरमानन्द ॥ ७ ॥ ६ ॥

ब्रजराजकुमार, महाराजकुमार, गोपीनाथविराज ही ॥ टेक ॥ सखिमोरमुकुटमाथेवन्यो, मुखमुरली बजाय, चितवनिमें चितचोरहै, मोहै ब्रजनारी ॥ १ ॥ सखिकृष्णवरणतनस्याम है, अम्बुजसेनयन ॥ केसर तिलकबिराजही, विद्युतछबिदेत ॥ २ ॥ सखिकटि पर पीतलपेटिहै, कंकनघनघोर ॥ करगहिकमलफि रावही, मानोरविभोर ॥ ३ ॥ सखिभक्ति चरणअनपा यनी, राखोदृढज्ञान ॥ चेतनमुनो समाजमें, देखौधरी ध्यान ॥ ४ ॥ सखिवृन्दा विपिनसोहावने, यमुनाके तीर ॥ संगसखालियेबिहरे, हलधरदोऊवीर ॥ ५ ॥ स खिगोकुलतै मथुरागये, श्रीपतिबलवीर ॥ नरनारिमोही फिरै, मनधरतनधीर ॥ ६ ॥ सखिकुबिजा परकृपा करि, प्रभुदीनदयाल ॥ यदुकुलसबपावनकिये, दुष्टन

केकाल ॥ ७ ॥ सखिकृष्ण भक्तिजानेनही, ऊपजैनही ज्ञान ॥ मूरखजन्मगवावही, भूलेभ्रमजाल ॥ ८ ॥ सखिअगजग व्यापकनामहै, रसनागुणगाय ॥ दासगोवरधन ध्यावही, मनलियोहैचोराय ॥ ९ ॥ ७ ॥

संतसमागमदीजीये, बांकेमहाराज, टीकममहाराज, ॥टेक॥वामन होयबलिकोछल्यो, बलिसोलियोदान ॥ तीनपांवमसुधाकरी, अतिसैहरखान ॥ १ ॥ प्रभुब्रह्मलोकलगि शिशहै, गये चरण पताल ॥ बलिराजा ऐसो कहै, तुम समनहीं आन ॥२॥ प्रभु भक्त वत्सल महाराज हो,आरत हरनाम ॥ बलिद्वारै ठाडे रहैं, त्रैलोक प्रमान ॥ ३ ॥ प्रभु संत जनन हृदय धरे, कोई पावै न पार॥ श्रुतिशारद सब थकि रहे, जय जगताधार ॥ ४ ॥ प्रभु ब्रह्मा विष्णु महेश है, नारद धरे ध्यान ॥ रामदास हृदयेधरे, पावै सुखधाम ॥ ५ ॥ ८ ॥

छगन मगन श्रीवंकटजीकी, यह छबिकी बलिहारी ॥ टेक ॥ रुनुक झुनुक पग नूपुर बाजे ॥ लागतहैमोहिप्यारी॥ १॥त्रिपतीमें सीतारामजी बिराजे ॥ लक्ष्मण आज्ञाकारी ॥ २ ॥ शेषाचलपर आप बिराजे ॥ हनुमत आज्ञाकारी ॥ ३ ॥ ईजै विजै दोऊ पोरियाबिराजे ॥ बिजय घण्ट धुनि भारी ॥४॥ आठपहरफूलनको जामा॥ पीतांबर छबिभारी ॥ ५ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजे ॥ कुण्डलकी छबि न्यारी ॥६॥ संख चक्र गदा पद्म

बिराजै ॥ कटिपर किंकिनी धारी ॥ ७ ॥ ब्रह्मा जाकै करत रसोई ॥ इंद्र भरै जहां पानी ॥ ८ ॥ भोग मंदिमें भोग लगतहै ॥ वेदनकी धुनि भारी ॥ ९ ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावै ॥ सनकादिक ऋषिचारी ॥ १० ॥ आस पास गिरिवरकीसोभा ॥ वीचमें कोयल भारी ॥ ११ ॥ जन हाथीरामजी वंकटजीके सरणे ॥ चरण कमल बलिहारी ॥ १२ ॥ ९ ॥

आयेहैं दोऊ राज कुंवर वर ॥ सुन्दर स्यामल गोरे ॥ टेक ॥ आगे आगे विश्वामित्र महामुनि ॥ संग हंसन की जोरे ॥ १ ॥ कहाकहुंगुणरुपआगरे ॥ लगतदिननके थोरे ॥२॥ बडे बडे लोचन हैं अघ मोचन ॥ सोभा सिंधु हिलोरै ॥३॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ धनुष बा न कर जोरै ॥ ४॥ आय जनकपुर मोहनिडारी॥नरना रीसबमोहे ॥५॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियो ॥ कठिण धनुषकौतोरे ॥ ६ ॥ जयजयकारभये त्रिभुवनमें ॥ भूप नके मुखमोरे ॥ ७ ॥ उडत गुलालाल भये वादल ॥ राय जनकजीकीपौरे ॥ ८ ॥ अग्र अलि प्रभुकी छवि निरखें ॥ चितवनमें चित चोरै ॥ ९ ॥ १० ॥

गुरिआयेजादौसबैसुपतिदरबार२टेक ॥ सखीकृष्ण द्वारकाद्वरिहै, पातिकोलैजाय ॥ मेरीसुधिपहुंचाइये ॥ फिरिआवैधाय ॥१॥ सखीचहुंदिसिसिंधुविराजहीं, बेडि लागैनपार ॥ किसविधिपारउतारिये, किजेकौनउ

पाय ॥ २ ॥ सखीरुक्मिणिजीविनतीकरै, सुनिये चितलाय ॥ जैसेजलबिनुमीनहै, तलफतमरिजाय ॥ ३ ॥ सखीजैसैंगजकीटेरसुनि, सुनतैऊठिधाय ॥ गरुडछाँडिपहुंचेतहाँ, धरिचक्रसुधार ॥ ४ ॥ सखी हलधरसंगविराजहीं, रथकेअसवार ॥ गिरिजापूज नजातहीं, लियेरथहींचढाय ॥ ५ ॥ सखीभक्तवत्स लभगवानहै, संतनरखवाल ॥ श्रीभटकेहृदयवसौ, श्रीजादौराय ॥ ६ ॥ ११ ॥

चलोसखीलक्ष्मणछबिनिरखें, पंचवटीहरिआयोरी ॥ टेक ॥ सुखसागररघुवंसउजागर, धन्यजननीजिन जायौरी ॥ १ ॥ एकश्यामलएकगोरमनोहर, अरुसिया संगसुहायौरी ॥ २ ॥ जटामुकुटमुनिवेषधर्योहै, उरव नमालसुहायोरी ॥ ३ ॥ सुर्पनखाकोरुपहर्योहै, खरदू षणसंहारैरी ॥ ४ ॥ सिवरीकोनिजधामपठाये, गीद्धज टायुतार्योरी ॥ ५ ॥ एकबानबालिकोमार्यो, पुष्पमाल पाहरायौरी ॥ ६ ॥ सागरसेतुनामसेंबांध्यौ, कपिदल पारउतार्यौरी ॥ ७ ॥ रावणकेदसमस्तकछेदै, राजाविभीषणपायौरी ॥ ८ ॥ रावणमारीमहिरावण मारै, सखियनमंगलगायौरी ॥ ९ ॥ लंकाजीतीरामघर आये, घरघरवजतवधाईरी ॥ १० ॥ सीताजीसहित सिंहासनवैठे, भरतजीचँवरढुरायौरी ॥ ११ ॥ मातुकौ शल्याकरतआरति, तुलसीदाससगुणगायोरी ॥ १२ ॥ १२ ॥

रूपनिहारोअली रूपनिहारो, सियारघुवरजीकौरूप

निहारो ॥ टेक ॥ छोटे भैया लक्ष्मण बडे रघुनंदन, सूरजवंस उजियारो ॥ १ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, दसरथराजदुलारो ॥ २ ॥ कीट मुकुट मकरा कृत कुंडल, गले बिच मुक्ताहारो ॥ ३ ॥ जरकसि पाग केसरीयाजामा, पीतांबर पटवारो ॥ ४ ॥ हाथ धनुष कटिभाता सोहै, असुरनगंजनहारो ॥ ५ ॥ विश्वामित्रको यज्ञसुफल कियो, कौशल्याजिकोप्यारो ॥ ६ ॥ रतनसिंहासन रघुवरबैठे, तीनलोकउजियारो ॥ ७ ॥ शारदशेष निगम मुनि गावे, शंकरध्यान लगावे ॥ ८ ॥ मातु कोसल्या करत आरति, वार बारबलिहारो ॥ ९ ॥ तुलसीदास हरि रूपनिहारे, जीवन प्राणहमारो ॥ १० ॥ १२ ॥

बाणधनुईयाकितेधरी, देदेमोरीमाईहांहां ॥ टेक ॥ प्रातहोत हरिखेलन गये, सब सखा बोलाई हांहां ॥ १ ॥ अपने अंगनामें खेलिये, मिलिचारो भाईहांहां ॥२॥ खेल रच्यो बहुभांतिको, सरज्यूतट माहीहांहां ॥ ३ ॥ विविधभांति बैठकबेनी, फूलवारी लगाईहांहां ॥ ४ ॥ भांतिभांति पंछिबोलहीं, मोहिलगत सोहाईहांहां ॥ ५ ॥ एकतीरमेरो खोईगयो, सरज्यूतट माईहांहां ॥ ६ ॥ निरनिकट हमनाहिगये, बाबाकि दोहाईहांहां ॥ ७ ॥ बुझोभरतबोलायके, लक्ष्मणके भाईहांहां ॥ ८ ॥ मातुकोसल्याके गोदमें, बोले तुतराईहांहां ॥ ९ ॥ गृह गृहकी सबसुन्दरी, देखनचलि आईहांहां ॥ १० ॥

तुलसीदास हरिसगनभये, सरधनुहि पाईहांहां ॥११॥
॥ १४ ॥ इति शुक्रवारके मंगल समाप्त ॥

॥ अथ शनिवारके मंगल प्रारंभः ॥

आजुमहामंगलत्रिभुवनमें, खंभफोरिहरिप्रगटभये ॥ टेक ॥ देवनमुदितनिशानबजाये, सुखउपजैदुखदूरि गये ॥ १ ॥ असुरमारिप्रहलादउबारे, संतनके आनंद भये ॥ २ ॥ श्रवनसुन्योनयननहींदेखे, अद्भुतरूप अनूपभये ॥ ३ ॥ नरहरि रूपधर्योअविनासी, भक्त हेतु अवतारलिये ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिकजाकेनिकटन आवै, लक्ष्मीजीदेखीचाकितभये ॥ ५ ॥ खंभफोरि हिरणाकुसमारे, जनप्रहलाद उबारिलिये ॥ ६ ॥ संत दास नृसिंह आसरै, बारबार बलिहारिगये ॥ ७ ॥ १ ॥

गोविंदगुनागोपालगुना॥ गायलैगोविंदगुना ॥टेक॥ ऐसोसमयबहुरिनहीपैहो ॥ फिरिपछितैहोमेरेमना ॥ १ ॥ जिनतुमकोतनमनधनदिन्हो ॥ नयननासिकामुखर सना ॥ जाकोरचितमासदसलागे ॥ ताहिनसुमिरोएक छिना ॥२॥ बालापनहँसिखेलगमायो ॥ तरुणभयोतब रूपघना ॥ वृद्धभयोजबआलसऊपजे ॥ उठगईहाटक छनवना ॥ ३ ॥ अधमतरेअधिकारभजनते ॥ जेजे आयेहरिसरना ॥ नामानौतोसाखिबताऊ ॥ अजामे लानिकासजना ॥ ४ ॥ धनजोबनअंजुरीकोजलज स ॥ घटतजातछिनपलहिपला ॥ असोजियजानिम

जोरघुनंदन ॥ नामदेव आयेहरिसरना ॥ ५ ॥ २ ॥

आजुसखिहरिजन्मलियोहै ॥ भक्तवत्सलन्रसिंहस ही ॥ टेक ॥ पाहनतेपरमेश्वरप्रगटे ॥ सारभक्तिप्रह लादगही ॥ १ ॥ कामक्रोधममताअरतृष्णा ॥ इन कोमारिकेदूरदही ॥ २ ॥ हरिकेचरणप्रीतिअतिवाढी ॥ रामनामकीटेकगही ॥ ३ ॥ सुरतबिमानदेवसबहरखै ॥ पुष्पनछाईसकलमही ॥ ४ ॥ संतदासआनंदेसंत जन ॥ जयजयजयतिहुंलोकसही ॥ ५ ॥ ३ ॥

श्रीन्रसिंहप्रगटभयेजनहित ॥ देवन्नजावतबाजैजु ॥ टेक ॥ हिरनाकुसप्रहलादभक्तसों ॥ बूझतकहाँसहा येजु ॥ १ ॥ सोमैतोमैखरगखंभमै ॥ व्यापरहैरघुरा येजु ॥ २ ॥ हिरनाकुसनखउदरविदारै ॥ असुरड रैसबभाजैजु ॥ ३ ॥ लपकिलियौनहिजाननपावै ॥ कोईनपरैसुखआगैजु ॥ ४ ॥ जनप्रहलादगोदमेंबैठे ॥ चाटनपुनिपुनिलागैजु ॥ ५ ॥ ब्रह्मादिकजाकैनिकटन आवै ॥ लक्ष्मीजीपतिकोत्यागैजु ॥ ६ ॥ जयजयका रभयेत्रिभुवनमैं ॥ सिंहासनपरराजैजु ॥ ७ ॥ कुंजविहा रिप्रभुकोजसगावै ॥ सकलअमंगलभागैजु ॥ ८ ॥ ४ ॥

आजु सखी हरि प्रगट भयेहै ॥ भक्तहेतु न्रसिंहस ही ॥ टेक ॥ अद्भुतरूप धर्‌यौअविनासी ॥ काहूंतौ देख्योनकहीं ॥ १ ॥ ब्रह्माआदि शेषशिवनारद ॥ लक्ष्मीजीरूपनिहारिरही ॥ २ ॥ संतनकेआनंदभयो

है ॥ असुरनकेमनसंकभई ॥ ३ ॥ संतदासतिहुं लोकआनंदभये ॥ सदाभक्तकी टेकरही ॥ ४ ॥ ५ ॥

सुकलपक्षवैसाखमासमें ॥ चौदसिनरहरिजन्मलिये ॥ टेक ॥ खंभफोरिहिरनाकुसमारे ॥ जनप्रहलादकोअभयकिये ॥ १ ॥ चौवाचंदनऔरअरगजा ॥ वीथिनकीचमचायरहै ॥ २ ॥ दधिदूर्वारोचनफलफूला ॥ घरघरबंदनवारनये ॥३॥ सुरनरमुनिसबप्रेमविवसभये ॥ सुखसंपतिसबछायरहै ॥ ४ ॥ शेषसहस्रमुखरटतनिरंतर ॥ सोवाकौपारनपायरहै ॥ ५ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक ॥ निगमनेतिजसगायरहै ॥ ६ ॥ संतदासनरसिंहचरणपर॥बारबारवरमांगिलिये ॥ ७ ॥ ६॥

जाचकजननरसिंहजन्मसुनि ॥ जाचनआयेद्वारघने ॥ टेक ॥ उतसें आवतमहारंकहोई, इतसेंजावतभूपघने ॥ १ ॥ एकहिआवत एकहिजावत ॥ निद्राहेत नही चिन्हपरे ॥ २ ॥ सुरनरमुनिसब प्रेमविवसभये ॥ बोलेहँसीआनंदघने ॥ ३ ॥ जबप्रहलादबोलभंडारी ॥ द्रव्यलुटायेसर्वधने ॥ ४ ॥ माणिकमुक्ताअरुहयहस्ती ॥ संतदासजीकोनगीने ॥ ५ ॥ ७ ॥

अवधपुरी आनंदकोरूप ॥ टेक ॥ ठाडेमुनिजन वेदबखाने ॥ दशरथरायबडेकुलभूप ॥ १ ॥ जाकोंनिगमनेति यसगावे ॥ योगेश्वर सेवैनिजरूप ॥ २ ॥ सो खेले दशरथजीकेअंगना ॥ अंगअंगमेंसुधारसकू

प ॥ ३ ॥ राजादशरथजीके चारिपुत्रहैं ॥ तिनमेंरघु
वर स्यामस्वरूप ॥ ४ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुह
न ॥ जोरीसुंदरमंगलरूप ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुट मकरा
कृतकुंडल ॥ गलेबिराजे मोतिअनूप ॥ ६ ॥ सारंगध
नुष बानकरराजे ॥ सैलकरनकौ निकसेभूप ॥ ७ ॥
अवधपुरीमें रतनसिंहासन ॥ जहांबैठे दशरथकुलभूप
॥ ८ ॥ घरघरकामधेनु चिंतामणि ॥ कल्पवृक्ष अरु
नगरअनूप ॥ ९ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥
नारदध्यान धरेनिजरूप ॥ १० ॥ तुलसीदाससेवैरघुनं
दन ॥ कनककलस पंचायनधूप ॥ ११ ॥ ८ ॥

अवधपुरी बिहरेरघुवीर ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मण भ
रथशत्रुहन ॥ संगसखीनकी सोहैभीर ॥ १ ॥ पीतां
बरकीकछनीकाछै ॥ करमेंसोहै सारंगतीर ॥ २ ॥ चप
लतुरंग चढैरघुनंदन ॥ चलैजातसरज्यूकेतीर ॥ ३ ॥
भरतशत्रुहन दोहुदिसराजे ॥ पीछेलक्ष्मण है रणधीर
॥ ४ ॥ बिहरतफिरतप्रमोदविपिनमें ॥ केलिकरतहैंश्री
रघुवीर ॥ ५ ॥ सरज्यूदासपरकृपाकीजे ॥ भक्तिदान
दीजैरघुवीर ॥ ६ ॥ ९ ॥

आजुसखीनृसिंहजन्मलियौ ॥ भक्तनकौ आनंददि
यौ ॥ टेक ॥ हिरनाकुसप्रहलादभक्तको ॥ लैकेखंभमें
बाँधिदियौ ॥ १ ॥ रामकहाँतेरमोहिबतावौ ॥ ऐसौकाहे
केखडगलियौ ॥ २ ॥ मोमेंतोमेंखडगखंभमें ॥ सबमाहीं

परतीतकियौ ॥ ३ ॥ खंभफौरिहिरनाकुसमारे ॥ देवनजयजयकारकियौ ॥ ४ ॥ लियोगोदप्रहलादभक्तकौं ॥ हस्तकमलसिरफेरिदियौ ॥ ५ ॥ माधौदासआसनरहरिकी ॥ सकलअमंगलदूरिकियौ ॥ ६ ॥ १० ॥

श्रीरघुनाथजन्मकीसेवा ॥ वेदविमलजसगायौरी ॥ ॥ टेक ॥ पौंढेहैप्रभुक्षीरसागरमें ॥ ब्रह्माआईजगायौरी ॥ १ ॥ अवनिदुखिदेखिसबदेवा ॥ लोकपालदुखपायौरी ॥ २ ॥ चलौदेवतुमवनचरहोईहौ ॥ हमपीछेचलिआवौरी ॥ ३ ॥ भूकौभारउतारनकारन ॥ शेषसंगलैआवौरी ॥ ४ ॥ रावणकुंभकरणअपराधी ॥ देवनबहुतसतायौरी ॥ ५ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ उरवनमालसोहायौरी ॥ ६ ॥ पीतांबरकीकछनीकाछै ॥ धनुषबाणकरधारेरी ॥ ७ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक ॥ नारदध्यानलगायौरी ॥ ८ ॥ शेषसहस्रमुखरटतनिरंतर ॥ सोवाकौपारनपायौरी ॥ ९ ॥ धर्मप्रधानकियौयुगत्रेता ॥ लिखियाफेरिमेटायौरी ॥ १० ॥ माधौदासआसरघुवरकी ॥ सूरजवंसकहायौरी ॥ ११ ॥ ११ ॥

आजुसखीहरिजन्मलियौहै ॥ भक्तनकेहितकारीरी ॥ टेक ॥ सुभनक्षत्रमुहूरतघरीहै ॥ योगबारसमुदाईरी ॥ १ ॥ खंभफौरिहिरनाकुसमारे ॥ नखसैंउदरबिदारैरी ॥ २ ॥ गहँगहँगगनदुंदुभिबाजी ॥ आनंदउरनसमाईरी ॥ ३ ॥ नाचहीनभअप्सरामुदितमन ॥ सुरनरपुष्पझ

रीलाईरी ॥४॥ चोवाचंदनऔरअरगजा ॥ केसरकीचम चाईरी ॥ ५ ॥ संतदासनरसिंहआसरे ॥ बारबार वर पाईरी ॥ ६ ॥ इतिशनिवारकेमंगलसंपूर्ण ॥

॥ अथ रविवारके मंगल लिख्यते ॥

गंडकीनंदन स्यामसुंदर भजू ॥ पूरणब्रह्मअनंता ॥ टेक ॥ मुक्तनाथहरिजन्मलियोहै ॥ अवधपुरीबिच रंता ॥१॥ ब्रह्मादिक जाकौपारनपावै ॥ दीनबंधुभगवंता ॥ २ ॥ शेषसहस्रमुख रटतनिरंतर ॥ सोजाकौपावैन अंता ॥३॥ चरणोदक लियेपापहरतहै ॥ जरामरण भवअंता ॥४॥ धूपदीप नैवेद्यआरति ॥ तुलसीपुष्प चढंता ॥ ५ ॥ छप्पनभोग छतीसोव्यञ्जन ॥ नितप्र तिभोगलगंता ॥ ६ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन ॥ रूपरासीभगवंता ॥ ७ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मा दिक ॥ नारदध्यानधरंता ॥ ८ ॥ माधौदास आसरघु वरकी ॥ भवसागर उतरंता ॥ ९ ॥ १ ॥

जयनारायण ब्रह्मपरायण ॥ श्रीपतिकमलाकन्तं ॥ ॥ टेक ॥ नामअनंत कहाँलगिबरणौ ॥ शेषनपावत अंतं ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ नारदध्यानध रंतं ॥१॥ मच्छकच्छसूकर नरहरिप्रभु ॥ वामनरुपधरं तं ॥परसुरामसोई रामचंद्रभये ॥लीलाकोटिकरंतं ॥ २ ॥ जन्मलियौ वसुदेवदेवकी ॥ यसोमतिगोदखेलंतं ॥ पै ठिपताल कालीनागनाथै ॥ फणफणनिरतकरंतं ॥ ३ ॥

हलधरहोयके असुरसंहारे ॥ कंसकेकेसगहंतं ॥ जग न्नाथजगमग चिंतामणि ॥ बैठरहैनिहचिंतं ॥ ४ ॥ कलि युगहरण कलंकीहोइहैं ॥ वेदपुराणभनंतं ॥ दशमस्कं धभागवतगीता ॥ सूरसरणभगवंतं ॥ ५ ॥ २ ॥

सरज्युवेदवखानी ॥ पूरणब्रह्म सनातनकहिये ॥ टेक॥ ब्रह्मलोकसो धाराआई ॥ उचरत जयजयबानी ॥१॥ निसदिनसरज्यू वहतदूधकी ॥ मूरखजानैपानी ॥ २ ॥ स्वर्गद्वारिपर सहस्रोंधारा ॥ मुक्तिभरैजहाँपानी ॥ ३ ॥ निसदिन सरज्यूलहरलेतहैं ॥ बोलतमधुरीबानी ॥४॥ रामघाट स्नानकरनको ॥ आयेहैंमुनिज्ञानी ॥ ५ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन ॥ हनुमतअगवानी ॥ ६ ॥ सरज्यूतीर अयोध्यानगरी ॥ अवधपुरीर जधानी ॥ ७ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ से वतहैंमुनिज्ञानी ॥ ८ ॥ तुलसीदास सरज्यूजीकीम हिमा ॥ श्रीमुखआपवखानी ॥ ९ ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्ण उठिकहियेभोर ॥ वही अवधेस वही व्रजजीवन ॥ धनुषधरन औरमाखनचोर ॥ १ ॥ ईतमें अयोध्या निरमलसरज्यू ॥ ऊतमैंजमुना करतकिलो र ॥२॥ ईतमेंदशरथ कुंवरकहाये ॥ ऊतमेंकहायेश्रीनं दकिशोर ॥ ३ ॥ ईतमैंकौशल्या गोदखेलावे ॥ ऊतमैं जसोदाजी झुलावैहिंडोर ॥ ४ ॥ ईतमैंक्रीटमुकुटसिर राजै ॥ भरतशत्रुहन लक्ष्मणजोर ॥५॥ ऊतमैंलकुटमु

कुट बनमाला ॥ गौधनकेसंगनंदकिसोर ॥ ६ ॥ ईतमें धनुषबाणकरराजे॥ऊतमुरलीधरीमुखकी और ॥ ७ ॥ ईतमेंजानकी बायें विराजे ॥ उतराधे वर जुगलकी सोर ॥ ८ ॥ ईतमेंचरण अहिल्यातारी ॥ ऊतकुव जासंगकियोहैकिलोर ॥ ९ ॥ ईतमेंसागर सिलातरा ये ॥ उतगिरिवरधरें नखकीऔर ॥ १० ॥ ईतलंका पतिरावणमार्यो ॥ कंसकोमारी कीयोझकझोर ॥ ११ ॥ ईतमेंराजबिभीषणदिन्हो ॥ उतउग्रसेन कियोअप नी और ॥ १२ ॥ नंददासजीके येदोऊठाकुर ॥ द सरथसुतअरुनंदकिसोर ॥ १३ ॥ ४ ॥

खेलतहैअंगनामेंरघुवर॥जननीलेतबलैयारी ॥टेक॥ शुभअवतार देवमुनिवंदित ॥ राजीवलोचनमायेरी ॥ ॥ १ ॥ कीटमुकुट मकराकृतकुंडल ॥ उरवनमाल सोहायेरी ॥ २ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ इंद्रपुष्पझरिलायेरी ॥ ३ ॥ सुंदरवदनकमलदललो चन ॥ मुनिमनलेतचुरायेरी ॥ ४ ॥ तुलसीदास ह रिरुपनिहारे ॥ चरणकमलचितलायेरी ॥ ५ ॥ ५ ॥

चलोसखीरघुवरछबिनिरखे ॥ रंगभवनहरिआयोरी ॥ टेक ॥ एकश्यामल एकगौरमनोहर ॥ संगमहामुनि आयोरी ॥ १ ॥ सांचकहोसखि झूठनबोलो॥समाचा रसुनिपायोरी ॥ २ ॥ देसदेसकेभूपतिआये ॥ काहुन चांपचढायोरी ॥ ३ ॥ तोर्‍योधनुषरामसुनुसजनी ॥

भूपसबे मुरझायौरी ॥ ४ ॥ आईसीतासंगसहेली ॥ वर
माला पहिरायौरी ॥ ५ ॥ हरेहरेगोबरअंगनालिपाये ॥
मोतियनचौकपुरायौरी ॥ ६ ॥ हरेहरेबांसनमंडपछाये॥
कञ्चनकलसभरायौरी ॥ ७ ॥ रामसियादोउचौकमे
बैठे ॥ ब्रह्मावेद उचायौरी ॥ ८ ॥ रामसियाजीकिफिर
तभांवरी ॥ सखियन मंगलगायौरी ॥ ९ ॥ धन्यधन्य
भाग्यसियाजीतुम्हारे ॥ श्रीरामचंद्रवरपायौरी ॥ १० ॥
धन्यधन्यभाग्यजनकराजाके ॥ दशरथसमधीपायौ
री ॥ ११ ॥ धन्यधन्यभाग्यनगरबासिनके॥श्रीरामचंद्र
पुरआयौरी ॥ १२ ॥ रामसेवकजीके प्रभुसुखसागर ॥
सबहिप्राणप्रीयपायौरी ॥ १३ ॥ ६ ॥

कौसल्या प्यारे रामको ॥ लियेगोदखेलावैहांहां ॥
॥ टेक ॥ सुंदररूपनिहारिकै॥ मनमोदबढावैहां० ॥ १ ॥
चलनसिखावैरामको ॥ पगनूपुरबाजैहां० ॥ २ ॥ कुंडल
बनेहैजडावके ॥ मणिमाणिकमोतिहां० ॥ ३ ॥ शशि
मंडलकेमध्यमै॥उडुगणकीज्योतिहां० ॥ ४ ॥ पीतझि
गुलियाअधिकबनी ॥ कोटिनछबिलाजैहां० ॥ ५ ॥ झी
ञ्झुसगकलगीबनी॥शिरतिलकबिराजैहां ॥ ६ ॥ नी
लकंजकटिकेहरी ॥ करकंकनराजैहां० ॥ ७ ॥ बालली
लारघुनाथकी ॥ सुरनरमुनिगावैहां० ॥ ८ ॥ तुलसिदास
परयेहिकृपा ॥ नित्यदरसनपावैहां० ॥ ९ ॥ ७ ॥
पलनाझुलावैश्रीरामको॥कौसल्यामाईहांहां॥टेक॥

रतनजडितकेपालना ॥ रेशमडोरिलगाईहां० ॥ १ ॥ जननीहरखिझुलावही॥झूलेरघुराईहां० ॥ २ ॥ रुमकझुमकजगपयजनि ॥ धुनिअधिकसोहाईहां० ॥ ३ ॥ बालसखालैसंगमें ॥ सरज्यूतटजाईहां० ॥ ४ ॥ कौसल्याश्रीरामकौं ॥ बोलनकोजाईहां० ॥ ५ ॥ आवतदेखीमातुकौं ॥ प्रभुचलहीपराईहां० ॥ ६ ॥ बारबार श्रीरामकौं ॥ तुलसी बलिजाईहां० ॥ ७ ॥ ८ ॥

कनकमुरलिया कितैधरी ॥ देदेमेरिमाईहांहां ॥ ॥ टेक ॥ भोरहोत हरिखेलनगये ॥ सबसखा बोलाईहां० ॥ १ ॥ अपना अंगनामेंखेलिये ॥ मिलिदोनौ भाईहां० ॥ २ ॥ खेलरच्यौ बहुभांतिकौ ॥ जमुनातट जाईहां० ॥ ३ ॥ गृहगृहकी सबगोपिका ॥ दरसनको आईहां० ॥ ४ ॥ ईतमेसुता वृषभानुकी ॥ मेरिवंसी चुराईहां० ॥ ५ ॥ दधिमाखन मेरोखायके ॥ नहि देतदिखाईहां० ॥ ६ ॥ दधिगोरस ऊंचेधर्यों ॥ पहुँचौ नहिमाईहां० ॥ ७ ॥ मातुजसोदाकिगोदमे ॥ बोले तुतराईहां० ॥ ८ ॥ घूंघटबदन छिपायकै ॥ वंसीले आईहां० ॥ ९ ॥ श्रीभटके आनंदभये ॥ हरिवंसी पाईहां० ॥ १० ॥

वेदपुराणविमलजसगावै॥जययमुनामहरानी॥टेक॥ गौलोकसेधाराआई ॥ बोलतमधुरीबानी ॥ निसदिन जमुनाबहतदूधकी ॥ मूरखजानैपानी ॥ १ ॥ कालि

दहपरसहस्रधारा ॥ मुक्तिभरेजहाँपानी ॥ निसदिनजमु
नालहरलेतहैं ॥ बोलतजयजयबानी ॥ २ ॥ चीरघाट
स्नानकरनकों ॥ आयेहैंमुनिज्ञानी ॥ हलधरगिरधरमद
नमनोहर ॥ विनतासुतअगवानी ॥ ३ ॥ धीरेसमीरेजमुना
तीरै ॥ जहाँबिहरैरजधानी ॥ सूरदासजमुनाजीकीमाहे
मा ॥ श्रीमुखआपबखानी ॥ ४ ॥ १० ॥

अवधछोडिकहूँअंतनजैहो ॥ रामनामगुणगैहोजी
॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन ॥ नित्यउठि
दरसनपैहोजी ॥ १ ॥ सारँगधनुषबानकरराजे ॥
पीतांबरपाहेरैहोजी ॥ २ ॥ रतनसिंहासनआपबिरा
जे ॥ तुलसीपुष्पचढैहोजी ॥ ३ ॥ छप्पनभोगछत्ति
सोव्यञ्जन ॥ नित्यउठिभोगलगैहोजी ॥ ४ ॥ क्रीट
मुकुटमकराकृतकुंडल ॥ उरवनमालपहिरैहोजी ॥ ५ ॥
शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक ॥ नारदध्यानलगैहोजी
॥ ६ ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी ॥ चरणकमलचित
लैहोजी ॥ ७ ॥ ११ ॥

सीताराम अवधपुरबासी ॥ नीत्यऊठि दरसनपैहो
जी ॥ टेक ॥ रघुबरलक्षमण भरतशत्रुहन ॥ सोभा
वरणिनजावैजी ॥ १ ॥ संगसखा सरज्यूतटबिहरे ॥
रामलखन दोऊभाईजी ॥ २ ॥ सुंदरवदन कमल
दललोचन ॥ उरवनमाल सोहावैजी ॥ ३ ॥ अवधपुरी
नरनारीनिहारै ॥ निरखि परमसुखपावैजी ॥ ४ ॥

मातुकौसल्या करतआरती ॥ अग्रदास बलिजावैजी ॥ ५ ॥ १२ ॥ इति रविवारके मंगल संपूर्णम् ॥

॥ अथ सोमवारके मंगल लिख्यते ॥

दशरथसुतअरुजनकनंदनी ॥ चितवनमेंचितचोरेरी ॥ टेक ॥ नान्हिनान्हिबुन्दपवनपुरवैया ॥ बरखत थोरेथोरेरी ॥ १ ॥ हरिहरिभूमिघटाझुकिआई ॥ सरज्यू लेतहिलोरेरी ॥ २ ॥ उपवनबागविहङ्गमबोले ॥ दादुर मोरचकोरेरी ॥ ३ ॥ हयदलपयदलगजदलरथदल ॥ कोटिबनैचहुँओरेरी ॥ ४ ॥ बाजततालमृदङ्गझाँझ डफ ॥ संखनकीघनघोरेरी ॥ ५ ॥ नागरिनासलियावै पियाको ॥ सियाजीहँसैमुखमोरेरी ॥ ६ ॥ अग्रदासह रिरूपनिहारै ॥ चरणकमलबलिहारेरी ॥ ७ ॥ १ ॥

सोसुखउमाकहाँलगिवरणों ॥ सीतारामजीअयोध्याआयेरी ॥ टेक ॥ बनसरजायअसुरसंहारै ॥ देव सबैसुखपायेरी ॥१॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकिये ॥ काटैपापसिलाकेरी ॥ २ ॥ जायजनकपुरधनुषउठाये ॥ भूपसबैसुरझायेरी ॥ ३ ॥ जानकीहाथलियेवरमाला ॥ रघुवरउरपहिरायेरी ॥ ४ ॥ सीताजीब्याहीअवधपुर आये ॥ घरघरबजतबधाईरी ॥ ५ ॥ लङ्काजायकेराव णमारे ॥ राजाबिभीषणपायेरी ॥ ६ ॥ पुष्पविमानचढै रघुनंदन ॥ नगरनिकटहरिआयेरी ॥ ७ ॥ सुरनरमुनिब्र ह्मादिदेवता ॥ पुष्पनकी झरिलायेरी ॥ ८ ॥ बरषतपु

ष्प देवमुनिहरखै ॥ आनंद मंगलगायेरी ॥ ९ ॥ सीता जीसहित सिंहासनबैठे ॥ भरतजी चँवरढुरायेरी ॥१०॥ मातकौसल्या करतआरती ॥ आनंदउरनसमा येरी ॥ ११ ॥ तुलसीदास हरिरूपनिहारे ॥ चरणकमल चितलायेरी ॥ १२ ॥ २ ॥

छैलछबीलेराजादशरथजीके ॥ राजकुंवरदोउबाँकेरी ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुण्डल ॥ तापरक लंगीझलकेरी॥१॥विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियौ ॥ असुरमारिसुररारवेरी ॥ २॥ बाहुमारैसुबाहुमारे ॥ काटेपाप सिलाकेरी ॥ ३ ॥ तोरैचापसरासनसजनी ॥ भूपसबैसुरझायेरी ॥ ४ ॥ सखीसयानीमिथिलापुरकी ॥ भाग्यउदयभयेवाकेरी ॥ ५ ॥ चारौकुंवरब्याहेराजादशरथ ॥ अवधपुरीरथहांकेरी ॥ ६ ॥ अवधपुरिकीबधूनिहारे ॥ निरखिपरमसुखपायेरी ॥ ७ ॥ मातकौशल्याकरतआरती ॥ सखियनमंगलगायेरी ॥ ८ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर ॥ वेदबहुतजसगायेरी ॥ ९ ॥ ३ ॥

बाँकीचाल प्यारेराघोजीकी ॥ बाँकीचितवनपरबलिहारी ॥ टेक ॥ बाँकेसीरजरकसिकीपगिया ॥ बाँकी कलगीमोहिलगेप्यारी ॥ १ ॥ बाँकेभालतिलक सिर सोहै ॥ बाँकेभृकुटी मोहतीप्यारी ॥ २ ॥ बाँकेहार गलेमोतियनके ॥ बाँकीकुंडलकी छबिन्यारी ॥ ३ ॥ बाँकेधनुष बानकरराजै ॥ बाँकीकछनी मोहीलगेप्यारी

॥ ४ ॥ बाँकेचरणकमलकीसोभा ॥ बाँकेनूपुरकीछवि न्यारी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीके प्रभुसुखसागर ॥ बाँकेलक्षण मोहैंनरनारी ॥ ६ ॥ ४ ॥

आजुजनकपुर मंगलमाई ॥ टेक ॥ दधिदूर्वारोचनफलफूला ॥ जहाँतहाँबन्दनवारबँधाई ॥ १ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता ॥ आनंदउरनसमाई ॥ २ ॥ जहाँतहाँबाजाबाजनलागे ॥ गावहिंनौत्तमनारिबनाई ॥ ३ ॥ नाचहिंनभअप्सरामुदितमन ॥ पुनिपुनिवर्षहीसुमनसोहाई ॥ ४ ॥ करिअस्नानदानन्टपदीन्हौ ॥ गौगजबाजीभूमिसमुदाई ॥ ५ ॥ जेईजोईभावैसोईसोई दिन्हौं ॥ बिदाकियेबहुभाँतिबनाई ॥ ६ ॥ जनकनंदनीवदनविलोके ॥ तुलसीदास बारबारबलीजाई ॥ ७ ॥ ५ ॥

आजुजनकपुर मोहनीडारी ॥ टेक ॥ सुंदरस्यामरामरघुनंदन ॥ मोहेलियोसुरपुरनरनारी ॥ १ ॥ देशदेशकेभूपतिआये ॥ ऊठेनधनुषमहाअतिभारी ॥ २ ॥ गुरुआज्ञालैरामजीचलेहैं ॥ तोयोंधनुषमहाअतिभारी ॥ ३ ॥ सबभूपनकोमानमथनाकियो ॥ तोडैधनुषरघुनाथखरारी ॥ ४ ॥ जानकीहाथलियेवरमाला ॥ जयमालासियपियउरडारी ॥ ५ ॥ तुलसीदासदुल्हरघुनंदन ॥ दुलहिनीमहाराणीजनकदुलारी ॥ ६ ॥ ६ ॥

रंगमहल सियाजनकदुलारी ॥ टेक ॥ प्रगटभई मिथिलापूरअदभूत ॥ रुपधरेसुंदरमहाराणी ॥ १ ॥ भँवर

केशासिरसोहैसुंदर ॥ सुरंगचुनरी प्रेमपियारी ॥ २ ॥ रुमकझुमक पगनूपुरबाजे ॥ मोहीलियेसुरपुरनरनारी ॥ ३ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ वरनत शेष सारदाहारी ॥ ४ ॥ तुलसीदास सेवैरघुनंदन ॥ दसरथसुत अरुजनकदुलारी ॥ ५ ॥ ७ ॥

दोऊराजकुमार, महाराजकुमार, मुनिसंग मिथिलाआयेहै ॥ टेक ॥ सखीक्रीटमुकुट माथेबन्यो, घुंघुरवालेकेस ॥ वैजंतीमालागलै, अच्छेसुंदरवेस ॥ १ ॥ सखीभालतिलकमाथैबन्यो, भौंहचढीहैकमान ॥ सुरनरमुनिसबमोहेये, अच्छैसरसनिधान ॥ २ ॥ सखीअग्रमुखनासाबनी, मुखचंद्रसमान ॥ जगमगज्योतिविराजही, मानोकोटिकभानु ॥ ३ ॥ सखीकरकोदंडविराजही, कटिभाथातीर॥मनहरिलियो माईमाधुरी, मोहैरघुबीर ॥ ४ ॥ सखीअनब्याहि हुलसीफिरै, ब्याहिलैतऊसास॥गौनेकीसौनेरही, लागिरघुवरआस ॥ ५ ॥ सखीबचन सबन ऐसोकह्यो, गुरूपुरजनलोक ॥ नाहकवैदबुलाईये, जावैनहीरोग ॥ ६ ॥ सखीशिवधनु कठिणकठोरहै, दोउअतिसुकुमार ॥ भरीसभामेंमायोहै सबभूपगुमान ॥ ७ ॥ सखीनयननमेंबसवोकरौ, निसदिनअरुरात्य ॥ बीरभजौरघुनाथकौ, जाचौनहीआन ॥ ८ ॥ सखीरामलखणदोभ्रातहै, सियाअधिकसोहाय ॥ तुलसीदासहृदयधरै, चरणनचितलाय ॥ ९ ॥ ८ ॥

सीतारामबिराजहीं, अवधेसकुमार, महाराजकुमार ॥ टेक ॥ सखिक्रीटमुकुटसिरराजहीं, हिरारतनज डाय ॥ द्युतिकुंडलछबिराजहीं, मोतियनछबिछाय ॥ ॥ १ ॥ सखिकटिपर पीतलपेटिहै, करसारंगबान ॥ चितवनमैचितचोरहै, मानौकंदर्पबान ॥ २ ॥ सखि संगसखा सबराजहीं, सरयूतटजात ॥ चपलतुरंगन चावहीं, मोहैनरनारी ॥ ३ ॥ सखिसुमन बागबिचरा जहीं, संगचारौभाई ॥ पवनकुमारकरजोरिके, करैम धुरिबयार ॥ ४ ॥ सखिब्रह्माविष्णु महेसहै, सनका दिचारौभाई ॥ अस्तुतिकरैकरजोरिकै, विनवौसन मान ॥ ५ ॥ सखिकुंभजऋषि अरुआवहीं, नारदकरै गान॥रामसखेहृदयधरै, चित्तलियोहै चोराय ॥६॥९॥

आजमहामंगलमिथिलापुर ॥ घरघरबजतबधाईरी ॥ टेक ॥ रमारुपगुणधामजानकी ॥ सुरनरमुनिसुख दाईरी ॥ १ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा ॥ केसरकीच मचाईरी ॥ २ ॥ घूंघुरवारेअलकवदनपर ॥ मधुकरर हैलोभाईरी ॥ ३ ॥ कटिकिंकिनीपगनूपुरबाजे ॥ मु निमनरहैलोभाईरी ॥ ४ ॥ हरखैदेवसुमनवहुवरखै ॥ आनंदउरनसमाईरी ॥ ५ ॥ शिवब्रह्माजाकोपारन पावै ॥ नारदध्यानलगाईरी ॥ ६ ॥ शेषसहस्रमुखरट तनिरंतर ॥ सोवाकोपारनपाईरी ॥ ७ ॥ मातुसुनय नाकरतिआरति ॥ तुलसीदासगुणगाईरी ॥ ८ ॥ १० ॥

भूपकुमारनदानसखीरी ॥ तातकठिनप्रणठान्यौरी॥ ॥ टेक ॥ बालमराल लालअतिकोमल ॥ अंगपुष्पद लभीनौरी ॥ १ ॥ प्रेमविवस जलभरैनयनमै ॥ चुनरी अंचलभीनौरी ॥ २ ॥ कोईसमुझावौ जायपिताको ॥ कौनेऐसोमतदीनौरी ॥ ३ ॥ कुलिसकठौर पिनाक संभुको ॥ रावणबल हरिलीनौरी ॥ ४ ॥ देखतहालबि हालजानकी ॥ नाथधनुष करलीनौरी ॥ ५ ॥ तोर्योध नुष सियासुखदीनौ ॥ भाँवरिसियसंगलीनौरी ॥ ६ ॥ सीताजीब्याही अवधपुरआये ॥ दशरथद्रव्यलुटायौ री ॥ ७ ॥ जाचकसकल अजाचककीनौ ॥ तुलसीदास वरमाग्यौरी ॥ ८ ॥ ११ ॥

रंगभीनैरघुनाथकुंवरकौ ॥ ईनगलियन कोईलावौ री ॥ टेक ॥ अटाचढीसबछटानिहारै ॥ तनकीतपनबु झावौरी ॥ १ ॥ मिथिलापुरनरनारीनिहारै ॥ धरिएक काऊविलमावौरी ॥२॥ जरकसिपाग केसरियाजामा॥ पैजनियाझमकावौरी ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुं डल ॥ उरवनमालसोहावौरी ॥ ४ ॥ सियासखीगोख नसगजोहै ॥ रसभरिगारीगावौरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजी केप्रभुसुखसागर ॥ हंसिहंसिकण्ठलगावौरी ॥६॥ १२ ॥

रतनजडितमंडपतरराजे ॥ रघुवरस्यामसलौनारी ॥ टेक ॥ मिथिलापुरनरनारीसबनपर डारिदियोपढि टोनारी ॥ १ ॥ एकस्यामलएकगोरमनोहर ॥ मुनिज

नकेमनहरनारी ॥ २ ॥ सुंदरवदनकमलदललोचन॥उ
रवनमालसोहांवनारी ॥ ३ ॥ चंद्रवदनपरअलकैझलकै
॥ मानहुनागकेछौनारी ॥ ४ ॥ कृपानिवाजकहांलगी
बरणौ ॥ याछबिऊपरबलिहारीरी ॥ ५ ॥ १२ ॥

सुभगचाल सुंदरअतिप्यारी ॥ भरतराममोहिभावै
री ॥ टेक ॥ राजादसरथजीके चारपुत्रहैं ॥ सोभावरणी
नजावैरी ॥ १ ॥ रामलक्ष्मणअरु भरतशत्रुहन ॥ वेद
विमल जसगावैरी ॥ २ ॥ सरज्यूकेतीरे खेलरच्यौहै ॥
सुंदरबान चलावैरी ॥ ३ ॥ सरज्युनहाईचलैरघुनंदन ॥
चपलतुरंग नचावैरी ॥ ४ ॥ अवधपुरीकीवधूअटाच
ढी॥निरखीपरमसुखपावैरी ॥ ५ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादि
देवता ॥ इंद्रपुष्पझरीलावैरी ॥ ६ ॥ मातुकौसल्या कर
तआरति ॥ आनंदउरन समावैरी ॥ ७ ॥ रामसेवक
जीकै[illegible] ॥ चरणकमल चितलावैरी ॥ ८ ॥
॥ १४ ॥ इतिसोमवारकै मंगल संपूर्ण ॥

॥ अथ मंगलवारकै मंगल लिख्यते ॥

आयेहो सियारघुनंदनआये ॥ अवधपुरीसुखदेनरा
मरघुनंदनआये ॥ टेक ॥ सीताजीसहित सुमित्रानंदन,
औरसुग्रीवसोहाये ॥ जामवंतहनुमाननलनल, और
अंगदमनभाये ॥ १ ॥ हनुमतजाय भरतजीसौभेटे,
समाचारसुनिपाये ॥ रावणमारिअसुरसबमारे, राज
बिभिषणपाये ॥ २ ॥ श्रवणनसुनतभरतउठिधाये, दर

सनपावनपाये ॥ पुष्पविमानदूरतेदेखै, एकटकध्यान लगाये ॥ ३ ॥ पावनपरतअनुजदोउभेटै, हरिहँसिकंठ लगाये ॥ उतमनारीअयोध्यापुरकी, कंचनकलसभराये ॥ ४ ॥ बरखतपुष्पदेवमुनिहरखै, गुरुजीकेआश्रम आये ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता, देवनदुंदुभीबजाये ॥ ५ ॥ पुनिगृहआयमिलेमातनसों, मोतियनचौकपुराये ॥ गृहगृहतेबनिकेबहुबनिता, मंगलगावतआये ॥ ६ ॥ मंदिरभीरभईबहुतेरी, आनंदउरनसमाये ॥ फूलेफिरतअयोध्यावासी, घरघरबजतबधाई ॥ ७ ॥ बहु मेवापकवानमिठाई, सीतारामजीकोभोगलगाये ॥ मातकौशल्याकरतआरती, मनवांछीतफलपाये ॥ ८ ॥ सीताजीसहितसिंहासनबैठे, भरतजीचँवरढोराये ॥ तुलसीदासतिहुंलोकआनंदभये, चारवेदजसगाये ९॥१॥

सखिरामजी अयोध्याआये ॥ आजमहामंगलकौसलपुर ॥ टेक ॥ पुष्पविमान चढेरघुनंदन ॥ बिभिषण साथेलाये ॥ १ ॥ नगरअयोध्या होतकोलाहल ॥ घरघरवजतबधाये ॥ २ ॥ हनुमानसे पायकउनके ॥ लंकाजीतिघरआये ॥ ३ ॥ विप्रनकोबहु दानदेतहै ॥ अक्षयभंडारलुटाये ॥ ४ ॥ फूलेभरत शत्रुहनफूले ॥ फूलिकौसल्यामाई ॥ ५ ॥ सीताजीसहित सिंहासन बैठे ॥ भरतजीचँवरढोराये ॥ ६ ॥ माधोदास संत सब फूले ॥ आनंदउरनसमाये ॥ ७ ॥ २ ॥

लंकाजीतिकैआये, रघुपति रणधीर ॥ टेक ॥ सखि जामवंतसुग्रीवनल, हनुमतरणधीर ॥ अवधनगरआनं दभये, सरज्यूनिरमलनीर ॥ १ ॥ सखिसुवरणकलसस वारीये, पुरजनबहुभीर ॥ सखियनमंगलगाईये, सुंदरसु भगसरीर ॥ २ ॥ सखिरतनसिंहासनसोहीये, सुखसाग रक्षीर ॥ बामैंअंगसोहैजानकी, दहिनेलक्ष्मणवीर ॥ ३ ॥ सखिसुरनरमुनिजयजयकरैं, वरखैसुरवरफूल ॥ सरयू दाससरणेगये, सुमिरेरघुवीर ॥ ४ ॥ ३ ॥

जलकैसेभरौंसरज्यूगहिरी ॥ सनमुखराजा रामजी खडे ॥ टेक ॥ अवधनगरसेंचलिमेरिसजनी ॥ हातघडा सिरपरगगरी ॥१॥ अपनेअपनेभूवनतेंनिकसी ॥ कोऊ स्यामलकोउहैगोरी ॥ २ ॥ ठाडेभरौंराजारामदेखतहै॥ बैठिभरौभीजेचुनरी ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन॥ सनमुखहैहनुमानजीबली ॥ ४ ॥ धीरेचलौंमोहिवारल गतहै ॥ उमँगचलौछलकेगगरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीके प्रभुसुखसागर ॥ चेरीहोयकेचरणपरी ॥ ६ ॥ ४ ॥

आयेअवधपुरीअभिराम रामनिजधाममैआये ॥ टेक ॥ पुन्यपुंजपावनयहनगरी, निरखतहृदयजुडा ये ॥ जरामरणदुखमिटतपलकमैं, रामजीदरसजब पाये ॥ १ ॥ रामभक्तिउपजीयहमनमैं, दिनदिनआनं दअघाये ॥ सुरमुनिसंतताहिपरसंसत, महिमालखन पाये ॥ २ ॥ कोटिनअधमगयेहरिपुरकौ, अवधदेहतजि

गाये ॥ फेरिकबहुंभवजन्मनहींआवै, रामचरणवर पाये ॥३॥तुलसीभक्तिमुक्तिजोचाहै, अवधवसो सोईआये परमधामवैकुंठनगरसै, होईहैतेहिमनभाये ॥ ४ ॥ ५ ॥

आयेस्यामसुंदर रघुनाथ, रामफुलवारिमे आये ॥टेक॥विश्वामित्रकौ यज्ञसुफलकियो, ऋषिपतनीमन भाये ॥ सुरसरीकथा बुझिकौसिकसो, जनकनगरहरी आये ॥१॥ जयजयकारभयेसुरपुरमैदेवनदुंदुभिबजाये गुरुअनुसासनपायकृपानिधि, तुलसीलेनसिधाये ॥२॥ तेहिअवसरसिया सखिनसंगलै, सरमंजनकरवाये ॥ ह रषसमेत पूजिगिरिजाकौ, मनवांछितफलपाये ॥ ३ ॥ एकसखीसियासंगसैंबिछुरी, रघुनंदनलखिपाये ॥ देख तरुप मगनभईसजनी, आनंदउरनसमाये ॥ ४ ॥ तेपुनि आईकहीसखियनसें, दरसलागिअकुलाये ॥ तुलसीदा सप्रभुसियहिलखाये, सीयाजीपरमसुखपाये ॥ ५ ॥ ६ ॥

आयेएकसखी हरखायकहत, दोऊनृपसुतआये ॥ येहोसखीदोऊ ॥ टेक ॥ स्यामगौर किमीकहौवखानी, कोटिमनौजलजाये ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुण्डल, माथेतिलकबनाये ॥ १ ॥ सुंदरअधरकपोलनासिका॥भृ कुटीकुटिलसोहाये ॥ सुभगग्रीवमोतियनछबिछायेध नुषबाणमनभाये ॥ २ ॥ उरभृगुलता मनोहरराजे, क टिकिंकीनीसोहाये ॥ उदररेखत्रिभुवन छबिछाये, चर णनेहअनुहारे ॥ ३ ॥ अवतरेहैंजगमंगलहेतुन, नि

रखिराममनभाये ॥ हरिदास छबिकहांलगिवरणौ, शेषपारनही पाये ॥ ४ ॥ ७ ॥

आयेमिथिलापुरि सुखदेन, रामकौसिक संग आये ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसोहाये ॥ प्रगटतदुरत मगमनकौतुक, कौशिकतपनिधिआये ॥ १ ॥ मारगचलतताडिकामारी, गौतमनारिउधारी ॥ केवटतारीसुरसरीउतरे, मगवासिनसुखपाये ॥२॥ मुनिपदपूजिराउसनमाने, कौशिककुंवरबोलाये ॥ बालमरालबंधुदोउनिरखी, विदेहपरमसुखपाये ॥ ३ ॥ स्यामबरणसुंदरतनसोभा, कटितूणीरसोहाये ॥ पीछे गौरमनोहरबंधु, सरदइंदुछबिछाये ॥ ४ ॥ केहरिठवनि चलतदोउढोटा, बिथियनपुष्पबिछाये ॥ सुनिनरनारीहरखिउठिधाये, निरखिपरमसुखपाये ॥ ५ ॥ मुनिअनुसासनपाईबन्धुदोउ, सुमनबाटिकाआये ॥ रघुवरछबिकोदेखिजानकी, गौरीसोंबरपाये ॥ ६ ॥ सबभूपनकोमानमथनकियो, धनुषढिगप्रभुआये ॥ तोरैधनुषभूपसबहारे, देवसुमनझरिलाये ॥ ७ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, मंजीरासहनाये ॥ जानकीहाथलियेवरमाला, रघुवरउरपहिराये ॥ ८ ॥ तोरैधनुषशब्दभयभारी, भृगुनायकचलिआये ॥ टूटपिनाकदेखितेहीअवसर, भृकुटीकुटिलबनाये ॥ ९ ॥ मधुरवचनलक्ष्मणप्रभुतापे, अनलआहुतीपाये ॥ देतहिधनुषआपचढिग

येउ, बद्रिविपिनसिधाये ॥ १० ॥ मुनिअनुसासन पा
यजनकनृप, दूतनअवधपठाये ॥ दूतबचनसुनिदशर
थहरखै, नगरनिसानबजाये ॥ ११ ॥ दूतबचनसबभ
रतसुनाये, पुनिउठिगुरुगृहआये ॥ दूतबचनसबगुरुही
सुनाये, पुनिपुरबातजनाये ॥ १२ ॥ गुरुअनुसास
नपाय सचिवसब, तुरतबरातबनाये ॥ गुरुसमेतदस
रथरथचढिके, जनकनगरनियराये ॥ १३ ॥ भरिभ
रिथारहेमभरिभामिनी, रघुवंसिनपहँआये ॥ गावत
गीतमनोहरबानी, कोकिलकंठलजाये ॥ १४ ॥ गजमो
तियनकेचौकपुराये, पुष्पनमंडपछाये ॥ रामजानकी
फिरतभांवरी, सखियनमंगलगाये ॥ १५ ॥ रघुवर
लक्ष्मणभरतशत्रुहन, चारोंकुंवरबिवाहे ॥ दायेजभूरी
जनकनृपदिन्हौ, दसरथविदाकराये ॥ १६ ॥ मंगलगा
नकरैनरनारी, आनंदपूरन समाये ॥ बंधुसमेतबिलोक
तजननी, विप्रनदानदिवाये ॥ १७ ॥ मातुकौसल्या
करतआरती, त्रिभुवनमंगलगाये ॥ गिरधरदास आस
रघुवरकी, चारबेदजसगाये ॥ १८ ॥ ८ ॥

जानचढैरघुनंदनआये ॥ हनुमतचँवरढुरायोरी ॥
॥ टेक ॥ जामवंतसुग्रीवबिभीषण, अरुअंगदमनभा
योरी ॥ १ ॥ देखतप्रभुहीदेवसबहरखे ॥ दंडकवनप्र
भुआयोरी ॥ २ ॥ देखिसीयादंडकवनसोभा ॥ ऋषि
विचरैभयत्यागोरी ॥ ३ ॥ चरीतपुनितकियेरघुनंद

न ॥ अवधनिकटहरिआयोरी ॥ ४ ॥ उतरेपुष्पनिकटसरयूके ॥ रघुपतिआज्ञापायोरी ॥ ५ ॥ व्याकुल अंधअवधजेहिकारण ॥ उदितअरुणहोयआयोरी ॥ ॥ ६ ॥ होतअवधआनंदवधाई ॥ सखियनमंगलगायोरी ॥ ७ ॥ सुखअवलोकी लोकजेहिलाजैं ॥ रघुपतिपुरीसुहायोरी ॥ ८ ॥ चरअरुअचरहरखभयेजहाँतहाँ ॥ रघुपतिकीरतिगायोरी ॥ ९ ॥ द्विजनसहितआयेन्टप द्वारे ॥ अग्रदासगुणगायोरी ॥ १० ॥ ९ ॥

है लंकाजीति रघुनंदनआये ॥ हनुमतदास कहायोरी ॥ टेक ॥ अंजनीकेनंदन महाजगवंदन ॥ तीन लोकजसगायोरी ॥ १ ॥ बागउखारि समुंद्रविचडारे ॥ जनकसुतासुधिलायोरी ॥ २ ॥ जोसागरकों गर्वकरतुहै ॥ तापरसिलाउतरायोरी ॥ ३ ॥ सेतुबांधि उतरेरघुनंदन ॥ कपिदलकियेसहायोरी ॥ ४ ॥ रावणकेदस मस्तकछेदै ॥ राजविभिषणपायोरी ॥ ५ ॥ पुष्पविमानचढेरघुनंदन ॥ अवधनगरनियरायोरी ॥ ६ ॥ नरनारीसवसुक्तमनाये ॥ रामसियाघरआयोरी ॥ ७ ॥ सिंहासनसीयवैठिरामसंग ॥ द्विजनदान बहुपायोरी ॥ ८ ॥ तुलसीदासकोंभक्तिदानदियो ॥ दीनजानमनभायोरी ॥ ९ ॥ १० ॥

देखोरीदोऊदसरथनंदन॥नगर अयोध्याआयोरी॥

॥ टेक ॥ पुष्पविमानचढैरघुनंदन ॥ भक्तविभिषणसाथेरी ॥ १ ॥ लक्ष्मणसहितअयोध्याआये ॥ जानकीबायेअंगेरी ॥ २ ॥ हनूमानसेंपायकजिनके ॥ लंकाजीतघरआयेरी ॥ ३ ॥ चरणधोयचरणामृतलिन्हो ॥ सिंहासनवैठायेरी ॥ ४ ॥ सीताजीसहितसिंहासनबैठे ॥ भरतजीचँवरढुरायेरी ॥ ५ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता ॥ पुष्पनकीझरिलायेरी ॥ ६ ॥ नगरअयोध्याहोतकोलाहल ॥ सोरभयेअतिभारेरी ॥ ७ ॥ विप्रनकोबहुदानदेतहै ॥ अक्षयभंडारलुटायेरी ॥ ८ ॥ फूलैभरतत्रुहन भाई ॥ फूलीकौसल्यामाईरी ॥ ९ ॥ माधोदाससंतजन फूलै ॥ आनंदउरनसमाईरी ॥ १० ॥ ११ ॥

आयेहो कृष्ण यदुनंदन आये ॥ मथुरापुरी सुखदेन ॥ टेक ॥ गोपीनसहितरोहिणीनंदन,औरअक्रूरसोहाये ॥सखामंडली राजतमोहन, नटवरभेषबनाये ॥१॥ रथपरवैठेचलेयदुनंदन, सखियनमदनजगाये ॥ विलपतरुदत नयनजलवरषत, विरहानलतनजाये ॥ २ ॥ गोपीग्वालकरतकौतुहल, जमुनातटप्रभुआये ॥ सुफलक सुतजवमंजनकीन्हो, जलविचरुपदिखाये ॥ ३ ॥ उतरतपारवसनहरीलीन्हो, सबहीआपपहिराये ॥ सीरकोतनमेतनकोगहनो, अदभुतरुपबनाये ॥४॥ कुबजा तहाँ चंदनघसिलाई, चरचितरुचिरबनाये ॥ परसतचरणरुपभईअदभुत,रविशशिकोटीलजाये ॥ ५ ॥ गजकेदंतउ

खारिकृपानिधिदसविधि, रूपदिखाये ॥ मुष्टिकचाणू
रजुगलगहिमारै,मृगपतिठवनिलजाये ॥ ६ ॥ केसपकरि
हरिकंसपछारे, देवनदुंदुभीबजाये ॥ विपुलसुभग ब्रह्म
शिवनारद, जयजयकारमनाये ॥ ७ ॥ उग्रसेनकौ राज
तिलकदियो, जदुवर अधिकसोहाये ॥ उडतनिसानभे
रिसहनाई, घरघरवजतवधाये ॥ ८ ॥ पुनिगृहआयमि
लेमातनसों, पितुकरजोरिसमुजाये ॥ भूसरवृन्दविपुल
श्रुतिगावै, नरनारिनमनभाये ॥ ९ ॥ पिताओर मात
हरखिउरलाये, बंदिगारछुडाये ॥ मथुराहरप भईबहु
तेरी, कामिनीमंगलगाये ॥ १० ॥ शिववसनकादि
आदिब्रह्मादिक, अहिपतिपारनपाये ॥ चेतनदासधन्य
ब्रजमंडल, चारवेदजसगाये ॥ ११ ॥ १२ ॥

आयेमथुरापुरीसुखदेनकृष्णअघमोचनआये ॥ टेक॥
नंदभुवनआनंदभयोहै, निरखतसुखनंदआये ॥ घर
घरगोकुलबजतबधाई, जनमें प्रभुयदुराये ॥ १ ॥ ज
सोमतिगोदलियेवनमाली, मंगलमोदवढाये ॥ देतअ
सीसचुंबसुखभामिनी, आनंदउरनसमाये ॥ २ ॥ जाकी
दृष्टिपरेबनवारी, तेहिनाहिसवनसोहाये ॥ देखिसुरासुप
लकनहीठारे, रहेचरणलपटाये ॥३ ॥ माधोसमयजानी
ब्रह्मादिक, गोकुलआयेहैधाये ॥ सुरनरमुनिइन्द्रादिदेव
ता, अस्तुतिकरंतबनाये ॥ ४॥ १३॥ इतिमंगलवारकेमं०

॥ अथ बुधवारके मंगल लिख्यते ॥

चलौसखी वृन्दावनचलीये ॥ मोहनवेनु बजायेरी ॥ ॥ टेक ॥ वेनुसुनत ब्रह्मादिकमोहै ॥ वेदपढन नहिंपायेरी ॥ १ ॥ वेनुसुनत शिवसंकरमोहै ॥ ध्यानधरण नहिं पायेरी ॥ २ ॥ वेनुसुनतइंद्रादिकमोहै ॥ राजकरन नहिं पायेरी ॥ ३ ॥ वेनुसुनत सुरनरमुनिमोहै ॥ भजन करननहिंपायेरी ॥ ४ ॥ वेनुसुनत जमुनाजलमोहै ॥ नीरवहननहिंपायेरी ॥ ५ ॥ वेनुसुनत गौवछरामोहै ॥ दूधपीयन नहिंपायेरी ॥६॥ वेनुसुनत व्रजवनितामोहै॥ घरअंगना नसुहायेरी ॥७॥ वेनुसुनतसवगोपिकामोहै॥ झुंडझुंड उठिधायेरी ॥ ८ ॥ वेनुसुनत खगपंछीमोहै॥ चुगाचुगन नहिंपायेरी ॥ ९ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्ण छवि ॥ हरिचरणन चितलायेरी ॥ १० ॥ १ ॥

मदनमोहनजीसें लगनलगीहै ॥ येतनडारुमैवारी ॥ टेक ॥ करुणासिन्धु हैजगवंधु ॥ संतनके हितकारी ॥ १ ॥ मोरमुकुट पीतांवरसोहै ॥ कुंडलकी छविन्यारी ॥ २ ॥ गलेसोहै वैजयंतीमाला ॥ निरखत राधाप्यारी ॥ ३ ॥ जमुनाके नीरतीर धेनुचरावे ॥ ओढे कामरिकारी ॥ ४ ॥ पैठिपताल कालीनागनाथ्यौ ॥ फणपरनचै गिरधारी ॥ ५ ॥ इंद्रकोप चढव्रजऊपर ॥ नखपरगिरवरधारी ॥ ६ ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें ॥ निरतकरै गिरधारी ॥ ७ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछवि ॥ चर

णकमलबलिहारी ॥ ८ ॥ २ ॥

श्रीराधामोहनजीको रूपनिहारो ॥ टेक ॥ छोटेभैया कृष्णबडेबलदाऊ ॥ चंद्रवंशउजियारो ॥ १ ॥ मोरमुकुट मकराकृतकुंडल ॥ पीतांबरपटवारो ॥ २ ॥ हलधरगिरि धरमदनमनोहर ॥ जसोमतिनंददुलारो ॥ ३ ॥ शंख चक्रगदापद्मबिराजै ॥ असुरनभंजनहारो ॥ ४ ॥ जमुना निरेतिरेधेनुचरावै ॥ ओढैकामरकारो ॥ ५ ॥ निरमल जलजमुनाजिकोकीन्हो ॥ नागनाथिलियोकारो ॥ ६ ॥ इन्द्रकोपचढैब्रजऊपर ॥ नखपरगिरिवरधारो ॥ ७ ॥ कनकसिंहासनजदुवरबैठे ॥ कोटिभानुउजियारो ॥ ८ ॥ मातुजसोदाकरतआरती ॥ वारबारवलिहारो ॥ ९ ॥ सुरदासहरीरूपनिहारै ॥ जीवनप्राणहमारो ॥ १० ॥ ३ ॥

आजमहामंगलगोकुलमै ॥ पुत्रजसोदाजायोरी ॥ टेक ॥ पूरेसकलमनोरथमनके ॥ भयोअनंदमनभायोरी ॥ १ ॥ गावतचलीसकलब्रजवनिता ॥ नंदभुवनचलिआयोरी ॥ २ ॥ पायलागिऊठि आदरकिन्हो ॥ जसोमतिनिकटबोलायोरी ॥ ३ ॥ नामकरणसुभधरोगर्गजी ॥ रोचनदूबसंगायोरी ॥ ४ ॥ गुरुजनपुरजनसकलसंतजन ॥ सबकेसिसनवायोरी ॥ ५ ॥ घरीनक्षत्रपरेसुभनीके ॥ यहसुनिसबअनुरागेरी ॥ ६ ॥ धन्यधन्यब्रजकुलनर नारी ॥ नंदपरमबडभागीरी ॥ ७ ॥ वासुदेवभगवान कृष्णजु ॥ नामतिहारोगायोरी ॥ ८ ॥ नामअनंतकहां

लगीवरणौ ॥ वरणतपारनपायोरी ॥ ९ ॥ नाचतगोप कुहाहलपुरमै ॥ भीरनकाहुसमायोरी ॥ १० ॥ यहसु निसुनिनेबिरतिबिसारी ॥ हमनभयेबृजबासीरी ॥ ११ ॥ जाकारणहमजपतपकीन्हो ॥ प्रगटभयेअविनासीरी ॥ १२ ॥ देखैअमरविमाननचढिचढि ॥ आनंदबजतब धाईरी ॥ १३ ॥ ठाढीगावतठाढीहिनाचत ॥ पावतमो तियनमालारी ॥ १४ ॥ देतअसीसपसारतअंचल ॥ चिरंजीरहौनंदलालारी ॥ १५ ॥ कंसविध्वंसभूभार उतारन ॥ तीनलोकसुखदाईरी ॥ १६ ॥ मानदा सप्रभुकेगुणगावत ॥ बारबारबलिजाईरी ॥ १७ ॥४॥

गागरीयाजिनफोरौलालजी ॥ नातोहिदेऊंगीगारी ॥ टेक ॥ हमजमुनाजलभरनजातरही ॥ बीचमिलै गिरिधारी ॥ १ ॥ गागरिफोरिमोरिबहियांमरोरी ॥ मोतियनकीलरतोरी ॥ २ ॥ तुमहोढोटानंदरायके ॥ ह मवृषभानुदुलारी ॥ ३ ॥ जायपुकारोकंसरायपै ॥ खडेर होगिरिधारी ॥ ४ ॥ लेकरचीरकदमचढिबैठे ॥ हमजल माँहिउघारी ॥ ५ ॥ चीरतुह्मारौजबहमदेंगे ॥ जलसे होजावन्यारी ॥ ६ ॥ जलसैन्यारीहमकैसेहोवैं ॥ तुम होपुरुषहमनारी ॥ ७ ॥ पुरइनीपातपहिरिकैनि कसी ॥ कृष्णहँसेदेतारी ॥ ८ ॥ मथुराकेसबलोकहँसत हैं ॥ गोकुलकीसबनारी ॥ ९ ॥ चंद्रसखीभजो बालकृष्णछबि ॥ तुमजीतेहमहारी ॥ १० ॥ ५ ॥

परमधाम गौलोकछोड़ीकै ॥ वृन्दावन हरिआयोरी ॥ ॥ टेक ॥ कृष्णपुत्र वसुदेवदेवकी ॥ नंदभवन पहुंचायोरी ॥ १ ॥ धन्यभाग्यहै नंदयसोमति ॥ जिनहीपरम सुखपायोरी ॥ २ ॥ फूलेफिरत सकलवृजबासी ॥ आनंदउरन समायोरी ॥ ३ ॥ खबरभईज बकंसरायकौ ॥ पूतनावेगि पठायोरी ॥ ४ ॥ मारणआई आपनसाई ॥ जननीकी गतिपायोरी ॥ ५ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक ॥ देवनदुंदुभी वजायोरी ॥ ६ ॥ चन्द्रसखी भजु वालकृष्णछवि ॥ हरिकेचरण चितलायोरी ॥ ७ ॥ ६ ॥

आजुसखी नंदनंदनप्रगटै ॥ गोकुलवजतवधाईरी ॥ टेक ॥ रोहिणीनक्षत्र मासभादौकी योगलगनातिथी आईरी ॥ १ ॥ गृहगृहसेंसववनितावनिके ॥ मंगलगावतआईरी ॥ २ ॥ जोजैसेतैसेउठिधाये ॥ आनंदउरनसमाईरी ॥ ३ ॥ चौवाचन्दन और अरगजा ॥ दधिकीकीचमचाईरी ॥ ४ ॥ यमलार्जुनवृक्षउपारे ॥ जसोमतिसुतउरलाईरी ॥ ५ ॥ वंदीजन गंधर्वगुण गावै ॥ सोभावरणिनजाईरी ॥ ६ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछवि ॥ चरणकमलचितलाईरी ॥ ७ ॥ ७ ॥

आजुमहामंगल गोकुलमै ॥ कृष्णचंद्र हरिजन्मलिये ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरि जन्मलियोहै ॥ जगतपहरुवा सोयगये ॥ १ ॥ जननीजाये जलन अन्हवाये ॥

लैवसुदेवकीगोदादिये ॥ २ ॥ लैवसुदेवचलै गोकुलकौ ॥ उमंगी जमुनाचरणलिये ॥ ३ ॥ भादौमासरैनअंधियारी ॥ शेषनागफनफेरिरहै ॥ ४ ॥ लैवसुदेवद्वारसयेठाडे ॥ हरखिजसोदा गोदलिये ॥ ५ ॥ उलटी रीतिभई गोकुलमें ॥ कन्यादेके पुत्रलिये ॥ ६ ॥ सूरदास हरीकौरूपनिहारे ॥ नंदकेघर आनंदभये ॥७॥८॥

आजुमहा मंगलगोकुलमें ॥ कृष्णचंद्रअवतारलिये ॥ टेक ॥ गृहगृहसेंसबगोपीआई ॥ मधुरेस्वरसेंगान किये ॥ १ ॥ मारनकारनचलीपूतना ॥ दूधपिवत हरिप्राण लिये ॥ २ ॥ अघासुरमारिबकासुरमारे ॥ दावानलकौपानकिये ॥ ३ ॥ यमलाअर्जुनवृक्षउखारे ॥ यादवकुलक तारिलिये ॥ ४ ॥ पैठिपतालकालिनागनाथे ॥ फन परन्रृतकरायलिये ॥ ५ ॥ सातदिवसगिरिनखपरधारे ॥ इंद्रनकौमदमारिलिये ॥ ६ ॥ केसपकरिहरि कंसपछारे ॥ उग्रसेनकौराजदिये ॥ ७ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि ॥ चरणकमलचितलायलिये ॥ ८ ॥ ९

आजुसखीश्रीनंदमहरघर ॥ आनंदबजतबधाईरी ॥टेक॥प्रगटभयेगोपाललालजी॥संतनकेसुखदाईरी॥१॥ गृहगृहसे सबगोपग्वालिनी । मंगलगावतआईरी ॥ २ ॥ बाजाबिबिधिनंदघरबाजे ॥ ढोलमृदंगसहनाईरी ॥ ३ ॥ दधिदूर्वारोचनफलफूला ॥ केसरकीचसचाईरी ॥ ४ ॥ जयजयकारभयेसुरपुरमें ॥ इंद्रपुष्पझरिलाईरी ॥५॥ शि

वब्रह्माजाकोपारनपावे ॥ नारदध्यानलगाईरी ॥ ६ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारै ॥ वेदविमलजसगाईरी ॥ ७ ॥ १०॥

आजुमहामंगलगोकुलमे ॥ ढोटाजसोमतिजायोरी ॥ टेक ॥ जाकोध्यानधरत ब्रह्मादिक ॥ नंदमहरघर आयोरी ॥ १ ॥ वाजाविविधि नंदघरवाजे ॥ घरघरशब्दसुनायोरी ॥२॥ सुनिसुनिनगर नारीनरधाये ॥ तनमनअतिपुलकायोरी ॥ ३ ॥ बारवारविप्रनवोलवाई ॥ जन्मकर्म करवायोरी ॥ ४ ॥ विधिवतकरि नवग्रहकीपूजा॥देवनसमनमनायोरी ॥ ५ ॥ दधिदूर्वारोचन फलफूला ॥केसरकीचमचायोरी ॥६ ॥ जयजयकारभयेसुरपुरमे ॥ इंद्रपुष्पझरिलायोरी ॥ ७ ॥ शिवब्रह्माजाको पारनपावै ॥ नारदध्यान लगायोरी ॥ ८ ॥ सुरदास हरिरूपनिहारै ॥ वेदविमलजसगायोरी ॥ ९ ॥ ११ ॥

आजुकहाँते यागोकुलमे, अदभूतवरपाआईरी ॥ ॥ टेक ॥ मणिगणहारहेमकीधारा, वृजपतिअतिउरलाईरी ॥ १ ॥ बानीविमल पढतद्विजद्वारे, होयहर्षहर्षाईरी ॥ २ ॥ दधिघृतखीर नीरनानारंग, वहिचलैपतरिपनारेरी ॥ ३ ॥ घुम्हीनिसान भेरिसहनाई, महागरजकीघोरेरी ॥ ४ ॥ मागधसूत बंदिजनवोलत, चात्रकबोलतमोरेरी ॥ ५ ॥ आनंदभरे नचहिनरनारी, पहिरीसुरंगरंगसारीरी ॥ ६ ॥ बरनबरन वादरजुकिआये, वरषतन्यारीन्यारीरी ॥ ७ ॥ भूषणवसन अमोलनंदजु,

नरनारीपहिरायोरी ॥ ८ ॥ साखादलफलफूलनयेन
ये,उपवनझालरलागेरी ॥ ९ ॥ दारीदद्रवनमिलेहैसब
नकौ,याचकमनप्रभुपूरेरी ॥ १० ॥ बाढीसुभगसुजल
कीसरिता,बहततीरतरुतोरेरी ॥ ११ ॥ उरलखिमालग
लेमोतियनकी,देखिसबनमनफूलेरी ॥ १२ ॥दयाहेतअ
कुलातगदाधर, ताकेचरणचितलागेरी ॥ १३ ॥ १२ ॥

सुंदरवदनकुंवरिकाहूकी, नितदधिबेचनआवैरी ॥
॥ टेक ॥ कबहुकआवैदधिलुटावै, कबहुकमुखलपटा
वैरी ॥ १ ॥ कबहुकमुरलीछीनलेतिहै, कबहुकआप
बजावैरी ॥ २ ॥ कबहुपीतांबरछीनलेतिहै, कबहुक
आप ओढावैरी ॥ ३ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि,
यहलीलामोहिभावैरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

मोरमुकुटबंसीवारेनें, मनमेरोहरिलीनो ॥ टेक ॥ मं
दिरसेएकसुंदरिनिकसी, ओढिपीतांबरझीनो ॥ रत्नज
डितसिरयेंडुरिसोहै, जमुनामारगलीनो ॥ १ ॥ मैंजमुना
जलभरनजातरही, बीचमिल्योरंगभीनो ॥ मोहिदेखी
मुसक्यातसांवरो, चितवनमेंकछुकीन्हो ॥ २ ॥ बिमलभ
ईजलभरनबिसरिगई, घडाधरणिधरिदीन्हो ॥ लोकला
जकुलकीमरयादा, तनमनअरपणकीनो ॥ ३ ॥ वृं
दावनकीकुंजगलिनमें, ग्वालिनीझगरोकीनो ॥ ग्वा
लबालसबसखाकृष्णके, दानदहीकोलीनो ॥ ४ ॥ कृ
पासखीभईरूपदिवानी, प्रेमसुधारसपीनो ॥ श्रीगोपा

ललालहृदयधारि, जन्मसुफलकरिलीनौ ॥ ५ ॥ १४ ॥

सखिजबसोनँदलालनिहारे ॥ टेक ॥ तबहीसोंबौरी भईडोलूं इतउतगली गिरारे ॥ १ ॥ सीसमुकुटशिरपेंच रतनकौ लसतबार घुँघरारे ॥ २ ॥ खंजननयन मैनमदगंजन अंजन रेख सम्हारै ॥ ३ ॥ कुंडल लोलकपोल मनोहर कोटिभानुउजियारे ॥ ४ ॥ मानौरूप सिंधुमेंखेलत मकरनके द्वैबारे ॥ ५ ॥ मंदहँसनमुख श्यामवरन छबिशशिमनोज लखहारे ॥ ६ ॥ दशन पांतिज्यौं मुतियनकीलर अधर सोहै अरुणारे ॥ ७ ॥ नाकबुलाक कुटिल वरभृकुटी बचनरचन अतिप्यारे ॥ ८ ॥ नारायण नख शिख शृँगारकरठाढे भवनके द्वारे ॥ ९ ॥ १५ ॥

इतिबुधवारकेमंगल ॥ इतिसातोवारकेमंगलसमाप्त ॥

॥ अथजेवनकीगारीप्रारंभः ॥ (राजभोग)

मिलिजेंवतजानकि रामजीसखी, हरखैनिरखैमिथिलापुरकी ॥ टेक ॥ पंचशब्दवैजन्त्रबजावै, गारिगावतपंचमकेसुरकी ॥ १ ॥ जनकभवनमैडारिदुलीचा, ओट करीपीतांबरकी ॥ २ ॥ कुँवरिकुँवरगारिदेतपरस्पर, नारीहँसीन्रपकेकुलकी ॥ ३ ॥ श्रीलालजीमंदमंदमुसक्याने, सियालाडलिघुंघटमैमुसकी ॥४॥ येउरजेसुरझेनपरे अलि, मोहनीदृष्टिपरीउनकी ॥५॥ हासविनोदसुधारससींचत, आनंदबेलिबढीउनकी ॥ ६ ॥चारौभैया-

मीली जेंवनबैठे, रायजनकजोरीनिरखी ॥ ७ ॥ क्रीटमु
कुटमकराकृतकुंडल, स्यामघटाबिजलीचमकी ॥ ८ ॥
रतनसिंहासनरघुवरबैठै, मोतियनकीकलगीझलकी॥९॥
गरुड विमानचढेरघुनंदन, पुष्पनकीबरषाबरखी ॥१०॥
अग्र दासबलिजातसुनयना,बारबारसीतावरकी ११॥१॥

चरणकमलबलिहारी, रघुनाथकुंवरकी ॥ टेक ॥ द
शरथसहित और नृपबैठे, सादरचरणपखारी ॥१॥ जेंव
नबैठैराजानृपदसरथ, बामेंदहीनेंसुतचारी ॥ २ ॥ रत
नजडितमणिकनककटौरा, खटरसभोगलगारी ॥ ३ ॥
छबीनिहारिरनिवासमुदितभये, देतपरस्परगारी ॥ ४ ॥
तीनसौसाठमातुरघुवरकी, सोवहिंकनकअटारी ॥ ५ ॥
सतसुकृतकेसंकरिनिवहै, बरसदिननकीवारी ॥ ६ ॥
तीनसौसाठमातुरघुवरकौ, एकपुरुषकीनारी ॥ ७ ॥
तामैंएकजनककौदीजे, होईहैसुयसतुह्मारी ॥ ८ ॥
जबबोलैदशरथपूरोहित, सुनहुंजनकजीकीनारी ॥ ९ ॥
देहौगारिकसरामललाकौ, बोलहुंबचनसँवारी ॥ १० ॥
जोचाहौसोलेहुँपरीक्षा, राखहुंअपनीअटारी ॥ ११ ॥
निरमलजलसरज्यूजीकौ आचवन, रतनजडावकिझा
री ॥ १२ ॥ करिआचवनसिंहासनबैठे, राजतअव
धबिहारी ॥ १३ ॥ हितकरबीराजानकीलाई, देतहैं
हाथपसारी ॥ १४ ॥ तुलसीदासऐसीछबिरघुवर, हर
खतगाननिहारी ॥ १५ ॥ २ ॥

आरोगोनृसिंहमहाप्रभुआरोगो ॥ टेक ॥ नादरमु
निपनवारोलाये, जलभरिलायेश्रीगंग ॥ १ ॥ लक्ष्मी
जीभोजनआपसुधारे, मनमेंकरतआनंद ॥ २ ॥ छप्प
नभोगछत्तिसोंबिंजन, नानाविधिकेकंद ॥ ३ ॥ भाव
प्रीतिकरिभोजनकीजे, तुममेरेप्राणआधार ॥ ४ ॥ अं
तरघटकेअंतरजामी, सबविधिजाननहार ॥ ५ ॥ आ
रतिसाजिइंद्रलेआये, खोलिदियोपटचीर ॥ ६ ॥ सन
कसनंदनचंवरढुरावे, गारिगावतदासअनंद ॥ ७ ॥ ३ ॥

प्यारीप्रेमलुभानी, २ पीयाजी परमसुखपाईयां ॥
॥ टेक ॥ आज्ञाप्रभुपाउं, २ रुचिकरिबिंजनबनाईयां
॥ १ ॥ सीरासरससोहारी, २ मूगभातफुलकारियां
॥ २ ॥ घृतपाकमिठाई, २ खाजाखुरमा जलेबियां॥३॥
दूधदहीलैआऊं, २ भाजीअनेक कटोरियां ॥ ४ ॥ रु
चिथारसंह्वारुं, २ आनिधरुं प्रभुआगियां ॥ ५ ॥ जें
मोप्रभुप्यारे, २ देतसखी सबगारियां ॥ ६ ॥ निरम
लजलसरज्यू, २ रतनजडावकी झारियां ॥ ७ ॥ आ
चवनप्रभुकीजे, २ रंगमहल पगधारियां ॥ ८ ॥ रुचि
सेजसवारुं, २ रतनजडावकी सेजियां ॥ ९ ॥ जापर
हरिपोढाऊं, २ करगहीं बिंजनाडोलाइयां ॥ १० ॥
चांपुपाँवलालके, २ हितकरि बिरियांपवाइयां ॥ ११ ॥
हँसिबोलैप्रीतमप्यारे, २ नैनसोंनयनमिलाइयां ॥ १२ ॥
जबनिंदझुकीआई, २ ब्रह्माविष्णुमहेसियां ॥ १३ ॥

जागैसोईपावै, २ मुकुन्ददास बलिजाइयां ॥ १४ ॥४॥

भोजनसमयजानिमिथिलापति ॥ दशरथबोलपठा येजूरामजी० ॥ टेक ॥ सुतनसमेतसंगप्रीयपरिजन॥द्वि जनसहितनृपआयेजू ॥ १ ॥ सहितसनेहजनकनृपभे टे ॥ नृपमंदिरलैआयेजू ॥ २ ॥ कनककलसभरीलिये गंगजल ॥ निजकरपांवपखारेजू ॥ ३ ॥ चन्दनकीचौ कीसुचिसुन्दर ॥ तापरनृपहिपधारेजू ॥४॥ जनजनप्रति कंचनकीथारी ॥ जनप्रतिबिलगकटोरेजू ॥ ५ ॥ बिंज नविविधिपरोसनलागे ॥ चतुरसूवारनथोरेजू ॥ ६ ॥ खाजाखुरमातपतजलेबी ॥ पापरपुआसोहारीजू ॥७॥ खोवाखीरचिरौंजीपेडा ॥ दूधदहींलैआयेजू ॥ ८ ॥ झु किझुकिपरसतदोऊओरी ॥ झुकिझुकिझांकतना रीजू ॥९॥ भोजनचारिप्रकारसुधारे ॥ खटरसस्वादसो हायेजू ॥ १० ॥ पंचकवरकरिजेंवनलागे ॥ देतनारि सबगारीजू ॥ ११ ॥ उमारमासारदब्रह्माणी ॥ सुरब नितापुरनारीजू ॥ १२ ॥ निरखिराममुखपावैमहासुख॥ पावतगारीगावैजू ॥ १३ ॥ लैलैनामपुरुषमिथिलापुर॥ अवधपुरीकीनारीजू ॥ १४ ॥ लैलैनामजनकराजाके ॥ नृपदसरथकीनारीजू ॥ १५ ॥ गारीतुमहिसुनाये भूपती ॥ गारीपरमसोहायीजू ॥ १६ ॥ सुनिमहि पालविलगजनिमानो ॥ कहियेनबातबनायीजू॥१७॥ सुंदरसुखदसुसीलसुलोचनि ॥ सुरपतिनारि पियारीजू

॥ १८ ॥ तुमगोरे कौसल्यागोरी ॥ स्यामकूंव
रकसजायेजू ॥ १९ ॥ तरुणीवयमैं नहिंसुतउपजै ॥ म
खहित सुनिहिबोलायेजू ॥ २० ॥ भीतरभवन महामुनि
राखै ॥ तिनऐसेसुतजायेजू ॥ २१ ॥ रामकीमातु भ
रतकीजननी ॥ दोउमुनि नयनलगायेजू ॥ २२ ॥
पतिदेवता सुमित्रारानी ॥ तिनके बालकगोरेजू ॥२३॥
जद्यपितुम समरथसबलायक ॥ सुरपति सखाकहाये
जू ॥ २४ ॥ जनकरायकी कन्याव्याही ॥ औगुन सक
लदुरायेजू ॥ २५ ॥ सहितसमाज हँसतनृपदसरथ ॥ र
सरस भोजनपायेजू ॥ २६ ॥ सहितरामसुनि वचनव्यं
गयुत ॥ प्रेमसुधारससानेजू ॥ २७ ॥ हासविलास पर
स्परसुनिसुनि ॥ विनुग्रथ मोलविकायेजू ॥ २८ ॥ भो
जनकरि उठिआचवनकीन्हें ॥ पानसुभग सुचिपायेजू
॥ २९ ॥ दोउजन प्रीतिपुनीतदेखिके ॥ तुलसीदास
सुखपायेजू ॥ ३० ॥ ५ ॥

जादिनरामजनकपुरआयो॥देखनधाइसवसखियांजू
रामजी० ॥ टेक ॥ कोउसखिठाडीकोउसखिवैठी ॥ को
उसखिफीरतंदिवानियाँजू ॥ १ ॥ असनवसनसवभूलि
गईहैं ॥ उठिउठिचित्तवनआईजू ॥२॥ माथेमुकुटगलेवै
जंती ॥ विप्रचरणउरधरियाँजू ॥ ३ ॥ जनकभवनमेंक
नकवेदिका ॥ बिचहीराबिचमणियाँजू ॥ ४ ॥ जेंवनवैठे
मिलिचारौभाई ॥ पियरिपहिरिकेशरियाँजू ॥ ५ ॥ पीताँ

वरकैओढेदुपटा ॥ हाथनपंचरतनियाँजू ॥ ६ ॥ झुकिझुकिझांकेसंगसहेलि ॥ सुखपावै सबसखियाँजू ॥ ७ ॥ कदलीखंभजानकीसोहैं ॥ लौंदीधरेरसकनियाँजू ॥ ८ ॥ केहरिऐसीकमरपातरी ॥ नाभीगहिरिगुमनियाँजु ॥ ९ ॥ सुआऐसीचौंचनासिका ॥ रतनजडावझुलनियाँजू ॥ १० ॥ सिशफूलमुक्ताकीसोभा ॥ वेणीगुंथीनागिनियाँजू ॥ ११ ॥ सारीसबुजकुसुमकेलहंगा ॥ अंगियाकेसरतनियाँजू ॥ १२ ॥ दुहुदुइचांदिचौतनियासोहैं ॥ मुदरीबनीहैअंगुलियाँजू ॥ १३ ॥ विविधरतनकीपहुंचीसोहैं ॥ बाधाअधिकलवनियाँजू ॥ १४ ॥ अष्टरतनकिकटारीसोहैं ॥ घुंघुरअधिकवजनियाँजू ॥ १५ ॥ गारीगावैंप्रेमापियारी ॥ सारीसरहजरनियाँजू ॥ १६ ॥ श्रीरामललाकीमातुकौसल्या ॥ सवरनियांसिरमनियाँजू ॥ १७ ॥ लखनलालकीमातुसुमित्रा ॥ कहिनसकेवखानियाँजू ॥ १८ ॥ भरतलालकीमातु कैकेई ॥ उनपटतरनहीरनियाँजू ॥ १९ ॥ तीनसौसाठहैमातुतुह्मारे ॥ एकपुरुषकीरनियाँजू ॥ २० ॥ नित्यप्रतिधर्मरहतहैकैसे ॥ वरपदीवसएकवरियाँजू ॥ २१ ॥ तामैएकजनकजीकोदीजै ॥ सेवाकरनहसनियाँजू ॥ २२ ॥ तबउठिकेपूरोहितबोलै ॥ सुनहुजनकजीकीरनियाँजू ॥ २३ ॥ राजादशरथकीलेहुपरिक्षा ॥ राखौअपनीमहलियाँजू

॥ २४ ॥ भोजनकरिउठिआचवनकीन्है ॥ पानसुभ
गसुचिपायेजू ॥ २५ ॥ तुलसीदासआसीससीयाव
र ॥ भक्तिपाईसुखकरियाँजू ॥ २६ ॥ ६ ॥

आरौगोरघुवीर, महाप्रभुआरोगो ॥टेक ॥ प्रफुल्लित
होय परोसेजननी ॥ ढोरतसीतसमीर ॥ १ ॥ कन
कथारअरुजडीतकटौरा ॥ मेवामिठाईखीर ॥ २ ॥ छ
प्पनभोगछत्तिसौविंजन ॥ नानाविधिकौसीर ॥ ३ ॥
रामलक्ष्मणअरुभरतशत्रुहन ॥ राजतचारौवीर ॥४॥ ज
नकसुताझारीभरिलाई ॥ सरज्यूजीकौनीर ॥ ५ ॥ चौ
वाचंदनकेसरघोरी ॥ चरच्यौस्यामशरीर ॥ ६ ॥
आचवनकरकैबीरीलीजै ॥ गावतदासकबीर ॥७॥७॥

भोजनकीजैसीताराम ॥ सारग्राहीभावग्राहीप्रित
ग्राहीराम ॥ टेक ॥ दक्षिणलक्ष्मणअनुजसोभित ॥
जनकसुतालियेवाम ॥ १ ॥ पवनसुतसनमुखविरा
जै ॥ रटतनिरंतरनाम ॥ २ ॥ चारीविधिकोभोजन
कीजे ॥ रुचिरुचितैअभिराम ॥ ३ ॥ मेवामिसरीपू
पअरुचावल ॥ खोवाद्राखवदाम ॥ ४ ॥ भक्तहेतुआरो
गियेस्वामी ॥ होप्रभुपूरणकाम ॥ ५ ॥ दासबीठलकोद
रसनदीजे ॥ हौतुमकरुणाधाम ॥ ६ ॥ ८ ॥

मिलिजेंवतरामजनकमंदिरमैं॥ सबमिलिनारिजिमा
वैजूरामजी० ॥टेक॥ चारोविरमिलिजेंवतरुचिरुचि ॥ क
वरलेतसुखपावैजू॥ १ ॥ नवलबंधुनवनेहनेहसौं ॥ कुलनं

धु ॥ सबजूरिआयेजू ॥ २ ॥ कुँवरहिनिरखतअतिमनहर खत ॥ रसभरिगारीगावैजू ॥ ३ ॥ शेषमहेशनिगमनार दमुनि ॥ उनहुंकेध्यानन आवैजू ॥ ४ ॥ जनहरियाधन्य तारियाजनकपुर ॥ हँसिहँसिलाडलडावेजू ॥ ५ ॥ ९ ॥

मिलिजेंवतलाडलीलालदोऊ ॥ खटव्यंजनचारसबै सरसें ॥टेक॥ मनमेंरसकीरुचिजोउपजे ॥ माधुरीकुंजसु धावरसें ॥ १ ॥ हटकेमनमोहनहाररहें ॥ झटहाथेजि मावनकुंतरसें ॥ २ ॥ करकंपतबीचहिछतिपरे ॥ कब हुंगरसोंमुखलोपरसें ॥ ३ ॥ सखिथारलियेचहुंओरख डी ॥ हरखैनिरखैदरसैपरसें ॥ ४ ॥ सुखसिंधुअपारक होनपरे ॥ अवशेषसखीहरिवंसलसें ॥ ५ ॥ १० ॥

नंदनंदनजीकोभोगलागे ॥ महासंखधुनिघंटाबाजे ॥ टेक ॥ अमृतभोक्ताश्रीयदुराई ॥ छप्पनभोगश्री लक्ष्मीजीलाई ॥ १ ॥ सतभामाजीनेजेवनकीन्हो ॥ हरिहलधरजीकोनेवतादिन्हो ॥ २ ॥ चंदनजलसेंभ वनसिचाये ॥ सखासहितहरिजेंवनआये ॥ ३ ॥ दू धपाकपकवानमिठाई ॥ छप्पनभोगजेंवेदोउभाई ॥ ४ ॥ छप्पनभोगछत्तिसोंविंजन ॥ रुचिरुचिसोजें वेंजदुनंदन ॥ ५ ॥ सागपातजोजिनकेहोई ॥ अमृत करीजेंवेहरिसोई ॥ ६ ॥ हरिजेंवेहरिजनजसगावें ॥ ललिताविशाखाचँवरढोरावे ॥ ७ ॥ जननामदेवद्वा रेजसगावे ॥ सोहरिकोपनवारोपावे ॥ ८ ॥ ११ ॥

बैठेलालाकुंजनमेंजोपावों, स्यामास्याममभावति जोरी, अपनेहातजेंवावों ॥ टेक ॥ दूधपाकपक्वान मिठाई ॥ रुचिरुचिभोगलगावों ॥ १ ॥ सखासहितह रिजेंवनबैठे ॥ वेदबिमलजसगावों ॥ २ ॥ चंदनचरची पुष्पकीमाला ॥ हरखिनिरखिपहिरावों ॥ ३ ॥ श्रीभट देतपानकीबीरी ॥ जुगलचरणचित्तलावों ॥ ४ ॥ १२ ॥

रामप्रसादीपावोपवनसुतरामजी० ॥ टेक ॥ पूरव पश्चिमउत्तरदक्षिण ॥ चारोदिशासेंआवो ॥ १ ॥ जहाँ जहाँभोगलगेरघुवरको ॥ श्रवणसुनतउठिधावो ॥ २ ॥ लैलैनामसकलविजनको ॥ आपुसमैवरतावो ॥ ३ ॥ खट्टेमिट्ठेऔरचरपरे ॥ रुचिरुचिभोगलगावो ॥ ४ ॥ जोकनिकाब्रह्मादिकललचैं ॥ शंकरध्यानलगावै ॥ ५ ॥ जनकसुता अपनेबालमकौ ॥ सीतलपवनढु रावै ॥ ६ ॥ श्रुतीकीरतीउरमीलामांडवी ॥ सरज्यूज लअचवावै ॥ ७ ॥ यहछबिदेखिमगनभयेतुलसी ॥ आनं दउरनसमावै ॥ ८ ॥ १३ ॥ इतिजेंवनकीगारीसमाप्त ॥

॥ अथआचवनकेभजनप्रारंभः ॥

अचवनकीजे कृपानिधान ॥ टेक ॥ जलझारीब्रह्मा दिकलाये, खीरचाइंद्रसुजान ॥ १ ॥ जयविजयलाये लौंगइलायची, पानसरससुखमान ॥ २ ॥ पनवारौ संतनकोदीजे, गावतजनभगवान ॥ ३ ॥ १ ॥

अचवनकीजे श्रीकृपानिधान ॥ टेक ॥ जलझारीललि

तादिलाये, खीरचाविशाखापान ॥ १ ॥ कथ्थासुपा रीलौंगइलायची, बीरीचतुरसुजान ॥ २ ॥ श्रीभटदे तपानकीबीरी, महिमाव्यासबखान ॥ ३ ॥ २ ॥

अचवनकरतकिशोरकिशोरी ॥ टेक ॥ कोउसखि प्रभुजिकोझारिभरिलाई ॥ कोऊदरपनलैदौरी ॥ १ ॥ कोऊसखिपानदानलियठाडी ॥ कोऊचद्दरलैदौरी ॥ २ ॥ कोऊसखिप्रभुजीकौवाघालेआई ॥ सियाजी किपीतपिछौरी ॥ ३ ॥ कोऊसखिप्रभुजीकीछबिनि रखतहै ॥ कोऊहँसे मुखमोरी ॥ ४ ॥ करिअचवनसिं हासनबैठे भलीबनीयहजोरी ॥ ५ ॥ सेवासखीजुग लछबिनिरखैं बीरादेकरजोरी ॥ ६ ॥ ३ ॥

अचवनकरत सीयारघुराई ॥ टेक ॥ कंचनझारी जलसरज्यूको ॥ सखीसुशीलालाई ॥ १ ॥ चंद्रकला सखिदेतअंगौछा ॥ रतिखिरचालैआई ॥ २ ॥ सु धामुखीसखिबीरियापवावें ॥ सुन्दरअत्तरलगाई ॥ ३ ॥ रूपसीलसोभानिधिजोरी ॥ निरखतदृगनअघाई ॥ ४ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर ॥ शेषप्रसादी पाई ॥ ५ ॥ ४ ॥

युगलकिसोरकिसोरी, अचवतयुगलकिसोरकिसोरी ॥ टेक ॥ भोजनकरनबैठसिंहासन ॥ मिलियेबिराजत जोरी ॥ कोऊसखिचरणप्रक्षालतठाढी ॥ कोउसखिकर तनिहोरी ॥ कोउसखिलाईकुंदनखीरचा ॥ युगलचरण

हितजोरी ॥ १ ॥ कोउसखिप्यारेजूकोवाघोलाई, राधेजोकिसुरंगपटोरी ॥ एकसखीदर्पणलेआई, देत बीरीभरिझोरी ॥ २ ॥ निजमंदिरबैठेपीयप्यारी, कोउडारततृणतोरी ॥ सेवासखीश्रीवल्लभजीकी.झठ नकरतनिहोरी ॥ ३ ॥ ५ ॥

अचवनकीजैअवधविहारी ॥ टेक ॥ सीतलसुंदरज लसरज्यूके, निकटधरीभरीकंचनझारी ॥ १ ॥ खासा झीनाअमलअंगोछा, लियेठाढीहैजनकदुलारी ॥ २ ॥ सो लैकेकरवदनअंगोछो, वचनकहेनिजमातउचारी ॥ ३ ॥ कथ्थाचूनालौंगइलायची ॥ लखणलगायेपानसुपारी ॥ ४ ॥ पाईपानपौढियेत्रिभुवनपति ॥ रामसेवककेप्रभुसु खकारी ॥ ५ ॥ ६ ॥इतिअचवनकरानेकेभजनसमाप्त ॥

॥ अथपानकीवीरीधरानेकाभजनप्रारंभः ॥

वीडिदेऊंगीवनायरसपानकी ॥ पानकीपानपचास की ॥ टेक ॥ कथ्थाचुनालौंगसुपारी ॥ ऐसीलगाऊँसन मानकी ॥ १ ॥ आवौजीकृष्णआचौपडखेलें ॥ वा जीलगाउजियजानकी ॥ २ ॥ तोरिबंसीनेकान्हासवज गमोहै ॥ वेटीसोहीवृषभानकी ॥ ३ ॥ कृष्णजीवनल छिरामकेप्यारे ॥ जोडिबनीराधेस्यामकी ॥ ४ ॥ १ ॥

सिंधुसुतामहाराणी ॥ खवावतासिंधुसुतामहाराणी ॥ टेक ॥ पानपुरानामसालनसंयुक्त ॥ साचीसुगंधसु जानी ॥ १ ॥ श्रीजगन्नाथसुमुसकयातखातहै ॥ प्यारील

खीमुसक्यानी ॥ २ ॥ परमानंद अपारपरस्पर ॥ काहे सो जातबखानी ॥ ३ ॥ श्रीबलदेवजीको देतरेवती ॥ सुभद्राजीकोवानी ॥ ४ ॥ सुदरसनको सखीयेखवाये ॥ चारोजुगकीखानी ॥ ५ ॥ पूँगीफलगरी लौंगजायफल ॥ कपूरकीअरघानी ॥ ६ ॥ पीकदान रत्नमय करलीन्हें ॥ वल्लभसखी सयानी ॥ ७ ॥ २ ॥

खवावत करकरवीरी ॥ पान खवावतकरकरबीरी पान ॥ टेक ॥ एकटकहोय मोहनमुख निरखत ॥ देत परस्परवीरी ॥ १ ॥ हँसतनिहारत बदनस्यामके ॥ तनकीसुधिबिसरीरी ॥ २ ॥ रसिकराय मोहनकेऊपर ॥ अंगअंगवलिजाईरी ॥ ३ ॥ ३ ॥

वीरीलेवो मेरेकरसें रंगीलेलाल ॥ टेक ॥ नागरवेलओरसुगंधसुपारी ॥ तुमहीकोलाईघरसें ॥ १ ॥ मुक्ताकोचूनाकत्थालाई ॥ लौंगइलायचीसरके ॥ २ ॥ संतनकोदीजेउवार ॥ विनतिकरतहुंडरके ॥ ३ ॥ ४ ॥

पानखवावतमोहनप्यारीजीको पानखवावत मोहन ॥ टेक ॥ सुंदरमुख सुखदेख्योईचाहत ॥ नंदनंदपीयसोहन ॥ १ ॥ यद्यपीकरते न लेतलाडली ॥ करतविनयपदगोहन ॥ २ ॥ श्रीभटनिपटदीनतनदेखत ॥ मुसकीमुसकीदियोठोहन ॥ ३ ॥ ५ ॥

वीरीदेत बृजनारीलालजीको ॥ बीरीदेतबृजनारी ॥ टेक ॥ पानसुपारीकत्थागुलावी ॥ लौंगनखोलसवांरी

॥ १ ॥ मृगनयनी खंजनसीठाढी ॥ कंचनवेल संवारी ॥ २ ॥ कमलकरन बिचलैलैबीरी ॥ ठाढिकरत मनुहारी ॥ ३ ॥ कहतलाडली बीरील्योप्रभु ॥ स्यामसुंदर सुभकारी ॥ ४ ॥ कृष्णदास गिरीधरआरोगो ॥ श्रीवल्लभ प्राणआधारी ॥ ५ ॥ ६ ॥

खेलतहैं पियाप्यारीफांसाखेलतहै पियाप्यारी ॥ टेक ॥ रत्नजडित चौकीपरढारत ॥ हँसतकरत कीलकारी ॥ १ ॥ पहिलेदांव पर्योस्यामाको ॥ पीतपिछोरीहारी ॥ २ ॥ अबकीबेर पियमुरली लगावोतो ॥ खेलौंगीगिरिधारी ॥ ३ ॥ जानतहो छलबलकरछूटो ॥ कहोलालहमहारी ॥ ४ ॥ परमानंद दासकेठाकुर ॥ जीतीवृषभानदुलारी ॥ ५ ॥ ७ ॥ इति पानकी बीरी धरानेकेभजन और चौपडके भजन संपूर्ण ॥

॥ अथ पंगतकीधुन प्रारंभः ॥

अवधसोहावन अतिमनभावन ॥ तलेबहैसरज्यू नीर ॥ सुमीरोमन जयजयजयरघुवीर ॥टेक॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन ॥ संगसखानकीभीर ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ गलेबिचमुक्ताहीर ॥ २ ॥ शारंग धनुषबानकरसोहै ॥ पहिरेपीतांबरचीर ॥ ३ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजे ॥ सोहतस्यामशरीर ॥ ४ ॥ संगसखासरज्यूतटबिहरें ॥ रामलक्ष्मणदोउवीर ॥ ५ ॥ बामेंअंगजानकीबिराजे ॥ दहिनेश्रीलक्ष्मणवीर ॥ ६ ॥

रूपनिहारि चकितभईरतिपति ॥ शारदशेषमतिधीर ॥ ७ ॥ नामप्रताप तरेजलथलमें ॥ गीद्धव्याधकपिकीर ॥ ८ ॥ जिनचरणनकौ ध्यानधरतहै ॥ हरतसंतजनपीर ॥ ९ ॥ बालानंद रघुवरकेसरणे ॥ गावतगुणगंभीर ॥ १० ॥ १ ॥

सुमिरौमनजयजयजयवृजराज ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै ॥ सवभक्तनकेकाज ॥ १ ॥ मथुरासेहरिगोकुलआये ॥ कंसकोभईहैअवाज ॥ २ ॥ दावानलकौपानकियोहै ॥ नाथ्योहैकालीनाग ॥ ३ ॥ डूवतसेवृजराखिलियोहै ॥ नखपरगिरिवरसाज ॥ ४ ॥ केसीमारेकंसपछारै ॥ उग्रसेनकुदियोराज ॥ ५ ॥ जलडूवतगजराजउवारे ॥ चक्रसुदरसनसाज ॥ ६ ॥ शरणपालप्रभुनामतिहारौ ॥ राखिद्रुपदीकीलाज ॥ ७ ॥ जनवृजनंदगोपालकेसरणे ॥ गावतगुणतजिलाज ॥ ८ ॥ २ ॥

सुमिरौमनरामसच्चिदानंद ॥ टेक ॥ जोसुमिरैत्रयतापहरतुहै॥परतनजमकेफंद ॥ १ ॥ ऋषिमखराखिनिशाचरमारे ॥ अभयकियेमुनिवृंद ॥ २ ॥ पदरजपरसिसिलाभईसुंदरी ॥ धायउवारेगजेंद्र ॥ ३ ॥ जनकस्वयंवरपावनकीन्हौ ॥ तोडोधनुषप्रचंड ॥ ४ ॥ सियाजीविवाहिअवधहरिआये ॥ घरघरभयोहैअनंद ॥ ५ ॥ मातकौशल्याकरतआरती ॥ निरखतसुखकेकंद ॥ ६ ॥ जयजयकारभयोसुरपुरमै ॥ गावतबालानंद ॥ ७ ॥ ३ ॥

भजोहोमनसीताराम, मिटेदुखद्वंदना ॥ टेक ॥ जाकीमायाजगतभुलाया, तातायेईतंना ॥ ब्रह्माजाकोपारनपावे, गावेसनकसनंदना ॥ १ ॥ देवकीकेगृहेआये, जैसेपूरणचंद्रमा ॥ सुरनरमुनिजाकोध्यानधरतहै, साधुकरैवंदना ॥ २ ॥ हिरणाकुसनखउदरबिदारे, श्रीप्रहलादकोराखना ॥ बलिराजाकेद्वारेपधारे, भेपधरेहैवामना ॥ ३ ॥ मथुरामेंहरिकंसपछारे, लंकापतिरावना ॥ द्रुपदसुताकोचीरवढायो, कालीनागनाथना ॥४॥औरनकूंहरियेदेटेढे, नंदयशोदाललना ॥ साधुनकोहरिऐसेलागे, जैसेसीतलचंदना ॥५॥ मनतनामदेवसुनोसुलोचन ॥ साधूनिंदकनाशना ॥ ६ ॥ ४ ॥

आछेरामजीललाकौसल्यानंदन ॥ सुरनरमुनिगावैजयजयजगवंदन ॥ टेक ॥ पुरीअयोध्यासरज्यूतीर, हरिबालनीलाखेलैरघुवीर ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटकुंडलवनमाल, हरिभालतिलकसोहैनयनविशाल ॥ २ ॥ कटिकिंकीनीपीतांबरराजै, हरिचारुनिगमधुनीनूपुरवाजै ॥३ ब्रह्मादिकजाकोपारनपावे ॥ हरिताहीकोसल्यारानीगोदखेलावे ॥ ४ ॥ तोतरीवानीअधिकसोहावे ॥ हरिनिरखिरूपासखीताहीबलिजावे ॥ ५ ॥ ५ ॥

सुमिरौमनजयवंकटबलवीर ॥ टेक ॥ ऊंचेसेपरवतकोयलबिराजे ॥ झारीहैगाहेरगंभीर ॥ १ ॥ त्रिपतिमेंसीतारामजीविराजे ॥ चौकीहैलक्ष्मणवीर ॥ २ ॥

शेषाचलपर आपबिराजै ॥ चौकीहैहनुमतवीर ॥ ३ ॥
इजयविजय दोऊपौरिया बिराजे ॥ ढींगपुस्करणीनी
र ॥ ४ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजे ॥ सोहतस्यामश
रीर ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल ॥ गलेबि
चमुक्ताहीर ॥ ६ ॥ शेषवाहन असवारीसोहे ॥ संग
संतनकीभीर ॥ ७ ॥ जनहाथीरामजी वंकटजीकेसर
णे ॥ गावतगुणगंभीर ॥ ८ ॥ ६ ॥

सुमिरोमनजयजयजयअवधेस ॥ टेक ॥ अवधनगर
कंचनपुरराजै ॥ विहरतश्रीसीतेश ॥ १ ॥ भालतिलक
गलेहीरासोहै ॥ सिरघुंघुरवालेकेस ॥ २ ॥ कटिपरपी
त पीतांवरराजे ॥ रूपधरेनृपभेस ॥ ३ ॥ शुकसनका
दिनारदमुनिगावे ॥ शेवतशंभुगणेस ॥ ४ ॥ सुरनर
मुनिजयशब्दकरतुहै ॥ वरषतपुष्पहमेस ॥ ५ ॥ रा
मचरणरघुवीरकोदरशन ॥ हरैमनोहरवेष ॥ ६ ॥ ७॥
॥ इतिपंगतकीधुनसमाप्त ॥

॥ अथचारोधामकीबडीजयलिख्यते ॥

जेंवत संत हरिहर करैं ॥ धन्य पुरुषनके भाग ॥
तिनकेगृह पावनभये ॥ संतपधारेआय ॥ १ ॥ बोलियो
संतोमधुरीसीवानीप्रेमसेश्रीहरे ॥ श्रीमन्नारायणकी ॥
स्वयंब्रह्मनारायणकी ॥ पूरणब्रह्मनारायणकी ॥ सच्चिदा
नंदनारायणकी ॥ ज्योतिस्वरूपनारायणकी ॥ अव्यय
पुरुषनारायणकी ॥ श्रीलक्ष्मीनारायणकी ॥ अवधपुरी

की ॥ अवधसरज्यूकी॥श्रीसरज्यूकी ॥ १० ॥आद्यसरज्यू
की ॥ सरज्यूविरजाकी ॥ रामकोटटी ॥ जन्मभूमीकी॥
जन्मऽस्थानकी ॥ सीतारसोइकी ॥ कनकभुवनकी ॥
सुमित्राभुवनकी ॥ कैकेईभुवनकी ॥ रत्नसिंहासनकी॥
॥ २० ॥ हनुमानजीमहाराजकी ॥ सुग्रीवटीलाकी
॥ अंगदटीलाकी ॥ क्षीरसागरकी ॥ वसिष्ठमुनिकी
॥ वसिष्ठकुंडकी ॥ वामदेवजीकी ॥ धनंजयतीरथ
की ॥ चक्रतीरथकी ॥ ब्रह्मघाटकी ॥ ३० ॥ लक्ष्म
णघाटकी ॥ स्वर्गद्वारिघाटकी ॥ जानकीघाटकी ॥ रा
मघाटकी ॥ हनुमानकुंडकी ॥ स्वर्णखरकुंडकी ॥
अग्निकुंडकी ॥ सीताकुंडकी ॥ विद्याकुंडकी ॥ तिलोद
कीगंगाकी ॥ ४० ॥ मणिपर्वतकी ॥ खजुहाकुंडकी॥
सूर्य्यकुंडकी ॥ सूर्य्यनारायणकी ॥ बिल्वहरिघाटकी ॥
भरतकूपकी ॥ नंदिग्रामकी ॥ निर्मलीकुंडकी॥गुप्तारघा
टकी ॥ यमथलातीरथकी ॥ ५० ॥ दाशरथीरामकी ॥
दशरथनंदनकी ॥ कौसल्यानंदनकी ॥ केकैनंदनकी ॥
सुमित्रानंदनकी ॥ रघुवंसमणीकी ॥ रघुवंसभूषण
की ॥ रघुवंसभूषणरामरघुनाथकी ॥ रघुवंसदुलारेरा
मरघुनाथकी ॥ रघुवंसरामरघुनाथकी ॥ ६० ॥ दा
शरथीरामरघुनाथकी ॥ दशरथनंदरामरघुनाथकी ॥
कौशल्यानंदनरामरघुनाथकी ॥ केकैनंदनरामरघुना

थकी ॥ सुमित्रानंदनरामरघुनाथकी ॥ अवधबिहारीरा
मरघुनाथकी ॥ अवधेसरामरघुनाथकी ॥ अवधमंडल
रामरघुनाथकी ॥ अवधरमणरामरघुनाथकी ॥ अवधे
सकुमाररामरघुनाथकी ॥ ७० ॥ जानकीपतीरामरघु
नाथकी ॥ जानकीरमणरामरघुनाथकी ॥ जानकीबिहा
रीरामरघुनाथकी ॥ जानकीविनोदकरामरघुनाथकी ॥
[illegible]नकीवल्लभरामरघुनाथकी ॥ गंगामनोरामाकी ॥ त्रि
वेणीगंगाकी ॥ मुक्तनाथक्षेत्रकी॥ सालग्रामदेवकी ॥ सा
लग्रामीगंगाकी ॥ ८० ॥ सालग्रामपरमात्माकी॥नरसिं
हखोलाकी ॥ दामोदरकुंडकी ॥ पशुपतीनाथकी ॥ ज
नकपुरक्षेत्रकी ॥ जनकविदेहकी ॥ जनकमहाराजकी॥
जनकनंदनीकी ॥ जनकदुलारीकी ॥ जनककिसोरी
की ॥९०॥ जनकलाडलीकी ॥ जनकजामहाराणीकी॥
जनककन्यामहाराणीकी ॥ जानकीमंदिरकी॥रघुनाथ
जीमहाराजकी ॥ जनककेजमाईकी ॥ भरतकेभाईकी॥
अरगजाकुंडकी ॥ दसरथतलावकी॥धनुसाकी ॥१००॥
गीरिजाकी ॥ आदिवाराहस्वामीकी ॥ कालीयाकंतभ
गवानकी ॥ कंतविलासीकी॥ब्रह्मपुत्रकी॥चटगांवबाल
नाकुंडकी ॥ हयग्रीवभगवानकी ॥ हयग्रीवमाधोकी ॥
कमक्षादेवीकी ॥ परसरामकुंडकी ॥ कपिलमुनिभगवा
नकी ॥११०॥ कपिलमुनिदरीयाइकी॥गंगासागरकी॥
रामकुंडकी ॥ सीताकुंडकी॥लक्ष्मणकुंडकी॥ रामानुज

स्वामीकी ॥ छाछकामीनीकी ॥ क्षीरचोराठाकुरकी ॥ साखीगोपालकी ॥ श्रीजगन्नाथधामकी॥ १२०॥श्रीजग न्नाथस्वामीकी ॥ श्रीबलभद्रसहोद्राकी॥ श्रीमहाप्रसाद की ॥ नीलचक्रकी॥सुदरसनचक्रकी॥ इंद्रद्युम्नतीरथकी ॥मारकंडेतीरथकी ॥ महोदधिसागरकी॥ स्वेतगंगाकी ॥रोहीणिकुंडकी॥१३०॥वटेकृष्णभगवानकी ॥ सिद्धह नुमानकी ॥ वीरहनुमानकी॥अतुलितवलहनुमानकी॥ मछोद्रीहनुमानकी ॥ सिंधुउलंघनहनुमानकी ॥ सिंहि कासंहारणहनुमानकी ॥ मैनाकपावनहनुमानकी ॥ लंकीनीदहनहनुमानकी ॥ बीभीषणप्रवोधकहनुमान की ॥ १४० ॥ सीताप्रबोधकहनुमानकी ॥ काननवि ध्वंसहनुमानकी ॥ लंकादहनहनुमानकी ॥ अक्षयमर्द नहनुमानकी ॥ कालनेमीमर्दनहनुमानकी ॥ मही रावणमर्दनहनुमानकी ॥ भरतप्रबोधकहनुमानकी ॥ गौरखमूर्तिहनुमानकी ॥ सवरीनारायणकी ॥ राजीव लोचनकी ॥ १५० ॥ अमरकंटकपरवतकी ॥ कूर्म धाराकी ॥ सहोद्रीनृसिंहकी ॥ पन्नानृसिंहकी ॥ शे षाचलवासीकी ॥ सर्वघटनीवासीकी ॥ वैकुंठविलासी की ॥ आद्यवाराहस्वामीकी॥ श्रीवंकटेसकी॥उग्रवंकटे सकी ॥ १६० ॥प्रशन्नवंकटेसकी ॥वीरवंकटेसकी॥वंक टेसजीमहाराजकी ॥ पुस्करणीगंगाकी ॥ झपालीहनु मानकी ॥ पापनाशनीगंगाकी ॥ आकासगंगाकी॥पा

तालगंगाकी ॥ संकटयोनिगंगाकी ॥ त्रपतीनाथकी ॥ १७० ॥ चरणकुंडकी॥गोविंदजीमहाराजकी ॥ सीतारामजीमहाराजकी ॥ धनुषधारीमहाराजकी ॥ चिंतानुरकी॥लक्ष्मीजीकी॥कुवारस्वामीकी ॥ वीरराघवकी ॥ श्रीप्रेमधुरकी ॥ रामानुजस्वामीकी ॥ १८०॥ विष्णुकांचीकी ॥ कांचीव्रजराजस्वामीकी ॥ वरदराजभगवानकी॥ श्रीसुष्टिस्वामीको ॥ पक्षीतीरथकी॥श्रीरंगनाथधामकी॥श्रीरंगस्वामीकी ॥ श्रीरंगभगवानकी ॥ कावेरीगंगाकी ॥ कावेरीमहाराणीकी ॥ १९० ॥ दक्षिणद्वारकाकी ॥ दक्षिणअयोध्याकी ॥ नवपाषाणकी॥हरबोलाखाडीकी ॥ श्रीरामनाथधामकी॥ धनुषतीरथकी ॥ रामझरोखेकी ॥ रामकुंडकी ॥ लक्ष्मणकुंडकी॥ सीताकुंडकी ॥२००॥ राममहोल्लेकी ॥ द्रव्यसेनभगवानकी ॥ ठीकरनाथस्वामीकी ॥ अलगर्जस्वामीकी ॥ सुंदरबाहुभगवानकी ॥ तोताद्रीनाथकी ॥ लंबेनारायणकी ॥ कुमारीकन्याकी ॥ आदिकेसवभगवानकी ॥ पद्मनाथभगवानकी ॥ २१० ॥ जनार्दनभगवानकी ॥ अडसठतीरथकी ॥ब्रह्मयज्ञकी ॥ देवनारायणकी ॥ जंगजीतगोपालकी ॥ हेमगोपालकी ॥ मेलकोटापाटकी ॥ श्रीचलपलस्वामीकी ॥ कल्याणीगंगाकी ॥ पुस्करणीगंगाकी ॥२२०॥श्रीलसिंहस्वामीकी ॥ कारतीकस्वामीकी ॥ श्रीपंपापुरीकी ॥ पंपासरोवरकी ॥ पंपापतीमहादेवकी॥अंजनीपर

वतकी ॥ अंजनीमाताकी ॥ वालीसुग्रीवकी ॥ अंगद हनुमानकी ॥ रामलक्ष्मणमहाराजकी ॥ २३० ॥ फटकसीलाकी ॥ गंगातुंगभद्राकी ॥ कृष्णागंगाकी ॥ उडपीकृष्णाकी ॥ शृंगेरीमठकी ॥ गोकर्णमहादेवकी ॥ परसुरामगंगाकी ॥ तुंगनाथकी ॥ पुंडरीनाथभगवानकी ॥ चंद्रभागागंगाकी ॥ २४० ॥ रामटेककी ॥ अगस्त्यकुंडकी ॥ सर्वतीरथकी ॥ सुकलतीर्थकी ॥ कपिलधाराकी ॥ गोदावरीगंगाकी ॥ गंगाद्वारकी ॥ कुसावर्तकी ॥ चक्रतीर्थकी ॥ नाशीकपुरीकी ॥ २५० ॥ रामकुंडकी ॥ पंचवटीनाथकी ॥ श्रीसीतारामजीमहाराजकी ॥ लक्ष्मणजीमहाराजकी ॥ तपोवनकी ॥ लंबेहनुमानकी ॥ दंडकारण्यकी ॥ लक्ष्मणकुंडकी ॥ सीताकुंडकी ॥ रामसज्याकी ॥ २६० ॥ अठराभुजदेवीकी ॥ तप्तकुंडकी ॥ उनाईमाताकी ॥ तापीगंगाकी ॥ अस्वनिकुमारकी ॥ गुमानदेवमहाराजकी ॥ नरमदागंगाकी ॥ भृगुक्षेत्रकी ॥ दसासुमेधघाटकी ॥ सुकलतीर्थकी ॥ २७० ॥ सुकलनारायणकी ॥ शेषनारायणकी ॥ ओरिसंगमकी सुकदेवजीकी ॥ व्यासजीकी ॥ सुरपाणकी ॥ ब्रह्मपुरीकी ॥ ब्रह्मतोडघाटकी ओंकारनाथकी ॥ ब्रह्मपुरीकी ॥ २८० ॥ अवंतीकापुरीकी ॥ महाकालेस्वरकी ॥ सफरागंगाकी ॥ अंगपातक्षेत्रकी ॥ डाकोरनाथकी ॥ गोमतीतीरथकी ॥ रणछोडटीकमकी ॥ भीमनाथकी ॥ ब्रह्मकुंडकी ॥ गुरुचेलाकीचोकीकी ॥ २९० ॥ माधो

भगवानकी ॥ सीतामुद्रीकी ॥ तुलसीस्यामकी ॥माधो
प्राचीकी ॥ आदिप्राचीकी ॥ प्रभासपाटणकी॥गिरीना
रीध्वजाधारीकी ॥ हनुमानधाराकी ॥ शेषावनकी ॥ पादु
कातीर्थकी॥३००॥ रामानुजस्वामीकी ॥गौमुखीधारा
की ॥ अंबीकादेवीकी ॥ दत्तात्रयभगवानकी॥दामोदर
कुंडकी ॥ मृगीकुंडकी ॥ सुदामापुरीकी॥गोमतीसंगम
की ॥ संगमनारायणकी ॥ द्वारकानाथधामकी॥३१०॥
रणछोडतीकमकी ॥ कुंवरकल्याणकी ॥माधवपुरुषोत्त
मकी ॥ रुकमीणीमहाराणीकी ॥ सत्यभामामहाराणी
की ॥ जामुवंतीमहाराणीकी॥ शैब्यामहाराणीकी॥ना
ग्रजीतीमहाराणीकी ॥ तुलसीमहाराणीकी ॥ जमुनाम
हाराणीकी ॥ ३२० ॥ वृंदामहाराणीकी॥संखनारायण
की ॥ संखउद्धारकी ॥ नारायणसरक्षेत्रकी॥आदिनारा
यणकी ॥ चपलेसरमहादेवकी ॥ नीलकंठमहादेवकी॥
कोटेसरनाथमहादेवकी ॥ आसापुरीकी ॥ धरणीधर
भगवानकी ॥ ३३० ॥ बिंदुसरोवरकी॥कर्दमऋषिकी॥
सरस्वतिगंगाकी ॥ ज्ञानवापीकी ॥ कपीलदेवजीकी ॥
देवहुतीमाताकी ॥ अहील्याकुंडकी ॥ गोविंदमाधोकी
॥ अंबामाताकी ॥ आबुपरवतकी॥३४०॥आबुकेसिद्धों
की ॥ हृषीकेशभगवानकी ॥ मधुसुदनभगवानकी ॥
वसीष्टमुनीकी ॥ ब्रह्मकुंडकी ॥ नखीतलावकी ॥ पु
स्करराजक्षेत्रकी ॥ ब्रह्माजीकी ॥ बुढेपुस्करकी ॥

रूपचतुरभुजठाकुरकी ॥ ३५० ॥ लोहागरपुस्कर
की ॥ प्रहलादजीमहाराजकी॥प्रहलादपुरीकी ॥ प्रहला
दपरवतकी ॥ श्रीनृसिंहस्वामीकी॥ नृसिंहपहारकी॥नृ
सिंहकटाक्षकी ॥ सीलोदकीगंगाकी॥नागार्जुनकी॥त्रि
कुटादेवीकी ॥३६०॥ मणीकर्णकी॥त्रीलोकीनाथठाकु
रकी ॥ अस्त्रतीरथकी ॥ रेवालसरतीरथकी॥कुरुक्षेत्रकी
॥ हरिद्वारपुरीकी ॥ गंगाभागीरथीकी ॥ हरीकीपेडीकी
॥कुसावृत्तकी ॥ नीलधाराकी॥३७०॥हृषीकेशभगवान
की ॥ रामजीकी ॥लक्ष्मणजीकी॥भरतजीकी॥शत्रुघन
जीकी ॥ लक्ष्मणझूलाकी॥देवप्रयागकी॥रुद्रप्रयागकी॥
करणप्रयागकी ॥ नंदप्रयागकी ॥ ३८० वीष्णुप्र
यागकी ॥ गुप्तकासीकी ॥ त्रीजुगीनारायणकी ॥ के
दारनाथकी ॥ मंदाकिनीगंगाकी॥उखीमठकी ॥तुंगना
थकी ॥ जोसीमठकी ॥ पांडुकेसरकी ॥ अमरनाथकी
॥ ३९० ॥ बद्रीनाथधामकी ॥ बद्रीवीसाललालकी ॥
योगध्यानीबालाकी ॥ तप्तकुंडकी ॥ नारदकुंडकी ॥
अलखनन्दागंगाकी ॥ कूर्मधाराकी ॥ आद्यबद्रीकी ॥
नरनारायणकी ॥ कौशील्यागंगाकी ॥४००॥रामगंगा
की ॥ वृंदावनचंद्रकी ॥ वृंदावनविहारीकी॥वृंदावनरक्ष
पालकी ॥ वृंदावनपालनकी ॥ वृंदावनपावनीकी ॥
वृंदावनधीरसमीरकी ॥ जमुनामहाराणीकी ॥ कालीं
दीमहाराणीकी ॥ गोविंदजीमहाराजकी॥४१०॥ कुंज
विहारीभगवानकी॥ धेनुचारीभगवानकी ॥ राधामाध

वभगवानकी ॥ राधारमणभगवानकी ॥ राधाबिहारीभ
गवानकी ॥ राधावल्लभभगवानकी ॥ राधाविनोदकभ
गवानकी ॥ राधासुखधामभगवानकी ॥ राधाआनंदभ
गवानकी ॥ राधिकापतीरमणभगवानकी ॥४२०॥ गोप
बिहारीभगवानकी ॥ गोपरक्षणभगवानकी ॥ गोक्री
डाभगवानकी ॥ गोपहास्यभगवानकी ॥ गोपिवल्लभ
भगवानकी ॥ गोपीरमणभगवानकी ॥ गोपिकानंदन
की ॥ गोपांगनापावनभगवानकी ॥ गोकुलपुरीकी ॥ नं
दनंदनकी॥४३०॥यशोदानंदनकी ॥ वसुदेवनंदनकी ॥
देवकीनंदनकी ॥ रोहिणीनंदनकी ॥ कृष्णबलदेवकी ॥
वृषभाननंदनीकी ॥ वृषभानुदुलारीकी ॥ वृषभानकी
सोरीकी ॥ वृषाभनलाडलीकी ॥ वृषभानकन्याकी ॥
॥ ४४० ॥ वृषभानकेजमाईकी॥ माखनचोरकी ॥ दधि
चोरकी ॥ नंदकिसोरकी ॥ कालीदमनकी ॥ काली
मर्दनकी ॥ कालीनवनकी ॥ मदनमोहनभगवानकी ॥
मदनगोपालकी ॥ वंसीवटकी ॥ ४५० ॥ धीरसमी
रकी ॥ गोवरधनधारीकी ॥ गोवरधनपर्वतकी ॥
गिरिराजमहाराजकी ॥ मानसीगंगाकी ॥ मथुरापुरी
की ॥ मुष्टिकमर्दनकी ॥ चाणूरमर्दनकी ॥ कंसमर्दन
की ॥ कंसशत्रुकी ॥४६०॥ कंसमोक्षणकी ॥ केसीमर्दन
की ॥ केसीउद्धारणकी ॥ कुबजापावनकी ॥ बांकेबिहा
रीकी ॥ छैलबिहारीकी ॥ छैलचीकनियाकी ॥ चीकनी

याठाकुरकी ॥ मोरमुकुटधारीकी ॥ श्रीधरभगवानकी ॥ ४७० ॥ अटलबिहारीकी ॥ लीलापुरुषोत्तमभगवानकी ॥ यदुवंसमणीभगवानकी ॥ यदुवंसभूषणभगवानकी ॥ यदुवंसदीपक भगवानकी ॥ यदुवंसउजागरभगवानकी ॥ वासुदेवभगवानकी ॥ संकर्षणभगवानकी ॥ प्रद्युम्नभगवानकी ॥ अनिरुद्धभगवानकी ॥ ४८० ॥ चतुर्व्यूहकभगवानकी ॥ यमुनामहाराणीकी ॥ वासाघाटकी ॥ कंसनालाकी ॥ ब्रह्मावर्तकी ॥ ब्रह्माघाटकी ॥ वालमीकजीकी ॥ सोरांघाटकी ॥ नैमिसारण्यकी ॥ मिश्रीकी ॥ ४९० ॥ धेनुमतीगंगाकी ॥ गोमतीगंगाकी ॥ कुसावर्तकी ॥ निलचक्रकी ॥ लंबेहनुमानकी ॥ अठासीहजारऋषिकी ॥ गयागजाधरभगवानकी ॥ फल्गुगंगाकी ॥ गयापुरीकी ॥ विष्णूपादकी ॥ ५०० ॥ अक्षयवटकी ॥ झाडखंडमहादेवकी ॥ बैजनाथकी ॥ हरिक्षेत्रकी ॥ भृगुक्षेत्रकी ॥ बक्सरक्षेत्रकी ॥ विस्वामित्रजीकी ॥ अहिल्याजीकी ॥ काशीपुरीकी ॥ काशीविश्वेसरनाथकी ॥ ५१० ॥ मणीकर्णीकाघाटकी ॥ अन्नपूरणादेवीकी ॥ गंगाभागीरथीकी ॥ पंचकोसीकी ॥ प्रयागराजकी ॥ तीरथराजमहाराजकी ॥ माघत्रीवेणिकी ॥ सरस्वतिगंगाकी ॥ भरद्वाजमुनिकी ॥ अक्षयवटकी ॥ ५२० ॥ संकटमोचनहनुमानकी ॥ श्रीचित्रकूटनाथकी ॥ कामतानाथकी ॥ मुखारबिंदकी ॥ यज्ञवेदिकी ॥ पयसरणीगंगा

की ॥ अनसूयामाताकी ॥ अनसूयाआश्रमकी ॥ लक्ष्मणटेकरीकी ॥ भरतकूपकी ॥५३०॥ हनुमानधाराकी ॥ देवांगनाकी॥दधिकुल्याकी॥मधुकुल्याकी ॥घृतकुल्याकी ॥सर्वतीरथकी ॥ श्रीसीतारामआश्रमकी ॥ श्रीसीतारामवनविहारीकी ॥ लक्ष्मणवनविहारीकी ॥ फटिकसीलाकी ॥५४०॥ रामसज्याकी ॥ गंगामंदाकिनीकी ॥ राघवेंद्रकी॥ध्रुवेंद्रकी ॥ प्रह्लादइंद्रकी ॥ इंद्रपुरींद्रकी ॥ वलिइंद्रकी ॥ छलीइंद्रकी ॥ सरभंगमुनीकी॥ श्रीनृसिंहदेवकी ॥ ५५० ॥ हनुमानदेवकी ॥ गरुडदेवकी ॥ चारधामकी ॥चारसंप्रदाकी॥बावनद्वारेकी॥अनंतकोटवैष्णवकी ॥ दातामुक्ताकी ॥ अस्थानपुरुषकी ॥ अपने अपने गुरुगोविंदकी ॥ श्रीरामकृष्णदेवकी ॥ श्रीमहाप्रसादकी ॥ ५६२ ॥ श्रीरामकहेसुखउपजे कृष्णकहेदुखजाय ॥ महिमामहाप्रसादकी पावोप्रीतिलगाय ॥ १ ॥ बोलियोसंतोमधुरीसीवानीप्रेमसेश्रीहरे ॥ इतिश्रीचारोधामकीवडीजयसंपूर्ण ॥

अथगुरुवारकीगौरीप्रारंभः ॥

देवातेरि भक्तिनछांडू, मुक्तिनमांगू, हरिजस सुनहुँसुनाऊं ॥ टेक ॥ रामकृष्ण अवतारमनोहर, जन्मजन्मजसगाऊं ॥ १ ॥ गंगाजल असनानकराऊं, पीतांबर पहिराऊं ॥ तुलसीआनि गोपालहिपूजौ, चंदन सरस चढाऊं ॥ २ ॥ चुनिचुनिकलियां मे हारबनाऊं, रघुवर उर पहिराऊं ॥ धूपदीपनैवेद्य आरती,

येहि विधि लाडलडाऊं ॥ ३ ॥ हरखिनिरखि हरिके गुणगाऊं,हाथनतालबजाऊं ॥ भनतनामदेव सुनोहो सुलोचन, येहिविधिदास कहाऊं ॥ ४ ॥ १ ॥

आजसनाथभइहै अयोध्या ॥ टेक ॥ राजादसरथघरराम जन्मलियो, रतनन भूमी छईहै ॥ हीरालाल लगे पलनामें, झूलत राम सहीहै ॥ १ ॥ कंचनमहलबने दसरथके ॥ सरज्यूनिकटबहीहै ॥ राजादसरथघर नौबत बाजे, लंकाखबर भईहै ॥ २ ॥ सब सखियन मिलि मंगलगावे, गावत राग सहीहै ॥ राजादसरथके चारपुत्रहैं, लक्ष्मण राम सहीहै ॥ ३ ॥ गुरुवसिष्ठ कुलपूज्य हमारे, मांगतदान सहीहै ॥ तुलसिदास धन्यधन्य कौसल्या, मनसा सुफल भईहै ॥ ४ ॥ २ ॥

कहनलगे रघुवर तोतरि बाता ॥ टेक ॥ श्रीमहाराज कहत दसरथसों, कौसल्या सोमाता ॥ सुनि सुनि वचन प्रेमपरिपूरण, आनंद हृदैनसमाता ॥ १ ॥ कुंचितकेस लसतघुंघुवारे ॥ स्यामसुंदरमृदु गाता ॥ सुंदरवदन कमल दललोचन, छबिवरनीनहिंजाता ॥ २ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, खेलत चारौ भ्राता ॥ विहरत सरज्यूनीरसखन संग, भक्तजनन सुखदाता ॥ ३ ॥ लखचौरासी जीवचराचर, सबके गुरुपितुमाता ॥ श्रीरघुवीरअवधपुरप्रगटे, दीनजननके त्राता ॥ ४ ॥ ३ ॥

बोलनकीबलिजईहो, ललइन बोलनकी॥टेक॥छोटे

छोटेचरण धरत अतिसुंदर, ठुमकि ठुमकि लजैहौं॥ क टिकिंकिनि पगनेपुरबाजे, मधुरेशब्दसुनैहौं ॥ १ ॥सब बालक रघुवरछबि निरखत, प्रेमप्रीत लपटैहौं ॥ घुं घरवारे अलकेंहैंवदनपर, मंदहसन सुख देहौं ॥ २ ॥जा कोध्यान धरत ब्रह्मादिक, सारद गान करेहौं ॥ गो दराखि पयपानकरावत, दसरथलेत बलैहौं ॥ ३ ॥ यहछबिदेखि मगनभये सुरमुनि, रविशशि कोटिल जैहौं ॥ ४ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक, निग मनेतिजसगैहौं ॥ ५ ॥ अग्रदास भजु दसरथनंदन दिन प्रतिदिनअधिकैहौं ॥ ६ ॥ ४ ॥

श्रीअंगनामें खेलत चारोभाई ॥टेक॥ राजादशरथ जीकेचारपुत्रहैं, चारोंकुंवरकन्हाई ॥ रघुवरलक्ष्मणभर थ शत्रुहन, सोभावरणिनजाई ॥१॥ चारिरतनको खेलर च्योहै, फूलन गेंदबनाई॥ तीनलोककीसकलसंपदा, अ वधपुरी चलिआई ॥२॥ ठौर ठौर मुनिजनके आश्रम, वैठे ध्यान लगाई ॥ राजादशरथघर नौबत बाजे, घरघर बजत बधाई ॥ ३ ॥ शिव सनकादि आ दिब्रह्मादिक, शेष सहस्रमुख गाई ॥ कीटमुकुट कर धनुषविराजे, दशरथसुतरघुराई ॥ ४ ॥ कल्पवृक्षतरे रतनसिंहासन, जहांबैठेरघुराई ॥ मातकौसल्याकर तआरती, आनंदउरनसमाई ॥ ५ ॥ सरज्यूकेतीरअ योध्यानगरी, अपनेहाथबनाई ॥ तुलसीदासधन्यध न्यकौसल्या, भाग्यबडेनिजपाई ॥ ६ ॥ ५ ॥

रघुवरमैयामैया, कहनलगै, रघुवरमैयामैया ॥टेक॥ राजादसरथजीसोंबाबाहीबाबा, लक्ष्मणजीसोंमैया ॥ मातुकौसल्याभाग्यसराहत, मैंरघुवरबलिजैया ॥ ॥ १ ॥ दूरीखेलनजिनजाओप्यारेरघुवर, खेलौघरअं गनैया ॥ रंगमहलचढीटेरेकौसल्या, लेलेनामरमैया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसोहैं यां ॥ मातकौसल्याकरतआरती, दोऊकरलेतवलै या ॥ ३ ॥ खेलतफिरतसकलसरज्यूतट, करसोहेबा नधनूइया ॥ रामललाकियहछबिऊपर, तुलसीदासब लिजैया ॥ ४ ॥ ६ ॥

देखोमाईनवलकुंवर दसरथको ॥ टेक ॥ मणिमय जडितक्रीटअतिसुंदर, गोरोचनकोटीको ॥ अंबुज नयननासिकासुंदर, कुंडलझलकतनीको ॥ १ ॥ म णिमयजडितहारअतिसुंदर, हीरामानिकनीको ॥ क लितललितजरकसीकोजामा, आभूषणपुष्पनको ॥ ॥ २ ॥ औरसोहैंमोतियनकीमाला, भृगुलच्छनछ बिनीको ॥ करकंकणबाजूबंदसोहैं, धनुषविराजत नीको ॥ ३ ॥ कटितूणीरबाणकरराजे, कमलफिराव तनीको ॥ अग्रदासभजुदसरथनंदन, मोहतमनस बहीको ॥ ४ ॥ ७ ॥

बसुछबिनयननरामललाकी ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल, कोटि भानुछबिजाकी ॥ १ ॥ धनु षबान करकंकन सोहत, पीतलसत अतिवाकी ॥ २ ॥

लखि लखि स्याम बदनकी सोभा, रति पति गति मति थाकी ॥ ३ ॥ कहै रघुवीर दास त्रिभुवनमै, उपमादीजै काकी ॥ ४ ॥ ८ ॥

लागतरघुवरप्यारो आलिमोही ॥ टेक ॥ सरज्यूके तिरबिहरतरघुनंदन, दशरथराजदुलारो ॥ १ ॥ क्रीट मुकुटमकराकृतकुंडल, पीतांबरपटवारो ॥ भालवि शालमालमोतियनकी, सखितुमनेकनिहारो ॥ २ ॥ जानकिनायकजनसुखदायक, गुणगणरूपअपारो ॥ माधुरिमूरतिनिरखैसजनी, अंगअंगउजियारो ॥ ३ ॥ भूपस्वरूपअनूपबिराजै, चितसेपलहुनटारो ॥ राम सेवकजीकेप्रभुसुखसागर, गावतसुरनरनारो ॥ ४ ॥ ९

श्रीबागहुंसेआवतराजदुलारो ॥ टेक ॥ फूलनकीक लंगीफुलनकेगजरा, औरफुलनगलेहारो ॥ क्रीटमुकु टमकराकृतकुंडल, धनुषबाणकरधारो ॥ १ ॥ नीलेरा मसुरंगरंगलक्ष्मण, आवतअवधमझारो ॥ अवधपुरी नरनारिनिहारे, झुकिझुकिकरतजुहारो ॥ २ ॥ सुंदरवद नकमलदललोचन, कोटिमदनछबिवारो ॥ तुलसीदा सधन्यधन्यकौसल्या, आरतिसाजउतारो ॥ ३ ॥ १० ॥

आवतचारोभैयाश्रीबनहुंसे ॥ टेक ॥ दोउस्यामल दोउगौरमनोहर, राजादसरथजीकेछैया ॥ १ ॥ बनहुं सेआवततुरंगनचावत, करगहेंकमलफिरैया ॥ २ ॥ अव धपुरीनरनारिनिहारै, दोऊकरलेतबलैया ॥ ३ ॥ विविधि

भांतिआभूषणपहिरे, मंदमंदमुसकैया ॥ रामललाको रूपविलोकी, कोटिकाजछबीछैया ॥ ४ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, सोभावरणीनजैया ॥ बालअली प्रभुकीछबिनिरखे, करतआरतीमैया ॥ ५ ॥ ११ ॥

देखोमाईआवतअवधबिहारी ॥ टेक ॥ पागसुरंगी पेचकलँगी, श्रवणकुंडलझलकारी ॥ १ ॥ कंठाकलितललितहीरनके, उरवनमालसुधारी ॥ तुरंगनचावतकूंवरमनोहर, आपगजनअसवारी ॥ २ ॥ वहरीवाजकुरीनिजकरसे, चीतास्वानसिकारी ॥ तकथनपरनटनिरतकरतुहै, निरखतपुरनरनारी ॥ ३ ॥ अटाचढीसबछटानिहारे, निरखिपरमसुखभारी ॥ रंगमहलपहुँचैरघुनंदन, सोभासुखनिधिकारी ॥४॥ धूपदीपनैवेद्यआरति, सखियनसाजिउतारी ॥ कृपासखीसियपियसुखनिरखे, बिछुरनतपननिवारी ॥ ५ ॥ १२ ॥

रामललाकैसेआवैदेखोमाई ॥ टेक ॥ रघुबंसीबालकसंगलीन्हे, गजरथतुरंगनचावै ॥ हरखैदेवसुमनबहुवरखै, बंदीसुजससुनावै ॥ १ ॥ कीटमुकुटमकराकृतराजे, करगहिकमलफिरावै ॥ बहुविधिसाजबनेराजनके, कोउलियेबाझउडावै ॥ २ ॥ कोउलियेहरिछरीफूलनकी, कोउगलहारपहिरावै ॥ कोउकोउललितलवंगलतातरु, हरखिनिरखिगुणगावै ॥ ३ ॥ अवधपुरीकुलबंधुनिहारे, निरखीपरमसुखपावै ॥ जा

नकिवल्लभआयेअवधमें, अग्रदासबलिजावै ॥ ४ ॥ १३ ॥

रघुनंदनप्रभुआवैदेखोमाई ॥ टेक ॥ उपवनबाग सिकारखेलिके, चञ्चलतुरंगनचावै ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुण्डल, उरवनमालसोहावै ॥ कटिपरलटपटफेंटलपेटे, करगहिबाझउडावै ॥ २ ॥ चतुरंगी सेनासंगसोहै, पंचरंगध्वजाफहरावै ॥ घुरतनिसानभेरि सहनाई, गगनगरदउडावै ॥ ३ ॥ बंदीजनगन्धर्वगुण गावै, मुनिजनप्रभुकोरिझावै ॥ जयजयकारकरतब्रह्मादिक, इंद्रपुष्पझरिलावै ॥ ४ ॥ अवधपुरीनरनारीनिहारे, निरखिपरमपदपावै ॥ मातुकौसल्याकरतआरती, अग्रदासबलिजावै ॥ ५ ॥ १४ ॥

श्रीवनहुंतेआवतचारोभाई ॥ टेक ॥ मणिमयजडित विभूषणसुंदर, अंगअंगललितसोहाई ॥ गजरथतुरंग वाहनीवाहन, साजतसंगसुहाई ॥ १ ॥ खेलतफिरतसकलसरज्यूतट, संगसखासमुदाई ॥ जोमृगरामबानके लागत, पावतगतिसमुदाई ॥ २ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक, छबिबरणीनहिंजाई ॥ चढिविमानसुर कौतुकदेखत, देवसुमनझरिलाई ॥ ३ ॥ कटितूणीरबानकरलीन्हे, अमितकामछबिछाई ॥ नारदादिछबिदेखिमगनभये, देहदसाविसराई ॥ ४ ॥ ज्ञानविरागजोगजपतपकरि, नहिंपावतमुनिराई ॥ बालअलीकेमनमंदिरमें, विहरतश्रीरघुराई ५ ॥ १५ ॥

श्रीवनहुंसेआवतअवधबिहारी ॥ टेक ॥ रघुबंसीबा

लकसंगलीन्हे, गजरथकीअसवारी ॥ चीराकलितल लितजरकसीको, करगहिकंजसंभारी ॥ १ ॥ स्यामवर णद्युतिअधिकजगमगति, कोटिमदनछबिवारी ॥ माथा तूणिललितकटिऊपर, पीतांवरछविन्यारी ॥ २ ॥ वन हुंसेआवततुरंगनचावत, मोहेपुरनरनारी ॥ वाजकुहीव हुजातिसंगलिये, औरोजीवसिकारी ॥३॥ खेलतफिरत बिपिनकुंजनवन, संगसखालियेसारी ॥ मातुकौसल्या करतआरती, बालअलिबलिहारी ॥ ४ ॥ १६ ॥

आवतसारंगपानीश्रीवनहुंसे ॥ टेक ॥ संगसखास बसोहतनीके, बहुविधिसोभाखानी ॥ १ ॥ रघुवरलक्ष्म णभरतशत्रुहनरूपरासिगुणखानी ॥ निरखिमधुरछवी रघुवरकी, सखिसवपरमसयानी ॥ २ ॥ हातपातफलफू ललियेसव, सुमनगलेगुथपानी ॥ होतकोलाहलसुनि नपरतकछु, बातजातनहिंजानी ॥ ३ ॥ तुरंगनचावत आवतछबिसों, सेन्याअतिअभिमानी ॥ सन्तदासमृग राजपकडप्रभु, आयेबड़ेसयानी ॥ ४ ॥ १७ ॥

रुनझुनरुनझुनरामललाआवै ॥ हाथधनुषकरवा नचलावै ॥ टेक ॥ कनकचोकविचखेलतललना, संग सखाबहुबालसुहावै ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटपरकलंगीराजै, मधुरहासमनमोदबढावै ॥ २ ॥ स्यामवदन परपीत झिंगुलिया, अरुचरण वनमालसुहावै ॥ ३ ॥ उ भयभुजापरसारंगराजै, कटिपरकिंकिणि अधिक

सुहावै ॥ ४ ॥ कौसल्याकेकईसुमित्रा, रामलला जीको टेरबोलावै ॥ ५ ॥ भरतशत्रुहनसंगलियेललना, लक्ष्मणकूँवरचँवरढुरावै ॥ ६ ॥ मातकौसल्याकरत आरती, सुरनरमुनिजनलीलागावै ॥ ७ ॥ ब्रह्मदास ललामाधुरिमूरति, तीनलोकमैनाचनचावै ॥ ८ ॥ १८ ॥

अयोध्याविमलपुरीहमजानी ॥टेक॥ विमलापुरीविमलसरज्यूजल, विमलरामरजधानी ॥ १ ॥ विविधधाममणिस्यामअरुणसित, हेमपंकजचितटानी ॥ हरितमणिनकेखंभजगमगते, हेरतदिशाभुलानी ॥२॥ तोरनकेतुपताकध्वजाघन, गलियनकोटनवानी ॥ सुरतरुकामधेनुचिंतामणि,मनवांछितफलदानी ॥ ३ ॥ भूपभवनसबभाँतिअलौकिक, केहिविधिजातबखानी ॥ मरकतमणिमयअजिरसोहावन, विहरतसारंगपानी ॥ ४ ॥ फूलेनीलफूलसरज्यूके, सोहसरितवरफानी ॥ मानहुँविपुलवसेसरज्यूतट, हरिरमासंभुभवानी ॥ ५ ॥ गुंजतमधुपप्रागरसमाते, कोहेस्वादबखानी ॥ मानहुरामरसीकरसछाके, गदगदरसरतसानी ॥६॥ सरज्यूसलिलसुधासीतलसुचि, सकलसुखदकीखानी ॥ मानहुभक्तीधारभवतरणी, प्रभुपुरनिकटवहानी ॥ ७ ॥ सोहिनसकततरुभारफूलफल, लूमभूमिनियरानी ॥ देतबोलायपथीकजनकरगाहि, देखतदेहभुलानी ॥८॥ कैकैहंसकपोतकोकिला, मिलिझुंडनहरखानी ॥ निरखतमुदितमं

डलीजहाँतहाँ, सब बालवृद्धअवसानी ॥ ९ ॥ निरखि नारिनरअवधनगरके, मोहतरूपलुभानी ॥ कोकहिस केरूपअतिउपमा,सुरमुनिशेषवखानी ॥ १०॥ धन्यसर ज्यूसाकेतनगरते, धन्यसेवकसेवकानी ॥ धन्यधन्यनृ पदशरथराजाके, धन्यकौशल्यारानी ॥११ ॥ कृपानि वासबिमलकंचनपुरी, गुंजतसवमनमानी ॥ विहरतस रज्यूपुलिनललिनमिलि,लाललगीगहीपानी॥१२॥१९॥

देखोसखिराजतअवधविहारी ॥टेक ॥ मणिमंडपमें रतनसिंहासन, कोटिभानुउजियारी ॥ १ ॥ रतनजडि तशिरक्रीटविराजै, कुंडलकीछविन्यारी ॥ भालविशा लतिलकअतिसोहै, तीनलोकउजियारी ॥२ ॥ भ्रुकुटि विशालमनोहरनासा, चंद्रवदनद्युतिकारी ॥ नवराजी वनयनकीसोभा, मंदहसनअतिप्यारी ॥ ३ ॥ उरम णिमालहारमुक्ताछवि, मनहरखतउजियारी ॥ वाहु विशालविभूषणसोहै,रुचिरपीतांवरधारी ॥ ४ ॥ रुम झुमकपगनूपुरबाजैं,मोहतमदननिहारी ॥ कृपानि वासकहाँलगिबरणौं, सोभासिंधुखरारी ॥ ५ ॥ २० ॥

देखोसखिआवतरासविहारी ॥ टेक ॥ सरज्यूतीर सिंगारविपिनमें, अतिअनूपछविभारी ॥ १ ॥ संगसखी सोहैं अलवेलि, वनीठनीछविकारी ॥ सुमनसिंगारकि योनखसिखलों,निजकरस्यामसवारी ॥ २ ॥ प्रभुआगे सखिखेलतआवै, फूलनगेंदउछारी॥ झुकिझुकिलेतपर

स्परफेंकत, अतिआनंदपियप्यारी ॥ ३ ॥ सीतारामम
नोहरजोरी, चितवनकीबलिहारी ॥ कुंडलअलकनझ
लकबुलाके, दमकतहृदयहमारी ॥ ४ ॥ आयेदंपतिराम
चरणसखी, भूषणवसनउतारी ॥ नखसिखमणिभूषण
सिंगारकरी, सिंहासनबैठारी ॥ ५ ॥ २१ ॥

श्रीराघोजीकी आजसजीअसवारी ॥ टेक ॥ दशरथ
राजकुमारलाडिले, सोभान्यारीन्यारी ॥ १ ॥ सजेतुरंग
रंगराजनके, भीरगजेंद्रनभारी ॥ जगमगझूलजरीकी
सोहै, रतनजडावअंबारी ॥ २ ॥ धूमगरजसोभरत
जीआये, श्रीरघुनाथनिहारी ॥ होतकुलाहललखनला
लके, रिपुसूदनछबिन्यारी ॥ ३ ॥ हरखैदेवसुमनबहुब
रखै, जयजयकारउचारी ॥ ब्रह्मादिकदरशनकोआये,
मोहतवदननिहारी ॥ ४ ॥ रविशशिकोटिबदनकीसो
भा, चंद्रकलाउजियारी ॥ अग्रअलिप्रभुकीछबिनिर
खै, चरणकमलवलिहारी ॥ ५ ॥ २२ ॥

भजुमनजानकिजीवनरामा ॥ टेक ॥ सुखमासदनस
कलसुखसागर, मधुरमनोहरस्यामा ॥ १ ॥ कामकोटिसो
भातनुविलसै, निरखतलाजैकामा ॥ बामअंगसोहति
सियसुंदरि, दक्षिणलखनललामा ॥ २ ॥ मनक्रमवच
नजासुउरअंतर, सियपियप्रेमनजामा ॥ सोशिरधुनि
पछितायनिरंतर, दुःखपावैपरिणामा ॥ ३ ॥ सोईमम
स्वामीसेवतजेहिहनुमत, जासुजपतहरनामा ॥ बीन

बजायगावत जसनारद, लहतसकलविश्रामा ॥ ४ ॥
करसरोजकीछाँहजोपावै, सोसबविधिसुखधामा ॥ स
कलतापत्रयतापनसावै, तेहिलागतनहिंघामा ॥ ५ ॥
सबलायकसुखदायकमेरो, सोइसुखसागररामा ॥ राम
कृपानिरखतछविजाकी, चेरीभईविनुदामा ॥६॥२३॥

श्रीरघुनाथदयानिधिदानी ॥ टेक ॥ सियपियप्रेमस
कलसुखदायक, जपतपयोगकहानी ॥१॥ कोउजपजो
गकरतसहीसंकट, कोउमुनिवरविज्ञानी ॥ कोउतपतीर
थकरिसुखचाहत, कोउशुकर्मअभिमानी ॥२॥ कारणर
हितकृपालसुजससुनि, रामकृपासखिस्यानी ॥ सकल
भरोसविहायकपटतजि,सियपियहाथबिकानी॥३॥२४॥

भजमनसरज्यूअवधविहारी ॥ टेक ॥ संगसखासर
ज्यूतटविहरै, सुंदरअवधविहारी ॥ १ ॥ नीलकलेवरपीत
झिंगुलिया, बाहुसघनाजिसतारी ॥ घुंघुरवारेहेअलकव
नपर, मानहुभँवरगुंजारी ॥ २ ॥ कंबुकंठचीबुकअतिसो
है, अनंदवदनछविछारी॥कटिकिंकिणिनूपुरछविराजै
भृगुलक्षनछविछारी ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल
उरवनमालसोहारी ॥ शेषसहस्रमुखरटतनिरंतर, सो
वाकापारनपारी ॥ ४ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक,
निगमनेतिजसगारी ॥ रामानंदप्रभुकीछविनिरखै,
चरणकमलचितलारी ॥ ५ ॥ २५ ॥

मनरेतूसरज्यू तीरकरुवासा ॥ टेक ॥ मानसरोवर

प्रगटीवशिष्ठि, अवधपुरी परकासा ॥ १ ॥ जहाँबिहरे
रघुनाथरमापति, जगवल्लभ दुखनाशा ॥ जाकेदरस
परस सुखउपजै, कलिमल होइसबनाशा ॥ २ ॥ नि
रमलजल अस्नानपानकरी, मेटतजमकीत्रासा ॥ ब्र
ह्मादिक जाकेपारनपावै, सेवत हरिकोदासा ॥ ३ ॥
रामघाटअस्नान करनको, अंतराम पुरबासा ॥ श्री
रघुनाथ सरणमोहिलीजै, गावत तुलसीदासा ॥ ४ ॥
॥ २६ ॥ इति गुरुवारकी गौरि संपूर्ण ॥

॥ अथशुक्रवारकीगौरीप्रारंभः ॥

आजबनीछबिभारी, श्रीराघोजीकी० ॥ टेक ॥ सहि
तजानकीरतनसिंहासन, राजतअवधबिहारी ॥१॥ क्री
टमुकुटमकराकृतकुंडल, तिलकपटलद्युतिकारी ॥ ब
दनमयंकतापत्रयमोचन, मंदहसनअतिप्यारी ॥ २ ॥
चंदनचरचितअंगमनोहर, उरबनमालसोहारी ॥ बाहु
बिसालविभूषणसुंदर, करगहीसारंगधारी ॥ ३ ॥ कटि
परपीतवसनकीशोभा, मोहतमदननिहारी ॥ सुरवरमु
निजनचरणसरोरुह, ध्यानधरतत्रिपुरारी ॥ ४ ॥ चतुर
सखीमिलिकरतआरती, सजिकंचनकीथारी ॥ रामस
खेप्रभुकीछबिनिरखै, गावतसुरपुरनारी ॥ ५ ॥ १ ॥

आजबनीछबिभारी, श्रीराघोजीकी ॥ टेक ॥ क्रीट
मुकुटमकराकृतकुंडल, धनुषबानकरधारी ॥ १ ॥ सुंदर
भालतिलककीसोभा, अलकेघूघरवारी ॥ नयननकम

लवदनकीसोभा, नयननमेरसन्यारी ॥ २ ॥ बायेअंग जानकीसोहै, हनुमतआज्ञाकारी ॥ गौरस्यामसुन्दर तनसोहै, चंद्रवदनउजियारी ॥ ३ ॥ रतनजडीतआ भूषणसोहै, मोतियनकीछबिन्यारी ॥ मातकौसल्या करतआरती, तुलसीदासबलिहारी ॥ ४ ॥ २ ॥

अयोध्याराजतभूमिकनककी ॥ टेक ॥ रंगभवनरा जतरघुनंदन, संगलियेसुताजनककी ॥ रविशशिकोटि उदितहमदेखे, जोडिबनिहैबनककी ॥१॥ रघुवरलक्ष्म णभरतशत्रुहन, आगेहैहनुमानबलीकी ॥ मातकौस ल्याकरतआरती, जयजयश्रीरघुवरकी ॥२ ॥ ठुमकिठु मकिमहलमेंविहरत, झुमकझुमकपगनूपुरकी ॥ कृपा निवासकहाँलगीबरणौ, महिमाअवधनगरकी ॥३॥३॥

जानकीजीवनकीबलीजेहौं ॥ टेक॥ चितकहैरामसि यापदपरिहरि, अबनकहूंचलीजेहौं ॥ १ ॥ उपजीउर प्रतितीप्रीतिसुख, हरिपदविमुखनपैहौं ॥ मनसमेतयह तनकेबासी, इहैसीखावनदेहौं ॥ २ ॥ श्रवणऔरक थानहिंसुनिहौं,रसनाऔरनगैहौं ॥ रोकिहौंनयनविलो कतऔरहि, सीसईसपदनैहौं ॥ ३ ॥ नातोनेहर मसोकरिहौं नातौनेहनीबैहौं ॥ यहसबभारताहीतुल सीजग, जाकोदासकहैहौं ॥ ४ ॥ ४ ॥

भजुमनसरज्यूअवधबिहारी ॥ टेक ॥ जाकोनामले तअघनासत, आवागवननिवारी ॥ सरज्यूतीरकल्पत

रुछाया, जहाँसिंहासनभारी ॥ १ ॥ निरखिप्रकासरवि रथथाकै, एकटकरहैनिहारी ॥ बैठेरामबामसियासो है, अतिसिंगारसुभकारी ॥ २ ॥ सीतारामम्नोहरजोरी, चितवनकीबलिहारी ॥ कुंडलझलकतझलककबुलाककी, दमकतहृदयहमारी ॥ ३ ॥ सुरंगीटोपीसीरसो है, कचघुंघुरमनहारी ॥ भालबिशालतिलकसिरसो है, श्रवनकुंडलअतिभारी ॥ ४ ॥ नखसिखलोवनमाल बिराजत, कौस्तुभमणिसुभकारी ॥ ताऊपरगुंजावलीराजै, भृगुलच्छनसुभकारी ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, वरस्वरूपउपकारी ॥ सारंगधनुषबानकरराजै, नटवरछबिवपुधारी ॥ ६ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक, विनतीकरतन्यारिन्यारी ॥ रामदास जुगलछबिनिरखत, चरनकमलबलिहारी ॥ ७ ॥ ५ ॥

जिनके प्रियन रामवैदेही ॥ टेक ॥ तजियेताहि कोटिबैरीसम, जद्यपिपरमसनेही ॥ १ ॥ तज्योपिता प्रहलादबिभीषण, बंधुभरतमहतारी ॥ बलिगुरु तजेकंत व्रजबनिता, भयिजग मंगलकारी ॥ २ ॥ नातोनेह रामसोकीजै, सीलसनेह जहांलौं ॥ अंजनकहाआंखीजोफूटै, बहुतक कहीकहांलौं ॥३॥ सोईसीतापतिवहीहमारो, प्रानपूजतेप्यारो ॥ जासंगबढत सनेहरामपद, तुलसीमतोहमारो ॥ ४ ॥ ६ ॥

बोलतमधुरीबानी रघुवरबोलत ॥ टेक ॥ क्रीटमु

कुटमकराकृतकुंडल, छबिनहिंजातबखानी ॥ हमसर ज्यूजलभरनजातरहि, बिचरामरससानी ॥ १ ॥ बालक मानकेलोचनमारत, तकितकिदीनमुंतानी॥ घूंघुटमेरो छूटगयोहै, लाजछोडिमुसक्यानी ॥ २ ॥ अवरनारीनर मिलेअवधके, येसबफिरतहसानी ॥ लोगकुटुंबअव मोहिनहिंभावै, दसरथसुतरससानी ॥ ३ ॥ रघुवरल क्ष्मण भरतशत्रुहन, दशरथसुतहमजानी ॥ रामसखे कौसलपुरजीवन, रघुवरहाथबिकानी ॥ ४ ॥ ७ ॥

अवधपुरीवसभाईमनरेतु ॥ टेक ॥ सप्तपुरीमेंश्रेष्ठअ योध्या, जहाँबैठेरघुराई ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन, सोभावरणीनजाई ॥१॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,उ रवनमालसुहाई ॥ जहाँसरजूपापनकीहरणी, आपवासि ष्ठजहाँ लाई ॥ २ ॥ जाकेदरसपरसअघनाशै, वेदपुरा णनगाई ॥ अवधपुरीदेवनकोदुरलभ, अपनेहाथबना ई ॥ ३ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, सेवतमनचित लाई ॥ बालमीकनारदघटजोनी, कौशिकमुनिमनलाई ॥ ४ ॥ कीटपतंगसबेगतीपावै, रामरूपबनिजाई ॥ स्व र्गलोकअपवर्गविभूती, अवधपुरीचलिआई ॥ ५ ॥ स हितलक्ष्मणरघुनाथजानकी, जहाँविहरतसबभाई ॥ अवधपुरीकोध्यानधरतहै, भक्तिमुक्तिफलपाई ॥ ६ ॥ चारिखानिजगजीवचराचर, अवधवसेगतिपाई ॥ रा मदासभजनबलसियावर, भवसागरमिटजाई ॥ ७ ॥ ८ ॥

भजुमनलखन चरणसुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणिपति अवतारलियोहै, संतनकेहितलाई ॥ सूरजवंसप्रसंसेसुरमुनि, वेदपुराणनगाई ॥ १ ॥ रघुकुलमणि परकासदिवाकर, तिनके अनुजकहाई ॥ गौरकिशोरवदन अतिसुन्दर, कोटिमदनछबिछाई ॥ २ ॥ बाहुविशालविभूषणसुंदर, कांधेधनुषसोहाई ॥ पीतवसन वनमालविराजे, सबअंगसुंदरताई ॥ ३ ॥ सिरपरक्रीट श्रवणमणिकुंडल, मेचकअधिकबनाई ॥ भालविसाल तिलकसिरसोहै, भृकुटीबिकटसुहाई ॥ ४ ॥ सारंगधनुषबानकरराजै, सोभावरणिनजाई ॥ फूलनकी वरमालबिराजे, फूलनगुञ्जसोहाई ॥ ५ ॥ तीनलोकऔर भुवनचतुरदस, जानतसबप्रभुताई ॥ शिवब्रह्माजाको पारनपावे, नेतिनेतिकहगाई ॥ ६ ॥ असुरनिकन्दन होदुखभंजन, हैजगबिदितबडाई ॥ आसानंदआसचरणनकी, द्योभक्तिसुखदाई ॥ ७ ॥ ९ ॥

भजोमनरामानुजसुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणिपति अवतारमनोहर, दशरथसुवनसुहाई ॥ श्रीरघुवीरचरणअनुरागै, संतनकेसुखदाई ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटकरधनुषबिराजै, कुंडलकीछबिछाई ॥ तरकसकटिपीतांबरसोहै, मृगमदतिलकसुहाई ॥ २ ॥ अरुणकञ्जलोचन अतिसुंदर, भृकुटीविकटसुहाई ॥ चारुकपोलनासिकासोहै, अलकनभँवरलुभाई ॥ ३ ॥ असुरसंहारन

भक्तउबारन, सुरनरमुनिसुखदाई ॥ युद्धवीरक्रोधेश्रीलक्ष्मण, मेघनादगतिपाई ॥ ४ ॥ जाकरनामलेतछूटतभव, जरामरणमिटिजाई ॥ रामचरणपरकिरपाकीजे, चरणकमलसुखदाई ॥ ५ ॥ १० ॥

आजबन्योरथनीको, श्रीबालाजीको ॥ टेक ॥ चौवाचंदनऔरअरगजा, मोतियनचौकपुरेको ॥ वंदनवारेबांधेरुचिरुचि, बिचबिचदलतुलसीको ॥ १ ॥ चारोखंभबनेकञ्चनके, उपरकामजरीको ॥ रतनसिंहासनआपबिराजै, मुकुटधरेमोतियनको ॥ २ ॥ कंबुकंठकौस्तुभमणिराजै, पटुकाराजतनीको ॥ जयविजयदोउपोरियाबिराजै, सनमुखसुतअंजनीको ॥ ३ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतिगावेजिनको ॥ जनहथीरामजीवंकटजीकेसरणे, मनमोहतसबहिको ॥ ४ ॥ ११ ॥

आजबनिछबिभारी, श्रीबालाजीकी ॥ टेक ॥ रतनसिंहासनआपबिराजै, देतहैसोभाप्यारी ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुण्डल, मोतियनकीछबिभारी ॥ वैजंतीमालाअतिसोहै, पीतांबरकटिन्यारी ॥ २ ॥ किङ्किनिदेखिअधिकमनमोहै, क्षुद्रघंटिकाभारी ॥ नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहै, ध्यानधरतत्रिपुरारी ॥ ३ ॥ यहछबिदेखिसुमनसुरबरखै, कहाँलगिबरनोंप्यारी ॥ जयजयकारकरतसोभापर, हाथीरामजायबलिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥

सीतारामउपासी, आयेमेरेसीताराम ॥ टेक ॥ सुक्ति

नाथहरीजन्मलियोहै, पूरणब्रह्मअविनाशी ॥ मालति
लक्तुलसीकीमाला, अवधपुरीकेबासी ॥ १॥ तीरथबर
तसबेकरिआये, कोटिगया औरकाशी ॥ चरणधोयच
रनामृतलीन्हो, निरमलहोगइछाती ॥ २ ॥ रामनामजा
केहृदयवसतहै, जगमैरहतउदासी ॥ जितचितवतउत
अभयकरतहै, मेटतजमकीफांसी ॥ ३ ॥ रघुवरछोडि
अवरकौभजिहै, सोनरजमपुरजासी ॥ तुलसीदासर
घुवरकेसरणे, मिटगईलखचोरासी ॥ ४ ॥ १३ ॥

श्रीबालाजिकीआजबनिछबिभारी ॥ टेक ॥ त्रिपति
मैसीतारामजीविराजे, शेषनागकीछाया ॥ लक्ष्मीकम
लाचरणपलोटै, छबिनहीजातबखानी ॥१॥ शेषाचलप
रआपविराजै, सनकादिकऋषिचारी ॥ आसपासगि
रिवरकीसोभा, बीचमैकोयलभारी ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटम
कराकृतकुंडल, उरवनमालसोहाई॥ बाहुविशालविभू
षणसोहै, करगहिसारंगधारी ॥ ३ ॥ चंदनचरचित
अंगमनोहर, भृगुलक्षणनछबिछाई ॥ जनहाथीराम
वेंकटजीकेसरणै, गावतसुरपुरनारी ॥ ४ ॥ १४ ॥

श्रीलक्ष्मण सांचे दीनदयाला ॥ टेक ॥ शेषाचलपर
बनेदेवाला, कंचन कलसधराला ॥ त्रिपतिमें सीतारा
मजीविराजे, चौकीलक्ष्मणबाला ॥ १ ॥ रामानुज अव
तारमनोहर, राजादशरथजीकेलाला ॥ इजयाविज
यदोउपोरियाविराजे, बिजयघंटझनकाला ॥ २ ॥ आ

ठपहरफूलनकेजामा, ऊपरमौजदुसाला ॥ कीटमुकुट मकराकृतकुंडल, उरवैजयंतीमाला ॥ ३ ॥ शंखचक्र गदापद्मबिराजै, बांकेनयनविशाला ॥ आशानंद कहैकरजोरि, मिटिगयो दुखजंजाला ॥ ४ ॥ १५ ॥

देखोसखिलखणललाधनुधारी ॥ टेक ॥ दशरथनंदनचढेतुरंगन, गजरथकीअसवारी ॥ जामाकलितललितजरकसिको, करगहिकंजसंवारी ॥ १ ॥ गौरवरणद्युतिअतिजगमगति, कोटिमदनछविवारी ॥ माथानूनललितकटिऊपर, पीताँबरछविप्यारी ॥ २ ॥ वनहूँसे आवततुरंगनचावत, मोहैपुरनरनारी ॥ कुहिरावाजस्वानबहुजाति, संगलियेजीवसीकारी ॥ ३ ॥ खेलतफिरताविपिनकुंजनवन, संखसखालियेसारी ॥ मातुकौशल्याकरतआरति, बालअलिबलिहारी ॥ ४ ॥ १६ ॥

देखोसखिदशरथराजदुलारे ॥ टेक ॥ गोरेवरणवदनअतिसुन्दर, पीतांबरपटवारे ॥ हीरालालजवाहिरमोतीमणिमालउरडारे ॥ १ ॥ सिरचौतनियाटोपीसोहै, कुंचितकेससंवारे ॥ श्रवणनकुंडलअतिछविछाजै, मानोगगनबिचतारे ॥ २ ॥ करमैबाजूबंदविराजै, सारंगबानसुधारे ॥ नवलसखासवसंगमैखेलन, चलेजातासिकारै ॥३ ॥ चढैतुरंगनचलैउमंगन, पुरनरनारिनिहारै ॥ रामसखेपुरबाहेरठाढे, दरसनदेप्रभुप्यारे ॥ ४ ॥ १७ ॥

सुनोमनरामशरणहितकारी ॥ टेक ॥ भजनभारे

सानहीहियमोरे, पातकबलमोहिभारी ॥ १ ॥ पापकरत गनिकाभइपावन, कहतपुराणपुकारी ॥ चढिबिमानगइ गगनअहिल्या, अस्तुतिकरततुम्हारी॥२॥ व्याधअजा मिलगीधतरेसब, रहैसकलअधमभारी ॥ पातकसबकी वातसुधारी, विदितबातयहसारी ॥ ३ ॥ ज्ञानवैराग जोगजपसाधन, मोरीसुरतबिसारी ॥ लखिआचरणसों चहियभारी, सबप्रकारमैंहारी ॥ ४ ॥ मम्महितबिनयक रतपातकसव, भवभयविकलबिचारी ॥ पातकमोरस नावततोहि, पातककोबलिहारी ॥ ५ ॥ पतितपुनीत शरणसुखदायक, रघुपतिअवधबिहारी ॥ वेदविदित निजविरदसँभारहु, रामकृपाअघतारी ॥ ६ ॥ १८ ॥

सुनोमनदीनदुसहदुःखहारी ॥ टेक ॥ निजभरोसो मोरेहियनाही, निजआचरणनिहारी ॥ १ ॥ कहतसराह तपातकमोरे, मैंअतिदीनदुखारी ॥ दोषकोषअघअव गुणराजा, सवविधिभजनभिखारी ॥ २ ॥ निजअपराध विपतिअतिदारुण, कहोकहाँविस्तारी ॥ रघुनंदनउर अंतरजामी, जानतपीरहमारी ॥३ ॥ आगमनिगमपुरा णवखानत, परमकृपालखरारी ॥ शरणसुखदप्रणतार तिभंजन, कहतप्रचारिप्रचारी ॥ ४ ॥ त्रिभुवनतारण अधमउधारण, निरखहुनयनउघारी ॥ बिरदलाजरा खहुकरिमोपर, करुणानिजअनुहारी ॥ ५ ॥ ताजिविलं बअतिआरतिमोरी, सबअपराधविसारी ॥ तारीसको

तोतारोरघुवर, रामकृपाहियहारी ॥ ६ ॥ १९ ॥

सुनुमनशरणसुखदाहितकारी ॥ टेक ॥ रघुनंदनरघुपतिरघुराई, दशरथअजिरबिहारी ॥ १ ॥ नाथहाथहितअनहितमोरा, मोकहँआसतुम्हारी ॥ तुमतजिअवरदेवनहिंजानौं, पुनिपुनिकहौंपुकारी ॥ २ ॥ तुमबिनुत्रिभुवनकौनकहावत, बिनुकारणाहितकारी ॥ मोसमकहहुकहाँकेहिभावत, पूरकुटिलकुविचारी ॥ ३ ॥ यद्यपिमोहिसोचहियनाहीं, सुनहुकृपालखरारी ॥ सियस्वामिनिसियपियममस्वामी, सोइअवलंबविचारी ॥४॥ सजीसरोजनिजसेनप्रबलअति, कठिनकृपानसम्हारी ॥ कलिकरालचाहतमोहिघालन, दशनपीसललकारी ॥५॥ शरणसुखदकरुणानिधिदोऊरघुपतिजनकदुलारी ॥ रामकृपाक्षणक्षणगुणगावत, कलिभयभीतिविसारी॥६॥२०॥

सुनुसियारामविपतिअतिमोरी ॥ टेक ॥ संतनगुणभावत हियेतोरे, मैंअबअवगुणबोरी ॥ १ ॥ आरतवचनकहौंकरजोरी, सत्यसपथकरितोरी ॥ अवरभरोसनहीहियमोरे, नाथहाथगतिमोरी ॥ २ ॥ सबविधिमैंसियपियासियचेरी, ममहियआसनथोरी ॥ जानकिजीवनजीवनमोरे, जानतजनककिसोरी ॥ ३ ॥ रामकृपामागतरघुनंदन, सजलनयनकरजोरी ॥ यहबरदेहुबिनयबलमोकहूँ, जन्मजन्ममैंतोरी ॥४॥२१॥

इति शुक्रवारकी गौरी संपूर्ण ॥

॥ अथ शनिवारकी गौरी प्रारंभः ॥

सीयारघुवीरमरोसोऐसो ॥ टेक ॥ बारीनबोरिसकै प्रहलादै, पावकनाहिंजरोसो ॥ गिरिऊपरसेंडारिदियो है, भूमिपरोउबरोसो ॥ १ ॥ हिरनाकुसप्रहलादभक्तसो हठिहठिवयरकरोसो ॥ मारनचहैदासनरहरिको, आपुहीदुष्टमरोसो ॥ २ ॥ लंकाजारिअंजनीनंदन, देखतपुरसगरोसो ॥ ताकेमध्यविभीषणकोगृह, रामकृपाउबरोसो ॥ ३ ॥ रावणसभाकठिणपदअंगद, हियेधरिहरीसुमिरोसो ॥ मेघनादसमकोटिनजोधा, टान्योपगनटरोसो ॥ ४ ॥ द्रुपदसुताकेचीरदुसासन, राजसभापकरोसो ॥ खेंचतखेंचतभुजबलहारे, नेकनअंगउघरोसो ॥ ५ ॥ महाभारतभरदुलकेअंडा, क्षोहनिदलवटुरोसो ॥ रामनामजपिपंछीटेरै, घंटाटूटपरोसो ॥ ६ ॥ गजऔरग्राह लडैजलभीतर, गजकोग्राहधरोसो ॥ गरुडछाँडिहरिप्यादेध्याये, डूबतगजउबरोसो ॥७॥ मीराकेमारनकेकारण, राजाजहरकरोसो ॥ रामकृपाकरिअमृतहोगयो, हरखितपानकरोसो ॥ ८ ॥ तुलसीदासविश्वासरामको, जोनरनारिकरोसो ॥ औरविभूतिकहाँलगिवरनौ, जोहिंजमराजडरोसो॥ ९ ॥ १ ॥

ऐसोरामदीनहितकारी॥ टेक ॥ अतिकोमलकरुणानिधान, विनुकारणपरउपकारी ॥ १ ॥ साधनहीनदीननिजअघवस, सिलाभईमुनिनारी ॥ गृहतेगवनपर

सिपदपावन, घोरश्रापतेतारी ॥ २ ॥ हिंसारतनिखाद तामसबस, पशुसमानवनचारी ॥ भेटौहृदयलगायप्रेमबस, नहिकुलजातिविचारी ॥ ३ ॥ जद्यपिद्रोहकियोसुरपतिसुत, कहिनजाइअघभारी ॥ सकललोकअवलोकिकहत, सरणगयेभयटारी ॥ ४ ॥ विहंगयोनिआमिखअहारबस, गिद्धकवनव्रतधारी ॥ जनकसमानक्रियाकरिताकी, निजकरबातसंवारी ॥ ५ ॥ अधमजातिसवरीजोनिरखत, सबलोकवेदतेन्यारी ॥ जानिप्रीतिदियेदरसकृपानिधि, सोरघुनाथउधारी ॥ ६ ॥ कपिसुग्रीवबंधुभयेव्याकुल, आयोसरणपुकारी ॥ सहीनसकेदारुणदुःखजनके, हत्योवालीसंहारी ॥ ७॥ रिपुकोअनुजबिभीषणनिसिचर, कौनभजनअधिकारी ॥ सरणगयेआगेहोयलीन्हो, भेटौभुजापसारी ॥ ८ ॥ असुभहोयजिनकेसुमिरणते, वानररीछविकारी ॥ वेदविदितपावनकियेसबको, महिमानाथतुम्हारी ॥ ९ ॥ कहाँलौकहौदीनअगिनीतप्रभु, जिनकी विपति निवारी ॥ कलिमलग्रसितदासतुलसीपर, काहेकृपाविसारी ॥ १० ॥ २ ॥

ऐसोकोउदारजगमाही ॥ टेक ॥ विनसेवाजोद्रवतदीनपर, रामसरिसकोउनाही ॥ १ ॥ जोगतिजोगविरागयतनकरि, नाहिपावतमुनिज्ञानी ॥ सोगतिदईगिद्धशबरीकहँ, प्रभुनबहुतजियजानी ॥ २ ॥ जोसम्पतिदशशीशसाधिकरि, रावणसिवपहिलीन्ही ॥ सोसंपदा

बिभीषणकहंअति, सकुचसहितहरिदीन्ही ॥ ३ ॥ तुलसिदाससबभांतिसकलसुख, जोचाहैमनमेरौ ॥ तौभजुरामकामपदपूरण, करिहैकृपानिधितेरो ॥ ४ ॥ ३ ॥

फिरपछ्तैहोअवसरबीते ॥ टेक ॥ दुरलभदेहपाइनरहरिभज, करमवचनमनहीते ॥ १ ॥ सहस्त्रबाहु दसवदन आदिनृप, बचहीनकालबलीते ॥ हमहमकरिधनधामसमारे, अंतचले उठ रीते ॥ २ ॥ सुतबनितादिजानिस्वारथरत, नाकरनेहउनहीते ॥ अंतहि तोहि तजेंगे पावर, तूनतजैअबहीते ॥ ३ ॥ अबनाथहितूंजानिसकलसुख, त्यागदुरासाजीते ॥ पूजहिकामअगनीततुलसीके, विषय भोग रस घीते ॥ ४ ॥ ४ ॥

जिनकीरहनीरामसैनाहीं ॥ टेक ॥ तेनरखरकुकरसूकरसम, वृथाजीवतजगमाहीं ॥ १ ॥ कामक्रोधमदलोभमोहमद, भूखप्यास सबहीको ॥ मानुसदेहसुरसाधुसराहत, सोतोनेहसियपियको ॥ २ ॥ सुरसुजान सुरपूतसुलक्षन, गुनियतगुनगरुआई ॥ बिनुहरिभजननसुनकेफूलन, जातनहींकरुवाई ॥ ३ ॥ कीरतिकुलकरनूतीभलीही, सीलसरूपसलोनै ॥ तुलसिदासप्रभु रागरहितजस, व्यंजनसागअलोनै ॥ ४ ॥ ५ ॥

भजुमनरामचरणसुखदाई ॥ टेक ॥ जिनचरणनसेनिकसिसुरसरी, संकरजटासमाई ॥ जटासंकरीनामधन्योहै, त्रिभुवनतारणआई ॥ १ ॥ जिनचरण

नकिचरनपादुका, भरतरहैलवलाई ॥ सोकेवटकठ रिमैंधोइलीनो, तबहरिनावचढाई ॥ २ ॥ दंडकवन प्रभुपावनकीन्हो, ऋषियनत्रासमिटाई ॥ सोठाकुर तिहुलोककेस्वामी, कपटमृगासंगधाई ॥ ३ ॥ कपि सुग्रीवबंधुभयेंव्याकुल, तासीरछत्रचढाई ॥ रिपुके अनुजबिभीषणभेटे, परसतलंकापाई ॥ ४ ॥ शिवस नकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतिजसगाई ॥ तुलसी दाससमारुतसुतमहिमा, हरिअपने मुखगाई ॥ ५ ॥ ६ ॥

भजुमनरामचरणदिनराती ॥ टेक ॥ रसनाकसन भजोतुमहरिजस, नामलेतअलसाती ॥१॥ जाकोनाम लेतअघनाशत, मुनित्रयतापबुझाती ॥ रामचंद्रकोनाम अमीयरस, सोरसकाहेनखाती ॥ २ ॥ श्रोतासुमतीसु सीलहरीजन, देतसलाहसोहाती ॥ लियोसनेहसुज सरघुपतिको, सुनिजुडातहियछाती ॥ ३ ॥ संमतसोल हसैएकतीसा, ज्येष्ठमासछठिस्वाती ॥ तुलसीदासप्र भुविनयलिखतहै, राममिलनकीपाती ॥ ४ ॥ ७ ॥

कौनकुटिलखलकामीमोसम ॥ टेक ॥ तुमसेकाह छिपोकरुणानिधि, तुमउरअंतरजामी ॥ १ ॥ भरिभ रिउदरविषयरसचाखत, जैसेसूकरग्रामी ॥ जोतनदि योताहिविसरायो, ऐसोनिमखहरामी ।२। जहांसतसंग तहांअतिआलस, विषयनसंगबिसरामी ॥ श्रीहरिच रणछांडिओरनकी, निसिदिनकरतगुलामी ॥ ३ ॥ पा

पीपतितअधमपरनिन्दक, सबपतितनमैनामी ॥ कीजै कृपादासतुलसीपर, सुनियेश्रीपतिस्वामी ॥ ४ ॥ ८ ॥

मनरेतुरामचरितसुनकाना ॥ टेक ॥ सनकसनंदन सनतकुमारा, नारदयेहिबखाना ॥ १ ॥ येहिचरितउमा पतिगायो, गुप्तप्रगटसुबखाना ॥ याज्ञबलीककहभरद्वा जसो, तीरथराजसुठाना ॥ २ ॥ बालापनमैगयेध्रुवरा जा, सुनीनारदकोज्ञाना ॥ रामनामकीयेहीप्रभुता, गनिकाचढिहैविमाना ॥ ३ ॥ कागभुसुण्डीकहैखगप पतिसो, निश्चयनिरणयठाना ॥ कामक्रोधमदलोभनि वारण, आलसउरनहिआना ॥ ४ ॥ ऋषीकृपासेसब रीगायी, आगमप्रभुकोजाना ॥ प्रेमसहितवाकेफल पाये, पहुंचायेनिजधामा ॥ ५ ॥ येहिचरित्रबिभीषण गायो, वैरवंधुसोठाना ॥ लंकातजिभजसीतापतिको, मिल्योरामसोआना ॥ ६ ॥ रामनामकीमहिमामोटी, मनमेरेअनुमाना ॥ तुलसीदासधन्यधन्ययेहसाधु, गावै वेदपुराना ॥ ७ ॥ ९ ॥

मनरेतु चित्रकोट बसभाई ॥ टेक ॥ जहांराम सुख धामजानकी, संगलखन सुखदाई ॥ १ ॥ पयसरणी पापनकीहरणी, जाको क्योंननहाई ॥ जोगंगादेवन को दुर्लभ, सोअनुसूयालाई ॥ २ ॥ जोरजको ब्रह्म शिव नारद, मुनिखोजत मनलाई ॥ जोपदरेणु देवन कोदुर्लभ, लेशिवशीशचढाई ॥ ३ ॥ चित्रकोटके गुहा कंदरा, जहाँविहरत रघुराई ॥ रामकृपाभजो जान

किवल्लभ, औरनआनउपाई ॥ ४ ॥ १० ॥

रघुवरमोहिसंगकरलीजे ॥ टेक ॥ बारबारपुरजान नाथकहि, केहिकारणआयुसदीजे ॥ १ ॥ जद्यपिहोंअ तिअधमकुटिलमति, अपराधिनकोजायो ॥ प्रणतपा लकोमलसुभावजिये, जानिसरणतकिआयो ॥ २ ॥ जो मेरेतजिचरणआनमति, कहौंहृदयकछुराखी ॥ तोपरि हरहुँदयालदीनहित, प्रभुअभिअंतरसाखी ॥ ३ ॥ तातेनाथकहतमैंपुनिपुनि, प्रभुपितुमातगुसाँई ॥ भज नहीननरदेहबृथाकरि, श्वानभेखकेनाँई ॥ ४ ॥ बंधुवच नसुनिस्रवतनयनजल, कमलनैनभरिआये ॥ तुलसी दासप्रभुपरमकृपागहि, बाँहभरतउरलाये ॥ ५ ॥ ११ ॥

प्रगटेनरहरिजनसुखदायक ॥ टेक ॥ खंभफोरिअद् भुतवपुधारे, कियेसकलसुरपालक ॥ १ ॥ कटकटवा जतउग्रदंतावर, भाजिगयेसबपालक ॥ लियोगोदप्रह लादभक्तको, भक्तवत्सलखलघातक ॥ २ ॥ उदरविदा रिपाहिरिअंत्रावली, सिंहनादकरिमारक ॥ मथतसिंधु सोभितमरालइव, दधिकेकुंडमचावक ॥ ३ ॥ जनरंजन भंजनमहिभारा, भवहन्ताप्रणतारक ॥ शांतिस्वरूपगो विंदचरणलख, चारपदारथदायक ॥ ४ ॥ १२ ॥

जिनकैरामसदारखवारे ॥टेक॥ जलहुंसेराखिअनल हुंसेराखै, गिरितेगिरतउबारै ॥ खंभफोरिहिरनाकुस मारै, नखसेंउदरबिदारै ॥ १ ॥ रावणराखिकरिहरिजनसें

रणचढायतेहिमारै ॥ नहिराखैकुलदीपधरणको, तिल
कबिभीषणसारै ॥ २ ॥ परासरदुर्वासाऋषि, चक्रसुदर
सनजारै ॥ नहिराख्योहरिजनकोद्रोही, दासहिचक्रनि
वारै ॥३॥ कंसकुमतिकिन्हेहरिजनसै, करग्रहिकंसपछा
रै ॥ कुंतीपुत्रबंधुभयेव्याकुल, आपुहिजायनिवारै ॥ ४ ॥
जहाँजहाँभीरपरैसंतनको, तहाँतहाँआपुसिधारै ॥ तुल
सीदासआसारघुवरकी, दारुणविपतिनिवारै ॥ ५ ॥ १३ ॥

श्रीराघोजीकिभक्तिसदासुखदाई ॥ टेक ॥ सदासुल
भसुखहितचिंतामणि, वेदपुराणबखानी ॥ १ ॥ महारा
जरघुवरदशरथके, जनकसुतामहारानी ॥ सेवतसंतवि
मलजसगावत, अवधपुरीरजधानी ॥ २॥ सुंदरस्यामरा
मरघुनंदन, राजतअवधबिहारी ॥ क्रीटमुकुटमकराकृ
तकुंडल, करगहिकमलसुधारी ॥ ३ ॥ शिवनारदप्र
हलादविभीषण, हनुमानउरआनी ॥ रामकृपाभजो
जानकीवल्लभ, संतहृदयजेहिआनी ॥ ४ ॥ १४ ॥

निरखतजातजटाईरथको ॥ टेक ॥ विप्ररूपजनधारे
निशाचर,जयजयकारसुनाई ॥ लेकरभिक्षानिकसिजा
नकी, रथपरलेतचढाई ॥ १ ॥ रथऊपरसेबोलिहैजानकी
चरणशरणरघुराई ॥ हैकोइजोधातीनलोकमे, हमकोले
तछुडाई ॥ २ ॥ इतनासुनिखगपतिउठिधाये, रथआ
येनियराई ॥ कौनकिहोतुमपरमसुदरी, कौनहरीलिये
जाइ ॥ ३ ॥ अवधनगरराजानृपदशरथ, उनकोसुतर

घुराई ॥ उनकिप्रियाममनामजानकी, हरेनिशाचरजा ई ॥ ४ ॥ इतनासुनिखगपतिउठिधाये, राख्योरथविल माई ॥ जानेनपैहोमहाजडमूरख, जोहरिहोतसहाई ॥ ५ ॥ चोंचनमारिमहाजुधकीन्हो, रथसेंदियोगिराई॥ ॥ अग्निबानजवहनेनिशाचर, धरणिगिरेमुरझाई ॥ ६ ॥ देतअशीषजानकीमाता, प्राणरखोघटमाही ॥ तुलसि दासरघुवरजबऐहैं, कहियोकथाबुझाई ॥ ७ ॥ १५ ॥

हरितुमबहुतअनुग्रहकीनो ॥ टेक ॥ साधनधामविबु धदुर्लभतनु, मोहिकृपाकरिदीनो ॥ १ ॥ कोटिहुंमुखक हिजायनप्रभुको, एकएकउपकारो ॥ तदपिनाथकछु औरमागिहों, दीजैपरमउदारो ॥ २ ॥ विषयवारीमन मीनभिन्ननहीं, होतकबहूंपलएको ॥ तातेसहियविप तिअतिदारुण, जन्मतयोनिअनेको ॥ ३ ॥ कृपाडोरिवं सीपदअंकुस, परमप्रेममृदुचारो ॥ येहिविधिवेधिहरहु मेरोदुःख, कौतुकरामतुम्हारो ॥ ४ ॥ हैश्रुतिविदितउ पायसकलसुर, केहिनदीननिहोरो ॥ तुलसीदासए कजीवमोरजु, जोइबांधोजोइछोरो ॥ ५ ॥ १६ ॥

काहेनरसनारामहिगावही ॥ टेक ॥ निसिदिनपरअ पवादवृथाकरि, रटिरटिबादबढावही ॥ १ ॥ नरमुखसुं दरमंदिरपावन, बसिकिननाहीलजावही ॥ शशिसमीप रहितत्यागीसुधातुम, रविकरजलकहुंधावही ॥ २ ॥ का मकथाकलिकैरवचंदिनी, सुनतश्रवणदैभावही ॥ ति

नही हटकी कहिहरि कल किरति, करण कलंकनसा वही ॥ ३ ॥ जातरूप मतिजुवति रुचिर मणि, रचिरचि हारबनावही ॥ शरण सुखद रवि कुलसरोज रवि, राम नृपहि पहिरावही ॥ ४ ॥ बाद बिबाद खेदतजि भज हरि, चरणकमल चित लावही ॥ तुलसीदास भवतारिही तुरतहीं, जो पुनीत जस गावही ॥ ५ ॥ १७ ॥

केसव कहिन जाय काकहिये ॥टेक॥ देखत पररच नाविचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिये ॥ १ ॥ सुन्न भित्ति पर चित्र रंग नही, बिनु कर लिखत चितेरो ॥ धोये मिटैन मरे भीति दुख, पाइहै येतनहेरो ॥ २ ॥ रविकर निकर बसत अति दारुण, मकर रूप तेहिमा हि ॥ वदनहिन सो ग्रसे चराचर, पानकरनजेहि जोही ॥ ३ ॥ कोउकहैसत्यजूठाकहै, कोउ जुगल प्रबल करि मानो ॥ तुलसीदासपरि हरहितीनभ्रम, तब आपनपहि चानो ॥ ४ ॥ १८ ॥ इतिशनिवारकीगौरीसंपूर्ण ॥

॥ अथ रविवारकी गौरी प्रारंभः ॥

हिलमिलीगोविन्दगावौआवोसाधु ॥टेक॥ प्रेमभक्ति की रीतिसमजके, हितसोरामरिझावो ॥ १ ॥ सेवा सुमिरण बंदनअरचन, नौधासोचितलावो ॥ तालप खावज झाझमंजीरा, मुरलीसंखबजावो ॥ २ ॥ सत संगतिकी सरणेलायके, ममतामदहीबहावो ॥ चरण दास सुखदेवकहतहै, उरआनंदमनावो ॥ ३ ॥ १ ॥

रामनाम निसतारैजबतब ॥ टेक ॥ साठघडीमें एक घडीभज, सोईसकलअघजारै ॥ १ ॥ काशिपुरी वसत गौरीपति, निसदिन नामउचारै ॥ कीटपतंग सुनत गतिपावै, रघुकुल जसविस्तारै ॥ २ ॥ अजामेलगणि का गृहबासी, सुतहित नामउचारै ॥ गजऔर गिद्धतरै हरि सुमिरत, महिमा व्यासविचारै ॥ ३ ॥ परमपुनीत नामरघुवरको, हरिजन हरिरसगावै ॥ नामदेवसोईसंत सिरोमणि, चितसो क्षण नविसारै ॥ ४ ॥ २ ॥

ऐसीभक्ति मोहिभावै, ऊधोजी ॥ टेक ॥ सरवसत्या ग मगनहोयनाचै, जन्मकर्मगुणगावै ॥ १ ॥ कथनीक थैनिरंतरमेरी, चरणकमलचितलावै ॥ मुखमुरली न यनजलधारा, करसें तालवजावै ॥ २ ॥ जहांजहां चर णदेतजनमेरो, सकल तिरथचलिआवै ॥ उनके पदरज अंगलगावै, कोटिजन्मसुखपावै ॥ ३ ॥ उनमूरतिमेरे हृदयबसतुहैं, मेरीसुरतिलगावै ॥ वलिवलिजाऊ श्रीमु खबानी, सूरदास बलिजावै ॥ ४ ॥ ३ ॥

सरबसभगवतगीता, मारेधन ॥ टेक ॥ गायगायर सनाकोरिझाऊ, हरिजनहरिरसपीता ॥ १ ॥ जोनर गीतापठनकरतहै, जगमेरहतउजीता ॥ उनकोकहा मुक्तिकोसंशय, तारैकुटुंबसहीता ॥ २ ॥ श्रीमुखव चनसुनतकुंतीसुत, मनआयोपरतीता ॥ यागीताके पराक्रमसें, दुर्योधनदलजीता ॥ ३ ॥ तीनलोकऔर

भुवनचतुरदस, वेदपुराणमेंगीता ॥ ऋषीकेस स्वामी अघमोचनको, सतगुरु दियोहैपलीता ॥ ४ ॥ ४ ॥

हरिसोलागारहोमेरेभाई ॥ टेक ॥ ऐसोयतनकरोमन मेरा, रामविसरजनजाई ॥ १ ॥ लागेध्रुवप्रहलादबिभीषण, गणिकासजनकसाई ॥ नामदेरैदासकबीरा, पीपा मिराबाई ॥ २ ॥ रंकालागे बंकालागे, लागेसेनानाई ॥ कहाकहुँ सवरीकीमहिमा, मोपै बरणिनजाई ॥३॥ निपटसनेह करोसाधुनसें, छोडीकपटचतुराई ॥ दयाअरु धर्महृदयमेंराखो, सहजमिले रघुराई ॥ ४ ॥ जोहट ध्यानधरैघटभीतर, औरन आनउपाई ॥ रामकृपा भजोजानकीवल्लभ, तीनहुलोकबडाई ॥ ५ ॥ ५ ॥

अवतोरामभजनकरभाई ॥ टेक ॥ घडीघडियालहि वाजावाजे, पहरपहरसहनाई ॥ रामभजनबिनवृथाजा तहै, कालनिसानबजाई ॥ १ ॥ जाकीआसकरतहोआगे, मनुपदेहनरपाई ॥ करणीतोकछुवनीनहिआवै, अब करभजनसिवाई ॥२॥ जोयहअवसरचूकेपामर, फिरके नाहिमलाई ॥ लखचौरासीयोनिकेमाही, भटकतहींम रजाई ॥ ३ ॥ विनुहरिभजनभलानहितेरा, सत्यहिराम दुहाई ॥ रामहिरामरटोनिसिवासर, अतिसयप्रीतिल गाई ॥ ४ ॥ नानकदासरामभजुभाई, हितचितसेलौलाई ॥ ऐसेसंतपुकारकहतहैं, दोनोभुजाउठाई ॥ ५ ॥ ६ ॥

वलिछलिकेकाकीन्होहरितुम ॥ टेक ॥ बांधनगयेवं

धायेआपहि, बडोसयानपकीनो ॥ लियेलकुटिया हारेठाडे, निसिवासरआधीनो ॥ १ ॥ तीनपैंडवसुधा केकारण, बलिकोसर्वसदीनो सूरदासप्रभुवलि कीबिनती, हरिचरणनचितदीन्हो ॥ २ ॥ ७ ॥

साधुभाइगगनघटाघहरानी ॥ टेक ॥ पछिम दिसा सें उठीबदरिया, पूरववरसेपानी ॥ १ ॥ चंद्रसूर्य दोऊई सबनाई, जोतिकियेनिरबानी ॥ अपनीअपनीऔरस मारो, बहिन जायअसपानी ॥ २ ॥ सील संतोषकि क रोबावरी, ज्ञानकिबेललगानी ॥ दूबघाससब दूर उल टावो, बोवो हरिकीधानी ॥ ३ ॥ चिंताचेतन दोचोकमें बैठे, चूकनजाय मेरीधानी ॥ भृकुटीके बान हाथ कर राखो, गुरुगमगोलादानी ॥ ४ ॥ उपजा खेत रास घर आई, आनंद मंगलखानी ॥ राजा वासे कबहू नबोलै, निरभय भईकिसानी ॥ ५ ॥ जिनको सतगुरुपुरो मि लोहै, जिनयहमारगजानी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधु, राम नाम निजजानी ॥ ६ ॥ ८ ॥

संतनकेबसभाईहरिजी ॥ टेक ॥ जातिवरणकुलजा नतनाहीं, लोगकरैचतु ॥ १ ॥ सिवरीजाति भिल्लि नीहोती, बेरतोरकेलाई ॥ प्रीतजानवाकेफलखाये, ती नउलोकबडाई ॥ २ ॥ करमाकोनअचरजकीनी, हरि सोप्रीतिलगाई ॥ छप्पनभोगत्यागिआरोगे, पहिलेखि चरीखाई ॥ ३ ॥ नामदेवपीपारईदास, उनसेप्रीतिल

गाई ॥ सैनभक्तकौसंसय मेट्यो, आपभयेहरिनाई ॥४॥ सहस्रअठासीऋषिमुनिहोते, तबहुनसंखहिबाजै ॥ कहतकबीरसुपचकेआये, संखमगनहोयगाजै ॥ ५ ॥ ९ ॥

संतचरण चितलाई, मनरेतु॥टेक॥कलिमल हरणचरण संतनके, सुमिरत होतसहाई ॥१॥ गंगाजमुना औरसरस्वति, तीरथ सकल नहाई ॥ जहाँजहाँ चरणपरत संतनके, तहाँतहाँ होतसहाई ॥ २ ॥ संतचरणदेखतजोपावै, सात समुद्रफिरिआई ॥ कामक्रोध मदलोभविषयबस, इनसेलेतछोडाई ॥ ३ ॥ सब मुनींद्र नारदादिकवीश्वर, वेदपुराणनगाई ॥ सेष सहस्र मुखरटतनिरंतर, महिमातिनहिन पाई ॥ ४ ॥ सूर अग्र सबसंत आदिले, तुलसिदास मनलाई ॥ रामदास संतनकी महिमा, हरिअपने मुख गाई ॥ ५ ॥ १० ॥

राजाएक मानोबचनहमारो ॥ टेक ॥ भीषमद्रोणकर्णदुर्योधन, सबमिलिमतोबिचार्यो ॥ पांचगांवपांडवनकोदीजै, औरसबराजतुम्हारो॥ १ ॥ दक्षिणदेसद्राविड नगरी, गौडदेसबंगालो ॥ गढगिरनारकी बैठकदीजे, औरहस्तिनापुरसारो ॥२॥ भूमिनिदेऊंसुईकेनाको, रणसंग्रामविचारो ॥ क्षत्रीकुलकोयाहिधर्महै, कोइजीत्यो कोईहार्यो ॥ ३ ॥ भारथनाहिंमलोदुर्योधन, मनमेंसोचिविचारो ॥ कटिकटिशीशपडैधरणीपर, खांडाचलदुउधारो ॥ ४ ॥ इतनीसुनिबोलैदुर्योधन, कौनकियोउपचा

रो ॥ राजनीतिकोमर्मनजानै, गौवचरावनहारो ॥ ५॥ मानतनाहिअंधकोजायो, हरिकेवचननकारो ॥ सूरदासप्रभुभरीसभामे, आयोकालतुम्हारो ॥ ६ ॥ ११ ॥

श्रीरघुवरबंधुसखालेसिधारै ॥ टेक ॥ सँझासमयमंजुमंडपमहं, खेलतआपुसिधारै ॥ १ ॥ सिकराबाजकुहीहाथनपर, चपलतुरंगसँवारै ॥ होतकोलाहलसुनीनहिपावै, श्रीपतिसखानिहारै ॥ २ ॥ भरतशत्रुहनलक्ष्मणराजै, राघोजिप्राणपियारै ॥ रघुकुलकेसिरछत्रबिराजै, सोहतन्यारेन्यारै ॥ ३ ॥ श्रमजलबिंदुबदनपरराजै, मनहुसघनदिसितारै ॥ पीताँवरदामिनिद्युतिदमकै, क्रीटमुकुटउजियारै ॥ ४ ॥ रघुवरमुखनिरखतकौशल्या, सुंदररूपनिहारै ॥ रामानंदप्रभुकीछबिनिरखै, आरतिसाजिउतारै ॥ ५ ॥ १२ ॥

सांचेमनकेमिता, रघुवर ॥ टेक ॥ कवशिवरीकाशीकोनहाई, कवपढिआईगीता ॥ जुठैफल शिवरीकेखाये, नेकलाजनहिकीता ॥ १ ॥ चरणछुवत तरिगईअहिल्या, गीद्धराजगतिरीता ॥ लंकापतिको गर्वहर्योहै, राजबिभिषणदीता ॥ २ ॥ सुग्रीवहिसखाकियेरघुनंदन, बानरकियेपुनीता ॥ सखानिषाद कंदफलखाये, कीनो अधिकप्रतीता ॥ ३ ॥ सुफलयज्ञ मुनिजनकोकीनो, सबभूपनवलजीता ॥ तुलसीदास छविनिरखिजानकी, मनवांछित फललीता ॥ १३ ॥ १४ ॥

रामभजे सोईजीता, जगमें ॥ टेक ॥ हाथसुमरणी पेटकतरणी, पढैभागवतगीता ॥ हृदयशुद्ध भयोन हिअबहूँ, कहतसुनत दिनबीता ॥ १ ॥ आनदेवकी लज्याकीनी, हरिसें रहाअलीता ॥ धनजोबन तेरो योंहिजायगो, अंतसमे चलैरीता ॥ २ ॥ बाबरीयाने बाबरीलुरी, फंदजालसबकीता ॥ कहत कबीर का लजोमारै, ज्योंमीरिगाकोचीता ॥ ३ ॥ १४ ॥

रुमझुम रुमझुम राघोजी आवे, हरिकेहाथ धनुष कर बानचलावे ॥ टेक ॥ दूरिखेलनजिनजाओ प्यारेरघुबर ॥ सांजपरीघरआवो प्यारेरघुवर ॥ १ ॥ कौनकेअंगनामेंतुलसीकोबिरवा ॥ कौनकेअंगनामें खेलेप्यारेरघुवर ॥ २ ॥ केकैकेअंगनामें तुलसीकोबिरवा ॥ कौसल्याकेअंगनामेंखेलेप्यारेरघुवर ॥ ३ ॥ कौनकेछैयारामजी कौनकेभैया ॥ कौनरायजीकेरामजीरमैया ॥ ४ ॥ कौशल्याकेछैयालक्ष्मणजीकेभैया ॥ राजादशरथजीकेरामजीरमैया ॥ ५ ॥ सरज्युकेनिरेतिरेतुरंगनचावे ॥ संगसखालियेबिहरआवे ॥ ६ ॥ तुलसीदासजीकेअवनाभवना ॥ तीनलोकरमिरहे प्यारे रघुवर ॥ ७ ॥ १५ ॥ ॥ इतिरविवारकीगौरीसंपूरण ॥

अथ सोमवारकी गौरी प्रारंभः ॥

विश्वामित्रअवधपुरआये ॥ टेक ॥ आवनसुनिमुनिआतुरहोईके ॥ श्रवनसुनतउठिधाये ॥ १ ॥ चर

णधोयबडिविधिकरिपूजा, आदरकरिबैठाये ॥ रामल
खनमोहिमागैदिजै, ऐसैंबचनसुनाये ॥ २ ॥ बालकजा
निकहो तुमकैसे, वेद पारनहिपाये ॥ विश्वरूपमहि
भारउतारण, नरस्वरूपधरिआये ॥ ३ ॥ कंपिततन
गदगदभइबानी, प्राणरहेएकठाये ॥ तुलसीदासहरि
रूपनिहारै, चरणकमलचितलाये ॥ ४ ॥ १ ॥

राजनरामलखन, मोहिदीजे ॥ टेक ॥ जसरावरोला
भदोठनहुँ, मनसनाथसवकीजै ॥ १ ॥ डरपतअपसा
चेसनेहबस, सुतप्रभावबिनजानै ॥ पूछोवामदेवअब
कुलगुरु, तुमपुनिपरमसयाने ॥ २ ॥ रिपुरणदलमख
राखिकुशलअति, अल्पदिननघरऐहैं ॥ तुलसीदास
रघुबरतीलकनकी, कविकुलकीरतिगइहैं ॥ ३ ॥ २ ॥

ऋषिसंगहरखिचलैदोउभाई ॥ टेक ॥ पितुपदवंदि
बंदिमातापद, चलेमुनिआयसुपाई ॥ १ ॥ नील
पीतपाथोजबरणवपु, वयकिसोरबनिभाई ॥ सरधनुपा
निपीतपटकटितट, सोहनिखंगवनाई ॥ २ ॥ कलित
कंठमणिमालकलेवर, चंदनक्षौरसोहाई ॥ सुंदरवदन
कमलदललोचन, मुखछबिबरणिनजाई ॥ ३ ॥ पल्लव
पक्षसुमनासिरसोहत, कोकहेरूपलोनाई ॥ मनहुमुरति
धरिउभयभोगभई, त्रिभुवनसुंदरताई ॥४॥ पैठतवनहि
वीरवरचितवत, खगमृगबनरुचिराई ॥ सादरसभय
सप्रेमपुलकिमुनि, पुनिपुनिलेतबोलाई ॥ ५ ॥ एकतीर

तांकिहतीताडिका, विद्याविप्रपढाई ॥ राख्योयज्ञजी तीरजनिश्चर, भैजगविदितबडाई ॥ ६ ॥ चरणकमल रजपरसिअहिल्या, निजपतिलोकसीधाई ॥ तुलसी दासप्रभुकेबुझेमुनि, सुरसरिकथासुनाई ॥ ७ ॥ ३ ॥

सोहतमगदोउभाई, मुनिसंग ॥ टेक ॥ तरुणतमाल चारुचंपकछबि, कविसुभायकहिजाई ॥ १ ॥ भूषणवसन अनुहरतअंगपर, उमगतसुंदरताई ॥ वदनमनोजसरो रुहलोचन, सोभारहिलोनाई ॥ २ ॥ अंसनिधनुशरकरकम लनमे, कटिकसैनिखंगवनाई ॥ सकलभुवनसोभासर्व सलघु, लागतनिरखिनिकाई ॥ ३ ॥ महिमृदुपथवनछाह सुमनसुर, हरखिपवनसुखदाई ॥ जलथलरुहफलफूल सलिलसव, करतप्रेमपहुनाई ॥ ४ ॥ सकुचसभीतविनी तसाथगुरु, बोलनिचलनिसोहाई ॥ खगमृगसुभगवि लोकतविचविच, लसतललितलरिकाई ॥ ५ ॥ विद्याद ईजानीविद्यानिधि, विद्यहुँलह्योवडाई ॥ ख्यालहिंद ल्यीताडिकादेखी, मुनिदेतआशिषअघाई ॥ ६ ॥ बूझत प्रभुसुरसरीप्रसंगकहि, निजकुलकथासुनाई ॥ गाधीसु वनसनेहसुखसंपति, उरआश्रमनसमाई ॥ ७ ॥ बनबा सीवटुजतिजोगिजन, साधुसिद्धसमुदाई ॥ पूजैपेखिप्री तिपुलकैतन, नयननलाभलुटाई ॥ ८ ॥ मखराखैख लदलदलिभुजबल, बाजतविबुधबधाई ॥ नितपथच रितसहिततुलसीचित, बसतलखनरघुराई ॥ ९ ॥ ४ ॥

येदोउदशरथकेहैं बारे ॥ टेक ॥ नामराम घनस्याम लखनलघु, नखसिख अंगउजियारे ॥ १ ॥ धीरवीर विरुदैवबाकुरे, महाबाहु बलभारे ॥ निजहितलागि मागि आनेमै, धर्मसेतुरखवारे॥२॥एकतीरतकी हतीताडिका, कियसुर साधुसुखारे ॥ यज्ञराखिजगसाखितोपिऋषि, निदरि निसाचरमारे ॥ ३ ॥ मुनित्रियतारि स्वयंवरदेखन, आयेवचनतुम्हारे ॥ येदोदेखिपिनाक नेकमहि, नृपतिलाज ज्वरजारे ॥ ४ ॥ मुनिसानंद सराहेपरिजन, वारहिवार निहारे ॥ पूजिसप्रेम प्रसंसिकौसिकहि, भूपतिसदन सिधारे ॥ ५ ॥ सोचतअति सनेहनिसिवासर, नृपहिनखत गयेतारे ॥ पठयेबोलिभोरगुरुकेसंग, रंगभवन पगुधारे ॥ ६ ॥ नगरलोगसुधि पाईमुदितसब, निजनिजकाजविसारे ॥ मनहुमघाजल उमगिउदधिरुष, चलैमिलननरनारे ॥ ७ ॥ येकिसोरधनु घोरबहुतकरि, बिलखिविलोकनिहारे ॥ टर्योनचाप तीन्हजीन्ह सुभटन, कौतुकपाढउधारे ॥ ८ ॥ येजानेविनु जनकजानिये, करिप्रणभूपहंकारे ॥ नतरुसुधा सागरकोपरिहरि, कूपखनावतखारे ॥ ९ ॥ सुखमासिल सनेहसानि मनो, रुप विरंचिसंवारे ॥ रोमरोमपर सोमकामसत, कोटिबारफेरिडारे ॥ १० ॥ कोउकहेतेजप्रतापपुंजचित, येनहिजातनिहारे ॥ छुवतसरासन सुलभजरेगो, दिनकरवंसदियारे ॥ ११ ॥ एककहैकछुहोई सूफलभये.

जीवनजन्महमारै ॥ अवलोकैंभरि नयनआजीहो तुलसी प्राणपियारै ॥ १२ ॥ ५ ॥

भुजनपरआवतधनुषधरैं ॥ टेक ॥ कटितूणिरबाण कर राजे, येभूमिभारहरेंगे ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृत कुंडल, उरवनमालधरेंगे ॥ इनकेदरसपरसपायेते, पाप पहारटरेंगे ॥२॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकरि, गौतमना रितरेंगे ॥ सुंदरस्यामरामरघुनंदन, केसरतिलककरेंगे ॥३॥ जनकस्वयंवरपावनकरिकै, सीतारामवरेंगे ॥ तु लसीदासदरवाररामको, मोसमअधमतरेंगे ॥ ४ ॥६॥

जातचलैदोउभाईजनकपुर ॥ टेक ॥ गौरस्यामसुं दरतनराजे, कोटिकामछविछाई ॥ मंदहास मुस क्यातजातहै, सोभावरणिनजाई ॥ १ ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल, करमेंधनुषसहाई ॥ जनकपुरी ग लियनमेंविहरै, मोहैनरअरुनारी ॥ २ ॥ बालकवृंद ब हुतसंगलागे, रचनाविविधवनाई ॥ सैनासयन करत आपुसमें, सांझभयेघरआई ॥ ३ ॥ करिपरमोद बाल कसवफेरे, गुरुचरणनसिरनाई ॥ रामसेवकके प्रभुसुख सागर, तनकीतपतबुझाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

तुमऋषि सांची कहो ऋषिबोलै ॥टेक॥ किसकेबाल किधरसेआये, जनकनगर ऋषिलाये ॥ जनकनगरकी नारिपुरुषमिलि, सवहीपूछनधाये ॥ १ ॥ अवधनगर मै दशरथराजा, सरजूउतरसुहाई ॥ रघुवरलक्ष्मणभर थशत्रुहन, तीनलोकप्रभुताई ॥ २ ॥ क्रीटमुकुट करध

नुषबिराजै, जगमैंकीरतिभारी ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफलकरि, चरणअहिल्यातारी ॥ ३ ॥ पूरणब्रह्म सकलघटवासी, रामलखनदोउभाई ॥ गौरस्याम दोऊसंगहमारे, अवधनगरतेआई ॥ ४ ॥ जनकनगर परवेस परमगुरु, लैकरि अवपगधारे ॥ जनकनगरमें भूपघनेरे, सबकोमानहिमारे ॥ ५ ॥ तोरिपिनाक जनक जगपूरण, घुरहि जनकपुरबाजा ॥ रामरतन प्रभुके गुणगावै, सरैसकलविधिकाजा ॥ ६ ॥ ८ ॥

जनकपुर घरघरशब्दसुनाये ॥ टेक ॥ लक्ष्मणरामसंगकौशिकमुनि, रंगभूमिहरीआये ॥ १ ॥ सबमंचनतेमंचश्रेष्ठएक, रतनजडावबनाये ॥ गुरुसमेतलक्ष्मणरघुनंदन, तेहिऊपरबैठाये ॥ २ ॥ भूमंडलकेभूपसबैमिलि; एकहिबारउठाये ॥ टरोनधनुषउठेकोहुकैसे, बैठेसबसिरनाये ॥ ३ ॥ नरनारीपुरवासिसबमिलि, दीनहुवचनसुनाये ॥ रायजनकक्रोधितअति बोलै, बीरबिहिनमहिजाये ॥ ४ ॥ इतनेबचनसुनेजबलक्ष्मण, तनमनअग्निजगाये ॥ धनुषसमेतब्रह्मांडउठाऊं, प्रभुआज्ञाजबपाये ॥ ५ ॥ गुरुअनुसासनपायउठेप्रभु, धनुषलियोहेचढाये ॥ बिनप्रयासदोउखंडकियोप्रभु, रामसेवकसुखपाये ॥ ६ ॥ ९ ॥

तोऱ्योहैधनुरघुराईसंभुजीको ॥ टेक ॥ रघुवरचलैजनकपुरब्याहन, लक्ष्मणसंगलगाई ॥ देसदेसकेभूपजुरे

है, बैठेअंगफुलाई ॥१॥ जयजयकारभयोत्रिभुवनमें, दे
वसुमनझरिलाई ॥ बडेबडेभूप गजेंद्रसेयोधा, बैठेसीस
नवाई ॥ २ ॥ इतनासुनि परसुरामजिक्रोधे, जनकन
गर चलिआई ॥ देखिडरै नरनारीसभाके, जहाँतहाँर
हैलुकाई ॥ ३ ॥ ऐसोबीर भयोत्रिभुवनमें, शिवकोचाप
चढाई ॥ कहुजडजनक धनुषकिनतोर्यो, सोतुमदेउ
बताई ॥ ४ ॥ इतनासुनि लक्ष्मणउठिबोले, फरसालेके
धाये ॥ बालकजानीबधौंनहितोही, जानैकहाँप्रभुताई
॥ ५ ॥ सहस्रबाहुकेभुजाकाटिके, सहस्रहिवीरकहाई॥ब
हुतदिननकोसंभुसरासन, छुवतेदोषलगाई ॥ ६ ॥ हमक्ष
त्रिय तुमबिप्रगुसाईं, हमतुमकौनलडाई ॥ जोकोईबीर
चढैरणभीतर, हमनहिंपीठदिखाई ॥ ७ ॥ रामबचनसु
निज्ञानप्रकटभये, धनुसोंप्योरघुराई ॥ तुलसीदास ब
लिहारि चरणकी, मुनितबचलैसिरनाई ॥ ८ ॥ १० ॥

जनकजीके अंगनाभीरभईभारी ॥ टेक ॥ साजीबरा
तचलैनृपदशरथ, हैगजकीअसवारी ॥ झाँकनझरोखे
लगीसुंदरी, आवत अवधबिहारी ॥ सीताराम जुग
लमिलिबैठे, जुरआईसबनारी ॥ १ ॥ सियाकरसें प्र
भुकंकन, खोलै, गहरीगांठलगाई ॥ खोलतरामखुलत
नहिकंकन, हँसनलगी सबनारी ॥ २ ॥ जुरिआयोर
निवाससकलमिलि, देतरामजिकोगारी ॥ तुमसेंरघुब
रछुटतनाही, बोलिलेउमहतारी ॥ ३ ॥ बोलीउमासनेह

मगनहोय, कासकुचावतनारी ॥ तोरतधनुष विलंबन हिंकीन्हो, कंकनकौनबिचारी ॥ ४ ॥ अंचलओट सियामुसक्यानी, पाछिलिप्रीतिसंभारी ॥ नौछावरि सबहि करीदीनो, तुलसीदास बलिहारी ॥ ५ ॥ ११ ॥

देखोसखि कोईनवलखिलारी ॥ टेक ॥ खेलतफिरत प्रमोदविपिनमें, स्यामवदन तनुहारी ॥ १ ॥ कछनी हरितहरितहैउपरणा, क्रीटमुकुट धनुधारी ॥ हरितल तनकीओटबनेहैं, होतलतन अनुहारी ॥ २ ॥ वानन सैमारतमृगराजन, नयननसें नरनारी ॥ रामसखे पियातनक नवलपर, कोटिमदन छविवारी ॥ ३ ॥ १२ ॥

कुंवरअयोध्यावारे, आयेदोऊ ॥टेक॥ बाललीलासरजूतटविहरै, सुंदरराजदुलारै ॥ १ ॥ सुंदरस्यामसलोनेसेढोटा, लक्ष्मणसंगदुलारै ॥१॥ सारंगधनुष बानकर राजै, संतनकेरखवारै ॥ २ ॥ विश्वामित्रको जज्ञसुफल कियो, असुरनभंजनसंहारै ॥ गौतमनारि अहिल्या तारी, जनकपुरीपगधारै ॥ ३ ॥ राजाजनकजज्ञमैठाडे, सोहतराजदुलारै ॥ मानौभूपछिपैन्दपतिनमैं, चंद्रउदय जिमितारै ॥४॥ लक्ष्मणकहतसुनोप्रभुमेरै, जगकेपालनहारै ॥ कोटिकोटिब्रह्मांडकेकरता, सोकसधनुषविचारै ॥ ५ ॥ जैसेसिंहपरेकरिगणमै, नखसिखओटविदारै॥बायेंचरणचापगहिलीन्हो, खंडखंडकरिडारै ॥ ६ ॥ विनय बजायबजैबहुबाजे, सोहतन्यारेन्यारे ॥ तुलसीदासछ

विदेखिमगनभये, अवधपुरी पगधारे ॥ ७ ॥ १३ ॥

कठिनधनुष कैसेतोऱ्योश्रीराघोजीने ॥ टेक ॥ बडे बडेभूपसप्तद्वीपनके, उनहुनेनेकनमोरे ॥ १ ॥ पितुअसी सजबदियोहैहमारे, विश्वामित्रसहाई ॥ यातेजोरभयो जबमेरे, तासोलियोउठाई ॥ २ ॥ हाथचूमिमुखचुमत कौसल्या, बाजतअवधबधाई ॥ तुलसीदासरघुवीरवद नपर, बारबारबलिहारी ॥ ३ ॥ १४ ॥

देखोसखिमुनिसंगबालककहाके ॥ टेक ॥ रविशशि कोटिवदनकीसोभा, गौरस्यामतनजाके ॥ लक्ष्मणरा मकौसल्याकेजाये, दशरथनामपिताके ॥ १ ॥ क्रीट मुकुटमकराकृतकुंडल, धनुषबानकरजाके ॥ गौतमऋ षिकिनारिअहिल्या, तारेचरणछुआके ॥२॥ विश्वामित्र कोयज्ञसुफलकियो, गृहआयेराजाके ॥ सबकीअहमसि ताहरिहैरामजी, कारजकरनसियाके ॥ ३ ॥ चतुरसखी मिलिचलीहैजानकी, पूजाकरनउमाके ॥ तुलसीदास विधिआनिमिलीहै, लेखलिखाविधनाके ॥ ४ ॥ १५ ॥

सियाजीकेसंगचतुरसबसखिया ॥ टेक ॥ करतप्रका सफिरतफुलवारी, संगलियेसबसखिया ॥ १ ॥ सवन समीपतडागबागवर, देखनकोअभिलखिया ॥ रामर माप्रतिकबहुंकेआये, दोउमिलिभईअभिलखिया ॥ २ ॥ कहासयेगौरीकेपूजे, पलकनलागतअखिया ॥ सुंदर स्यामरामरघुनंदन, हृदयमेंधरिरखिया ॥ ३ ॥ सारदको

षमहेसाहिगावै, वेदपारनाहिपावै ॥ कृपानिवासरामकीमूरति, हृदयमाँझलिखिराखिया ॥ ४ ॥ १६ ॥

जनकपुर घरघरबजतबधाई ॥ टेक ॥ लक्ष्मणराम संगकौशिकमुनि, रंगभवनहरिआये ॥ १ ॥ सबमंचन तेमंचश्रेष्ठएक, रतनजडावबनाई ॥ गुरुसमेतलक्ष्मणरघुनंदन, ताऊपरबैठाई ॥२॥ देसदेसकेभूपतिनाना, धनुषयज्ञसुनिआये ॥ भूपसहस्रदसएकहिवारा, बैठिसभासिरनाई ॥ ३ ॥ डगेनसंभुसरासनकैसे, अधिकअधिकगरुवाई ॥ ताहिसमयतानीरघुनंदन, खंडखंडकरिडारी ॥ ४ ॥ जयजयकारभयेसुरपुरमें, देवनदुंदुभिबजाई ॥ नाचहिंनभअप्सरामुदितमन, आनंदउरनसमाई ॥५॥ करिसिंगारसखीलैआई, सोभावरणिनजाई ॥ करसरोजजयमालसोहाई, रघुवरउरपहिराई ॥ ६ ॥ सीताब्याहिअवधहरिआये, मंगलचारबनाई ॥ मातुकौशल्याकरतआरति, तुलसीदासगुणगाई ॥ ७ ॥ १७ ॥

रामहिनीकेनिरखसुनयनी ॥ टेक ॥ मनमहंसमझिअगमएहिअवसर, करतसकुचपिकवयनी ॥ १ ॥ बड़भाग्यमखभुमिप्रगटभये, सीयसुमंगलदीनी ॥ जेकारणलोचनगोचरभये, मूरतिसबसुखदेनी ॥ २ ॥ कुलगुरुतिनकेबचनमधुरसुनि, जनकजुवतिमतिपयनी ॥ तुलसीसिथिल देहसुधिकरसब, हरतसनेह विखअयनी ॥ ३ ॥ १८ ॥

जवदोउ दशरथ कुंवरविलोकै॥टेक॥ जनकनगरन
रनारि मुदितमन, निरखिनयन पलरोकै ॥ १ ॥ बयकि
सोरघनतडितवरणछबि, नखसिख अंगलोनाई ॥ दैवि
तकेसबहितलैछविइन, विधिनिज हाथसंवारे ॥२॥ संक
टनृपहिसोच अतिसीतहि, भूपसकुच सिरनाये ॥ उठै
राम रघुकुल कलकेहरि, गुरुअनुसासन पाये ॥३॥कौ
तुकहि कोदंडखंडिप्रभु, जयअरुजानकि पाये ॥ तुल
सीदास कीरति रघुवरकी, मुनिजन तिहुँपुरगाये ॥ ४॥
॥ १९ ॥ इति सोमवारकी गौरी संपूर्ण ॥

अथ मंगलवारकी गौरी प्रारंभः ॥

कौनदिशासे आयेपवनसुत ॥ टेक ॥ उत्तराखंड अ
योध्यानगरी, चित्रकोटसेआये ॥ १ ॥ कौनकेपुत्र कौ
नकेपायक, कौनकुंवरपठाये ॥ अंजनीपुत्र रामके
पायक, लक्ष्मणकुंवरपठाये ॥ २ ॥ कहाँतेरेराम कहाँ
तेरेलक्ष्मण, कहाँतेमुद्रिकालाये ॥ बनहिमेंराम बनहि
मेंलक्ष्मण, वनहिसेंमुद्रिकालाये ॥ ३ ॥ कौनकेसतसें
सागरउतऱ्यो, कौनसंदेसोलाये ॥ माताकेसतसें सा
गरउतऱ्यो, रामसंदेसोलाये ॥ ४ ॥ सुनिसुनिबचन
सियावनचरके, नयननीरभरिआये ॥ अबजनिसोच
करोमेरिमाता, रामसहित दलआये ॥ ५ ॥ रावणमारि
अवहिलैजाऊं, रामआज्ञा नहिंपाये ॥ तुलसीदास
हनुमानभरोसे, सोवत सिंघजगाये ॥ ६ ॥ १ ॥

तैं मेरौ दूध लजायो, पवन सुत ते॥टेक॥ लंकाजाय कहाकरि आयो, बाग मधुर फलपायो ॥ जानकि क्यों नधरेसिरऊपर, लंकाउठाईनलायो ॥१॥ एहिविधिबात करत मातासंग, रामआज्ञानहिंपायो ॥ आज्ञाभंग कबहूंनहिंकीजै, येहिपरन मोहिभायो ॥२॥ मातारोस करतसुतऊपर, धरणी पर्वत फोऱ्यो ॥ ऐसो दूधको पीवनहारो, रावणक्योंनहिंमाऱ्यो ॥ ३ ॥ अंजनी पुत्र रामकेपायक, शिवके लाल कहायो ॥ तुलसीदास लंका परहंका, हनुमत बीराकहायो ॥ ४ ॥ २ ॥

जबकर राघोजी बानधरेंगे॥टेक॥संगरघुनाथ भीर बनचरकी, कपिदल कोपिचढेंगे ॥ स्यामघटा घन झकिअंधेरी, सूरज गगन छिपेंगे ॥१॥ पचरंग बाण रामलक्ष्मणके, सागरतीरपडेंगे ॥ जोसागरको गर्व करतहै, तापरसेतुबंधेंगे ॥ २ ॥ लंकाअस कोट म हलअरुमंदिर, थरहर धरणिपरेंगे ॥ जामवंत हनुमान नीलनल, महाधुनि गर्ज करेंगे ॥ ३ ॥ रातभयानकस पनो देख्यो, लंका कोटलुटेंगे ॥ नामबिभीषण बं धुतुम्हारे, रघुपति जायमिलेंगे ॥ ४ ॥ मेघनादसे पुत्रतुम्हारे, औनहिधीरधरेंगे ॥ कुंभकरण बलबंधु तुम्हारे, रणमंजूझमरेंगे ॥ ५ ॥ महिरावणसे योधाम रीहैं, लंकानासकरेंगे ॥ सहस्रयोगिनी मंगलगावे, ख प्परबीरभरेंगे ॥ ६ ॥ दससिर औरबीसभुजातुम्हा रे, एकहिबाणहरेंगे ॥ जोनारद मुनिमुखसे भाख्यो.

भारतरामकरेंगे ॥ ७ ॥ कहत मंदोदरि सुनु पिया रावण, रघुवर नाहि फिरेंगे ॥ अग्रके स्वामीलै मिलो जानकी, कोईविध विघ्न टरेंगे ॥ ८ ॥ ३ ॥

राम आज्ञा जो पाऊं एक दीन ॥ टेक ॥ सात समुद्रो पलमै सोखूँ, लंकामै धूरि उडाऊं ॥ लंकाके सब खंभउखारौ, जायअयोध्याछाऊं ॥ १ ॥ पैठपतालतोरि यमकातर, कालिनाग नथिलाऊं॥इंद्रको इंद्रासन डारों, सूरज रथबिलमाऊं ॥ २ ॥ लंका ऐसे कोट समुद्र ऐसि खाई, वैद सुषेनहिल्यावो ॥ कालनेमिको करो संहारो, मूल सजीवन लावो ॥ ३ ॥ रावणके दसमस्तक छेदों, जानकि सौ मिलाऊँ ॥ तुलसीदास रघुनाथ भरोसे, अंजनीलालकहाऊं ॥ ४ ॥ ४ ॥

जोमैजानकिनाथकहाऊँ ॥ टेक ॥ सुनसुग्रीवप्रतिज्ञा मेरी, रावणकुलहिवहाऊं ॥ १ ॥ जामवंत हनुमान नील नल, बालि सैनले धाऊं॥बांधि उदधिपद्माहि अष्टादश, लंकाकोट ढहाऊं ॥२॥ रावणके दश मस्तक छेदौं, असुरजहां लगि पाऊं ॥ वाण मारि बेहाल करौमै, देवन वंदि छोडाऊं ॥ ३ ॥ लंका राज बिभीषण देहूँ, जूगजूग छत्र फिराऊं ॥ तुलसीदास प्रतिज्ञा मेरी, सियाजी सहित घर आऊं ॥ ४ ॥ ५ ॥

अवदेखोरामध्वजाफहरानी ॥टेक॥ झलकतढालअरुफरकतनेजा, गरदउडीअसमानी ॥ लक्ष्मणवीरबा

लिसुतअंगद, हनूमानअगवानी ॥१॥ कहतमंदोदरिसु
नपीयरावण, त्रिभुवनपतिसैंठानी ॥ जोसागरकोगरम
करतहै, ताऊपरसिलाउतराई ॥ २ ॥ तिरियाजातिबु
द्धिकीओछी, उनहुकीकरतबडाई ॥ भूमंडलसैंपकरि
मंगैहौं, वेतपसीदोऊभाई ॥ ३ ॥ हनूमानसैंपायकउन
के, लक्ष्मणसेबलभाई ॥ जरतअग्निमैंकूदिपरतहै, को
टिगिनेनहिखाई ॥ ४ ॥ मेघनादसेपुत्रहमारे, कुंभकरण
बलभाई ॥ एकबारसनमुखहोयलडीहौं, जुगजुगहोत
बडाई ॥ ५ ॥ कहतिमंदोदरिसुनपियरावण, तैंमेरिए
कनमानी ॥ रातिकोसपनोएसोभयोहै, सोनेकिलंक
लुटानी ॥६॥ बंदरएकलंकबिचआयो, घरघरधूमसचा
ई ॥ बागउखारिसमुद्रबिचडारे, लंकामैंआगिलगाई ॥
॥ ७ ॥ गरवीरावणगरबनकीजे, गरबहिलंकलुटाई ॥
जायमिलोरघुनाथकुंवरसौं, लंकअचलहोइजाई ॥८॥
एकलखपुत्रसवालखनाती, मोतआपनिठानी ॥ अग्र
स्वामिगढलंकाघेरी, अजहुंनचेतअभिमानी ॥९॥ ६ ॥
देखोपियजनकसुतापतिआये ॥ टेक ॥ डगेसुमेर द
सोदिसहाले, गरदभानुरथछाये ॥ सीयलैमिलोकि पु
रतेभाजो, सिंधुसाजिरथआये ॥ १ ॥ मिलीआव तार
णदसरथसुत, सोनेकिसिंधुबंधाये ॥ अबलैमिलौ मि
लवेकोअवसर, जोलोपारनआये ॥ २ ॥ अहोपियतु
मयहमानतनाहीं, बहुबिधिकहिसमुझाये ॥ आयोहतो

बालिसुतअंगद, काहेनपगहुँमसायो ॥ ३ ॥ अरेनिखे दडरतहौअबला, काहेभरम मनआयो ॥ मोहिबर दानदियोहैसंभुने,आयोसोकालबंधायो ॥४॥ बंदरएक नामगंधरबा, रामदूतसोईआयो ॥ उडिउडिदैत्यद सोदिसभाजे, चहूँदिसलवनाछायो ॥ ५ ॥ सागरपार सैन सबआये, गढलंकानभछायो ॥ तुलसीदास प्रभु पारउतरिआये, विनतीकरौंकरजोरी ॥ ६ ॥ ७ ॥

हरकोदंडकठिनजिनतोरा ॥ टेक ॥ कहतमन्दोदरि सुनपियरावण, वानरभालुबटोरा ॥ सेतुबाधिदलपारउ तरीआये,सोरभयोचहुंओरा॥ १॥सुरपनखाकोरूपहऱ्यो है, खरदूषणमदतोरा ॥ उनसेबैरकबहु नहिकीजे, बिन तिकरो करजोरा ॥ २ ॥ रामलक्ष्मणदोउबीरधुरंधर, पवनतनयबलजोरा ॥ जामवंत हनुमाननीलनल,काल समानकठोरा ॥ ३ ॥ तामेमिल्यौ बिभीषणदेवर, बंधुलगेपियतोरा ॥ लंकाजारी गरदमिलैहै, जसपथ्थर कारोरा ॥ ४ ॥ दोउकरजोरी सीयलेआगे, मिलन चलोपतिमोरा ॥ तुलसीदास प्रभुके स्वामी, मानोव चनपतिमोरा ॥ ५ ॥ ८ ॥

मैरघुपतिपैजैहौंसवतजी ॥ टेक ॥ जननीसपतखा तहौतोरी, बहुरिन वदनदेखैहौं ॥ १ ॥ तजिहो राज समाजलंकके, अनुचर जाय कहइहौं ॥ क्षमीहै सब अपराधरामजी, अपनेसरणलगैहौं ॥ २ ॥ चरणधा

वउरदियौदसानन, कैसेसूलमिटैहौं ॥ ऐसोदूसरहैको इनाही, जासोसबसुखपैहौं ॥ ३ ॥ बार बार कहैवचन बिभीषण, ऐसो दाव नपैहौं ॥ तुलसीदास रघुनाथ हाथ अब, मैं बिनुदाम विकैहौं ॥ ४ ॥ ९ ॥

सरणरामके आयो, कुटुंबतजि ॥ टेक ॥ तजिगढ लंकमहलऔरमंदिर, नामसुनतउठिधायो ॥ १ ॥ भरीसभामैरावणबैठोपरहितलातचलायो ॥ मूरखबंधुक ह्योनहिमानै, बारबारसमुझायो ॥ २ ॥ आवतहींलंका पतिकीनो, हरिहँसिकण्ठलगायो ॥ जन्मजन्मकेमेटेपराश्रित, रामदरसजबपायो ॥ ३ ॥ श्रीरघुनाथअनाथ केबंधु, दीनजानिअपनायो ॥ तुलसीदासभजुनवलसियावर, भक्तिअभयवरपायो ॥ ४ ॥ १० ॥

फिरगईरामदुहाई, अबगढपर ॥ टेक ॥ कहतमंदोदरिसुनुपियरावण, कौनेकुमतिरमाई ॥ ओछीबुद्धिक मतुसाकिन्हो, तिरियाहरतपराई ॥ १ ॥ अबलाजाति बुद्धिकिओछी, उनहीकिकरतबडाई ॥ कटकसहितह मबांधीलैहौं, वैतपसीदोऊभाई ॥ २ ॥ हनूमानसेपाय कउनके, लक्ष्मणसेबलिभाई ॥ जरतअग्निमैकूदिपर तहै, कोटिगिनेनहिंखाई ॥ ३ ॥ बीसभुजादसमस्तक मेरे, सौजोजनचकराई ॥ सवालाखपरिवारहमारो, कुंभकरणबलिभाई ॥ ४ ॥ कंचनकोटदेखिमतभुलो, सात समुद्रअसखाई ॥ अंजनीकेपुत्रमहाबलदाई, क्षणमेलं

कजराई ॥ ५ ॥ हमरावणदशमस्तकमेरे, कुंभकरणबल भाई ॥ सहस्त्रयोधमेरेरखवारे, कहाकरेदोउभाई ॥ कटकजोरिकेपारउतरिआये, पटसिंहासनजाई ॥ तुलसीदासरघुवरकेसरणे, लंकाबिभीषणपाई॥ ७ ॥ ११॥

रघुपतिकबकरिहैंहोफेरा ॥ टेक ॥ सेनाजोरिसमुद्रबिचपहुँचे, उतरेजायसुवेला ॥१ ॥ पडेलंककेनिकटआयके, रामलखणकेडेरा ॥ बानरभालुदेईकिलकारी, जायलंकगढघेरा ॥ २ ॥ घरघरलंकाफुंकिदियोहै, हनूमानअलबेला ॥ तुलसीदासप्रभु रूपनिहारै, हरि चरणनके चेरा ॥ ३ ॥ १२ ॥

जोमैंरामरजायसुपायो ॥ टेक ॥ गलमेलीमुद्रिका मुदितमन, कपिराजहिसिरनायो ॥ १ ॥ भालुनाथनलनीलसाथलै, वलिवालीकोजायो ॥ फरकैअंगकहत सगुनहिशुभ, मगमुदमंगलछायो ॥ २ ॥ देखिवीरसुधिपाईगृद्धसें, सबहिअपनबलपायो ॥ सुमिरिरामतकितरकितोयनिधि, लंकक्षणहिमेंआयो ॥ ३ ॥ खोजतघरघरजनुदरिद्रमन, फिरतलागिधनलायो ॥ तुलसीसीयविलोकिपुलकेतन, भूरिभाग्यभयोभायो ॥ ४ ॥ १३ ॥ इतिमंगलवारकीगौरिसंपूर्ण ॥

॥ अथ बुधवारकी गौरी प्रारंभः ॥

जसोदामैयादेखतकोकान्हहमारो ॥ टेक॥ मथुरामें हरिजन्मलियोहै, तीनलोकउजियारो ॥ केसपकरिह

रिकंसपछारे, जीत्योहिमल्लअखारो ॥ १ ॥ निरमल जलजमुनाजिकोकीन्हो, नागनाथिलियोकारो ॥ फन परनिरतकरतमनमोहन, जसोमतिनंददुलारो ॥ २ ॥ अतिसकुमार कमलहुंतेकोमल, गिरिगोवरधन धार्‍यो॥डूबततेब्रजराखिलियोहै, गर्वइंद्रकोमार्‍यो ॥३॥ है कोऊबडोदेवदेवनमें, जसुमतिपुत्रतुम्हारो ॥ सूरदा सहरिरूपनिहारै, जीवनप्राणहमारो ॥ ४ ॥ १ ॥

माइमेरेरूठेबालगोविंदा ॥ टेक ॥ करिकरिअंगु लिगगनदेखावत, खेलनमांगेचंदा ॥ १ ॥ भाजनमें जलमेलिजसोदा, दिखावेप्रभुकोचंदा ॥ रोदनकरत ढुंढतजलभीतर, धरनचहतसुखकंदा ॥ २ ॥ दूधदहि माखनघृतरोटी, खावैनलालअनन्दा, ॥ मांगिवीहारि औरनहींटरही, येहिविधिखेलैमुकुन्दा ॥ ३ ॥ ॥ भक्तउ धारणअसुरसंहारण, हैप्रभुकंसनिकंदा ॥ येछविकी बलिहारिजसोदा, क्याकहुंपरमानंदा ॥ ४ ॥ २ ॥

कहनलगे, मोहनमैयामैया ॥टेक॥नंदरायसोंबाबाहि बाबा, बलदाउजिसोंभैया ॥ मातुजसोदाभाग्यसराह ति, मैमोहनबलिजैया ॥ १ ॥ दूरिखेलनजनिजाओ प्यारेललना, मारेगिकाहुकीगैया ॥ सिंहपौरचढिटेरै जसोदा, लैलेनामकन्हैया ॥ २ ॥ मोरमुकुटमकराकृत कुंडल, उरवनमालसोहैया ॥ मातजसोदाकरतआर ती, दोउकरलेतबलैया ॥ ३ ॥ खेलतफीरतसकलगोकु

लमै, घरघर बजत बधैया ॥ मदन मोहनकी येह छबि ऊपर, परमानंद बलिजैया ॥ ४ ॥ ३ ॥

जसोदामैया काहैन मंगलगावै ॥ टेक ॥ पूरणब्रह्म सकलअविनासी, सोतेरि धेनुचरावै ॥ १ ॥ कोटिकोटि ब्रह्मांडकेकरता, जपतपध्याननआवै ॥ नाजानौयहको नपुण्यसें,जसोमतिगोदखेलावै ॥ २ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक, निगमनेतिजसगावै ॥ शेषसहस्र मुखरटतनिरंतर, सोजाको पारनपावै ॥ ३ ॥ सुंदरबदन कमलदललोचन, गोधनके संगआवै ॥ मातजसोदा करतआरती, कबीरा दरसनपावै ॥ ४ ॥ ४ ॥

कृष्णचरणसुखदाई, भजोमन ॥ टेक ॥ जिनचरणनकीचरणसेवाको, सिंधुसुतामनलाई ॥ जयजयकृष्ण कमलदललोचन, दुखमोचनसुखदाई ॥१॥ जिनचरणनकीचरणपादुका, छुवैजमुनाथहराई ॥ नंदभवनमें आपबिराजे, जसोमतिकेसुखदाई ॥ २ ॥ सोपूरणवसुदेवदेवकी, निरखिपरमपदपाई ॥ छूटेबंधकपाटउघारे, देवसुमनझरिलाई ॥ ३ ॥ पूतनापरसपरमगतिदिन्हो, देहदसाविसराई ॥ गोवरधनवृजराखिलियोहै, कालिनागनथवाई ॥ ४ ॥ कुबजातोचंदनघासिलाई, परसिपरमपदपाई ॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, जरासंधदुखदाई ॥५॥ कुन्तीपुत्रबंधुभयव्याकुल, तासिरछत्रफिराई ॥ विप्रसुदामाहरिसोभेटै, कंचनपुरीवसाई ॥ ६ ॥ शिव

सनकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतिजसगाई ॥ चेत नदाससंतकेसरणे, पुलकनयनजलछाई ॥ ७ ॥ ५ ॥

ब्रजललनादुखमोचन, आवैमाई सरदकमल, दल लोचन ॥ टेक ॥ गौधनसंगपुनितकरमुरली, तिलकदि योगोरोचन ॥ १ ॥ आगैआगैधेनुपिछैनंदनंदन, करग हिकमलफिरावै ॥ बालगोपालनंदकेढोटा, मधुरीवेनु बजावै ॥ २ ॥ कटिपरलालकाछनीकाछै, ओढैपीतपि छोरी ॥ आपनहँसतहँसावतग्वालन, रागअलापतगौरी ॥ ३ ॥ तुलसीकोपत्रपुष्पकीमाला, झुकिगवालिनिपहि रावै ॥ मोरमुकुटबैजंतीमाला, कुण्डलझलकतआवै ॥ ४ ॥ वरषतपुष्पदेवमुनिहरखै, मोहैब्रजकीनारी॥कृष्ण दासप्रभुरसिकमुकुटपर, लालगोवरधनधारी ॥ ५ ॥ ६॥

बनहुंसे आवत गावतगौरी ॥ टेक ॥ आगैआगै धेनु पिछैनंदनंदन, ढोटाजसोमतिकोरी ॥ १ ॥ अटारिचढी ब्रजबधूनिहारै, निरखिपरमपदपारी ॥ आवतदेखीस्या ममनोहर, पुष्पमाललेदौरी ॥ २ ॥ अधरनमुरलिधरैम नमोहन, सबब्रजनारिठगोरी ॥ आजाकि सोभावरणिन जाई, ओढै पीतपिछोरी ॥ ३ ॥ मोरमुकुटपीतांबर सोहै, भालतिलकसिरखोरी ॥ नंददास प्रभुकी छबि निरखै, भाग्यबडे जिनकोरी ॥ ४ ॥ ७ ॥

मगनभईसुनिमुरलीकीटेरी ॥ टेक ॥ पनियाकेमिस निकसीग्वालनी; गौआवनकीबेरी ॥ १ ॥ गजगतिचाल

चलैमृगनयनी, चपलनयनचितहेरी ॥ मुरलीकिधुनि सुनिभईबावरी, स्याममिलनकीवेरी ॥ २ ॥ आजकि सोभावरणिनजाई, स्यामघटाघनघेरी ॥ आजसखी वृजराजपधारे, ओढैपीतपिछोरी ॥ ३ ॥ सासुपूछै सुनोबहुरिया, कहाँलगाइएतिबेरी ॥ परमानंदस्वामि मिलेहैराहमे, तासोभइहैअबेरी ॥ ४ ॥ ८ ॥

ग्वालिनितें मेरि गेंद चोराई ॥टेक॥ खेलत गेंद परी तेरे अंगना, अंगिया बीच छिपाई ॥ १ ॥ साचे लाल झूटमत बोलो, अंगिया तकत पराई ॥ जो अंगिया विच गेंदननिकसे, भूल जाव चतुराई ॥ २ ॥ काहेकि गेंद काहेक धागा, कौने हाथ बनाई ॥ फूलनगेंदरे समको धागा, जसोमति हाथ बनाई ॥ ३ ॥ हँसि हँसि वात करत राधेसंग, उतसें जसोदा आई ॥ सूरदास प्रभु चतुर कन्हैया, एकगयीदोउपाई ॥ ४ ॥ ९ ॥

ग्वालिनिक्यौं ठाडीनंदपौरी ॥ टेक ॥ बारबार इत उतफिरिआवे, विजिया खायभईबौरी ॥ नंदनंदन सेकवनकामहै, हमसें क्यौंनकहोरी ॥ १ ॥ सुंदरस्याम सलोनेढोटा, उनदधि लेनकहोरी ॥ हमसेकहै तुमनेकखडीरहो, आपुहिबैठरहोरी ॥ २ ॥ नवलख धेनुनंदबाबाके, तेरोहि लेनकहोरी ॥ जोबनमातीफि रतिग्वालिनी, तैंमेरोलालठगोरी ॥ ३ ॥ इतनासुनत निकसिआयेमोहन, दधिकोमोलकहोरी ॥ परमानं

दस्वामि रूपलोभाने, यहदधिभलोविकोरी ॥४॥१०॥

हरिसेंकौनदुहावतगैया ॥ टेक ॥ कारेआपकामरी कारी, आवतचोरकन्हैया ॥ १ ॥ कनकदुहनीसोह हाथमें, दुहनबैठेअधपैया ॥ २ ॥ खनदुहतखनधारच लावत, चितवनमें मुसकैया ॥ ३ ॥ गौवनछोडिगहे मेरोअंचल, येहिसिखायोतोरिमैया ॥ ४ ॥ चंद्रसखी भजुबालकृष्णछबि, चरणकमलवलिजैया ॥ ५ ॥ ११ ॥

नेक चलो नंदरानी, उहाँलगि ॥ टेक ॥ देखो अपने सुतकीकरणी, दूधमिलावत पानी ॥ १ ॥ हमरे सिर की नयीचुनरिया, लैगोरससेंसानी ॥ २ ॥ हमरे उनसे कौन बादहै, हमैंदेखावे जवानी ॥ ३ ॥ तुमरे कुलकि ऐसी बतिया, सोहमरेसव जानी ॥ ४ ॥ पिता तुह्मारे कंस घर बांधे, आपकहावत दानी ॥ ५ ॥ यहब्रज को वसवो हमत्यागो, आप रहो रजधानी ॥ ६ ॥ सूर दास ऊपरकीवरषा, थोरैजल उतरानी ॥ ७ ॥ १२ ॥

देखो माई हलधर गिरिधर चोरी॥टेक॥ हलधर हल मुसल करधारे गिरिधर छत्रधरोरी ॥१॥ हलधर ओढै निलनिलांबर, गिरिधर पीतपिछोरी ॥२॥ हलधर कहै मेरिकारीकामरी, गिरिधरकहै मेरिधोरी ॥३॥ सूरदास प्रभुकीछबिनिरखै, भाग्यबडे जिनकेरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

आये मेरे राधाकृष्ण उपासी ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्मलियोहै, पूरणब्रह्म अविनासी ॥ भालतिलक पुष्प

कीमाला, वृंदाबनकेवासी ॥१॥ तीरथवरतसबेकरिआ
ये,ब्रजमंडलचोरासी ॥ चरणधोयचरणामृतलिन्हो,
निरमल होगइछाती ॥ २ ॥ कृष्णनाम जाकेहृदय
वसत है, जगमें रहत उदासी ॥ जितचितवे उतअ
मयकरतुहै, मेंटतजमकीफांसी ॥ ३ ॥ जदुवरछोडि
अवरकोभजिहै, सोनरजमपुरजासी ॥ सूरदास जदु
वरके सरणे, मिटगइ लखचोरासी ॥ ४ ॥ १४ ॥

रुनझुनरुनझुनगोविंदआवे, हरिकेहाथलकुटमुखमु
रलिबजावे ॥ टेक ॥ दुरखेलनजिनजाओप्यारेललना,
साँझमइघरआओप्यारेललना ॥ १ ॥ कौनकेअंगनामें
तुलसीकोबिरवा, कौनकेअंगनामैखेलेप्यारेललना ॥
॥ २ ॥ देवकीकेअंगनामैतुलसीकोबिरवा, जसोदाके
अंगनामैखेलेप्यारेललना ॥ ३ ॥ कौनकेछैयाकृष्णजी
कौनकेभैया, कौनमहरकेकुंवरकन्हैया ॥ ४ ॥ देवकी
केछैयाबलदाउकेभैया, नंदरायजीकेकुंवरकन्हैया ॥
॥ ५ ॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, गौअनकेसं
गविहरतआवे ॥ ६ ॥ मोरमुकुटपीतांबरसोहै, कान
नकुंडलझलकतआवे ॥ ७ ॥ मातजसोदाकरतआरती,
सुरनरमुनिठाडेजसगावे ॥ ८ ॥ कहतकबीरमेरोरवना
भवना ॥ तीनलोकरमीआयेप्यारेललना ॥ ९ ॥ १५ ॥

जदुवरलागतहैमोहिप्यारो ॥ टेक ॥ मथुरामेहरिज
न्मलियोहै, गोकुलमैपगधारो ॥ जन्मतहिपूतनागति

दीन्ही, अधम उधारण हारो ॥१॥ जमुनाके निरतीर धेनु चरावै, ओढि कमरियाकारो ॥ सुन्दरवदन कमल दललोचन, पीतांवरपटवारो ॥ २ ॥ मोरमुकुट मकराकृतकुंडल, करमैंमुरलियाधारो ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजै, संतनकेरखवारो ॥ ३ ॥ जलडूवतव्रज राखिलियोहै, करपर गिरिवर धारो ॥ मीरा कहै प्रभुगिरिधरनागर, जीवन प्राण हमारो ॥ ४ ॥ १६ ॥

आजुमेरेकहाँअटकेगिरिधारी ॥ टेक ॥ खोजतखोजतफिरतिजसोदा, घरघरकरतपुछारी ॥ कारणकौन लालनहिआये, कंस काल भयभारी ॥१॥ जूथ जूथ सखियाचलिआई, देत जसोदा को गारी ॥ नंद नंदन कोजोर जुठौनो, खैंचत अंचलसारी ॥२॥ झमक झमक मोहन चलिआये, नयननीरभरीवारी ॥ मुरलीमेरीछिनलैहै, इन सखियन मोहिमारी ॥ ३ ॥ हँसि मुसुकाय कहत राधेजी, दूषण नाहिं हमारी ॥ स्यामसुन्दरमै तुमरे दरसको, चंद्रसखि वलिहारी ॥ ४ ॥ १७ ॥

बनहूंसेआवत धेनुचरावै ॥टेक॥ आगेआगे धेनु पिछैजदुनंदन, व्रजरजमुखलपटावै ॥१॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल, उरवनमालसोहावै ॥ वाहु विशाल विभुषणसोहै, करगहि कमल फिरावै ॥ २ ॥ चंदन चरचित अंगमनोहर, भृगुलक्ष्मणछविछावै ॥ शेषसहस्रमुख रटतनिरंतर, सोवाकोपारनपावै ॥ ३ ॥ कंवु कंठ

कौस्तुभ मणि राजे, सोभा वरणिनजाये ॥ घुंघुरवारे अलक वदनपर, मधुकर रहैलोभाये ॥ ४ ॥ चढे विमान देव मुनिहरखे, पुष्पमाल झरिलाये ॥ कृष्णदास प्रभु कीछबिनिरखे, चरणकमल चितलाये ॥ ५ ॥ १८ ॥

बनहूसैआवतधेनुचरानी ॥ टेक ॥ संज्यासमयस्यामरैमुखपर, गौपदरजलपटानी ॥१॥ शोभनमुकुटशीशपरराजै, मधुकररहैलोभानी ॥ सोभाललितलाललटकनकी, जोनाउडितउडानी ॥ २ ॥ विधिवाहनमुक्तनकीमाला, सोभित उरफेरानी॥ मनहुं मदाग्निधसी अमलपर, जोना फूलउडानी ॥ ३ ॥ बाल गोपाल नंदकेढोटा, ग्वालबने एकठानी ॥ सूरदास प्रभु रसिक मुकुटपर, सोभावरणिनजानी ॥ ४ ॥ १९ ॥

हेहेकरतमुरारिगोवनसंग ॥टेक॥ जोदरसनलगि सुरसवध्यावै, ब्रह्मादित्रिपुरारी ॥ सोनंदलाल ग्वाल संग खेलत, महिमानाथतुह्मारी ॥ १ ॥ जोरजको ब्रह्मादिकनारद, खोजिखोजिमुनिहारी ॥ सोरजलैलैब्रजकीबनिता, डारत उबरबुहारी ॥ २ ॥ जोभुजबल सबअसुरसंहारै, रावणरिपुदलभारी ॥ सोभुजपकरि कहतब्रजबालक, दावदेवगिरिधारी ॥ ३ ॥ यहिविधि कौतुक करहिकृपानिधि, अलखपुरुषतनुधारी ॥ सूरदास संतनके सरवस, नाथभक्तहितकारी ॥ ४ ॥ २० ॥

खिरकबिचक्यौठाढीराधाप्यारी ॥ टेक ॥ माथैहाथ

दियेमनसोचत, कहाँलगीतेरित्यारी ॥ देखेंगेसोकहाक हेंगे, सुनरि तुराजकुमारी ॥ १ ॥ अवही लालगये गौ वनमें, अब आवनकी त्यारी ॥ वंसी वाजी रहि मोह नकी, मोहि लई बृजनारी ॥ २ ॥ तीन लोककी रूप लाडिली, कंचनकी उहारी ॥ यह सोभा मोपे वरणि नजाई, विधना आपसंवारी ॥३॥ लाल लाडिली मिले खिरकिमें, हृदय हर्षिवृजनारी ॥ चंद्रसखि भजु वाल कृष्णछबि, तनमनधनहिविसारी ॥ ४ ॥ २१ ॥

सुनोसखिमोहनवेनुवजावै ॥ टेक ॥ सांझसमयगौध नकेपीछे, आछैवनि ठनिआवै॥१॥कहूं पुष्पकहूंकुसुम मंजरी, कहूंतुलसीदललावै ॥ गुंजमाल वनमाल लाल उर, अंगअंगछविछावै ॥ २ ॥ इंदु बदन अरविंद नयन सिर, मुकुट मधुर सुरजावै ॥ कुंज भवन मारगउपवन मै, मोर चकोर नचावै ॥ ३ ॥ श्रुति कुंडल झलकन अलकनिपर, हलकन नयनसिरावै ॥ पीत दुकूल खोरकेसरकी, नवलसखिमनभावै ॥ ४ ॥ २२ ॥

आजुमैंहरिकेसस्त्रगहावो ॥ टेक ॥ जोलाजोगं गाजनीनिको, सांतनसुतनकहावो ॥ सारथिमारिमाहा रथिमारो, कपिध्वजसहितउडावो ॥ १ ॥ पांडवसैनस हितसंहारो, दूरमतिनदीवहावो ॥ २ ॥ जोजीतोजस होतजगतमैं, जीयतनिसानढरावो ॥ जोमैंमारिमरौवा ननसें, सुरपुरजाइबसावो ॥ ३ ॥ जोमैंभागौसपथस्याम

के, छत्रीगतिनहिंपावो ॥ सूरदासयहसमरभूमिमें, जियतनपीठदिखावो ॥ ४ ॥ २३ ॥ इतिसातोवारकीगौरी

॥ अथ नवीन गौरी प्रारंभः ॥

मनरेतुरामकृष्णभजुभाई ॥ टेक ॥ रामकृष्णदोउनाममनोहर, निशिदिनध्यानलगाई ॥ पूरणब्रह्म अवधमेंप्रगट, दशरथसुतरघुराई ॥ जन्मलियोवसुदेवदेवकी, नंदकेलालकहाई ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटकरधनुषविराजै, दशरथसुतरघुराई ॥ मोरमुकुटतुलसीकीमाला, करगहिबेणुबजाई ॥ २ ॥ रामचन्द्रदशकंधरमंज्यो, राज्यबिभीषणपाई ॥ कंसकोमारिगरदकरिडारयौ, उग्रसेनभयेराई ॥ ३ ॥ तीनलोकअरुभुवनचतुर्दश, महाकठिनभवखाई ॥ नामविनाकोउथाहनपावै, भटकिभटकिमरिजाई ॥ ४ ॥ शारदशेषविमलयशगावै, निगमनेतिकहिगाई ॥ ध्रुवप्रल्हादपरमतपकिन्हे, नामसुमिरितरिजाई ॥ ५ ॥ वरखतपुष्पदेवमुनिहर्षै, तिहुँपुरबजतवधाई ॥ गोकुलदासदोनामनकि महिमा, बेद पुरानन्गाई ॥ ६ ॥ २४ ॥

भजवोश्रीरामनामकोनीको ॥ टेक ॥ तिनलोकअरुभुवनचतुर्दश, रचनाब्रह्माजीको ॥ वेदपुरानसकलयशगावै, भक्तिबिनासबफीको ॥ योगयज्ञवैराग्यविविधिविधि, साधनमनइंद्रीको ॥ तीरथव्रतसकलकरिआवै, नामविनासबफीको ॥ देवदनुजमुनिमनु

जसुरासुर, चाहतसुखमनहीको ॥ विविधिभांतिसव लाडलडावै, प्रेमविनासवफीको ॥ शिवसनकादिआदिमुनिनारद, श्रुतिसम्मतिसवहीको ॥ व्यासआदिकविपुंगवखानो, सुमिरणराघोजीको ॥ विविधिभांतिशारदगुणगावै, रामलषणसियाजीको ॥गोकुलदाससबधामछांडिके, वसबोअवधपुरीको ॥ २५ ॥

गंगानामलेतअघनासै ॥ टेक ॥ जाकोनामविदितत्रिभुवनमें, मुनिजनध्यानलगाते ॥ जाकेदरसपरसअतिपावन, सकलपापजरिजाते ॥ सेवतमनवचक्रमगंगातट, पुनिनभुवनफिरआते ॥ धवलधारप्रभावअमितअति, छूवतअधमतरिजाते ॥ शारदशेषविमलयशगावै, गणपतिगुणगणगाते ॥ शिवविरंचिसनकादिआदिमुनि, यमठाढेपछताते ॥ जोपरसेसोहरिपदपावै, फिरनहिजमपुरजाते ॥ गोकुलदासगतिलखिगंगाकी, चरणकमल लपटाते ॥ २६ ॥

सर्युरामरूपजगमाही ॥ टेक ॥ पापतापजेहिनिकटनआवै, नामसुनतभगजाही ॥ जाकेनिकटरामपुरसुन्दर, छबिबरनीनहिजाही ॥ चन्द्रसूर्य्यदोउदेखिथकितभये, आगेचलिनहिजाही ॥ दूधधारप्रभावअमितअति, रामजन्मरजधानी ॥ राजादशरथगृहनौवतवाजै, घरघरबजतबधाई ॥ विविधिभांतिकेघाटवनेहै, रहैमुनीजहाँछाई ॥ सर्यूदरशपरसकरिमज्जन, रामधामचलिजाई ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगसखासु

खदाई ॥ ठाडैसरयूलहरनिहारै, मगनभयेरघुराई ॥ माँहि मावरनतिगिरा निरन्तर, निगमनेतियशगाई ॥ शेषस हसमुखरटतनिरन्तर, तबहूँपारनपाई ॥ सकलदेव सुर सिद्धनिहारे, मज्जनकरैरघुराई ॥ गोकुलदासछबिनिर खिरामकी, चरणकमललपटाई ॥ २७ ॥

॥ अथ संझासमय मंगलगानेके दोहा प्रारंभः ॥

गुरुमूरतिमुखचंद्रमा, सेवकनैनचकोर ॥ अष्टपहरनि रखतरहै, गुरुमूरतकीओर ॥ १ ॥ श्रीगुरुचरणसरोजरज, निजमनमुकुरसुधार ॥ बरणौरघुवरविमलजस, जोदा यकफलचार ॥ २ ॥ मंगलमयमरजादमणि, सकलध र्मवरधीर ॥ रिधिवरसिधिवरमुक्तिवर, सीतावररघुवीर ॥ ३ ॥ सुमिरणऐसोचाहिये, जाकोधरियेध्यान ॥ सत जुगत्रेताद्वापर, कलजुग चारौंजुगपरिमान ॥ ४ ॥ एक बुंदसरितावहै, भिन्नभावनहिहोय ॥ संतमिलैभगवान सो मिलिगावैसबकोय ॥ ५ ॥ मोमैगुणकछुहैनहीं तुमगु णमराजहाज ॥ गुणअवगुणनाविसारिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ६ ॥ बिनसतसंगनहरिकथा, ताविनमोहनभा ग ॥ मोहगएबिनरामपद, होयनदृढअनुराग ॥ ७ ॥ क रगहिधनुष चढाइयें, चकितभएसबभूप ॥ मगनभईश्री जानकी, देखिरामकोरूप ॥ ८ ॥ अवधधामधामाधिप ती, अवतारनपतिराम ॥ सकलसिद्धिपतिजानकी, दा सनपतिहनुमान ॥ ९ ॥ बारीबरोबरबारीहै, तापरबहत

बयारि ॥ रघुवरपारउतारिये, अपनिऔरनिहारि ॥ १० ॥ सीतापतिरघुनाथज्यू, तुमलगमेरी दौर ॥ जैसेकागजहाजकी, सूझतऔरनठौर ॥ ११ ॥ सीतापतिरघुनाथको, नेकनसावैंशीश ॥ कहाविभीषणले मिले, लंकदईबकसीस ॥ १२ ॥ सीतापतिकीकोठडी, चंदनजड़ेकमार ॥ तालालागेंप्रेमके, खोलोकृष्णमुरार ॥१३॥सीतापतिकेकारणे, सवधनडार्‍योखोई ॥ मूरख जानैंगिरगयो; दिनदिनदूनाहोई ॥ १४ ॥ रामनाममणिदीपधरो, जीहदेहरिद्वार ॥ तुलसीभीतरबाहरैं, जो चाहतउजियार ॥ १५ ॥ एकछत्रएकमुकुटमणी, सब बरणनपरजोउ ॥ तुलसीरघुवरनामके, वरणविराजत दोउ॥१६॥अपनेअपनेइष्टको, नमनकरतसबकोय ॥ इष्टविहिनजेपरसराम, नमैसोमूरखहोय ॥ १७ ॥ रामकथामंदाकिनी, चित्रकोटचितचारु ॥ तुलसीसुभगसनेहबीन, श्रीरघुवीरविहारु ॥ १८ ॥ तुलसीबिरवा बागके, सींचतहींकुलचाय ॥ रामभरोसेजेरहे, परवत परहरिआय ॥ १९ ॥ रामझरोखैबैठिके, सबकेमुजरा लेत ॥ जैसीजाकीचाकरी, तैसीताकोदेत ॥ २० ॥ चित्रकोटसेकोटनहीं, अवधधामसेंधाम ॥ सुंदरवनसेबन नहीं, श्रीरामनामसेनाम ॥ २१ ॥ रामचंद्रमुखचंद्रछबी, लोचनचंद्रचकोर ॥ करतपानसोदरसकल, प्रेमप्रमोद नचथोर ॥ २२ ॥ रामबामदिसिजानकी, लषणदाहिनी

और ॥ ध्यानसकलकल्याणमय, सुरतरुतुलसीतोर ॥ २३ ॥ रामरामसबकोईकहै, ठगठाकुरअरुचोर ॥ विनाप्रेमरीझैनही, तुलसीराजकिसोर ॥ २४ ॥ कहा कहौछबिआजकी, भलैबिराजैनाथ तुलसीमस्तक जबनमैं, धनुषबानल्योहात ॥ २५ ॥ कितमुरलीकित चंद्रिका, कितगोपियनकोसाथ ॥ अपनैजनकेकारणे, श्रीकृष्णभएरघुनाथ ॥ २६ ॥ बृंदावनसैंवननही, नंद गामसेगाम ॥ वंसीवटसैंबटनहीं, श्रीकृष्णनामसैंनाम ॥ २७ ॥ वृंदावनमानीकभवन, भँवरकरेगुंजार ॥ दुल हिनप्यारीराधिका, दुलहनंदकुमार ॥ २८ ॥ राधेराधे रटतहै, आकढाकअरुकैर ॥ तुलसीयाव्रजभूमिमैं, क हारामसैंवैर ॥ २९ ॥ वारबारवरमांगिहौं, हरखिदेहुश्री रंग ॥ पदसरोजअनुपायनी, भक्तिसदासतसंग ॥३०॥ कोटिकल्पकाशीवसै, मथुराकल्पहजार ॥ एकनिमष सरजूवसै, तुलैनतुलसीदास ॥ ३१ ॥ अजगरकरैनचाक री, पंछीकरैनकाम ॥ दासमलूकायोंकहै, सबकेदाता राम॥३२॥व्रजबासीवल्लभसदा, मेरैजीवनप्राण ॥ इनको निमिषनछोडिहौं, मोनंदरायकीआन ॥ ३३ ॥ ब्रज तजी अंतन जाइहौं, येहीमेरीटेक ॥ भूतलभारउता रिहो, धरिधरिरूपअनेक ॥ ३४ ॥ कोटीतीरथकामता, कोटिगयासुविलास ॥ रजधानीरघुनाथकी, गावत तुलसीदास ॥ ३५ ॥ बांहछोडायेजातहो, दुर्बलजानि

केमोहि ॥ हृदयेसेंजबजावगे, मर्दबखानौतोहि ॥३६॥ तुलसीमिटैनमोहतम, कियेकोटिगुणग्राम ॥ हृदयकमलफूलेनही, बिनुरबिकुलरबिराम ॥ ३७ ॥ तुलसीयहतनखेतहै, मनवचकर्मकिसान ॥ पापपुन्यदोउबीज है, बोवैलुनेनिदान ॥ ३८ ॥ रामरामसबकोईकहै, दशरथकहैनकोय ॥ एकबारदशरथकहै, कोटिजज्ञफलहोय ॥ ३९ ॥ रामभजनकोआलसी, भोजनकोहुंसियार ॥ तुलसीऐसेजीवको, बारबारधिक्कार॥४०॥रामनामको आलसी, भोजनकोहुंसियार ॥ भेडिपूछभादौनदि, किसविधिउतरैपार ॥ ४१ ॥ तुलसीहायगरीबकी, हरिसोसहीनजाय ॥ मुआचामकेफुंकसो, लोह भस्म होजाय ॥ ४२ ॥ नहिविद्यानहिबांहबल, नहिखर्चनकोदाम ॥ मोसेपतितपतंगके, तुमपतिराखोराम ॥ ॥ ४३ ॥ पडेरहोदरबारमे, धक्काधणिकोखान ॥ कबहुकदीनदयालके, शब्दपरेगाकान ॥ ४४ ॥ संतमिलनकोजाइये, तजिमायाअभिमान ॥ जौंजौंपगआगेपरें, त्यौंत्यौंजज्ञसमान ॥ ४५ ॥ संतबडेपरमारथी, सीतलउनकेअंग ॥ तपनबुझावैओरकी, देदेअपना रंग ॥ ४६ ॥ संतसंतसबएकहै, जसअफीमकोखेत ॥ कोईकुदरतिलालहै, अवरसेतकेसेत ॥ ४७ ॥ रामनगरियारामकी, बसेगंगकेतीर ॥ अचलराजमहाराजको, चौकीहनुमतवीर ॥ ४८ ॥ चित्रकोटमानिकबन्यो, भंवरकरेगुंजार ॥ हुलहिनिप्यारीजान

की, दुलहाराजकुमार ॥ ४९ ॥ सीताजीकेबदनपे, बें
दी सोभादेत ॥ मानोफूलीकेतकी, भंवरबासनालेत
॥ ५० ॥ चित्रकोटचित्तरमिरहो, पैसरणीकेतीर ॥ उ
हाँकछुकदिनरमिरहे, सियालखनदोउबीर ॥ ५१ ॥ चि
त्रकोटकेघाटपै, भइसंतनकीभीर ॥ तुलसीदासचंद
नघिसें, तिलककरैरघुवीर ॥ ५२ ॥ चित्रकोटकेगैलमें,
मुक्तिपरिविलखाय ॥ मुक्तिकहैरघुनाथसें, मेरीमुक्तिब
ताय ॥ ५३ ॥ परीरहौयहगैलमें, साधुसंतचलिजाय ॥
उडिउडिरजमस्तकपरै, सहजमुक्तिहोजाय ॥ ५४ ॥ चि
त्रकोटकेवृक्षको, मर्मनजानैकोई ॥ एकपत्रसेवाकरै,
रूपचतुरभुजहोई ॥ ५५ ॥ चित्रकोटकेडोमडा, और
देसकेभूप ॥ उनकीसरवरकोकरै, वेचिखातहैसूप॥५६॥
चलोसखिजहाँजाइये, जहांबसतवृजराज ॥ गोरस
वेचन हरिमिलै, एकपंथदोउकाज ॥५७॥ वृजचौरा
सीकोपसें, चारिगामनिजधाम ॥ वृंदावनअरुमधुपुरी,
वरसानोनंदगाम ॥ ५८ ॥ राधेजीकेवदनपे, बेंदिसो
भादेत ॥ मानोफूलिकेतकी, भंवरबासनालेत ॥ ५९ ॥
राधेतूँबडिभागिनी, कौनतपस्याकीन ॥ तीनलो
ककेनाथहै, सोतेरेआधीन ॥ ६० ॥ वृंदावनकेगल
में, मुक्तिपरीविलखाय ॥ मुक्तिकहैगोपालसें, मेरीमु
क्तिवताय ॥ ६१ ॥ परीरहोयहगैलमें, साधुसंतचलि
जाय ॥ उडिउडिरजमस्तकपरै, सहजमुक्तिहोईजाय
॥ ६२ ॥ वृंदावनकेवृक्षनको, मर्मनजानैकोई॥एकपत्रसे

वाकरे, रूपचतुरसुजहोई ॥ ६३ ॥ वृन्दावनकेडोमडा, औरदेसकेभूप ॥ उनकीसरबरकोकरे, वेचिखातहैसूप ॥ ६४ ॥ सूरातोसरगुणकथै, निरगुणकथैकवीर ॥ रामरत्नतुलसीकथै, जयजयसियारघुवीर ॥ ६५ ॥ यहमंगलबहुललितबन्यो, गावतहीचित्तलाय ॥ सियारघुवीरकृपाकरै, सद्यसाकेतहिजाय ॥ ६६ ॥ रामरसहिचाख्योनहीं, भ्रमतभ्रमतजंजार ॥ रामरसहिचाख्यो जबै, होयसबेरसखार ॥ ६७ ॥ बांधेसोबांधामिलै, छुटै कौनउपाय ॥ संगकिजैनिरबंधकी, पलमैंदेयछोडाय ॥ ६८ ॥ जोबनजीवनमालधन, अचलरह्योनहिकोय ॥ जोघडिगईअनंदका, जीवनकाफलसोय ॥ ६९ ॥ चलो अवधपुरजाईये, जहाँबसेरघुवीर ॥ निर्मलसरज्युनहायकै, दरसकरोमहावीर ॥७०॥ इतिसंझासमयकेमंगलगानकेदोहासंपूर्णः ॥

॥ अथ सातोवारकी आरती प्रारंभः ॥

॥ गुरुवारकी ॥ जयजयआरतिरामतुह्मारी, रामदयालभक्तहितकारी ॥ टेक ॥ जनहितप्रगटेहरिवपुधारी, जनप्रह्लादप्रतिज्ञापाली ॥१॥ द्रुपदसुताकोचीरबढायो, गजकेकाजपयादेधाये ॥२॥ दससिरछेदिबीससुजातोड़े, सुरतेतीसदेवबंदिछोड़े ॥ ३ ॥ छत्रलियेकरलक्ष्मणभ्राता, आरतिकरतकौशल्यामाता ॥४॥ शुकसारदनारदमुनिगावे, भरतशत्रुहन चंवरढरावे ॥ ५ ॥ राम

केचरण गहैमहाबीरा, ध्रुवप्रहलादबालिसुतबीरा ॥ ६ ॥
लंकाजीतअवधहरिआये, सबसखियनमिलिमंगलगाये
॥ ७ ॥ सीतासहितसिंहासनबैठे, रामानंदस्वामीआर
तिगाये ॥ ८ ॥ ११ ॥ इतिगुरुवारकी आरति ॥

॥ शुक्रवारकी ॥ आरतिश्रीलक्ष्मणबालजतिकी ॥ अ
सुरसंहारणरघुवरप्राणपतिकी ॥ टेक ॥ जगमगजोतिअ
वधपुरराजै, शेषाचलपरलक्ष्मणआपबिराजै ॥ १ ॥ घं
टातालपखावजबाजै, कोटिदेवमुनिआरतिसाजै ॥ २ ॥
क्रीटमुकुटकरधनुषविराजै, तीनलोकजाकीसोभाराजै
॥ ३ ॥ कंचनथारकपुरकिबाती, आरतिकरतसुमित्रा
माई ॥४॥आरतिकिजैहरिकिजैसीतैसी, ध्रुवप्रहलादबि
भीपणजैसी ॥ ५ ॥ प्रेममगनहोयआरतिगावै बसिबैकुं
ठबहुरिनाहिंआवै ॥ ६ ॥ भक्तहेतुहरिलाडलडावै जनघन
स्यामपरमपदपावै ॥७॥२॥ इति शुक्रवारकी आरति ॥

॥ शनिवारकी ॥ आरतिकीजैनरसिंघकुंवरके, वेदवि
मलजसगाऊंमेरेप्रभुके ॥ टेक ॥ पहिलीआरतिप्रहलाद
उबारै, हिरनाकुसनखउदरबिदारै ॥ १ ॥ दूसरिआरति
वामनसेवा, बलिकेद्वारेपधारेहरिदेवा ॥ २ ॥ तिसरीआ
रतिब्रह्मपधारै, सहस्त्रबाहुकेभुजाउखारै ॥ ३ ॥ चौथी
आरतिअसुरसंहारै, भक्तबिभीषणलंकपधारै ॥ ४ ॥पंच
मिआरतिकंसपछारै, गोपीग्वालसखाप्रतिपालै ॥ ५ ॥
तुलसीकोपत्रकण्ठमनिहीरा, हरखीनिरखीगावैदासक

बीरा ॥ ६ ॥ ३ ॥ इति शनिवारकी आरति संपूर्ण ॥

॥ रविवारकी॥कहालगिआरतिदासकरैंगे, सकलभु वनजाकीज्योतिबिराजै ॥ टेक॥ सातसमुद्रजाकेचरण निवासी, काभयोजलकूंभभरैराम ॥१॥कोटिभानुजाके नखकीसोभा, काभयोमंदिरदीपधरैराम ॥ २ ॥अठारह भाररोमावलिजाके, काभयोसिर पुष्पधरैराम॥ ३ ॥ छ प्पनभोगनित्यप्रतिलागै, काभयोनैवेद्यधरैराम ॥ ४ ॥ अनंतकोटिजाकेबाजाबाजे, काभयोझनकारकरैराम चारवेदजाकेमुखकीसोभा, काभयोब्रह्मावेदपढैराम ॥ ६ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नारदमुनिजाकेध्यान धरैराम ॥७॥ हेमवंतजाकेपवनझकोरे, काभयोसीरचंवर ढुरैराम॥८॥लखचौरासीबंधछोडाये, केवलहरिजसनाम देवजीगाये ॥ ९ ॥ ४ ॥ इतिरविवारकी आरतिसंपूर्ण ॥

॥सोमवारकी ॥ आरतिकरतजनककरजोरे, बडेभा ग्यरामजीआयेमोरे ॥ टेक ॥ जीतिस्वयंबरधनुषचढा ये, सबभूपनकोगर्वगिराये ॥ १ ॥ तोडपिनाकक्रियेदोऊ खंडारघुकुलहरखिरावणभयेसंका ॥२॥ आइहैसीतासं गसहेली, हरखिनिरखिबरमालामेली ॥ ३ ॥ गजमोति यनकेचौकपुराये,कनककलसभरिमंगलगाये ॥४॥ कंच नथारकपूरकिबाती, सुरनरमुनिजनआयेहैबराती ॥५॥ फिरतभांवरीबाजाबाजै, सियाजीसहितरघुवीरबिरा जै॥ ६ ॥ धन्यधन्यरामलखनवैदेही, धन्यदसरथको

शिल्यामाई ॥७॥ राजादशरथऔरजनकविदेही, भरत शत्रुघनपरमसनेही ॥ ८ ॥ मिथिलापुरमैबजतबधाई, दासतुरासिस्वामीआरतिगाई ॥ ९ ॥ ५॥ इतिसोमवारकी ॥

॥ मंगलवारकी ॥ आरतिकिजेहनुमानललाकी ॥ दुष्टदलनरघुनाथकलाकी ॥ टेक ॥ जाकेबलसेंगिरिवरकंपे, रोगदोखजाकेनिकटनझंके ॥ १ ॥ अंजनिकेपुत्रमहाबलदाई, संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ २ ॥ दै बीरारघुनाथपठाये, लंकाजारिसियासुधिलाये ॥ ३ ॥ लंकाअसकोटसमुंद्रऐसिखाई, जातपवनसुतबारनलाई ॥ ४ ॥ लंकाजारिअसुरसबमारे, सीतारामकेकाजसंवारे ॥ ५ ॥ लक्ष्मणमुरछिपरेधरणिपे, आनिसजीवनप्रानउबारे॥६॥ पैठिपतालतोरिजमकातर, अहिरावणकेभुजाउखारे ॥ ॥ ७ ॥ बायेभुजासबअसुरसंहारे, दहिनेभुजासब संत उबारे ॥ ८ ॥ सुरनरमुनिजनआरतिउतारे, जैजैजै हनुमानउचारै ॥ ९ ॥ कंचनथारकपूरकिबाती, आरतिकरतअंजनीमाई ॥ १० ॥ जोहनुमानजीकिआरतिगावे, बसिबैकुंठबहुरिनहिंआवे ॥ ११ ॥ लंकविध्वंसकियेरघुराई, तुलसीदासस्वामीआरतिगाई ॥ १२ ॥ ६ ॥

॥ बुधवारकी ॥ आरतिजुगलकीसोरकिकीजे ॥ तनमनधननौछावरकीजै ॥ टेक ॥ गौरस्यामसुखनिरखीलीजे, हरिकोसरूपनयनभरिपीजे ॥ १ ॥ रविशशिकोटिबदनकीसोभा, ताहिनिरखीमेरोमनभयोलो

भा ॥२॥ ओढेनीलपीतपटसारी, कुंजविहारिलालश्री गिरिवरधारी ॥३॥ फूलनकिसेजफूलनवनमाला, रतन सिंहासनबैठेनंदलाला ॥ ४ ॥ मोरमुकुटमुरलीकरसोहै, नटवरकलादेखिमनमोहै ॥ ५ ॥ कंचनथारकपूरकि बाती, हरिदर्शननिरमलभईछाती ॥ ६ ॥ श्रीपुरुपोत्तम गिरिवरधारी, आरतिकरैसकलव्रजनारी ॥ ७ ॥ नंदनं दनवृषभानकिसोरी, परमानंदस्वामीअविचलजोरी ॥ ॥ ८ ॥ ७ ॥ इतिसातोवारकी आरती समाप्त ॥

॥ और विशेष आरती प्रारंभः ॥

आरतिकिजैराजारामचंद्रजीकी ॥ हरिहरिभक्तिज मत्रासनदीजे ॥ टेक ॥ पहिलीआरतिपुष्पकिमाला, कालिनागनाथलायेमदनगोपाला ॥१॥ दुसरिआरतिदे वकीनंदन, भक्तउद्धारनकंसनिकंदन ॥२॥ तिसरीआर तित्रिभुवनमोहै, रतनसिंहासनरामकोसोहै ॥३॥ चौथी आरतिचहुंजुगपूजा, देवनिरंजनस्वामी और न दूजा ॥ ॥ ४ ॥ पंचमीआरतिरामकोभावे, रामकेहरिजसनाम देवगावै ॥ ५ ॥ ८ ॥

सखिआरतिकरिरसप्रेमभरी ॥ सियारघुवरकोसिं गारकरी ॥ टेक ॥ मणिमयथारसखिनकरराजे, बाती रविशशिदुतिनिदरी ॥ १ ॥ बाजतभेरिनिसानदुंदुभी, संखझांझकरतालधरी ॥ २ ॥ नाचहिंगानकरेसखिथेई थेई, सुमनलालमणिहोतिझरी ॥ ३ ॥ रामचरणसिया

रामरूपलखि, आनंदउररससिंधुभरी ॥ ४ ॥ ९ ॥

श्रीआरतिकरतकौशल्यारानी ॥ टेक ॥ निरखतरूप सियारघुवरको, छबिनहिंजातबखानी ॥ १ ॥ कनकथारग जमानिकमुक्ता, धरेहैंविविधिविधिआनी ॥ २ ॥ मा यांहैमानसकलभूपनको, महिमावेदबखानी ॥ ३ ॥ तो रेधनुषजनकपणराख्यो, तीनलोकमेजानी ॥ ४ ॥ जन करायकीलज्यारारवी, परसुराममदहानी ॥ ५ ॥ सुरपुर नारीअवधपुरबासी, बोलतमधुरीबानी ॥ ६ ॥ नाचतन भअप्सरामुदितमन, हरखिसुमनबरखानी ॥ ७ ॥ रत्न सिंहासनरघुवरबैठे, सुखमयशारंगपानी ॥ ८ ॥ मातकौस ल्याकरतआरती, हरिकोनिरखिहरखानी ॥ ९ ॥ दसर थसहितअवधपुरवासी, उचरतजयजयबानी ॥ १० ॥ तुल सीदासप्रभुअविचलजोरी, भक्तिअभयबरदानी ॥ ११ ॥ १०

हरतसकलसंतापजन्मके, मेटतडरयमकालकी, आ रतिकीजेमदनगोपालकी ॥ टेक ॥ गौघृतरुचिरकपूर किबाती, चंद्रकोटिकांतियुतराजत, मुखसोभानंद लालकी ॥ १ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजै, मोरमुकुटपी तांबरराजै, बाजतबेणुरसालकी ॥ २ ॥ कुंडललोलकपो लनझलकै, सुरनरमुनिजनकरतआरती, भक्तवत्सलप्र तिपालकी ॥ ३ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, मैबलिबलि रघुनाथदासप्रभु, मोहनिगोपीज्वालकी ॥ ४ ॥ ११ ॥

॥ अथआरतीपीछेखडेगानेकीधुनप्रारंभः ॥

रघुनंदनआगेमैनाचूंगी, नाचूंगीरंगराचूंगी ॥ टेक ॥

करिसिंगारहारतुलसीको, भालतिलकसिरराखौंगी ॥ १ ॥ प्रेमप्रीतिकेबांधिघुंघुरा, सुरताकिकछनीमैंकाछौंगी ॥ ॥ २ ॥ नाचिनाचिरघुनाथरिझाऊं, भक्तिरसीलीजाचौंगी ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, स्यामलीसुरतिमनराखौंगी ॥ ४ ॥ चुनिचुनिकलियांमैहारबनाऊं, रघुबरउरपहिराऊंगी ॥ ५ ॥ धूपदीपनैवेद्यआरती, येहिविधिलाडलडाऊंगी ॥ ६ ॥ लोकलाजकुलकीमरजादा, इनमैंएकनराखौंगी ॥ ७ ॥ सरज्यूतीरअयोध्यानगरी, बैठीझरोखेझांकौंगी ॥ ८ ॥ सोनादासविलसांवरो, हरिकेचरणचितराखौंगी ॥ ९ ॥ १ ॥

बहैसोहावनसरज्यूनीर, भजोअवधपुरसियारघुवीर ॥ टेक ॥ रामचरणकोध्यानधरतहैं, जरामरणछूटेभवपीर ॥ १ ॥ राजादसरथकेचारपुत्रहैं, तिनमेंरघुवरस्यामसरीर ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, विहरतहैंसरजूकेतीर ॥ ३ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल, गलेबिराजेमुक्ताहीर ॥ ४ ॥ सारंगधनुपबानकरराजे, पीतांबरपहिरेपटचीर ॥ ५ ॥ रुमुकझुमुकपगनूपुरबाजे, गजगतिचालचलेरघुवीर ॥ ६ ॥ सोहोतरामबामदिशिसीता, दहिनेबिराजैलक्ष्मणवीर ॥ ७ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, सेवतहैंनारदमुनिधीर ॥ ८ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, निसदिनगावैगुणगंभीर ॥ ९ ॥ २ ॥

जेवंसीबटजैफूलना, भजोवृंदावनजयजमुना ॥ टेक ॥ कृष्णचरणकोध्यानधरतहैं, छूटगईमनकीभ्रमना ॥

॥ १ ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, गोकुलमेंझूलेपलना ॥ २ ॥ मोरमुकुटपीतांबरसोहै, मुरलीलेमुखपरधरना ॥ ३ ॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बिचमेंरासरच्योललना ॥ ४ ॥ जमुनाकेनीरतिरधेनुचरावे, बंसीकिटेरसुनावैललना ॥ ५ ॥ पैठिपतालकालीनागनाथे, फनपरनिरतकरतललना ॥ ६ ॥ इंद्रकोपकियोव्रजऊपर, नखपरगिरिवरधारेललना ॥ ७ ॥ केसीमारेकंसपछारे, जमुनामेंमारिबहायेललना ॥ ८ ॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, उनकेबंसबढायोललना ॥ ९ ॥ नारदमुनिजाकोध्यानधरतहै, सेवाकुंजमेंकियोरमना ॥ ॥ १० ॥ जलडूबतगजराजउबारे, चक्रसुदरसनधारेललना ॥ ११ ॥ शिवरीकेबोरसुदामाकेतांदुल, रुचिरुचिभोगलगायेललना ॥ १२ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, हरिकेचरणपरचितधरना ॥ १३ ॥ ३ ॥

जैजैजसोदानंदनकी, २ जगवंदनकी ॥ टेक ॥ मालविसालमालमोतियनकी, खौरबिराजैचंदनकी ॥ १ ॥ पैठिपतालकालीनागनाथे, फनपरनिरतकरावनकी ॥२॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, हाथलकुटियाचंदनकी ॥ ३ ॥ इंदरकोपकियेव्रजऊपर, नखपरगिरवरधारनकी ॥ ४ ॥ केसीमारेकंसपछारे, असुरनकेदलभंजनकी ॥ ५ ॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, रक्षाकरिसबसंतनकी ॥ ६ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजै, भक्तव

त्सलभवभंजनकी ॥ ७ ॥ घंटातालपखावजबाजै, ग हरधुनसबसंतनकी ॥ ८ ॥ आपनजायद्वारकाछाये, पल पललहरतरंगनकी ॥ ९ ॥ आसपासरतनागरसागर, गोमतिकरतकिलोलनकी ॥ १० ॥ चंद्रसखीभजुबाल कृष्णछबि, चरणकमलरजबंदनकी ॥ ११ ॥ ४ ॥

बलिहारीलालतेरेआवनकी, मनभावनकी ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगसखामनभावनकी ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसोहावनकी ॥ २ ॥ पीतांबरकीकछनीकाछे, धनुषबाणकरधारण की ॥ ३ ॥ रुमकझुमकपगनूपुरबाजै, ठुमकचालमन भावनकी ॥ ४ ॥ सरज्यूकेनीरतीरखेलरच्योहै, चपल तुरंगनचावनकी ॥ ५ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादि क, नारदध्यानलगावनकी ॥ ६ ॥ मातकौसल्याकर तआरती, आनंदउरनसमावनकी ॥ ७ ॥ तुलसीदास हरिरूपनिहारे, चरणकमलचितलावनकी ॥ ८ ॥ ५ ॥

बलिहारीलालतेरेआवनकी, २ मनभावनकी ॥ टेक ॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचमेंरासरमावनकी ॥ १ ॥ चुनिचुनिकलियांमैहारबनाऊं, जदुवरउरपहिरावनकी ॥ २ ॥ मोरमुकुटपीतांबरसोहै, मधुरमधुरमुसकाव नकी ॥ ३ ॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, मधुरीसिबेनु बजावनकी ॥ ४ ॥ पैठिपतालकालिनागनाथे, फनपर निरतकरावनकी ॥ ५ ॥ इन्दरकोपचढेव्रजऊपर, नखपर

गिरिवरधारणकी ॥६॥ केसपकरिहरिकंसपछारे, जमुना मैं मारबहावनकी ॥ ७ ॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, उनहुसेबंसबढावनकी ॥ ८ ॥ वृंदावनमैंरासरच्योहै, सहस्त्रगोपीएककान्हाकी ॥ ९ ॥ जलडूबतगजराजउबारे, चक्रसुदरसनधारणकी ॥ १० ॥ दुरयोधनघरमेवात्यागे, सागविदुरघरपावनकी ॥ ११ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, हरिकेचरणचितलावनकी ॥ १२ ॥ ६ ॥

भजरेमनसियारघुनंदनको २ जगबंदनको ॥ टेक ॥ दसरथनंदनआनंदकंदन, सूर्यबंसकुलमंडनको ॥ १ ॥ जानकिनायकसबसुखदायक, संतनकेमनरंजनको ॥ २ ॥ विश्वामित्रकोजज्ञसुफलकरि, गौतमनारिउधारणको ॥ ३ ॥ जनकस्वयंवरपावनकीनो, कठिणधनुषकेभंजनको ॥ ४ ॥ पंचवटीपावनराघोकरि, खरदूषणसंहारनको ॥ ५ ॥ जांबवंतसुग्रीवनीलनल, चरणकमलरजवंदनको ॥ ६ ॥ सागरसेतुनामकोबांधे, कपिदलपारउतारनको ॥ ७ ॥ रावणकेदसमस्तकछेदे, वीसभुजाउखारनको ॥ ८ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, काटनजमकेफंदनको ॥ ९ ॥ ७ ॥

श्रीमन्नारायणनारायणनारायण, सुमिरसुमिरभयेपारायण ॥ टेक ॥ जाकोनामलेतअघनासे, कामक्रोधभयजारायण ॥ १ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, सुमिरसुमिरभयेपारायण ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकरा

कृतकुंडल, शंखचक्रगदाधारायण ॥ ३ ॥ सिवरीकेफल रुचिरुचिपाये, भक्तसुदामातारायण ॥ ४ ॥ अजामेलसुतहेतुपुकारे, नामलेतभयेपारायण ॥ ५ ॥ दुर्योधनघरमेवात्यागे, सागविदुरघरपारायण ॥ ६ ॥ जलडूबतगजराजउबारे, चक्रसुदरसनधारायण ॥७॥ डूबतसेब्रजराखलियोहै, करपरगिरिवरधारायण ॥ ८ ॥ चारवेदऔरभगवद्गीता, वालमीकजिकेरामायण ॥९॥ माधोदासआसचरणनकी, भवसागरभयेपारायण ॥ १० ॥ ८ ॥

कन्हराहमारघरआवोगे, पनघटपरमुरलीवजावोगे ॥ टेक ॥ साधुपहिलिप्रीतिनजानोगे, हरिकोकहांपहिचानोगे ॥ १ ॥ साधुगौरस्यामसुखभासीहै, प्रभुपूरणब्रह्म अविनाशीहै ॥२॥ साधुगिरिवरधेनुचरावोगे, सवगोपीग्वालनचावोगे ॥३॥ साधुराहघाटमोहिरोकोगे, कान्हदहीमेरोलुटोगे ॥४॥ साधुमोरमुकुटवनमालाहै, अच्छेसुंदरनयनविसालाहै ॥ ५ ॥ साधुपीतवसनकरमुरलीहै, बाजुबंधमुद्रिकापौंचीहै ॥६॥ साधु औरकोजपतपकासीहै, हमतोवृंदावनवासीहै ॥ ७ ॥ साधुरामकृष्णगुणगावोगे, भवसागरफेरनआवोगे ॥ ८ ॥ राघुदासआनंदपदपावोगे, हरिचरणेनेहलगावोगे ॥ ९ ॥ ९ ॥

श्रीराजद्वारे वधैयाबाजै ॥ टेक ॥ मिथिलापुरआयेरघुनंदन, घरघरयुवतिनआरतिसाजे ॥ १ ॥ नखसिखसुंदरअंगमनोहर, रतिपतिकोटिकोटिछबिराजै ॥२॥

जुगलप्रियाछबिकहांलगिबरणो, यहमूरतिमेरे हृदय बिराजै ॥ ३ ॥ १० ॥

जयजदुवरस्वामी, हरिअंतरजामी, आरतीउतारौ, प्रभुअंतरजामी ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, दुष्ट नक्षयकारी ॥ पृथ्वीभारउतारण, नरदेहीधारी ॥ १ ॥ मथुरासेहरिगोकुलआये, कंसखबरपाई ॥ मौतआप नीजानि, पुतनापहुचाई ॥२॥ यमलाअर्जुनवृक्षउपारे, सोभाअतिप्यारी ॥ नंदयसोदानिरखै, आनंदउरभा री ॥ ३ ॥ रासरच्योवृंदावनमोहन, सोभाअतिभारी॥ मुरलीअधरबजावै, मोहैवृजनारी ॥ ४ ॥ रुमकझुम कपगनूपुरबाजै, ठुमकचालभावै ॥ कटिपीतांबरराजै, सोभाअतिपावै ॥ ५ ॥ सुन्दरलोलकपोलबिराजै, कंठेवनमाला ॥ भृगुलक्षनउरराजै, संगलियेवृजबा ला ॥ ६ ॥ मोरमुकुटमकराकृतकुंडल, लीलावपु धारी ॥ सूरदासहरिसरणे, पलपलबलिहारी ॥ ७ ॥ ११ ॥

जयश्रीजदुनाथा, जयलाडलीनाथा, स्यामसुंदररा धामोहन, मेटोजमत्रासा ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलि योहै, गोकुलपगधारी ॥ झूलतहैपलनामें, पूतनाप्राण हारी ॥ १ ॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, बंसीअति बाजी ॥ गौवनकेसंगबिहरे, मोरमुकुटधारी ॥ २ ॥ पै ठिपतालकालिनागनाथे, फनपरनृतधारी ॥ तताथे ईतताथेई उचरै, नटवरवपुधारी ॥ ३ ॥ इंद्रकोपचढेह

जऊपर, वरषाअतिभारी ॥ नखपरगिरिवरधारे, गौव नाहितकारी ॥ ४ ॥ नारदबेनुबजावे, नूपुरठुमकैया ॥ कंचनथारआरति, करतजसादामैया ॥ ५ ॥ दीनानाथदयाकरिबोले, बोलेहितकारी ॥ उनहरिहमहिबतावो, मोरमुकुटधारी ॥ ६ ॥ जगन्नाथबलभद्रसहोद्रा, सोभा अतिभारी ॥ सुरनरचँवरढुरावै, अद्भुतछबिन्यारी ॥ ॥ ७ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजे, सोभाअतिभारी ॥ सूरदासदरसनको, पलपलबलिहारी ॥ ८ ॥ १२ ॥

जयराधेरमनी, हरिराधेरमनी, दुःखहरणिसुखकरणी ॥ गोविंदवसकरणी ॥टेक॥ वृंदावनमेंरासरच्योहै, कोकीरसकेवरणी ॥ सबगोपियनकेमध्ये, राधेशशिवदनी ॥ १ ॥ वृंदावनकीकुंजगलिनमें; लीलासुखकरणी ॥ मोहननाचनचायो, जनकलिमलहरणी ॥ २ ॥ राधाहरिविज्ञाता, गोपुरनिजधानी ॥ इंद्रचंद्रब्रह्मादिक, सकतनगुणबरणी ॥ ३ ॥ सनकादिककेवचन सत्यकरि, प्रगटीबृजधानी ॥ लीलाअद्भुतकीन्ही, दुष्टनछलदलनी ॥ ४ ॥ राधाराधारटनकरतहै, बाधाभ्रम हरणी ॥ पंचसखिमिलिबरणी, राधेजगजननी ॥५॥ १३॥

॥ इति आरतिकेपीछेखड़ेगानेकीधुनसंपूर्ण ॥

॥ अथ गुरुवारकी धुन प्रारंभः ॥

प्रगटेसीतारामअवधपुरमें ॥ टेक ॥ राजादशरथगृहरामजन्मलियो, नौनिधिआइउनकेघरमें ॥ १ ॥

बाजबाजैइंदरगाजैं, जयजयकारभयोपुरमैं ॥ २ ॥ बर खतपुष्पदेवमुनिहरखैं, आनंदभयोतीनोपुरमैं ॥ ३ ॥ संगसखासरज्यूतटविहरे, धनुषबानधारेकरमैं ॥ ४ ॥ विश्वामित्रकोजज्ञसुफलकरी, खलमारेएकहिक्षणमैं ॥ ॥ ५ ॥ जनकस्वयंवरपावनकीन्हो, तोरोधनुषजनकपुरमैं ॥ ६ ॥ सीयविवाहिअवधपुरआये, आनंदभयो नारीनरमैं ॥ ७ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतमंडल, जन तुलसीधारेउरमैं ॥ ८ ॥ १ ॥

अच्छेरामलला, तुमरेवदनपरअनंतकला ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटकुंडलवनमाला, भालतिलकसोहैनयनविसाला ॥१॥ मुखमेंवीरानयनविसाला, जितचितवतउतकरतनिहाला ॥ २ ॥ भरतशत्रुहनलक्ष्मणवीर, खेलरच्योहैसरज्युकितीर॥३॥ छोटिमोटिनदियागहिरगंभीर ॥ कल्पवृक्षतरठढेरघुवीर ॥ ४ ॥ छोटिसिधनुयाराम छोटेछोटेतीर ॥ खेलतहैसरज्यूकेतीर ॥ ५ ॥ जहाँजहाँपरेसंतनपरभीर, हरखिहरखिआवै सिया रघुवीर ॥ ॥ ६ ॥ प्रागदासठढेसरज्युकेतीर, बीचमैमिलिगयेसियारघुवीर ॥ ७ ॥ २ ॥

श्रीरामललामोहिभावेहो ॥ टेक ॥ चारौभैयाराम सुंदरस्याम, मैयागोदखेलावेहो ॥ १ ॥ कनककटोरातेलफुलेल, मरदनअधिकसुहावेहो ॥ २ ॥ पीतझिंगुलिया सोहैमैयाहाथ, हरखिनिरखिपहिरावेहो ॥ ३ ॥ सिरसो

हैजरकसकीपाग, स्रवनकुंडलछुकावेहो ॥ ४ ॥ गलेसोहे मोतियनकीमाला, बाजूअधिकसुहावेहो ॥ ५ ॥ लाल खडाऊसोहै, हरिपावनअवधनगरफिरिआवेहो ॥६॥ छो टिसिधनुयारामछोटेछोटेतीर, खेलेसखासंगसरजूके तीर ॥७॥ चारौभैयारामचतुरसुजान, लक्ष्मणचँवरढुरा वेहो ॥ ८ ॥ प्रागदासजीकेसियारघुवीर, नयननेहल गावेहो ॥ ९ ॥ ३ ॥

भरतराममोहिभावेहो, सुभगचालसुंदरअतिप्यारी ॥ टेक ॥ राजादशरथकेचारपुत्रहैं, सोभावरणि नजावेहो ॥ १ ॥ सरज्युकेतीरखेलरच्योहै, सुंदरवा नचलावेहो ॥ २ ॥ सरज्युनहाईचलेरघुनंदन, चपल तुरंगनचावेहो ॥ ३ ॥ अवधपुरीकीवंधुअटारी, निर खिपरमपदपावेहो ॥ ४ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुख सागर, चारवेदजसगावेहो ॥ ५ ॥ ४ ॥

रामललाकेसिरटोपी, अच्छिसोहै ॥ टेक ॥ छोटल रकन्नसंगखेलतडोलत, हाथलियेघृतरोटी ॥ १ ॥ हाथ मेललितपहुंचियासोहै, काननकुंडलमोती ॥ २ ॥ पा यललितपैजनियासोहै, गलेबिचउज्वलमोती ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरथशत्रुहन, चारौभैयनकीजोटी ॥ ४॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, मातकौसल्याहसिलो टी ॥ ५ ॥ ५ ॥

हंसिहंसिमनमोहै रघुवीर ॥ टेक ॥ मैसरज्यूज

लभरनजातरहि, भरनबिसरगईनीर ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, गलेबीचमुक्ताहीर ॥ २ ॥ संगसखासरजूतटविहरत, रामलखनदोऊवीर ॥ ३ ॥ सारंगधनुषबानकरराजै, पहिरेपीतांबरचीर ॥ ४ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, हरतसंतनकीपीर ॥ ५ ॥ ६ ॥

अंखियामैलागिरहेरघुवीर ॥ टेक ॥ निशिवासरमनलागिरहतहै, नयनधरतनहिधीर ॥ १ ॥ रुनुकझुनकपगनूपुरबाजै, चालचलेरणधीर ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, गलेबिचमुक्ताहीर ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगसखनकीभीर ॥ ४ ॥ पीतांबरऔरधनुषबिराजे, सोहोतस्यामसरीर ॥ ५ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, हरतसंतनकीपीर ॥ ६ ॥ ७ ॥

जयरघुवरस्वामी, हरिअन्तरजामी ॥ आरतिउतारौ, प्रभुअंतरजामी ॥ टेक ॥ भालविशाल तिलकशिरसोहै, क्रीटमुकुटधारी ॥ श्रवणकुंडलझलके, अदभुतछविन्यारी ॥ १ ॥ लोचनललितबड़ेअतिसुंदर, कंठेवनमाला ॥ भृगुलक्षनउरराजै, दशरथसुतलाला ॥ २ ॥ रत्नसिंहासनआपविराजे, हरिरघुकुलकेतु ॥ अधमओधारणनाथ, भवसागरसेतु ॥ ३ ॥ जनकसुतासियजनकनंदनी, सोहतबायेअंगा ॥ सनमुखपवनकुमार, लक्ष्मणदायेअंगा ॥ ४ ॥ पीतवसनकरधनुषविराजै, हरिब्रह्मविधिसोहै ॥ सुंदररूपनिहारी, कोटिम

दनमोहै ॥ ५ ॥ चरणकमलकोमलअतिसुंदर, छबिव रणीनहिजाय ॥ मुखमकरंदमधूप, मुनिमनरहैलोभा य ॥ ६ ॥ सारदशेषविमलयसगावै, सनकादिकध्या वै ॥ सोइचरणनउरराखि, शिवनिसदिनध्यावै ॥ ७ ॥ आगमनिगमपुराणबखाने, अतिदुर्लभनरदेहा ॥ तुल सीभजरघुनाथ, जन्मसुफलकरिलेहु ॥ ८ ॥ ८ ॥

जयश्रीरघुनाथा, जयजानकीमाता ॥ दोकरजोरी विनवौ, प्रभुमोरिसुनोबाता ॥ टेक ॥ तुमरघुनाथहमा रेप्राणपितामाता ॥ तुमहोसजनसंघाति, भक्तिमुक्ति दाता ॥ १ ॥ चोरासीप्रभुबंधछुडायो, मेटयोजमत्रा सा ॥ निसदिनप्रभुमोहिराखौ, अपनेसंगसाथा ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगचारौभैया ॥ जगमग ज्योतिबिराजे, सोभाअतिरैया ॥ ३ ॥ हनुमतनाद बजावै, नूपुरढमकैया ॥ सुवर्णथालआरति, करतको शल्यामैया ॥ ४ ॥ रामकबिरकृपाकरिबोले, बोलेउप कारी ॥ ओहरिहमहिबतावो, सीयरामधनुषधारी ॥ ५ ॥ ब्रह्माविष्णुमहादेव, सबकोसुखदाता ॥ धन्यतु ह्मारोदरसन, करिहोप्रतिपाला ॥ ६ ॥ क्रीटमुकुटमक राकृतकुंडल, सोभाअतिभारी ॥ मणिरामदरसनको, पलपलबलिहारी ॥ ७ ॥ ९ ॥

जयश्रीरघुनंदा, जयजानकिकंदा ॥ आरतिउतारौ जयश्रीरघुनंदा ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटश्रुतिकुंडलसोहै, च

कावलिराजे ॥ केसरतिलकबिराजै, लखिदामिनिला
जै ॥ १ ॥ भृकुटिकोटिकामकिछबिनिंदति, दृगअंजन
सोहै ॥ चितवनललितउदार, देखतमनमोहै ॥ २ ॥
नाकबुलाकलालअतिसोहै, सुंदरमुसक्यानी ॥ दसन
अधरछबिदेखी, मोहैमुनिज्ञानी ॥ ३ ॥ कंठाकंठजुगल
कुंजरमणी, कौस्तुभमणिभ्राजै ॥ पदिकहारवनमाल,
सुंदरछबिछाजै ॥ ४ ॥ बाहुबिसालविभूषणपहिरे, कर
सरधनुसोहै ॥ सुंदररूपनिहारि, कोटिमदनमोहै ॥ ५ ॥
पीतवसनकटिकिंकिनिराजे, पटकीछबिभारी ॥ दुहु
छोरनमणिमोती, लागतअतिप्यारी ॥ ६ ॥ सुभगघुंघुर
पायनमेराजै, नूपुरसुखकारी ॥ चरणकमलमृदुसुंदर,
आरतभयहारी ॥७ ॥ संगसखासरज्यूतट बिहरे, हनुमं
तसंगलीन्है ॥ भरतलखनरिपुसूदन, संगसखालीन्है ॥
॥ ८ ॥ पुष्पसिंहासनपरममनोहर, राजतसुखकारी ॥ज
नकसुतावायेअंगसोहोत, सीतासुकुमारी ॥ ९ ॥ अनुच
रचहुदिसिराजै, सोभाअतिभारी ॥ तुलसीदासछबिदे
खि, मगनभयेपलपलबलिहारी ॥ १० ॥ १० ॥

जयनटवरवेषा, हरिनटवरवेषा ॥ आरतिउतारो, जग
वरजगदीसा ॥ टेक ॥ मोरमुकुट मस्तकपरराजै, कंठेव
नमाला ॥ श्रवणनकुंडलझलके, संगलियेब्रजबाला
॥ १ ॥ रासरच्यो नारायणस्वामी, वृंदावनराधे ॥ ता
लपखाउजबाजै, मधुरेसुरगावै ॥ २ ॥ ताथेइताथेइश

ब्दउचारे, तालनूपुरबाजै ॥ सुंदरभृकुटिविलोकी, कोटिमदनलाजै ॥३॥ घुमकघुमक घुंघुरघुमके, घुमकघुमकघुमकै ॥ नाचतराधामोहन, पायनठुमठुमकै ॥ ४ ॥ उंचेसुरसैंशब्दउचारें, मधुरेसुरगावे ॥ राधामोहनजोरी, मनमैंमोहिभावै ॥ ५ ॥ निरतकरेगोपाललालजी, सोभततथेइया ॥ केशवहरिमुखनिरखै, केवलनिरछैया ॥ ६ ॥ ११ ॥ इति गुरुवारकीधुनसंपूर्ण ॥

॥ अथ शुक्रवारकी धुन प्रारंभः ॥

दरसनद्योवेंकट रैया, तेरे दरसकों मेरो मनललचै ॥ टेक ॥ त्रिपतिमेंसीतारामजीविराजे, चौकीहै लक्ष्मण रैया ॥ १ ॥ शेषाचलपर आप बिराजे, चौकीहै हनुमत रैया ॥२॥ जय विजय दोउपौरिया बिराजे, विजय घंट धुनि होरैया ॥३॥ आठ पहर फूलनके जामा, ऊपरचँवरढुरावे रैया॥४॥संख चक्र गदा पद्म बिराजे, क्रीट मुकुट कुंडल रैया ॥५॥ भोगमढीमें भोगलगतहै, वेदनकीधुन होरैया ॥६॥ छप्पन भोग छतिसों विंजन, ऊपरतुलसीरमिरैया ॥ ७ ॥ आस पास गिरिवरकीसोभा, बिचमैकोयल झुकरैया ॥ ८ ॥ जन हाथीराम वेंकटजिके सरणे, आवागमन निवारो रैया ॥ ९ ॥ १ ॥

जेजेबोलोसाधुलक्ष्मणबालाकी ॥ बालाकीप्रतिपालाकी, दशरथसुतनंदलालाकी ॥ टेक ॥ दक्षिणदेससवालखपरवत, जगमगजोतिदिवालाकी ॥ १ ॥ त्रिपती

मै सीताराम बिराजै, चौकी लक्ष्मणबालाकी ॥ २ ॥
शेषाचलपर आपबिराजै, चौकीहनुमतलालाकी ॥ ३ ॥
जयविजयदोउपौरियाबिराजै, गहिरीचोप नगाराकी
॥ ४ ॥ आठपहर फूलनको जामा, ऊपर मौज दुसाला
की ॥ ५ ॥ बालाजिके रथ पर कनक सिंहासन, मुकट
बन्योमोति मालाकी ॥ ६ ॥ देस देसके जात्री आये,
मार परे मृग छालाकी ॥ ७ ॥ आसानंद गरीब तुह्मारो,
पति राखोकंठि मालाकी ॥ ८ ॥ २ ॥

तेरे बाजै अनहद बाजा, लक्ष्मण महाराजा ॥ टेक ॥
त्रिपतिमै सीताराम बिराजै, शेष नागकी छाया ॥
शेषाचल पर आप बिराजै, तीन लोकके राजा ॥ १ ॥
क्रीट मुकुट मकराकृतकुंडल, गले बैजयन्ती माला ॥
कमलनयनकरुणाकेसागर, बड़ेबड़े भुजाविसाला ॥
॥ २ ॥ ब्रह्माजाको वेद सुनावै, सुरनरध्यानलगाया ॥शे
पसहस्त्रमुखरटत निरंतर, सोजाको पारनपाया ॥ ३ ॥
सप्तद्वीपपानीकेऊपर, लीलाअजबबनाया ॥ बिना खंभ
असमानखडाहै, नौलखताराछाया ॥ ४ ॥ भक्तवत्सल
संतनके हेतु, हरिहै सुखके दाता ॥ चरणदास चरण
नकी महिमा, चरण कमल चित्त लाया ॥ ५ ॥ ३ ॥

जैजैलक्ष्मणबालजती, सुरजबंशउजागरनागर॥टेक॥
जयअनंतजयजयभुवनेश्वर, जयजयफणिपतालपति
॥ १ ॥ चौदहभुवनसीसपरधारे, भारनलागेएकरती

॥ २ ॥ दशरथपुत्रसुमित्रानंदन, कुंवरिउरमिलाप्राण पती ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, कटिपितांव रबानहती ॥ ४ ॥ सारंगधनुषबानकरराजे, पीतांवरसे कमरकसी ॥ ५ ॥ पचरंगबानरामलक्ष्मणके, देखिअ सुरनछातिफटी ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदि ब्रह्मादिक, पारनपावेजतीसती ॥ ७ ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी, रामलक्षमणअरुसियसती ॥ ८ ॥ ४ ॥

गारियांमतदेऊं, तिलंगारंगा ॥ टेक ॥ तुमहो तिलंगारंगा ॥ हमपरदेसिचंगा, तुमरोहमारोसतसंगा ॥ १ ॥ त्रिपतिमे सीतारामजी विराजे, लक्ष्मीविराजे दुये अंगा ॥ २ ॥ शेषाचलपर आपबिराजे, सनमुखहैबहु रंगा ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, रूपधरेबहु रंगा ॥ ४ ॥ अष्टपहर फूलनकोजामा, पीतांबरपचरंगा ॥ ॥ ५ ॥ जयविजयदोऊ पौरियाबिराजै, ढिगपुसकरणी गंगा ॥ ६ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजे, रूपवन्योबहु रंगा ॥ ७ ॥ आसपास गिरिवरकीसोभा, विचमैकोय लहैचंगा ॥ ८ ॥ जनहर्थीराम वैंकटाजिके सरणे, नित उठि होयसतसंगा ॥ ९ ॥ ५ ॥

जे वैंकट संकट हरणा, चरणकमलदरसनमोहि दीजै ॥ टेक ॥ भवसागरमेबहे जातहूं, बांहमोरी झटपटधरना ॥ १ ॥ नादियागहिरी नावपुरानी, सेवक जानिदयाकरना ॥ २ ॥ भावनजानों भक्तिनजानों, एकतुम्हारो हैशरणा ॥ ३ ॥ जपतपनेमधर्मनहिजानूं,

जानौंएकउदरभरना ॥ ४ ॥ आठपहरधंधेमेंभूल्यो,तु
म्हरोनाहिंसुमरणएकक्षणा ॥ ५ ॥ जनहथिरामवेंकटजि
केशरणे, निसदिननामयही रटना ॥ ६ ॥ ६ ॥

सीतारामसीतारामसीताराम, मेरेमनबसिगयेसी
ताराम ॥ टेक ॥ गौरवर्णसियाजनकनंदनी, रघुबरहैंघ
नसुंदरस्याम ॥ १ ॥ दशरथपुत्रअयोध्यानायक, ति
नपरचँवरढुरावैहनुमान ॥ २ ॥ विश्वामित्रकोयज्ञसु
फलकियो, गौतमनारिपठायेनिजधाम ॥ ३ ॥ जटा
मुकुटमुनिवेषधर्योहै, कठिनधनुषलियेसारंगबान
॥ ४ ॥ सरज्यूकेतीरेअयोध्यानगरी, जहाँबिहरेसि
यालक्ष्मणराम ॥ ५ ॥ तुमजिनबिसरिजावमेरेमन
से, तुमविनुनिकसिजायमेरेप्राण ॥ ६ ॥ आसानंद
कहैकरजोरी, चोसठघडीभजआठोजाम ॥ ७ ॥ ७ ॥

जयवेंकटरवना, हरेवेंकटरवना, आरतिउतारों, सं
तनहितकरना ॥ टेक ॥ सुंदरशैलसिखरशेषाचल, मु
निजनमनहरना ॥ अतिउत्तमअस्थाना, अगमनि
गमभरना ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटकरधनुषविराजे, कुंड
लछबिरचना ॥ सुंदरनयनविसाल, चितवनमनहर
णा ॥ २ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजे, वनमालाधरना ॥
कटिकिंकिनिअतिराजै, अरुणकमलचरणा ॥ ३ ॥
दीनानाथदयालदयानिधि, दीननहितकरना ॥ अग्र
दासचरणनपर, पलपलचितधरना ॥ ४ ॥ ८ ॥

रघुवरमहाराजामहाराजा, तुमसवदेवनकेराजा ॥टेक॥ अवधपुरीमैंजन्मलियोहै, कल्पवृक्षकीछाया ॥ रतनसिंहासनआपबिराजैं, दशरथसुतलाला ॥ १॥ शेषलियेकरछत्रहि, भरतलियेचंवरढुराया ॥ हनुमानकरजोरेठाडे, ब्रह्मावेदसुनाया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसुहाया ॥ सारंगधनुषवानकरराजैं, पीतांबरछबिछाया ॥ ३ ॥ पायनललितपैंजनियावाजे, सोभावरणिनजाया ॥ मातुकोसल्याकरतआरती, सखियनमंगलगाया ॥ ४ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतिजसगाया ॥ तुलसीदासआसारघुवरकी, चरणकमलचितलाया ॥ ५ ॥ ९॥

टीकममहाराज, वांकेमहाराज, तेरोवेदविमलजसगावै ॥टेक॥ तृनसुमेरुमेरुरजकेसम, रंकहुंराजवनावै ॥ अविनासीअरुअंतरजामी, रविशशिदेवलजावै ॥ १ ॥ सुरपतिशेषविमलजसगावैं, सादरचँवरढुराया ॥ निसिवासरशिवभृकुटिविलोके, ब्रह्मावेदसुनाया ॥ २ ॥ नामखंभतिहुंलोकखडेहै, अंडकटाहकहावै ॥ गिनिगिनिमुनिजनपारनपावै, कुब्जसकालवजावै ॥ ३ ॥ नामकलाअतिकोटिबिराजै, सुरनरध्यानलगावै ॥ इंद्रकुबेरनारदसनकादिक, हरिजनहरिजसगावैं ॥४॥ अवधरधरणितुह्मारीकृपानिधि, कुदरतजानीनजावै ॥ सरजुदासकरुणाकेसागर, पंछिमंगलगावै ॥ ५ ॥ १० ॥

दाऊमहाराजा, तेरेबाजेनौबतबाजा ॥ टेक ॥ मथुरा
मैहरिजन्मलियोहै, गौवरधनकीछाया ॥ बृजमंडलमै
आपबिराजै, गोलोककेराजा ॥ १ ॥ हलमुसलहथिया
रविराजे, गलेबिराजेपटुका ॥ गलेबिचहीराअधिकसो
हावै, सिरपरकलंगीचीरा ॥ २ ॥ गौलोकतिनलोकउप
रहै, कृष्णचन्द्रकीमाया ॥ शेषसहस्रमुखरटतनिरंतर,
सोजाकोपारनपाया ॥ ३ ॥ सर्वतीर्थमथुरामैआये, चा
रधामकीमाया ॥ जमुनाकेनिकटकदमकीछैया, तहां
कियोविश्रामा ॥ ४ ॥ सनकादिकजाकिविनतिकरतहै,
नारदध्यानलगाया ॥ इन्द्रजाकेकरतआरती, ब्रह्मावेद
सुनाया ॥ ५ ॥ भक्तवत्सलसंतनकेहेतु, हरिहैसुखकेदा
ता ॥ श्रीभटदानईहैप्रभुदीजे, चरणनचित्तलगाया
॥ ६ ॥ ११ ॥ इतिशुक्रवारकी धुन संपूर्ण ॥

॥ अथ शनिवारकी धुन प्रारंभः ॥

जपुजैजैजैनरसिंहसहि ॥ टेक ॥ खंभफोरिहिरनाकु
समारे, राखिलियोप्रहलादसही ॥ १ ॥ यहीरामजिनेराव
णमाऱ्यो,भक्तविभीषणलंकदई ॥ २ ॥ यहीकृष्णजिनेकं
सपछाऱ्यो, उग्रसेनकोराजदई ॥३॥ उदरफारिझकझोर
कियोहै, तीनलोकजाकिगरजभई ॥४॥ शिवसनकादि
आदिब्रह्मादिक, निकटनआवैलक्ष्मीसही ॥५॥ तुलसी
दासहरिरूपनिहारे, भक्तवत्सलकीटेकरही ॥ ६ ॥ १ ॥
नरहरियाप्रभुगिरिधरिया; प्रहलादउबारेनरहरिया

॥ टेक ॥ रामकृष्णदोऊनामवडेहैं, तारनतरणअभय करिया ॥१॥ वावनरूपछलेवलिराजा, तीनपांववसुधा करिया ॥ २ ॥ खंभफोरिहिरनाकुसमारे, जनप्रहला दअभयकरिया ॥ ३ ॥ रावणकेदसमस्तकछेदे, वीसभु जाखंडखंडकरिया ॥ ४ ॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, करमुरलीबनवनफिरिया ॥ ५ ॥ केसीमारेकंसपछारे, उग्रसेनपरछत्रधरिया ॥ ६ ॥ कहतकवीरसुनोभाई साधो, अधमउद्धारणनरहरिया ॥ ७ ॥ २ ॥

रामरतनधनपायामाया ॥ टेक ॥ वस्तुअमोलक दियोहैगुरूने, माथेतिलककराया ॥ १ ॥ रामनाम कीभइहैविभूती, जगमेसाहकहाया ॥ २ ॥ देतलेत औरखावतखरचत, दिनदिनहोतसवाया ॥ ३ ॥ राजन दंडैचोरनलूटे, धरनीधऱ्योनजाया ॥४॥ लेप्रहलादखं भसेंबांधे, अवतोरकोनसहाया ॥ ५ ॥ कहांतेररामव तावोमोही, हाथखड्गझटकाया ॥ ६ ॥ तोमैमोमैखड गखंभमै, व्यापरहैरघुराया ॥ ७ ॥ खंभफोरिहिरना कुसमारे, नामदेवके रामसहाया ॥ ८ ॥ ३ ॥

श्रीरामजानेगुदरियागलतान ॥ टेक ॥ पांचतत्व कीबनीहैगुदरी, पडीरहतमेदान ॥ १ ॥ सुरतनिरतको टोपबन्योहै, धागाणदनिरवान ॥ २ ॥ नादेविंदेहोडप डीहै, अनहदचढिहैकमान ॥ ३ ॥ हमरोरहनोरूखवृ क्षतरे, अलखपुरुषकोध्यान ॥ ४ ॥ प्रेमकोवदरावरष

नलागे, भीजतसंतसुजान ॥ ५ ॥ कहतकबीरमेरोअलखाजोगी, मिटगयो आवनजान ॥ ६ ॥ ४ ॥

मुझेनादिलसेभूल, प्यारेराममुझे ॥टेक॥ स्याहीगईसुफेदीआई, चलनाहैबडिदूर ॥ १ ॥ डारडारमैपातपातमै, तुमहिरंगीलोफूल ॥ २ ॥ हैहजूरहरिनाहिनदूरे, दिलकीदुरमतिभूल ॥ ३ ॥ गोपीचंदभरथरीराजा, सिरमै डारीधूर ॥ ४ ॥ सेख फरीद कुआमै लटके, होगये चकनाचूर ॥ ५ ॥ कहतकबीर सुनो भाइ साधो ॥ हरिचरणनमत भूल ॥ ६ ॥ ५ ॥

बाबाझुठी माया, दुरमतिमै दीनखोया॥टेक॥ स्यामसुन्दरसुमिरेनाहि पलमै, अंतकालमैरोया ॥ १ ॥ पहिरपिताँबरपुष्प विछाया, हीरामोती पोया ॥ २ ॥ हरिभक्ति बिनमुक्तिन होगी, कहाभयेतनधोया ॥ ३ ॥ हाथीघोडामालखजाना, नयननभरभरजोया ॥४॥ अबतोमूरखभयोबिराना, लंबीचादरसोया ॥ ५ ॥ यह संसारजहरकी बारी, झुठी साची गाया ॥ ६ ॥ गयबिरामसंतनके सरणे, तनका धोखा खोया ॥ ७ ॥ ६ ॥

हमचाकररघुनाथ कुंवरके ॥ टेक ॥ माथे तिलकमनोहरबाना, द्वादस तिलक देखि जमटरके ॥१॥ द्वारीबंद सदा प्रभुतेरे, भयो गुलामरावरेघरके ॥ २ ॥ गुरुकेबचनसत्यकरिराखो, सुमिरणकरतसियारघुवरके ॥ ३ ॥ तुमहिजाचिजाचौनहिऔरहि, नहिभरोसकोउनारी

नरके ॥ ४ ॥ अग्रदासयहपटालिखाये, दसकतदश रथसुतनिज करके ॥ ५ ॥ ७ ॥

कबमिलिहैंरघुनाथहमारे ॥ टेक ॥ जैसेमिलेप्रभुब लिराजाको, चारिमासहरिद्वारेठाडे ॥ १ ॥ जैसेमि लेप्रभुप्रहलादभक्तको, खंभफोरिहिरनाकुसमारे ॥ २ ॥ जैसेमिलेप्रभुद्रुपदसुताको, खैंचतचीरद्दुसासनहारे ॥ ॥ ३ ॥ जैसे मिलेप्रभुजनकसुताको, तोयोंधनुषभूप सबहारे ॥ ४ ॥ तुलसीदास आसपतितनको, मोस मपतितअनेकउधारे ॥ ५ ॥ ८ ॥

अपनोजनप्रहलादउबार्यो ॥ टेक ॥ जलहूसेराखि अगिनिहुंसेराख्यो, गिरतगिरीतेभक्तउवार्‍यो ॥१॥ ल क्ष्मीप्रभुकेनिकटनआवे, ऐसोरूपप्रभुकबहुनहिधार्‍यो ॥ २ ॥ अपनेभक्तकोराजतिलकदियो, हस्तकमलमस्त कपरधार्यो ॥३॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, अस्तु तिकरतसकलजगतार्‍यो ॥ ४ ॥ लैप्रहलादखंभसेबांधे, अबकोहैतोहिराखनहारो ॥ ५ ॥ खंभफोरिप्रगटेनरहरि या, हिरणाकुसनखउदरबिदार्यो ॥ ६ ॥ कौतुकदेखिद क्षुनिहरखे, गंधर्वगनगुनवेदउचार्यो ॥ ७ ॥ श्रीभटको प्रभुदियोअभयपद, भक्त हेतुदानवकुलतार्यो ॥८॥ ९ ॥

धायगोविंदगजेंद्रउबार्‍यो ॥टेक॥ खैंचतग्राहऔरग जअपनेको, बलिनभयोहरिनामउचार्यो ॥ १ ॥ फहरफ हरफहरातपीतांबर, चरणगवनकियोगरुड बिसार्यो ॥

॥ २ ॥ जवभरसूंढ रहिजलबाहिर, कमलपुष्पलैस्याम चढायो ॥ ३ ॥ काटेफंदचक्रधारासें, अघमोचनहरि नामकहायो ॥ ४ ॥ देवन दुंदुभीहर्षिबजाई, पुष्पवर खै जयनामउचार्यो ॥५॥ अग्रदास आस पतितनकी प्रभु, इंद्रद्वन बैकुंठ सिधार्यो ॥ ६ ॥ १० ॥

श्रीनरसिंहभक्तहितकारी, जनसुखकारी ॥ टेक ॥ हिरनाकुसप्रल्हादभक्तको, विविधभांतिदिन्होदुखभारी ॥ गिरिऊपरसेडारिदियोहै, हाहाकियोनगरनरनारी ॥ लैप्रल्हादखंभसोबांध्यो, निश्चरकोपकियोअतिभारी ॥ चौदहभुवन चराचरकम्पै, फारयोखंभशब्दभयभारी ॥ खम्भ फारि हिरनाकुसमारे, आपनजनप्रल्हाद उवारी ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, स्तुतिकरत निगमधूनिभारी ॥ वर्षत पुष्पदेवमुनिहरखै, जैजै शब्द कियोसुरभारी ॥ गोकुलदासतिहुलोकअनन्दभये, नर हरिचरणकमलबलिहारी ॥११॥ इति नृसिंहजीकी धुन॥

महावीरविक्रमबलभारी, अतुलितबलशाली ॥टेक॥ बालापन रविभक्षकियोहै, तिनहुँलोकभईअंधियारी ॥ १ ॥ देवनआईकरिबहुविनति, छोरदियोरविविपत निवारी ॥ २ ॥ जैजैशब्दकियोसुरभारी, हरखेसुरनरमुनिसबझारी ॥ ३ ॥ गोकुलदासतिहुलोक अनन्द भये, हनुमतचरण कमलबलिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥

इति महावीरजीकी धुन॥इति शनिवारकी धुनसं०॥

॥ अथ रविवारकी धुनप्रारंभः ॥

जैजैजैजगदीसहरे, पूरणकरतमनोरथमनको ॥टेक॥ पूरणब्रह्मकलौमैंप्रगटे, दरसनदेतनिहालकरे ॥ १॥ जगन्नाथबलभद्रसहोद्रा, चक्रसुदरसननिकटखडे ॥ २ ॥ महापरसाददेवकोदुरलभ, सोनरपावतउदरभरे ॥ ३ ॥ इंद्रदवनमारकंडेतीरथ, सेतगंगाअस्नानकरे ॥ ४ ॥ नीलचक्रपरध्वजाबिराजे, निकटमहोदधिनीरवहै ॥ ५ ॥ माधोदासआसचरणनकी, भवसागरसेपारकरे ॥ ६ ॥ १॥

श्रीगाइयेमहासुखपाइये ॥ श्रीजगन्नाथजगतगुरुगाइये ॥ टेक ॥ अठारहनारेचौकीलागे, जात्रीजाननपाइये॥ १ ॥ गूदरियाकोझारोमागे, नागालठ्ठबजाइये॥२॥ सिंहपौरपरसिंहबिराजे, पंडावेतलगाइये ॥ ३ ॥ इंद्रदवनमारकंडेतीरथ, सेतगंगानहाइये ॥ ४ ॥ हुकुमभयोबलभद्रबलीको, बांहपकरकरजाइये ॥ ५ ॥ नीलचक्रपरध्वजाबिराजे, निकटमहोदधिगाइये ॥ ६ ॥ गरुडखंभपरगरुडबिराजे, सनमुखदरसनपाइये ॥ ७ ॥ जगन्नाथबलभद्रसहोद्रा, इनतजिअंतनजाइये ॥ ८ ॥ धूपदीपनैवेद्यआरती, छप्पनभोगलगाइये ॥ ९ ॥ महाप्रसादकिअधिकमहिमा, बेदपुराणनगाइये ॥ १० ॥ थेइथेइनृत्यकरतसबसखियां, बाजाविमलबजाइये ॥ ११ ॥माधोदासआसचरणकी, आवागवननिवारिये ॥ १२॥२॥

भजुरघुवरस्यामजुगुलचरना ॥ टेक ॥ इतमेंअयो

ध्यानिरमलसरज्यू, उतमथुरासीतलजमुना ॥ १ ॥ इत मैदसरथकुंवरकहाये, उतमैकहायेनंदजीकेललना॥२॥ इतमैकौसल्यामैयागोदखिलावै, उतमैजसोदाझुला वैपलना ॥ ३ ॥ इतमैक्रीटमुकुटसिरराजै, उतमैमोरमु कुटधरना ॥ ४ ॥ इतमैधनुषबाणकरराजै, उतमुरलीमु खपरधरना ॥ ५ ॥ इतमैचरणअहिल्यातारी, उतकुब्जासंगकीयोरमना ॥ ६ ॥ इतमैजानकिबायेंविराजै, उतराधेसंगकियोरमना ॥ ७ ॥ इतमैसागरसिलाउतरा ये, उतगिरिवरनखपरधरना ॥ ८ ॥ रावणकेदसमस्त कछेदे, कंसकोमारबहायोजमना ॥ ९ ॥ इतमैराजबि भीषणदीन्हो, उग्रसेनकोकियोअपना ॥ १० ॥ इततु लसीउतसूरकहाये, जुगलचरणपरचितधरना॥११॥३॥

नमोनमोतुलसाँमहाराणी॥टेक ॥जाकेदरसपरसअ घनासे, महिमावेदपुराणबखानी ॥ १ ॥ साखापत्रमञ्ज रीकोमल, श्रीपतिचरणकमललपटानी ॥ २ ॥ तुमतुल साँपूरणतपकीन्हे, सालग्राममहापटरानी ॥ ३ ॥ धूप दीपनैवेद्यआरती, पुष्पनकीबरखाबरखानी ॥ ४ ॥ छ प्पनभोगधन्योप्रभुआगे, बिनतुलसाँप्रभुएकनमानी ॥ ५ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, खोजतफिरतम हामुनिज्ञानी ॥ ६ ॥ प्रेमभक्तिकरिहरिवसकीन्हे, साँव रीसुरतिमेरेहियलपटानी ॥ ७ ॥ साँवरीसखीमैयातेरो जसगावत, भक्तिदानमोहिदिजेमहरानी ॥ ८ ॥ ४ ॥

टेरत है रघुवरजी किमैया, रघुवरजीकि मैयालक्ष्मण जी कोमैया ॥ टेक ॥ उंचे उंचे सुर ले शब्द उचारे, रघु कुल रघु कुल रघु कुल रैया ॥१॥ रघुवर लक्ष्मणभरत शत्रुहन, नहि आवैताजि बाल समैया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल, धनुष बानकर धरेहो रमैया॥३॥संग सखासरजूतटविहरे, भरतशत्रुहनलक्ष्मणभैया ॥४॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नेतिनेतियशगावैंनिगमैया॥ ॥५॥ ताहिधरणकौसल्याधाई, ठुमकठुमकपगचलतपरैया॥ ६ ॥ धूसरधूरिभरेतनुआये, विहसतभूपगोदवैठैया ॥ ७ ॥ तुलसीदास प्रभु की छवि निरखे, निरखी जननी लेत बलैया ॥ ८ ॥ ५ ॥

नमोनमोतुलसीकरजोरी ॥टेक ॥ हेमरतनवैजंतिरूपमय, साखापत्रमंजरीतोरी ॥ १ ॥ परमसखीसियजानकीजीवन, सीतारामविहरेएकठौरी ॥ २ ॥ चरणसरण दासीसरनागत, प्रेमभक्तिकोकरतनिहोरी ॥ ३ ॥ सिंहासनसियबैठिरामसंग, तुलसीदासदरबाररहोरी ॥४॥६॥

बसवोश्रीअवधपुरीकोनीको ॥ नीकोनामहरिको ॥ टेक ॥ उत्राखंडअयोध्यानगरी, निरमलजलसरजूको ॥१॥ रामघाटअस्नानकरनको, दरसनराघोजीको ॥२॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, ढोटादशरथजीको ३ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, सिरकेसरकोटीको ॥ ४ ॥ सबभूपनकोमानमथनकियो, तोडोधनुशिवजीको॥५॥

अष्टपहरकरजोरेरहतहै, हनुमानअंजनीको ॥ ६ ॥ तुलसीदासयेहिध्यानधरतहैं, रामलखणसियाजीको ७।७॥

वसवोश्रीवृंदावनकोनीको ॥ टेक ॥ मध्यदेसएकमथुरानगरी, निरमलजलजमुनाको ॥ १ ॥ चीरघाटअस्नानकरनको, दरसनगोविंदजीको ॥ २ ॥ हलधरगिरिधरमदनमनोहर, ढोटावसुदेवजीको ॥ ३ ॥ मोरमुकुटमकराकृतकुंडल, गौरोचनकोटीको ॥ ४ ॥ वृंदावनमें वागवहुतहैं, विचविचवनतुलसीको ॥ ५ ॥ कुंजनकुंजनफिरतराधिका, शब्दसुनतमुरलीको ॥ ६ ॥ अष्टपहरकरजोररहतहै, गरुडसुवनविनताको ॥ ७ ॥ सूरदासएहिध्यानधरतहै, स्यामराधिकाजीको ॥ ८ ॥ ८ ॥

भजुदशरथपुत्रधनुषधरना ॥ टेक ॥ मातुपिताकी आज्ञामानी, अवधछोडिवनकोचलना ॥ १ ॥ वनमें जायवसेरघुनंदन, जनकसुतारावणहरना ॥ २ ॥ कपिदलजोरिचढेरघुनंदन, सेतुवांधिसागरतरना ॥ ३ ॥ रावणकेदसमस्तकछेदे, वीसभुजाखंडखंडकरना ॥ ४ ॥ रावणमारि असुरसवमारे, लंकाजारिगरदकरना ॥ ५ ॥ अपनेभक्तकोराजतिलकदियो, आयपर्‍योहरिकेचरणा ॥ ६ ॥ पुष्पविमानचढे रघुनंदन, वालमीकआश्रम आवना ॥ ७ ॥ सीतासहित अयोध्याआये, सुरनर मुनिजयजयकरना ॥ ८ ॥ सीतासहितसिंहासनवैठे, सबदेवनमंगलकरना ॥ ९ ॥ तुलसीदासरघुवर

केसरणे, चरणकमलपरचितधरना ॥ १० ॥ ९ ॥

भजुरेमनरामसियाचरना ॥ टेक ॥ दशरथनंदनविधिशिववंदन, भक्तजननकेभयहरना ॥ १ ॥ विश्वामित्रकोजज्ञसुफलकियो, धनुषभंजिसीयावरना ॥ २ ॥ नौकासहितकीरकुलतारे, चरणछुवतसीलातरना ॥ ३ ॥ सयनसहितखरदूषणमारे, पंचवटीपावनकरना ॥ ४ ॥ बालिमारिसुग्रीवराज्यदियो, सप्तताडछेदनकरना ॥ ५ ॥ महाअगाधसिंधुसतजोजन, रघुवरकपिगिरिवरतरना ॥ ६ ॥ अहिरावणकेमस्तकछेदे, भक्तविभीषणनृपकरना ॥ ७ ॥ आयअवधपुररंगमुवनमैं, कौसल्याआरतिकरना ॥ ८ ॥ अतिकृपालुकरुणामयउरधरो, चतुरदासराघोसरणा ॥ ९ ॥ १० ॥

मिलिखेलतआवतरामलला, भरतशत्रुहनलखणलला ॥ टेक ॥ बृंदबृंदरघुबंसिनकेसुत, खेलतआवतकरतहला ॥ १ ॥ लाड्डलियेसकलकरकरमैं, चुगवतकणपंछीकुमला ॥ २ ॥ धावतफिरतचलतअंगनमैं, करतकेलिबहुछीनपला ॥ ३ ॥ कागभुसुंडिगहनकरबाढे, सप्तावरमैंभ्रमतफिरा ॥ ४ ॥ नयनमूदिगयेराम उदरमैं, देखै ब्रह्मांडकला ॥ ५ ॥ खोजतफिरतकल्पसतबीते, बाहरउभयघरीबितला ॥ ६ ॥ अग्रदासधन्यधन्यकौसल्या, भाग्यउदयभयेआजुभला ॥ ७ ॥ ११ ॥

जयजयजयरघुनाथहरे, पूरणकरतमनोरथमनको ॥

॥ टेक ॥ पूरणब्रह्मत्रेतामैप्रगटे, दरसनदेतनिहालकरे ॥
॥ १ ॥ उत्राखंडअयोध्यानगरी, निकटहिसरजूनीरभरे
॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, धनुषबानकरधारि
लिये ॥३॥ रतनसिंहासनआपबिराजे, धूपदीपनैवेद्यधरे
॥ ४ ॥ भरतशत्रुहनचँवरछत्रलिये, सनकादिककरजोरि
रहे ॥ ५ ॥ माधोदासआसरघुवरके, हमसेपतितअनेक
तरे ॥ ६ ॥ १२ ॥ इति रविवारकी धुन संपूर्ण ॥

॥ अथ सोमवारकी धुन प्रारंभः ॥

भजोदसरथनंदन जनकलली ॥ टेक ॥ राजादसरथ
केरामजन्मलियो, रायजनककीभइहेलली ॥ १ ॥
आगेआगेविश्वामित्रमहामुनि, पीछेलक्ष्मणअतुलब
ली ॥ २ ॥ येदोउकुंवरजनकपुरआये, पुष्पबिछा
येगलीगली ॥ ३ ॥ तोडेधनुषभूपसबहारे, रायजनक
कीभइहैभली ॥ ४ ॥ आईहैसीतासंगसहेली, वरमा
लापहिरायचली ॥ ५ ॥ गजमोतियनकेचौकपुराये,
मंगलगावेपुरकीअली ॥ ६ ॥ पूजतगौरीमनावतसंकर,
वरपायोरघुनाथबली ॥ ७ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे,
यहजोरीमेरेमनमेहली ॥ ८ ॥ १ ॥

राजतराम, जानकीजोरी २ महाराजकिशोरी ॥
॥ टेक ॥ सियाभइगौरिपियाभयेसाँवर, रूपदेखिसा
रदभइभोरी॥१॥मंडपमैदोउमदनमनोहर, दशरथसुत
अरुजनककिसोरी ॥ २ ॥ राघोजीकेसोहैजरकासिजा

मा, सियजीकिसोहैपीतपिछोरी ॥ ३ ॥ कनककलसपर फिरतभांवरी, सखियनमंगलचारकरोरी ॥ ४ ॥ इतमैव सिष्ठमुनिउतमैसतानंद, दोउकुलबेदबखानतदोरी॥५॥ उतमैअवधपुर इतमिथिलापुर, बीचमैसरजूलेताहिलोरी ॥ ६ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारे, कहावरणोमैजुगलवरजोरी ॥ ७ ॥ २ ॥

जयसियामहारानी, जयजानकीरानी ॥ सुररंजनि अघगंजनि सेवतमुनिज्ञानी ॥ टेक ॥ कुंदरदनीससिबदनी, दामिनिदुतिगाता ॥ भूषणवसनसँवारे, कर लियेजलजाता ॥ १ ॥ बेंदीभालबिराजे, सुंदरमुसुकानी ॥ जगजमनीचितरमनी, रघुवरमनमानी ॥ २ ॥ मृगलोचनिअघमोचनि, सखियनसंगसोहै ॥ विहरतसरजूतीर, लखिसुरतियमोहै ॥ ३ ॥ विधिहरिहरतो हिध्यावै, निजनिजपदपावै ॥ उमारमाब्रह्माणीनिसदिनध्यावै ॥ ४ ॥ संतनसुखदरसावै, रघुवररूपलीये ॥ सुखसारददोउविहरे, रामसेवकहीये ॥ ५ ॥ ३ ॥

मोहनिडारिआलिमोहनिडारी, आजजनकपुर ॥ ॥ टेक ॥ सुंदरस्यामरामरघुनंदन, मोहिलियेसुरपुर नरनारी ॥ १ ॥ देसदेसकेनृपतीआये, उठैधनुष महाअतिभारी ॥ २ ॥ गुरुआज्ञालैरामचलेहैं, तोरोधनुषमहाअतिरी॥३॥सबभूपनकेमानमथनाकियो, जश लीनोरघुनाथखरारी ॥४॥ जानकीहाथलियेवरमाला,

जैमालासियपियउरडारी ॥ ५ ॥ तुलसीदासदूल्हर घुनंदन, दुलहिनिरानीजनकदुलारी ॥ ६ ॥ ४ ॥

लैलोरिभरिलोचनलाहू ॥ टेक ॥ सखीसयानीमिथिलापुरकी, घरघरसीखदेतसबकाहू ॥ १ ॥ कबश्रीरामजनकपुरऐहैं, कबतुमनगरअयोध्याजाहू ॥ २ ॥ दुरलभदरसहोयदम्पतिके, समुझिसमुझिफिरमनपछताहू ॥ ३ ॥ नहिंकोउछरीदारयेहिअवसर, नारिपुरुषसबकरनिरबाहूं ॥ ४ ॥ मनहूंकामनाकरिपरिपूरण, फिरिनरहैउरअंतरदाहूं ॥ ५ ॥ शेषमहेशसकलजगजाने, रामसियाकोहोतबिबाहूं ॥ ६ ॥ हरखेदेवसुमनसुरवरखे, सकलभुवनभरिरहाउछाहूं ॥ ७ ॥ प्रेमउजागरसबगुणआगर, प्रभुहिविलोकिचक्रितभयेनाहूं ॥ ८ ॥ तुलसीदासधन्यभागजनकके, चितवतजातजानकीनाहूं ॥ ९ ॥ ५ ॥

आजुराजद्वारे बधैयाबाजे ॥ टेक ॥ मिथिलापुरआयेरघुनंदन, घरघरयुवतिनआरतिसाजे ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, भालतिलकशिरछत्रबिराजै ॥ २ ॥ नखसिखसुंदरअंगमनोहर, कोटिभानु रतिपतिछबिलाजै ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन, संगसखामिथिलापुरराजै ॥ ४ ॥ जुगलप्रियाछबिकहाँलगिबरणौं, यह मूरति मेरे हृदय बिराजै ॥ ५ ॥ ६ ॥

जयजयजयनृपजनककिसोरी ॥ टेक ॥ तेरोइध्यान

धरतनिसिवासर, नारदशारदशंकरगौरी ॥ १ ॥ लियोउठायधनुषतृनकोज्यौं, बालकेलिलीला वपुधोरी ॥ ॥ २ ॥ कौतकदेखिभूपप्रनकीन्हो, धनुषतोरयाकोवर होरी ॥ ३ ॥ तेरेयज्ञभागकेकारण, सकलभयेसुरनरएक ठौरी ॥ ४ ॥ येहिधनुषदशशीशभूपभट, पचिपचिहारि चलेमुखमोरी ॥ ५ ॥ गजगतिचालचलेमृगनयनी, रामचंद्रमुखचंद्रचकोरी ॥ ६ ॥ लाहारामदासकान्हर भजु, जुगजुगरामसियाकीजोरी ॥ ७ ॥ ७ ॥

दुलहरामसियादुलहीरी ॥ टेक ॥ घनदामिनिवरवर नहरणमन, सुंदरतानखसिखनिवहीरी ॥ १ ॥ व्याह विभूषणवसनविभूसित, सखिअवलीलखिठगिसिर हीरी ॥ २ ॥ जीवनजन्मलेहुलोचनफल, इतनोलेउ आजुसहिदोरी ॥ ३ ॥ सुखसासुरसिसिंगारछीरदुहि, मथनअमियमयकियोदहीरी ॥ ४ ॥ मथिमाखनसि यारामसवारे, सकलभुवनछविमनहुंमहीरी ॥ ५ ॥ रूप रासिविरंचिरचीमानो, सिलालवनरतिकालनहीरी ॥ ॥ ६ ॥ तुलसीदासदेखतयेजोरी, सोभाअतुलन जात कहीरी ॥ ७ ॥ ८ ॥

जनकललिमधुरेसुरगावै ॥ टेक ॥ नइनइतानवनाये सहचरी, चंद्रकलाअलिबेनुबजावै ॥ १ ॥ कोउसखि तालमृदंगबजावै, कोउसखिरीझिरीझिगुणगावै ॥ २ ॥ बैठीरंगमहलमौंकिसोरी, बिनुसखियनकोइजाननपा

वै ॥ ३ ॥ कोइसखिदेतपानमुखबिरी, मंदमंदकोईचँवरढुरावै ॥ ४ ॥ कोइसखिदेहगेहसुधिबिसरी, कोइसखिबारबारसिरनावै ॥ ५ ॥ सूरकिसोरबलैयालैहो, कोइसखिब्याहकिबातचलावै ॥ ६ ॥ ९ ॥

पियाघनस्यामसियातनगोरी ॥ टेक ॥ रूपसदनबिधुवदनमनोहर, रघुकुलमनिमिथिलेसकिसोरी ॥ १ ॥ कहाकहुंसोभाललललाडिली, छबिसिंगारमीलीएकठौरी ॥ २ ॥ वैठीरंगमहलमें किसोरी, निरखतमुखलोचनटकजोरी ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटराघोजिकोसोहै, सियजिकोसोहैसुंदरमौरी ॥ ४ ॥ सुभगरूपरतिमदनबिनिंदति, सीतारामसकेंकहिकोरी ॥ ५ ॥ रामप्रसादकेरघुवरस्वामी, हृदयवसोयहसुंदरजोरी ॥ ६ ॥ १० ॥

राजारामजानकीरानी ॥ टेक ॥ खासगुलामपवनसुतठाडे, ब्रह्माविष्णुसंभुदरवानी ॥ १ ॥ सिवरीखासमहलकीदासी, वाहरउमारमाब्रह्माणी ॥ २ ॥ तीनलोकअरुचौदभुवनमे, नहिऐसेराजानहिरानी ॥ ३ ॥ तुलसीरामरूपकोसागर, अवमनमैमहिमाहमजानी ॥ ४ ॥ ११

ये दोउचंद्रवसोउरमेरे ॥ टेक ॥ दशरथसुतअरुजनकनंदनी, अरुणकमलकरकमलनफेरे ॥ १ ॥ वैठेसंगकुंजसरजूतट, आसपासललनाघनघेरे ॥ २ ॥ चन्द्रवतीसिरचँवरढुरावै, चंद्रकलातनहंसिहंसिहेरे ॥ ३ ॥ ललितभुजलाखिअरसपरस, झुकिरहेहैंवैसेकपोलनने

रे ॥ ४ ॥ रामसखेअबकहिनपरतछबि, पानदेतमुखछु
किछुकिहेरे ॥ ५ ॥ १२ ॥ इतिसोमवारकी धुनसम्पूर्ण॥

अथ मंगलवारकी धुन प्रारंभः ॥

पवनतनयसंतनहितकारी ॥ हृदयविराजैस्वामीअ
वधविहारी ॥ टेक ॥ ॥ मंगलमूरतिमारुतिनंदन ॥
सकलअमंगलमूलनिकंदन ॥ १ ॥ बरणौमातपिता
गुरुसादर ॥ उमासहितसंभूशुकनारद ॥ २ ॥ चरण
बंदिबिनवौंसबकाहूं ॥ देहुरामपदभक्तिनिवाहूं ॥ ३ ॥
बरणौअवधपुरीनरनारी ॥ जयरघुवरसियाजनकदु
लारी ॥ ४ ॥ बरणौरायकौसल्यारानी ॥ करहूंकृ
पानिजसेवकजानी ॥ ५ ॥ बालमीकमुनिव्यासवखा
नी ॥ सनकादिकऋषिअंतरजामी ॥ ६ ॥ भरतशत्रुह
नसंगसुहाये ॥ हनूमानअंगदमनभाये ॥७॥ भीरपरेक
पिसुमिरुंतोहि ॥ होऊदयालदरसदेमोही ॥ ८ ॥
बरणौरामलखनवैदेही ॥ तुलसी सीतारामसनेही ॥
॥ ९ ॥ १ ॥

गाइयेगणपतिजगबंदन ॥ संकरसुवनभवानीनंदन
॥ टेक ॥ सिद्धसदनगजवदनबिनायक ॥ कृपासिंधु
सुंदरसबलायक ॥ १ ॥ मोदकप्रियमुदमंगलदाता ॥
विद्यावारिदबुद्धिविधाता ॥ २ ॥ मागततुलसीदास
करजोरे ॥ बसहुंरामसियमानसमोरे ॥ ३ ॥ २ ॥

जैजैहनुमानवीरबंका ॥ टेक ॥ कौनके पुत्रकौनकेपा

यक, रामकाजपरकियोहंका ॥ १ ॥ अंजनीपुत्रसमकेपायक, रामकाजपरकियोहंका ॥ २ ॥ करिकिलकारिकूदगयेसागर, घरघरढुंडीगढलंका ॥ ३ ॥ सियाकीशुधिरघुनाथपठाये, छिनमैंजारिगढलंका ॥ ४ ॥ बागउखारिसमुद्रमैंडारे, पानफूलकोकियोफंका ॥ ५ ॥ पचरंगबान रामलक्ष्मणके, देखिअसुर थरथरकंपा ॥ ६ ॥ अच्छेकुमारबागबिचमारे, मेघनादपरकियोहंका ॥ ७ ॥ रावणमारमहिरावणमारे, कुंभकरणपरकियोहंका ॥ ८ ॥ तुलसीदास हनुमान भरोसे, भक्तविभीषणपाइलंका ॥ ९ ॥ ३ ॥

अंजनीकुमारपवनसुतमेरी, अरजरामसोकहियोजी ॥ टेक ॥ भवसागरमैंबहौजातहू, बांहपकरगहिलीजोजी ॥ १ ॥ जमकोदंडसकलजगऊपर, बाहुसे मोहिबचैहोजी ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, उनहुंसे मोहिमिलैहोजी ॥ ३ ॥ तुमतोपायकरामचंद्रके, सन्मुखहोकररहिहोजी ॥ ४ ॥ नदियागहिरीनावपुरानी, बेरापारलगैहोजी ॥ ५ ॥ तेलसिंदूरचढैसनिवासर, लड्डूभोगलगैहोजी ॥ ६ ॥ तुलसीदासहनुमानभरोसे, भक्तिदानमोहिदीजोजी ॥ ७ ॥ ४ ॥

कृपाकरोहनुमानजनपर ॥ टेक ॥ रामदुवारेतुमरखवारे, महाबीरबलवान ॥ १ ॥ रामलखनकोशिल्याकेप्यारे, अंजनिकेप्यारेहनुमान ॥ २ ॥ सुंदरवदनकमल

दललोचन, तिलकविराजैं भाल ॥ ३ ॥ संकटमोचन नामतुह्मारो, संतधरततेरोध्यान ॥ ४ ॥ हाथमेंसोटा लाललंगोटा, मुखमैंनागरपान ॥ ५ ॥ लछमनमुर छिपरेधरणीपर, दियोसजीवनआन ॥ ६ ॥ जनकसुता केसोकनिवारे, रघुवरसुजसवखान ॥ ७ ॥ मकरध्वजको राजतिलकदियो, पुत्रआपनोजान ॥ ८ ॥ पैठिपता लमहिरावणमारे, देवीकेहरलियेप्रान ॥ ९ ॥ तुलसी दासपरकृपाकीजै, दासआपनोजान ॥ १० ॥ ५ ॥

कृपाकरोमहावीरजनपर ॥ टेक ॥ रामकाजअवता रलियोहै, धर्मधुरंधरधीर ॥ १ ॥ सीताकिसुधिको रामपठाये, उतर्योसिंधुतीर ॥ २ ॥ लंकाजारिसिया सुधिलाये, आयेउरलीतीर ॥ ३ ॥ कपिदलसहितराम चढ़आये, महातेजरघुवीर ॥ ४ ॥ लाललंगोटासिंदु रराजै, सुंदरसुभगशरीर ॥ ५ ॥ सूरदासपरकृपाकीजै, हरोविषमभवपीर ॥ ६ ॥ ६ ॥

रघुवंसीहोरामसेंमनमेंवसो, मनसेवमोमेंहियमें वसो ॥ टेक ॥ सीतामेंरीमातपितामेंराम, लछमणधनुष चढ़ायेकरवान ॥ १ ॥ गलमेंतुलसीसुखमेंराम, हृदय विराजन्यामिसाजश्याम ॥ २ ॥ हाथिनऊपरधुरनानिसा न, सुरनरमुनिजनआयेविमान ॥ ३ ॥ बांधसागरउत रे पयान, सियाकोखवरपठायेहनुमान ॥ ४ ॥ तोरिगढ़ लंकाफिरगढ़आन, भक्तविभीषणपायेविश्राम ॥ ५ ॥

आगेआगेरामलक्ष्मणपिछेहनुमान, आयेहैअयोध्या पुष्पविमान ॥ ६ ॥ तुमरोजपतपतुमारोहिध्यान, राघोजीकोसुमिरणसियाजीकोध्यान ॥ ७ ॥ क्रीटमुकुटकुंडलवनमाल, भाल तिलक सोहै नयनबिसाल ॥ ८ ॥ पुरीहैअयोध्यासरजूतीर, यहधुनगावैस्वामी रामानन्द ॥ ९ ॥ ७ ॥

कहुकपिकुसललखनरघुवरकी ॥टेक॥ बारबारबुझि मातुजानकी, बूझतकुसलनयनजलढरकी ॥ १ ॥ जिनकेभोगविलासअवधमे, सोकैसेरहतछाहतरुवरकी ॥ २ ॥ संगसखासरज्यूतटविहरे, बानचलावैलख धनुधरकी ॥ ३ ॥ रत्नसिंहासनआपविराजै, चँवरछत्र ढुरैरघुवरकी ॥ ४ ॥ कवरघुपतिलंकामेंऐहै, बधकरिहैरावणनिश्चरकी ॥ ५ ॥ रावणमारिमहिरावणमारे, नासकियोनिश्चरकेकुलकी ॥ ६ ॥ लंकाजीतिरामघर आये, तुलसीदासचरणनरजधरिकी ॥ ७ ॥ ८ ॥

सबदेवनकेराजाहनुमतमहाराजा ॥ टेक ॥ अंजनीपुत्ररामकेपायक, सारोरामकेकाजा ॥ लंकापुरीमैकुदिपरेहै, डरप्योरावणराजा ॥ १ ॥ करिकिलकारकुदिगयोसागर, जातवारनाहिलाया ॥ लंकाजायसिया सुधिलाये, कियोप्रभुकोकाजा ॥ २ ॥ सक्तिबान लागेलक्ष्मणको, जातवारनाहिलाया ॥ द्रोनागिरिसें लायसजीवन, कियोरामकेकाजा ॥ ३ ॥ लंकाजीति

रामघरआये, सखियनमंगलगाया ॥ तुलसीदासअवि चलयहजोरी, चरणकमलचितलाया ॥ ४ ॥ ९ ॥

जयश्रीहनुमंता, जयश्रीवलवंता, तुमकोसुरमुनिध्यावै ॥ टेक ॥ तबअवतारविदितजगजागे, जानतसबवाता ॥ जन्मलियोहैपवनसुत, अंजनीगर्भजाता ॥ १ ॥ मारिफलांगकुदिगयेसागर, देखिअरुणताता ॥ कोटी अग्निसमदेखे, मानोफलराता ॥ २ ॥ सीतासुधिरघुनाथपठाये, कुदिगयेलंका ॥ सबकोभयउपजाये, राक्षस कुलहंता ॥ ३ ॥ उलटिपलटिलंकासबजारी, राक्षस संघाता ॥ कुदिपरेसागरमैं, सिंधुभयकम्पाता ॥ ४ ॥ पुछबुजायसियापहआये, नायेजगमाता ॥ ५ ॥ तुरत हिरामलखनपहआये, नायचरणमाथा ॥ हंसिहंसिकंठलगाये, कहीकुसलबाता ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदि ब्रह्मादिक, पावतनहिंअंता ॥ अनभयदासकिविनती, सुनिसियपियकंता ॥ ७ ॥ १० ॥

रघुनाथतुह्मारेचरितमनोहर, ललितमनोहर गावत सकलअवधवासी ॥ टेक ॥ अतिउदारअवतारमनुजवपु, धर्योब्रह्मबरअबिनासी ॥ १ ॥ प्रथमताडकाहनिसुवाहुबधि, मखराख्योद्विजाहितकारी ॥ देखिदुखितअति सिलाश्रापवस,रघुवरविप्रनारीतारी ॥ २ ॥ सबभूपनको गर्वहर्योहै, भंजोसंभुचापभारी ॥ तातवचनसुनिराज काजतजि, चित्रकोटमुनिवेषधर्यो ॥ ३ ॥ एकनयन

कियोसुरपतिसुत, बधिविराधऋषिसोकहर्यो ॥ ४ ॥
पंचवटीपावनराघोकरि, सूपनखाकोरुपहर्यो ॥ खरदु
षणसंहारिकपटमृग, गीद्धरायकोगतिदीन्हो ॥ ५ ॥
हतिकबंधसुग्रीवसखाकरि, वध्योताडबालिमार्यो ॥
वानररिच्छसहाय अनुजसंग, सिंधुबांधिजसविस्तार्यो
॥ ६ ॥ सकलपुत्रदलसहितदशानन, मारिअसुरसुर
दुखटार्यो ॥ परमसाधुजियजानिबिभिषण, लंकापु
रीतिलकसार्यो ॥ ७ ॥ सीता औरलक्ष्मणसंगलीन्हे,
औरदासजेतेआये ॥ नगरनिकटविमानआये अब, न
रनारीदेखनधाये ॥ ८ ॥ शिवसनकादिविरंचिआदि
मुनि, अस्तुतिकरतविमलवानी ॥ चौदहभुवनचराच
रहपित, आयेरामराजधानी ॥ ९ ॥ मिलेभरतजननीगु
रुपरिजन, चाहतपरमआनंदभरे ॥ दुसहवियोगजनि
तदारुणदुख, रामचरणदेखतविसरे ॥ १० ॥ वेदपुराण
विचारीलगनसुभ, महाराजअभिषेककियो ॥ तुलसी
दासजियजानीछुअवसर, भक्तिदानवरमागिलियो ॥
॥ ११ ॥ ११ ॥ इति मंगलवारकी धुन संपूर्ण ॥

॥ अथ बुधवारकी धुन प्रारंभः ॥

हरिसुमिरतसबदुख विसरीगये, विसरी गये हो भूलि
गये ॥टेक॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, जगतपहरुवासो
ईगये ॥ १ ॥ जननीजायेजलनहनवाये, लैवसुदेवकि
गोददिये ॥ २ ॥ लैवसुदेवचलेगोकुलको, उमगीजमु

नाचरणगहे ॥ ३ ॥ भरभादौकीरयनअंधेरी, कालीना गफनफेररहे ॥ ४ ॥ लेवसुदेवद्वारभयेठाडे, हरखिज सोदागोदलये ॥ ५ ॥ उलटीरीतभईगोकुलमे, कन्या देकेपुत्रलिये ॥ ६ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारे, नंदके घर आनंदभये ॥ ७ ॥ १ ॥

भजुगोविंदगोविंदगोपाला, कृष्णकन्हैयाझुलेनंद लाला ॥ टेक ॥ मथुरामेहरिजन्मलियोहै, गोकुलझुले नंदलाला ॥१॥ पूतनाकोजननीगतिदिन्ही, अघमओ धारेनंदलाला ॥ २ ॥ अघासुरमारेबकासुरमारे, केसी मारेनंदलाला ॥ ३ ॥ गोकुलसेंहरिमथुराआये, संगस खालियेनंदलाला ॥ ४ ॥ मथुराआयेरजकलुटाये, प हिरायेसबव्रजवाला ॥५॥ कुवजातोचंदनघिसलाई, मालिनलाईफुलमाला ॥ ६ ॥ केसपकरिहरिकंसपछा रे, रंगभूमिआयेनंदलाला ॥७॥ उग्रसेनकोराजति लकदियो, कियोमथुराकोभूपाला ॥ ८ ॥ वनमाली प्रभुसरणेआये, प्रेमभक्तिकिजपमाला ॥ ९ ॥ २ ॥

बाजेबाजेलालतोरिपयजनियां २ लालरुनझुनियां॥ ॥ टेक ॥ पयजनिबाजे अधिकसोहावे, मोहलियेसु रनरमुनियां ॥ १ ॥ नीलअंगपरपीतझिंगुलिया, रतन जडावकिपैजनियां ॥ २॥ चंदनचरचितअंगमनोहर, सिरपरसोहतचोतनियां ॥ ३ ॥ जसोमतिलालकोच लनसिखावे, अंगुरीपकरलिये दोऊजनियां ॥ ४ ॥ छो

टेछोटेचरणचतुरभुजमूरती, अलकेझुकिरहिनागियां ॥ ॥ ५ ॥ शिवब्रह्माजाकोपारनपावै, ताहिनचावत ग्वालिनियां ॥ ६ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबि, तीन लोककेप्रभुधनियां ॥ ७ ॥ ३ ॥

कैसे आवौंहो लालतेरिब्रजनगरी २ गोकुलनगरी ॥ टेक ॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचबहैजमुनागहिरी ॥१॥ पाँवधरौमेरिपायलभीजै, कूदिपरौबहिजाऊसगरी ॥ २ ॥ मैंदधिबेचनजातवृंदावन, मारगमैमोहनझगरी ॥३॥ बरजोजसोदाअपनेलालको, छीनिलयी मेरि नथदुलरी ॥ ४ ॥ रहुरहुग्वालिनीझठनबोलो, कान्ह अकेलोतुमसगरी ॥ ५ ॥ हमरोकन्हैयापांचवरसको, तुमग्वालिनिअलमस्तभई ॥ ६ ॥ जायपुकारोकंसराजासो, न्यावनहीमथुरानगरी ॥ ७ ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमैं, फेंटपकरराधेझगरी ॥ ८ ॥ मीराकेप्रभु गिरिधरनागर, साधुसंगकरिहमसुधरी ॥ ९ ॥ ४ ॥

मन अटकीमेरे दिलअटकी, हो मुकुटलटकमेरे मन अटकी ॥टेक॥ माथेमुकुटखोरचंदनकी, सोभाहै पीरे पटकी ॥ १ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजै, गुंजमालमेरे हियअटकी ॥२॥ अंतरध्यानभयेगोपियनमैं, सुधनरही जमुनातटकी ॥३॥ पातपातवृन्दावनढूंढे, कुंजकुंजराधे भटकी ॥ ४ ॥ जमुनानिरतिरधेनुचरावै, सुरतरहीबंसीबटकी ॥ ५ ॥ फूलनजामा कदमकी छैयां,

गोपियनकीमटुकीपटकी ॥ ६ ॥ मीराकहैप्रभुगिरिधर नागर, जानतहोसबकेवटकी ॥ ७ ॥ ५ ॥

भजोसुंदरस्यामसुकुटधारी ॥ टेक ॥ वदनकमलपर कुंडलझलके, अलकेसोहैघुंघुरवारी ॥ १ ॥ उरवैजं तीमालविराजै, वनमालासोहैगुंजनवारी ॥ २ ॥ केसर भालतिलकसिरसोहै, मुरलीकीछविहैन्यारी ॥ ३ ॥ पायनमेंपैजनियांसोहै, गदगदआवतगिरिधारी ॥ ४ ॥ बंसीवटततटरासरच्योहै, संगलियेराधाप्यारी ॥ ५ ॥ वृन्दावनमें खेलतडोलत, विहारकरतहैवनमाली ॥ ॥ ६ ॥ चंद्रसखिभजोराधावल्लभ, चरणकमलकीवलि हारी ॥ ७ ॥ ६ ॥

कुंवरछवीलीश्रीराधे, प्यारिव्रिजवनितारूपलाडली ॥ ॥ टेक ॥ कलिमलहरनीवेदनवरनी, प्रभूवसकरनीश्री राधे ॥ १ ॥ हरिगुनमालाप्रेमरसाला, रूपविसालाश्री राधे ॥ २ ॥ कोरिकोरिमटुकिमेदहीजमायो, माखनमें कछुदियोराधे ॥ ३ ॥ चुनिचुनि कलियांमैहारवनाउं, गजरामैकछुकियोराधे ॥ ४ ॥ कत्थाचुनालौंगसोपारी, बिरीमैकछुकियोराधे ॥ ५ ॥ छप्पनभोगछत्तीसोविं जन, भोजनमैकछुकियोराधे ॥६॥ श्रीभटकेप्रभुदियो है अभयपद, अविचलराजकरोराधे ॥ ७ ॥ ७ ॥

अंखियामेलागिरहैगोपाल ॥टेक॥ मैजमुनाजलभर नजातरहिभरलाईजंजाल ॥ १ ॥ निसिवासरमनला

गिरहतहै, नयनधरतनहिधीर ॥ २ ॥ विनदेखेमोहिचैं नपरतनहि, घरअंगनानसुहाय ॥ ३ ॥ रुनुकझुनुकपग नूपुरवाजै, चालतचलतगजराज ॥ ४ ॥ लोकलाजकुल कीमरजादा, निपटभरमकीजाल ॥ ५ ॥ जमुनाकेनि रतिरधेनुचरावै, संगसखालियेग्वाल ॥ ६ ॥ वृन्दावन मैंरासरच्योहै, सहस्रगोपीएकलाल ॥ ७ ॥ मोरमुकुट पीतांबरसोहै, तिलकबिराजेभाल ॥ ८ ॥ शंखचक्रग दापद्मविराजै, गलेवैजंतीमाल ॥ ९ ॥ चंद्रसखिभजोबा लकृष्णछवि, चिरंजीरहोनंदलाल ॥ १० ॥ ८ ॥

नाचेनंदलालनचावैकोहरिमैया ॥ टेक ॥ मथुरामैह रिजन्मलियोहै, गोकुलमैपगधार्योरिकन्हैया ॥ १ ॥ रुमकझुमकपगनूपुरबाजै, ठुमकठुमकपगधर्योरिकन्है या ॥ २ ॥ दूधनपिवैललादहियानखावै, माखनको लालाबडोरिखवैया ॥ ३ ॥ सालदुसालाजाकेमनहु नभावै, कामरिकोलालाबडोरिओढैया ॥ ४ ॥ मोर मुकुटपीतांबरसोहै, वंसीकोलालाबडोरीबजैया ॥ ५ ॥ वृन्दावनकीकुञ्जगलिनमै, सहस्रगोपी एक भयोरिक न्हैया ॥ ६ ॥ चंद्रसखिभजोबालकृष्णछवि, चरणकम लकीमैलेउगीवलैया ॥ ७ ॥ ९ ॥

नंद भवनको भूषण माई ॥ टेक ॥ जसोदाको ला ल बीरहलधरको, राधाको रमनपरमसुखदाई ॥ १ ॥ इंद्रकोइंद्रदेवदेवनको, ब्रह्माकोब्रह्मअधिकअधिकाई ॥

॥ २ ॥ कालकोकालईस ईसनको, अतुलितवल तो लोनहिजाई ॥ ३ ॥ जाकोनिगमनेतिजसगावै, महिमा वेदपुराणनगाई ॥ ४ ॥ नंददासकेजीवनगिरधर, गोकुलनायककुंवरकन्हाई ॥ ५ ॥ १० ॥

मथुरामैंहोयरहीजासुनई ॥ टेक ॥ हमदधिवेचनजात वृन्दावन, मारगमैमेरिबांहगही ॥ १ ॥ मेरोरीकन्है यापांचबरसको, सोकैसेतेरीबांहगही ॥ २ ॥ जिनग लियनमेरोफिरेरिकन्हैया, उनगलियनराधेकाहेगई ॥ ३ ॥ जमुनातीरकदमकीछैया, मोहनमुरलीवाजि रही ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजोबालकृष्णछवि, चरणकमल चितलायरही ॥ ५ ॥ ११ ॥

मजुरावरेसुंदरगिरिधारी ॥ टेक ॥ नंदनंदनआनंदम नोहर, प्रथमपुतनाकोतारी ॥ १ ॥ मुकुटसिरधरेसांव रो, संगलियेब्रजकीनारी ॥ २ ॥ जमुनाकेनिकटकदम कीछैया, बिहरतहैप्रीतमप्यारी ॥ ३ ॥ अघासुरमारिव कासुरमारे, जरासिंधकोमदहारी ॥ ४ ॥ असुरकुलको निरवंसकियोहै, केसीकंसहतेभारी ॥ ५ ॥ जसोमतिला लगोपालचरणपर, चतुरदासकीवलिहारी ॥ ६ ॥ १२ ॥

तेरेबांकेमुकुटकिछनिन्यारी सोभाभारी ॥ टेक ॥ जमुनाके निरतिरधेनु चरावै, कांधे कामरिहै कारी ॥ १ ॥ वृन्दावनमैरासरच्योहै, सहस्त्रगोपिएकगिरि धारी ॥ २ ॥ पीतांबरकी कछनि काछे, मुरलिबजावै

गिरिधारी ॥ ३ ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमे, विहरतहै प्रीतमप्यारी ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजबालकृष्णछबि, चरणकमलकी वलिहारी ॥ ५ ॥ १३ ॥

वृषभानकिललि, सांवरियासैंनेहलगायकेचलि॥टेक॥ आवोरेअहिरकेहमरीगली, चंदनछिरकोतोरिपगरी ॥१॥ हाथमैंगजरागुलाबकीछडी, ठडेरहियोलालजीमैकब कीखडी ॥ २ ॥ नयनमैंसुरमासुखभरिपान, छोटिसिउ मिरियाराधेवडोहैगुमान ॥ ३ ॥ छोटिछोटिमटुकीदही सेभरी, रंगमहलमैराधेजीखडी ॥ ४ ॥ वृंदावनमैरास विलास, यहधुनगावैस्वामीकान्हरदास ॥ ५ ॥ १४ ॥

मेरेअंगनामे मुरलिवजायगयोरी ॥टेक॥ छोटेछोटे चरणवडेवडेनैनां, वृंदावनगलिमारिगयोसेन ॥ १ ॥ मेरिआलिअवकहोकितजाऊ, मुरलिमैंगावैमेरोलैलै नास ॥ २ ॥ उंचनीचघाटिमोसेचढिहिंनजाय, मुरलि किधुनसुनिरहिनहिजाय ॥ ३ ॥ कितगईगैयाकितग येग्वाल, कितगयेवंसीवजावनहार ॥ ४ ॥ गोकुलगइगै या वृंदावनगयेग्वाल, मथुरामैवंसीवजावनहार ॥ ५ ॥ घरआइगैयाघरआयेग्वाल, अजहुनआयेमेरे मदन गोपाल ॥ ६ ॥ मीरांकहैप्रभुगिरिधरलाल, पायेहैद रसनभइहैनिहाल ॥ ७ ॥ १५ ॥

गिरिनपरेगोपाल गिरिवर॥टेक ॥ वृजकीसखिसवपू जननिकसी, भरिभरिमोतियनथार ॥ १ ॥ इंद्रकोपचढे

वृजऊपर, वरषत मूसल धार ॥ २ ॥ सातदिवस मे घवाझरिलायो, वृजमै परिन फुहार ॥३॥ शंखचक्रगदा पद्मबिराजै, वांके नयन विसाल ॥ ४ ॥ ग्वाल बाल स बगिरिवर नीचे, मुरलिवजावै नंदकेलाल ॥ ५ ॥ पीतांब रकी कछनी काछे, नख पर गिरिवर धार ॥ ६ ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल, तिलक विराजै भाल ॥ ७ ॥ चंद्रसखीभज बाल कृष्ण छवि, निरखत मुख नंद लाल ॥ ८ ॥ १६ ॥

मोकोंचाकरराखोजी, सांवरियागिरिधारिलाल॥टेक चाकररहतीबागलगाती, नित्यउठिदरसनपाती ॥ १ ॥ चाकरिमैदरसनपावौ, सुमिरणपावौखरची ॥ भावभ क्तिजागीरीपावौ, तीनलोककीखरची ॥ २ ॥ मोदीपु छेमदनमोहनसो, कहातुममहिनापायो ॥ तीनलोक जागीरीपायो, निरभयपटोलिखायो ॥३॥ जोगीआय जोगकरनको, तपकरनेसंन्यासी ॥ रामभजनकोसाधु आये, वृंदावनकेवासी ॥४॥उंचोउंचोमहलवनायो, वि चविचराखीबारी ॥ सावलियाकेआगेनाचूं, ओढिपि तांबरसारी ॥ ५ ॥ मोरमुकुटपीतांवरसोहै, गलेवैजंती माला ॥ वृंदावनमैधेनुचरावै, मोहनमुरलिवारा ॥ ६ ॥ चौकादेउंगीझारुदेउंगी, गोवरउठाउंवासी ॥ सांझसवे रेजलभरीलाउं, सबसंतनकीदासी ॥ ६ ॥ मीराक हेप्रभुगिरिधरलालग्वालनि, दरसनदीनोजमुनाती

र ॥८॥१७॥ इतिबुधवारकीधुन॥इतिसातोवारकीधुन ॥

॥ अथ सयनसमैका ब्यारु प्रारंभः ॥

आनिकरोकछुब्यारुरामजीकोंटेरतहैंमहतारी ॥टेक॥ रजनीवहुतगईमेरेप्यारे आनिकरोकछुब्यारी ॥ १ ॥ रंगमहलचढिटेरै कौसल्या कहिकहि अवधबिहारी॥२॥ खाजा खुरमा तपत जलेबी सीरा सरस सुहारी ॥ ३ ॥ भांति भांतिके धरेहैं अथाने नाना विधि तरकारी॥४॥ हित करी दूध जानकीजी लाई मेवा मिसिरी मिलाई ॥५॥ आपन जेंवै भरतजीसों बुझें कैसी भई भैया ब्यारी ॥ ६ ॥ चारौ भैया मिलि जेंवन बैठे परसत जनक दुलारी ॥ ७ ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन दशरथ अजिर बिहारी ॥ ८ ॥ निरमल जलसरजूजीको अच वँन रतन जडावकी झारी ॥ ९ ॥ तुलसीदास प्रभु द्वारे ठाड़े जूठनके अधिकारी ॥ १० ॥ १ ॥

करत बियारु मोहन, हँसिहँसि करतबियारुमोहन ॥टेक॥ चितवनमे चित चोरि लेतहै, नख शिख सुंदर रूप सगोहन ॥ १ ॥ औटो दूध कनक वेला भरि, लैल लिता आईहै गोहन ॥ फूंकत पिवत सेरात सांवरो, अंचल दै दै मात जसोहन ॥ २ ॥ देखत बने कहत नहिं आवै, सुधि भूलीहै सोहन मोहन ॥ कृष्णदास गिरिधर न श्रीलाडिलि, चित चोरोहै मृदु मुसकोहन ॥ ३ ॥ २ ॥

भलियेभांतिसोकीन्होभोजन, भलियेभांतिसोकी

न्हो ॥ टेक ॥ खटरस व्यंजन बरासलोने, मांगि मांगिहरिलीन्हों ॥ १ ॥ हँसतलसतपरसैंनंदरानी, बालकेलीरसभीनो ॥ परमानंदवढ्योपनवारो, बाँटि सखनकोदीन्हो ॥ २ ॥ ३ ॥

मोहनलालबियारूकीजै ॥टेक॥ व्यंजन मीठेखाटे खारे, रुचिसोंमांगिजननिसोलीजै ॥ १ ॥ खोवामिसरी और बासुदी, ता ऊपर तातोपयपीजै ॥ जोर मंडली भोजन कीजै, जूठनि आश करनको दीजै ॥ २ ॥ ४ ॥

सुखनिधिरघुवरकरतवियारी ॥ टेक ॥ मधुमेवापक वानसरसहै, प्रेमसहितपरसैंमहतारी ॥ १ ॥ गुझालाड्डू जरीफेनी, पुरीसीरापुवासुहारी ॥ घेवरपापरतप्तजलेबी, मिश्रीखाजासरससमारी ॥ २ ॥ सूरनआमकरोंदा जेंवत, आदोनिंबूअतिरुचिकारी ॥ औटयोदूधधरोलै आगे, पियोलालजननीबलिहारी ॥३॥ अतिसुगंधसरयू जलसियरो, रत्नजडितभरिलाईझारी ॥ भोजनकियो लियोप्रभुअचवन, राजिवनयनवयनवलिहारी ॥ ४ ॥ बीरीदेतसियाकरअपने, गरीइलाचीलौंगसुपारी ॥ गो कुलदासद्वारयशगावैं,पावतजुठरहैकछुथारी ॥ ५ ॥ ५ ॥

रामजिवनारचलेहोउनींदेनयनरतनारे, रामजिवना रचले ॥ टेक ॥ ब्रह्माआदिकथारीलाये, नारदलाये झारी ॥ दूधभातकौसल्यालाई, रघुवरकरोहोवियारू ॥ रेजल... खाजाखुरमातप्तजलेबी, अजबबनीतरकारी ॥ हेप्रभुगि

रामलक्ष्मणजेंवनकोबैठे, परसतजनकदुलारी ॥२॥ खा सामलमलऔरदरियाई, फूलनसेजबनाई ॥ रामलक्ष्म णपौढनकोलागे, भरतजीचँवरढुराई ॥ ३ ॥ सबदेवता मिलिचौकीआये, बीरआसनहनुमान ॥ तुलसीदास प्रभुद्वारेठाढे, कनकडबाभरिपान ॥ ४ ॥ ६ ॥

करतभावतीजोरीब्यारु ॥टेक॥खटरसब्यंजनविवि धबनाये, सखीकहतपरसोरी ॥ राजिवलोचन पंकज नयनी, पायोश्यामसियागोरी ॥१॥ जेंवतरामजनकमं दिरमै, होतपरस्परगोरी ॥ २ ॥ जालरंध्रनिरखत युव तीजन, बाढीप्रीतिनथोरी ॥ ३ ॥ तुलसीदासप्रभुजनतृ णतोरे, देतहेप्राणआकोरी ॥ ४ ॥ ७ ॥

ब्यारुकिजेदूधमीठाई॥टेक॥दाखबदामअरुसेवसिंघा डा॥जोजोरुचिरुचिभाई ॥ १ ॥ खीरनिखजूरखोपराक लाकंद, घूजाखारकमधूसुहाई ॥ मधुसूदनपीलेपकवा ना, ललिताविशाखालाई ॥ २ ॥ मालपुआऔरअमृत लडुवा, छप्पनभोगलेआई ॥ करमाबाईपरकिरपाकी जो, लालजीभोगलगाई ॥ ३ ॥ ८ ॥

पियो पय लाडले रघुराई॥टेक॥रतनजडितको बनो हैकटोरो, कौशल्या ले आई॥१॥आछो नीको औटिब नायो, मेवामिश्रीमिलाई ॥ जननीहेतपियोक्योनरुचि से, सखा बडे अधिराई ॥२॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुह न, संग राजे चार भाई ॥ विठ्ठलके प्रभु होत भोर

ही, मेवा दूध मिठाई ॥ ३ ॥ ९ ॥

ब्यारूकरन हेतुरघुवरकोमैया बोलि पठायेजी ॥ ॥टेक॥रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, राजत अवध बिहारीजी॥१॥ चारौं भया मिलि जेंवन बैठे, परसतहैंमहतारीजी ॥२॥ खाजा खुरमा तप्त जलेबी, सीरा सरस सुहारीजी ॥३॥ भांति भांतिको धऱ्योहै अथानो, नाना विधि तरकारीजी ॥४॥ दूधजानकी हितकरी औट्यो, मेवा मिसरि मिलाईजी ॥५॥आपन जेंवे भरतसू पूछें, कहा परस्यो महतारीजी ॥ ६ ॥ निर्मल जल सरयूको आचवन, रत्नजडित भरिझारीजी ॥७॥ तुलसीदास हरिद्वारेठाडे, जूठनके अधिकारीजी ॥ ८ ॥ १० ॥

कौशल्याकुंवरबियारूकीजै, प्रेमसहितबोलीकौशल्या, जगतईशजननीसुखदीजै॥ टेक॥ मीठापाकजलेबीपेडा, मोतिलाडूमुगदबनाये ॥ दलपूरीसोहारीगुटका, खाजाखुरमारामसमनभाये ॥ १ ॥ रायतोदहीमिसरीमेंघोरयो, विविधिभांतिकेवडाबनाये ॥ आदोनिंबुऔरअथानों, कचरीकरोंदाकेरमँगाये ॥ २ ॥ औटो दूधखोवाभरिआन्यो, वारीजायमातग्रासदुईलीजै ॥ बीरीआरोगिपलंगपधारो, जूठनज्ञानदेवकोदीजै॥३॥ ११॥

रघुनाथब्यारूकिजैजी, महाराजब्यारूकिजैजी ॥ ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, हिलिमिलिभोजनोंकिजैजी॥१॥ छप्पनभोगछतीसोव्यंजन, मनभावेसो

ईलिजैजी ॥ २ ॥ बहुमेवापकवानमिठाई, शीतबचेसोई दिजैजी ॥ ३ ॥ कनककटोरा अमृतभरिया, दूधपियोसोईपीजैजी ॥ ४ ॥ अचवनकरिसिंहासनबैठे, अभयदेवसबकीजैजी ॥ ५ ॥ मातकौशल्याकरतआरति, संतनदरशनदीजैजी गोकुलदासरघुवरकेशरनै, चरणकमलरजदीजैजी ॥ ७ ॥ १२ ॥ इति सयन समैका ब्यारु संपूर्ण ॥

॥ अथ दूध पिवन प्रारंभः ॥

हँसि हँसि दूधपिवै गोपीनाथ, मधुर कोमल वचनकहि कहिप्राणप्यारी साथ ॥टेक॥ कनक कटोरा भयोहै अमृतके, लियोहै ललिता हाथ ॥ लाडलीको अचवाये पहिले, पाछे आपअघात ॥ १ ॥ चिंतामणि चित वसोरी सज्जन, निरखि पियामुसकात ॥ श्यामा श्यामकी युगल छबि पर, रसिक अलिबलि जात ॥ २ ॥ १ ॥

एरी दूध लाई यशोमति मैया ॥ दूध पियो मेरे कुंवर लाडिले, तेरि वेनी बढैगी भैया ॥ टेक ॥ अछोनीको औटि सिरायो, तामें मधुर मिठैया ॥ परमानंद प्रभु अब दूध पीजे, भोरउठके देउँगी मैया ॥ १ ॥ २ ॥

दूध पियो मन मोहन प्यारे ॥ बलि बलि जाउं गहर जिनि करहो, कमल नयन अखियनके तारे ॥ ॥ टेक ॥ भरवेलापीजे सुख दीजे, और पियो बलभद्र पियारे ॥ परमानंद दासके ठाकुर, भोर उठत करो भैयारे ॥ १ ॥ ३ ॥

श्री राघोजीको दूध पीयावत रानी ॥ टेक ॥ कौशल्या केकैसुमित्रा, ढिग ढिग बैठिसयानी ॥ १ ॥ कौतुक करत ललितसुतचारौ, बोलत तोतरी बानी ॥ लेत मगाई जोई मनभावै, मातु देत हितमानी ॥ २ ॥ अवध नारि स्वारथ रथ आवै, रघुवर रूप लुभानी ॥ राम सेवकके प्रभु सुखसागर, गावत सुर पुर वानी ॥ ३ ॥ ४ ॥ इति दूध पिवन समाप्तम् ॥

॥ अथ शयनकी आरति प्रारंभः ॥

शीतलकरतआरतिमैया ॥ टेक ॥ चाररतनकेचारि सिंहासन. रविशशिकोटिउदैया ॥ १ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन, राजादशरथकेछैया ॥२॥ रतनजडितको पलंगबन्योहै, ऊपरलालदुलैया ॥३॥ मातुकौशिल्याक रतआरति, दोउकरलेतवलैया ॥ ४ ॥ क्रीटमुकुटमकरा कृतकुंडल, करसोहैबानधनुहिया ॥५॥ मानदासकेतन मनवारो, सुंदररामरमैया ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ अथ सयन (पोढणी) प्रारंभः ॥

जगन्नाथ दयाल पौढे, श्रीजगन्नाथ दयाल ॥ टेक ॥ ज्येष्ठहलधर रानिसुभद्रा, चक्रअसुरनकाल ॥ १ ॥ रत्नभवनविचित्रपुतली, लसतहीरालाल ॥ व्यालमणि शशिकोटिवारौ, वारौरविकोटिवाल ॥ २ ॥ जरीचंद वेचंदनिंदहिं, तारन्हमोतिनमाल ॥ अमियतिनतेझरत झिमिझिमि, अखिलतिन्हमेंख्याल ॥ ३ ॥ सेजवनकेअ

नूपआभा, रतिदेखिविहाल ॥ कनकपत्रनघननवस्तु, लियेयुवतिजाल ॥ ४ ॥ रामआरतिकरतमोही, करतकंचनथाल ॥ बल्लभीजनमुदितदेखत, बारिबारिनिहाल ॥ ५ ॥ १ ॥

बलभद्र देव अनंत पौढे, बलभद्र देव अनंत ॥टेक॥ देवी सुभद्रा चक्र सुदर्शन सहित कमलाकंत ॥ १ ॥ धोय मंदिर चले पंडा, पलंग बिछे गजदंत ॥ जगदीश रात बहुत गइ सोये, सकल जीव और जंत ॥ २ ॥ शयन आरति देख सुर मुनि, वंदत जय जय संत ॥ धन्य हलधर धन्य माधो, माधोदास भनंत ॥ ३ ॥२॥

बैठे सुखपाल लाल आवत महलमैजू ॥ टेक ॥ आलस भरे उनींदे सुलोचन, अति अलसाने कछु मदनगहलमैजू ॥ १ ॥ चुनि चुनि कलियां मे सेज बनाई, चोवा चंदन चरचूं चहलमैजू ॥ पौढे श्रीदशरथ राजकुँवरवर, अग्रअली जहँ दासी टहलमैजू ॥ २ ॥ ३ ॥

भवनगवनप्रभुकीजैसेजबिछी, भवनगवनप्रभुकीजै ॥ टेक ॥ परिश्रमभयेसभासबबैठे, सबकोआयसुदीजै ॥ रामदूतहनुमानपवनसुत, संगचौकिकोलीजै ॥ १ ॥ कमलमुखीकमलामगहेरे, प्रेमप्रीतिरसभीजै ॥ मनक्रमवचनतुलैप्रभुसेवै, चपलाअचलकरीजै ॥ २ ॥ मंदमंदमुसकातछबीले, बोलतवचनरसीले ॥ बालानंदकोदैहेकिंकरी, श्रीपतिऐसेसुसीले ॥ ३ ॥ ४ ॥

मुजरोमानियेमहाराज ॥ टेक ॥ सबसाधुनकीवी

न्तीप्रभु, हमरीतुमकोलाज ॥ १ ॥ प्रल्हादकीप्रतिज्ञा राखी, खंभमाहिअवाज ॥ डूबतसंगजराजराखे, ध्रुव को अविचलराज ॥ २ ॥ द्रौपदीकीलाजराखी, चीर केरेकाज ॥ बिभीषणकोलंकबक्सी, सागरबांधिपाज ॥ ३ ॥ नवरंगतकियापलंगराजे, रंगमहलअवास ॥ सूरकेप्रभुश्यामपौढे, कीजेभोगविलास ॥ ४ ॥ ५ ॥

रंगमहलगोविंदपौढेमाई, रंगमहलगोविंद ॥ टेक ॥ संगराधेशरदरजनी, उदितपूरणचंद ॥ १ ॥ चित्रबिचित्रअनेकचित्तलिये, कोटिकौतुकफंद ॥ हर्षिनिरखिविलासविलसत, दंपतिरसकंद ॥ २ ॥ चोवाचंदन अगरकुमकुमा, उठतलहरसुगंद ॥ पुष्पब्यंजनचँवर ढौरे, सजनिपरमानंद ॥ ३ ॥ ६ ॥

सुखपौढेहरिकुंवरकन्हाई ॥ टेक ॥ नौतमवसनविविधिकुसुमावलि, मैअपनेकरसेजबनाई ॥ १ ॥ नाहि नसमयसखीकाहूको, ग्वालमंडलीसंगबहुराई ॥ आस करनप्रभुमोहननागर, नागरिकोललितालेआई ॥ २ ॥ ७

तुमपौढोमैंचँवरढोरावौ ॥ टेक ॥ चरणरहौपाथितर निर्मल, यशमधुरेस्वरगावौ ॥ १ ॥ सहचरिचतुरी अबैआवतहै, दंपतिछबिनयनादेखिलावौ ॥ आसकरणप्रभुमोहननागर, येसुखश्यामसदामैपावौ ॥ २ ॥ ८ ॥

जगन्नाथअलसाने सलोने, जगन्नाथअलसाने ॥ टेक ॥ लोचन कमल श्याम शिथलाने, सुघर अधिक अरुना

ने ॥ १ ॥ श्रीभुज दक्षिण श्रीके कंध धरी प्रभु अगिरा नेजवाने ॥ औंघतझुकतचौकितकियाधरे, प्यारीहँसि मुसकाने ॥ २ ॥ अद्भुत रूप स्वरूप श्यामके, रति पति कोटिलजाने ॥ वल्लभिविहँसि सेजरचावे, दासी सुलभ बखाने ॥ ३ ॥ ९ ॥

पौढे श्रीरघुवरप्राणआधाराजू ॥ टेक ॥ जनककुवँरि वर चरण पलोटत, शारद गावत राग केदाराजू ॥ १ ॥ चुनि चुनि कलिया मैंसेज बनाई, सौंधें अरगजाचरच चहलमेंजू ॥ जन देव प्रभुको बिरिया खवावत, सीता राम नित प्रति करत विहारेजू ॥ २ ॥ १० ॥

नयनन अरुणता छाई, लालजीके नयनन अरुण ताछाई ॥ टेक ॥ छिटकि छिटकि कर पल्लव मुख पर, औढेलेत जोहाई ॥ १ ॥ सखि मिलि सेज बनाई, श्री मंदिरसुख दाई ॥ पुष्प सुवास व्यास लिये ठाढे, पौढो श्री यदुराई ॥ २ ॥ ११ ॥

सेजसुंदरि बनी हरिकी, सेज सुंदरि बनी ॥ टेक ॥ ह स्तीदंत अनूप पाया, जडित माणिक मनी ॥ १ ॥ हेम सीरो सोन पाटी, लसतनाना कनी ॥ दिव्य रेसम देव दुर्लभ, नीके नीके तनी ॥२॥ पलंग ऊपर अनूप अंबर, तुला तामैछनी ॥ विविधितापर वसन सोहै, मोहै तिय मोहनी॥३॥सेज वृन्द जडाव झब्बा, तकिया बहु अनग नी॥सेज शीतल सुभग कोमल, मानो रविशशि जनी

॥४॥भली सेज अनूप आभा, सुभद्रा छवि घनी ॥ अमित सोभा स्वामीसेज्या, जगतपति जा धनी ॥ ५ ॥ चौवाचंदनकपूरकस्तुरि, पुण्यगंधोसनी ॥ चरचिरचिरचि अखिलफूलन, वल्लभी कछु भनी ॥ ६ ॥ १२ ॥

सखिरीतूपुष्प सेज बनाय, जानकी श्रीराम राजा पौढियेप्रभुआय ॥टेक॥ कनक पलगा रत्नजडिया, अगरचंदनलाय ॥ केतकीकमलगुलाबपाडर, गहिरि चंपाजाय ॥१॥ पाननागरपरमसुंदर, लीजियेरघुराय ॥ लौंगसाहेतकपूरबीरी, लेहो रुचि उपजाय ॥ २ ॥ चरण चांपत रहो मैंनिशिदिन, रावरोयशगाय ॥ दास तुलसी शरण आये, लैहोप्रभु अपनाय ॥ ३ ॥ १३ ॥

अबप्रभुकीजियेउठिशैन॥ लटकआई चांदनीप्रभु, बहुतबीतीरैन ॥टेक॥ उठेराजसमाजतेप्रभु, सुनिसखीके बैन॥ प्राणनाथप्रवीनहैंप्रभु, जानकीसुखदैन ॥१॥१४॥

पौढे सुख सेज सीताराम॥ टेक॥ आनंद कंद अयोध्यानायक, जानकीभुजबाम ॥ १ ॥ कनक मंदिर पुष्प सेजा, कोटि उदे भये भान ॥ २ ॥ देवता सबचौकि आये, सनमुखे आये हनुमान ॥ ३ ॥ राम राजा गरभगंजन, सकल पूरण काम ॥ ४ ॥ चोवा चंदन और अरगजा कनक डबा भरि पान ॥ ५ ॥ तुलसीदास प्रभु लिये ठाडे, मेवा द्राख बदाम ॥ ६ ॥ १५ ॥

हनुमानजीकीचौकीआई, साधुभाईकपीकीचौकी

॥टेक॥बडेबडेजोधाहैंकपिदलमै, रहतमहलपरछाई ॥१॥
नाकाहूकोकरियेभरोसो, नाकाहूपतिआई ॥ २ ॥ बेगी
आवविलंबनाहिकीजै, सिखसरवनसुनिपाई ॥ ३ ॥ तुल
सीदासहनुमानजीभरोसे, सुखपौढेरघुराई ॥ ४ ॥१६॥

सोयेअवधकिशोरचलोसखि ॥टेक॥रतनजडितको
पलंगमनोहर, ताकीछबिअतिजोर ॥ १ ॥ जनकनंदिनी
चरणपलोटै, रसभरभयेघनघोर ॥ रामसखेपियादर
शनकारण, आइयेउठिबडेभोर ॥ २ ॥ १७ ॥

सैन करो नारायण देवा, चरणपलौटौ करौ हरि
सेवा ॥टेक॥ सैन करो तुम अंतर्यामी, मनसा वाचाक
रुं गुलामी ॥ १ ॥ फूलन गैंडा मुक्ता सोहा, देखत
पलंग नामदेव मोहा ॥ २ ॥ १८ ॥

पौढोपौढोसारंगपानी, नैनौमेंनींदघुलानी ॥ टेक ॥
प्रभुसुखेसुवायेआवै, हरिकोकौशल्यासमजावै ॥ लक्ष्म
णजीकोआज्ञादीजै, महलनमैआवनकीजै ॥१॥ प्रभुसी
तासखीसुकुमारी, जिनसुधहरिसेजसंवारी ॥ प्रभुधनु
षबाणकरमेलो, सेजपै ओढौदुसालो ॥ २ प्रभुधरीकै
आलससमेटो, पीतपटुकाकमरतेछोरो ॥ प्रभुकहतम
लुकबिलजानो, सोइतनीअरजमेरीमानो ॥ ३ ॥ १९ ॥

मंदिरमांहीदोउमिलिपौढे ॥ टेक ॥ दशरथसुतऔ
रजनकनंदनी, डारेगलबाहै ॥ १ ॥ हासबिनोदसुधारस
सींचत, सुखउपजोमनमाही ॥ बालअलीहरिकेचर

णपलोटै, चरणकमलबलिजाई ॥ २ ॥ २० ॥

बतियांकरतलागगयेनैन ॥ टेक ॥ दशरथसुतऔर जनकनंदिनी, रूपशीलगुणऐन ॥ १ ॥ मधुरबीनमृदंगकीधुनि, रागउठेघनचैन ॥ मधुरअलीमधुरे स्वरगावे, बोलतअमृतबैन ॥ २ ॥ २१ ॥

मंदिरपौढिये रघुराई ॥ टेक॥ काहेको पलंग काहेके पाये, काहेके बान बुनाई ॥ १ ॥ सोनेको पलंग रूपेके पाये, रेसम बान बुनाई ॥ काहेकी सेज काहेकी गेडुवा, काहेकी ओढे रजाई ॥ २ ॥ फूलनकी सेज फूलनके गेडुवा, फूलन ओढे रजाई ॥ सीताराम दोउ मिलि पौढे, गावै मीराबाई ॥ ३ ॥ २२ ॥

पौढेस्वामीद्वारकारणछोड॥टेक॥ मंदिरमंदिरझालर बाजै ॥ शंखनकीधनघोर ॥ १ ॥ गोमतीजाकेचरण पलोटे ॥ सागरकरतकीलोल ॥ २ ॥ कनकमंदिरपुष्पसेज्या ॥ कोटिउदयभयेभान ॥ ३ ॥ रुक्मिणीअपनेरंगमहलमें ॥ विनतिकरतकरजोर ॥ ४ ॥ रणछोड टीकममाधवपुरुषोतम ॥ कुंवरकल्याणकिसोर ॥ ५ ॥ चौवाचंदनऔरअरगजा ॥ कनकडबामरिपान ॥ ६ ॥ शेषसुमिरनकरतनिसदिन ॥ धरतसंकरध्यान ॥ ७ ॥ दासपीपाद्वारेठाडे ॥ दरशनदियेभगवान् ॥ ८ ॥ २३ ॥

॥ अथ हरिनारायण प्रारंभः ॥

श्री रामकृष्णगोपालदामोदर, हरिमाधोमधुसूदना

॥ कालीमरदनकंसनिकंदन, देवकीनंदनतुमसरना ॥ मच्छकच्छवाराहमहीधर, जलसायरमंगलकरना ॥ इहहरिनामजपोनिसिवासर, जन्मजन्मकेभवहरना ॥ जयगोविंदेपरमानंदे, भजुगोविंदेरामा ॥ नागरनवलकिशोरमनोहर, मूरतिसुंदरस्यामा ॥ वृन्दावनमैंरासरच्योहैं, सहस्रगोपिएककान्हा ॥ मोरमुकुटपीतांवरसोहैं, कुंडलझलकेकान्हा ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजै, गलेवैजंतिमाला ॥ जमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, मोहनमुरलीवाला ॥ वंसीवजाईमनहरिलीन्हो, लगेप्रेमकेबाना ॥ केसवरायकमलदललोचन, अगमअगोचरभवहरना ॥ श्रीपुरुषोत्तमश्रीअविनासीभक्तवत्सलअभिरामा ॥ सरजूतीरअयोध्यानगरी, चित्रकूटविश्रामा ॥ मथुरानगरीजमुनातीरथ, वृन्दावनविश्रामा ॥ उज्जैननगरीसफरातीरथ, अंगपातविश्रामा ॥ नासिकनगरीगोदावरितीरथ, पञ्चवटीविश्रामा ॥ गुरुपरतापसाधुकीसंगति, नाम्देवजीआयेहरिसरना ॥ ब्रह्माजाकोपारनपावै, गावतसनकसनंदना ॥ बोलोसीतारामलक्ष्मणभरतशत्रुहन, हनुमानहरिनमोनमः ॥ जगन्नाथबलभद्रसहोद्रा, चक्रसुदरसननमोनमः ॥ राजीवलोचनसवदुखमोचन, सेवरीनारायणनमोनमः ॥ रामनाथरामानुजस्वामी, परमभागवतनमोनमः ॥ श्रीद्वारिकामेंरणछोडविराजै, गोमतीसंगम नमो नमः ॥ उ

त्राखंडबद्रीनाथबिराजै, गरुडसिंहासननमोनमः ॥ ह
रिद्वारमैंहरिबिराजै, हरिकिपयडीनमोनमः ॥ मथुरा
मैकेसोरायबिराजै, चीरघाटहरिनमोनमः ॥ निमसा
रनीमानुजस्वामी, परमभागवतनमोनमः ॥ महाप
वित्रमाधवाचारी, विष्णुस्वामीहरिनमोनमः ॥ कहैप्र
हलादसुनोभाईसाधु, हमहुपढेसोतुमहुपढो ॥ श्रीजा
नकीजीवनपतितपावन, दशरथनंदनजयसियाराम ॥
श्रीहरिनारायणदुष्टनिवारण, परमानंदपरमपुरुषोत्तम
॥ भक्तवत्सलशियापंकजलोचन, नारायणप्रभुवासुदे
वहरे ॥ रामानंदमुकुंदमुरारी, वावनमाधौगोविन्द ॥
श्रीधरकेसोराधेकृष्ण, लक्ष्मीनायकनरसिंह ॥ अच्यु
तंकेशवंरामनारायणं, कृष्णदामोदरंवासुदेवंहरे ॥ श्री
धरंमाधवंगोपिकावल्लभं. श्रीजानकीनायकं रामचन्द्रं
हरे ॥ इति हरिनारायण समाप्त ॥

॥ अथ अस्तुति प्रारंभः ॥

श्रीरामचंद्रकृपालभजुमन, हरणभवभयदारुणं ॥ न
वकञ्जलोचनकंजमुखकर, कंजपदकंजारुणं ॥ कन्दर्पअ
गिनितअमितछबि, नवनीलनीरजसुंदरं ॥ पटपीतमान
हुतडितरुचिसुचि, नौमिजनकसुतावरं ॥ भजुदीनवन्धु
दिनेसदानव, दैत्यवंसनिकंदनं ॥ रघुनाथआनंदकंदकौस
ल, चंद्रदशरथनंदनं ॥ सिरमुकुटकुंडलतिलकचारुउ
दारअंगबिभूषणं ॥ आजानुभुजसरचापधर, संग्रामजि

तरवरदूषणं॥ भजोदिनबंधुदिनेसदानव, दलनदुष्टनिकंद
नंरघुनाथआनंदकंदकोसल चंद्रदशरथनंदनं॥इतिवदत
तुलसीदासशंकर, शेषमुनिमनरंजनं ॥ ममहृदयकंज
निवासकरु, कामादिखलदलगंजनं॥मनजाहिराचहुमि
लहिसोवर, सहजसुंदरसाँवरो ॥ करुणानिधानसुजान
सील, सनेहजानतरावरो॥ येहिभांतिगौरिअशीशसुनि
सिय, सहितहियहर्षितअली॥ तुलसीभवानीपूजिपुनिपु
नि, मुदितमनमंदिरचली॥सोरठा॥ जानिगौरिअनुकूल
सियहियहर्षनजातकहि ॥ मंजुलमंगलमूल,वामअंग
फरकनलगे ॥ सियावररामचंद्रकीजय ॥ १ ॥ हेरामापु
रुषोत्तमा नरहरेनारायणाकेशवाः ॥ गोविंदागरुडध्व
जागुणनिधे दामोदरामाधवाः ॥ हेकृष्णाकमलापते
यदुपतेसीतापतेश्रीपते ॥ वैकुंठाधिपतेचराचरपते
लक्ष्मीपतेपाहिमाम्॥ २॥ आदौरामतपोवनाधिगमनं
हत्वामृगंकाचनं ॥ वैदेहीहरणंजटायुमरणं सुग्रीवसं
भाषणम् ॥ वालीनिर्दलनंसमुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननमेतद्धिरामायणम् ॥ ३ ॥
आदौदेवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहेवर्धनम्॥ मायापूत
नजीवितापहरणंगोवर्धनोद्धारणम् ॥ कंसच्छेदनकौर
वादिहननं कुंतीसुतापालनम् ॥ एतद्भागवतंपुराणक
थितंश्रीकृष्णलीलामृतं॥ ४ ॥हेरामानुजहेजगत्त्रयगुरो
हेपुंडरीकाक्षमां ॥ हेगोपीजननाथपालनपर जानामि

नत्वांविना ॥ ५ ॥ हेगोपालकहेकृपाजलनिधे हेसिंधुक
न्यापते॥हेकंसांतकहेगजेंद्रकरुणा पारीणहेमाधव ॥ ६
कस्तूरीतिलकंललाटपटले वक्षस्थलेकौस्तुभं ॥ ना
साग्रेगजमौक्तिकं करतलेवेणुःकरेकंकणम् ॥ सर्वांगेह
रिचंदनंसुललितं कंठेचमुक्तावलिः ॥ गोपस्त्रीपरिवेष्टि
तोविजयते (श्री) गोपालचूडामणिः ॥७॥ श्रीरंगंकरसै
लमञ्जनगिरौ शेषाद्रिसिंहासनम् ॥ श्रीकूर्मंपुरुषो
त्तमंचबद्रिनारायणंनैमिशम् ॥ श्रीमद्द्वारवतीप्रयाग
मथुराऽयोध्यागयापुष्करं ॥ शालिग्रामनिवासिनो
विजयते रामानुजोयंमुनिः ॥ ८ ॥ पार्थायप्रतिबोधि
तांभगवतानारायणेनस्वयं व्यासेनग्रथितांपुराण
मुनिनामध्येमहाभारते ॥ अद्वैतामृतवर्षिणींभगवती
मष्टादशाध्यायिनी मंबत्वामनसादधामिभगवद्गी
तेभवद्वेषिणीम् ॥ ९ ॥ हेराधेवृषभानभूपतनये गांध
र्विकेराधिके हेकृष्णाननपंकजभ्रमरिकेकृष्णाप्रियेमा
धवि ॥ हेवृंदावननागरीगुणग्रहे दामोदरप्रेयसि ॥
हेहेश्रीललितादिकप्रियसखि प्राणांतिकेपाहिमाम् ॥
॥ १० ॥ विष्णोः पादअवंतिकागुणवतींमध्येचकांचीं
पुरीं ॥ नाभौद्वारवतींतथाचहृदये मायापुरींपुण्यदां ॥
ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरां नासाग्रवाराणसीं ॥ एत
त्वेदवदंतिब्रह्ममुनयोऽयोध्यापुरींमस्तके ॥ ११ ॥
इतिअस्तुति ॥

॥ अथ रामचंद्रके वसंत प्रारंभः ॥

वसंतवधावाचलोअवध, जहांसुभगसिंहासनबैठे राम ॥टेक॥ सुरनरमुनिजनसकलदेवता, विश्वामित्रविराजै ॥ बाजेविविधभांतिबहुबाजे, घनदामिनिज्योंगाजे ॥ १ ॥हाथलियेपिचकारीप्यारी, सोंधेसोभरिल्याई॥ पंचसखीमिलिकलसबनायो, भलीभांतिबनिआई ॥ ॥ २ ॥ मधुरमधुरसुरगानकरतहै, देतहोरीनकीगारी ॥ सबसखिमिलिगुलालउडावत, भरिभरिकंचनथारी ॥ ॥ ३ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, कीचमच्चीअतिभारी ॥ उडतगुलालअरूनभएअँबर, सोंधेभीनीसारी॥४॥ प्रथमपंचमीबैठिसिंहासन, कौतुहलसबकीजे ॥ अग्रदासकीयहीविनती, भक्तिदानमोहिदीजे ॥ ५ ॥ १ ॥

वसंतवधावाचलोअयोध्या, जहांरतनसिंहासनबैठे राम ॥ टेक॥ अतिपवित्रउदारनाम, लावण्यकलेवरकोटिकाम ॥ रघुवंससरोवरहंसचारि, जहांहरिबिहरतरूपधारी ॥१॥ सजीकनककलसजब आंबमोर, वनितावृंदजहांनवलकिसोर ॥ ग्रहग्रहरमनीकरिकरिसिंगार, जहाँकंठबिलोकमुक्ताहार ॥ २ ॥ बाजेमृदंगडफझांझताल, जहांगनगंधर्वगावेगुणरसाल ॥ अवतारसिरोमणिधर्मधाम, कहेतुलसीदासप्रभुसीताराम ॥ ३ ॥ २ ॥

खेलतवसंतकोसलकुमार, राजीवनैनसुखमाअपार ॥ टेक ॥ लियेभरतलखनरिपुसूदनसंग, छबिसुभगनिर

खिमोह्योअनंग ॥ गोदनिभरिलीन्हेलालगुलाल, करमे पिचकारीतिलकभाल॥ १ ॥ काननकुंडलचपलनैन, हालबोलैसबमीठेबैन ॥ सजीबरनबरनबाजेअनूप, नर नारीथकितभईदेखिरूप ॥२॥ सिरललतापागजरकसी लाल, कलंगीजडावतापररसाल ॥ प्रभुबनिठनिआये सिंहपौरि, तबसखामिलैसबदौरिदौरि ॥३॥ खेलमच्यौ कछुकहीनजाय, अवनिअकासरंगरह्योछाय ॥ पिचकारीजीततीतछूटेअपार, भीजहिपुकारहिदेहिडारी ॥ ॥ ४ ॥ मुखमोरेछोडेबहुनचाय, मुसकातमनहिमनरामराय ॥ सूरवरसखासुमनकरिजैजैकार, चिरंजीवहोकोसलकुमार ॥५॥ मुखनिरखिअसीसेसकलमात, आनंदभरीबिहरोहेतात ॥ रससिंधुबढ्योनसमातगात, बलिहारीरघुवरदासजात ॥ ६ ॥ ३ ॥

खेलतवसंतराजाधिराज,देखतनभकौतुकसुरसमाज॥ ॥टेक॥सोहैसखाअनुजरघुनाथसाथ,झोलीनअबीर पिचकारीहाथ॥बाजहिंमृदंगडफतालबेनु, छिरकहिंसुगंधभरैमलयरेनु।१। उतजुवतिजुथजानकिकेसंग, पहिरेपटभूषणसरसरंग॥लियेछरीबेतसोंधेविभाग,चांचरिझूमकगवहींसरसराग।२।चढिखरनिविदषनस्वांगसाजि,करैकूटनिपटगईलाजभाजि ॥ नरनारिपरसपरगारि देत, सुनिहसतरामभाइनसमेत ॥ ४ ॥ नूपुरकिंकिनिधूनि अतिसुहाय, ललनागनजवजेहिधरहिधाई ॥ लोचनआंज

फगुवामनाय, छांडहिनचायहाहाकराय ॥ ३ ॥ बरखत प्रसूनवरविबुधवृंद, जयजयदिनकरकुलकुमुदचंद ॥ ब्रह्मादिप्रसंसतअवधबास, गावतकलकीरतितुलसीदास ॥ ५ ॥ ४ ॥

रसहोरीखेलैंश्रीजानराय, सबकुवरि झरोखैंझांके आय ॥टेक॥ महादेवबजावेसाजीमृदंग, ऋषिनारदनाचैलियेउपंग ॥ताललियेगावैश्रीजैदेव, जहांपीपाजीअरुनामदेव ॥१॥ रइदासबजावेवीनाविराग, आशाटोडीवसंतराग ॥ सनकादिकखेलैसबहीझार, जहांनिगमउचारैजैजैकार ॥ २ ॥ कुंमकुंमकेसरसेभरेमांट, जहांसेनभक्तदेवेवांटवांट ॥ पिचकारीश्रीबलिभद्रहाथ, प्रहलादविभीषणविदुरसाथ ॥ ३ ॥ उडतगुलालसबअरुणआस, जहांअनंतानंदध्रुवकृष्णदास ॥ अग्रकीलचरचैअबीर जहां, अंबरीषसुकदेवधीरतहां ॥ ४ ॥ रंकाबंकाअरुकालूकेवलदास, जहांदासदेवकरवहुप्रकास ॥ खोजीनरसीकेस्वामीआसपास, जहांप्रेमसहितगावैमीरांदास ॥ ॥ ५ ॥ श्रीरामानंदकथेजहांब्रह्मज्ञान, तहांकबीराचलावैशब्दवान ॥ नीमानंदअरुहैंविष्णुस्याम, जहांमाधवाचारीकरेंवहुराम ॥ ६ ॥ होरिखेलतमनबढ्योरंग, जहांअनंतकोटिलियेसाधुसंग ॥ अबकीबेरोमेरोराखोमान, जननाभाकोदीजेभक्तिदान ॥ ७ ॥ ५ ॥

॥ रागवसंत ॥ वंदोरघुपतिकरुणानिधान, जातेछुटिजायभवभेदज्ञान ॥ टेक ॥ रघुवंसकुमुदसुखप्रद

सेवहिंपदपंकजअजमहेस ॥ अतिप्रवलमोहतममा रतंड, अज्ञानदहनपावकप्रचंड ॥ १ ॥ रागादि सर्पगणपन्नागारि, कंदर्पनागमृगपतिमुरारि ॥ अभिमान सिंधुकोभजउदार, सुररंजनभंजनभूमिभार ॥ २ ॥ भवजलधिपोतचरणारबिंद, जानकीरवनआनंदकंद ॥ निजभक्तिहृदयपाथोजभृंग, लावण्यवपुषअगणितअ नंग ॥ ३ ॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल, निहकामकामधु कगोदयाल ॥ त्रैलोकतिलकगणहनराम, भजतुलसी दासविश्रामधाम ॥ ४ ॥ ६ ॥

जानकीहोरीखेलनआई ॥ टेक ॥ श्रुतिकिरतीउरमि लामांडवी, संगसहेलीसुहाई ॥ केसररंगभरेघटकंचन, चंदनसुगंधमिलाई ॥ प्रीतमकूंछिरकनआई ॥ १ ॥ इतरघुनाथसंगसखालीये, भरतशत्रुहनभाई ॥ करकं कनकंचनपिचकारी, लक्ष्मणकरसोचलाई ॥ किसो रकोसयनबुझाई ॥ २ ॥ धाइगहीलक्ष्मणकोलीने, पी तांबरपटछोरी ॥ फागुवालीयेमनभावतअंजन, अं जनहृग अंजवाई ॥ बहुबिधिबिनतिकराई ॥ ३ ॥ अ रसपरसपरमोदभयोहै, प्रेमप्रीतिउरछाई ॥ ऊंचिअ टारीऊंचेझरोखा, जननीफगुवादेवाई ॥ हिरामानिमाल लुटाई ॥ ४ ॥ सिवसनकादिकनारदसारद, वेदपुराण नगाई ॥ सुरनरमुनिजनकौतुकदेखे, ऐसोछविउर छाई ॥ रामदासबलिजाई ॥ ५ ॥ ७ ॥

रागसारंग ॥ अवधपुरीकीनारि, सबैंमिलिखेलनआई

होरीहो ॥ नखशिखरूपअनूपकिशोरि, बनीहैमनोहर जोरीहो ॥टेक॥ फागुनफागसुहायोआयो,सहितझुमक डावोलेहो ॥ कुलवधुलाजकाजनहिमाने, असनवसन पटखोलेहो ॥१॥ एकमोरचंगउपंगवेनुडफएककरताल वजावैहो ॥ एकएकसोंछयलछबीली, अतिअद्भुतसुरगा वैहो ॥ २ ॥ मीठीध्वनिसुनिआयेरघुवर, जगमंगलहित कारीहो ॥ तननवघनपीतांबरभूषण, भूषितअवधबिहा रीहो ॥ ३ ॥ लछमनभरतबुलायोशत्रुहन, जनकसुतासु धिपाईहो ॥ श्रुतिकीरतिउरमिलामांडवी, बनिठनिये सबआईहो ॥४॥ इंदुवदनिसबकंठकोकिला, वयससमान मृगनयनीहो ॥ गजगामिनिभामिनिसीतासंग, गान करतापिकवैनीहो ॥ ५ ॥ भरिभरिलईहै कनकपिचका री, छविसोंछैलछविलीहो ॥ मानोहेमकोटतेउतरी, धा रारंगरंगीलीहो ॥ ६ ॥ बूकासुरंगगुलालउडावत, अबि रभरेभरिझोरीहो ॥ अरसपरसमिलिभरतभरावत, गिनतीनकाहुकियोरीहो ॥ ७ ॥ रघुवरघाईधरेवैदेही, सहचरीसंगअपारीहो ॥ दामिनिसीफिरिगइचहुंदिशि, पकरेराजकुमारीहो ॥ ८ ॥ करसोंकरजबगह्योलडैति, काजरअखियाअँजाईहो ॥ मुखमीडयोनीकेकरिनाग रि, बन्योमनोरथभारीहो ॥ ९ ॥ फगुवागोदभराइपरम रुचि, पटभूषणपहिराईहो ॥ तनमनप्राणकरतनोछा वर, बांटतवहुतबधाईहो ॥ १० ॥ सरयुजलक्रीडत

सियारघुवर, सन्तजनन्हसुखदाईहो ॥ तुलसीदासजा वैबलिहारी, जनकसुतारघुराईहो ॥ ११ ॥ ८ ॥ इतिराम चंद्रकेवसंतसमाप्त ॥

॥ अथ कृष्णचंद्रके वसंत प्रारम्भः ॥

रागवसंत ॥ प्रथमसमाजआजवृन्दावन, विहरतला लविहारी ॥ पंचमीनवलवसंतवधावन, उमगिचलीवृ जनारी ॥ टेक ॥ कंचनथारलियेवृजसुंदरि, मध्यवृ षभानदुलारी ॥ फलदलजवनऊत्तममञ्जरी, कनकक लससुभकारी ॥ १ ॥ गावतगीतवजावतवाजे, मैनसै नउनहारी ॥ दरसपरसमनमोदवढावत, राजतछवि अतिभारी ॥ २ ॥ चोवाचंदनअगरकुंमकुंमा, भरिके सरपिचकारी ॥ छिरकतफिरतछविलीगातन, रंगअ नूपअपारी ॥ ३ ॥ विपिनविलासहासरसवरषत, उत प्रीतमइतप्यारी ॥ हितहरिवंसनिरखियहसोभा, अंखि याटरतनटारी ॥ ४ ॥ १ ॥

वसंतबधावाचलोवृजकीनारि, सखीनंदपौरिठाड़ेमु रारि ॥ टेक ॥ राधाचंद्रभागाचंद्रावलि, भामाललित सुसीले ॥ संज्यावलीकनकघटासिरधरि, आंवमोरज वलीले ॥ १ ॥ नयेनयेचीरकुसुंबीसारी, वसंतअभरन साजियेहो ॥ नयेनयेकेलिकरतमोहनसंग, नवललाल पियभजियेहो ॥२॥ चोवाचंदनवूकाबंदन, उडतगुलाल अबीरे ॥ खेलेफागभाग्यबडगोपी, छिरकतस्यामश

रीरे ॥३॥ तालमृदंगढोलडफमहुबर, बीनाजंत्ररसाला ॥ कृष्णके प्रभुगिरिधरनागर, हांसिकरायगोपाला॥४॥२॥

सावरेरंगडारिहोडारी ॥ टेक ॥ सहजसुभावजाति जमुनाकूं, पहिरिजरकसीसारी ॥ बहुरेठाढेकदमकीछै या, करहिकनकपिचकारी॥लालमेरेसनमुखडारी ॥ १ सासुबुरीघरनणदीहठीली, झुकिझुकिदेमोहिगारी ॥ सेरनआसुचुवाबेसखिरी, उनकीरीतिहैन्यारी ॥ मोहि डरलागतभारी ॥ २ ॥ अबिरगुलालमेरेमुखपरडारत, तनकनसकेविचारी, नवलदासअचरजहैभारी, आप हीदीठबीहारी ॥ लालचितवनिपरबारी ॥ ३ ॥ ३ ॥

सावरेसेंकहियोमोरी ॥ टेक ॥ सिसनवायचरणग हिलीजो, करिविनतीकरजोरी ॥ येसीचुककहापरिमो सो, प्रीतिपाछलीतोरी॥सुरतिनहिलीनीमोरी ॥ १ ॥भू षणवसनसबैहमत्यागे, खानपानबिसऱ्योरी ॥ विभुत लगाइजोगिनहोयबैठी, तेरोहिध्यानधरोरी ॥ बेगचलि आवोकीसोरी ॥ २ ॥ निसदिनव्याकुलफिरतराधिका, विरहव्यथाउनघेरी ॥ स्यामतुमैढुंढतकुंजनमै, सीसज टाकरजोरी ॥ कहैहरिहेरेहोरी ॥ ३ ॥ रोमरोममदछाय रह्योहै, मधुमेरिबैरपरोरी ॥ मोरकरेजाजरायदीयोरी, अबमेकैसेकरौरी ॥ धीरजनहिजातधरोरी ॥४॥ सूरदा सप्रभुकोजायकहियो, अवधिआसरहिथोरी ॥ प्राणदा नदीजेनंदनंदन, गावतकीरतितोरी ॥ सुरततुमकरियो

बहोरी ॥ ५ ॥ ४ ॥ इति कृष्णचंद्रके वसंत समाप्त ॥

॥ अथ प्रह्लादके वसंत प्रारंभः ॥

नहीछांडुबावारामनाम, मेरे औरपढनसोकौनकाम ॥ टेक ॥ प्रहलादपधारेपढनसाल, जहांसंगसखालियेवहुतबाल ॥ १ ॥ कहापढावेपांडेआलजाल, मेरीपाटीमें लिखदेश्रीगोपाल ॥ २॥ तबपांडेमूरखकहैजाइ, प्रहलादवंधावोवेगिआय ॥ ३ ॥ रामकहनेकीछोडबान, तोहि अबहिछुडाउमेरोकह्योमान ॥ ४ ॥ कहारेडरावेपांडे बारबार, मोहिजलथलगिरिसौलियोउबार ॥ ५ ॥ मारिडारिकेमोकोदेहुजारि, हरिनामनछोड़एहीरार ॥ ॥ ६ ॥ काढिखडगकोप्योरिसाई, तेरोराखनहारोमोहि बताय ॥ ७ ॥ तबखंभफारिप्रगटेमुरारी, हिरनाकुसमारे नखबिदार ॥ ८ ॥ १ ॥ इतिप्रहलादकेवसंतसमाप्त ॥

॥ अथ रामचंद्रकी होरी प्रारंभः ॥

रागधनाश्री॥खेलैनगरअयोध्याफाग, रघुवरजानकी ॥ कस्तुरीकोतिलकबिराजै, मैवलिवलिमुखपानकी ॥ ॥ टेक ॥ इततेआईजनकनंदनी, कीन्हेसर्वश्रृंगार॥ उततेंआयेलाडलेहो, दशरथराजकुमार ॥ १ ॥ सीताजी सैनदईसखियनको, रघुवरपकरेधाय ॥ कैतुमबोलदेउलक्ष्मणको, फगुवादेहोमँगाय ॥ २ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, बाजतखंजरीगानकी ॥ तुलसीदासप्रभुतुम्हारेमिलनको, मोहिगतिनहिआनकी ॥ ३ ॥ १ ॥

॥ रागसारंग ॥ रघुवरखेलतहोरी ॥ संगलियेजनक
किशोरी ॥ टेक ॥ अनुजसहितपिचकारीगरगहे, ठा
ढेअवधबिहारी ॥ उतेसखीसमागमलीन्हे, निकसीज
नकदुलारी ॥१॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, अरुबाजत
करतारी ॥ चोवाचंदनअगरकुमकुमा, भरिकेसरपिच
कारी ॥२॥ अंगनाआईधाइदुहुलीन्हे, खेलनकोहुलसा
ने ॥ लाजभाजिदुरगईभवनमें, शंकानकोउमाने ॥ ३ ॥
मनहुंदुरदमहेअतिगर्वित, एडभरेअडराने ॥ छबिकेभरे
छबिलेदोउ, छकेरहतनहिंछाने ॥ ४ ॥ लियेलुकाईअरग
जालालन, सियाशीशपरढोरी ॥ तारीदेहंसिकहेपियारे
होहोहोहोहोरी ॥ ५ ॥ मृगमदमलयकपूरसुवाकी, कञ्च
नघटवहुघोरे ॥ मानखेलमेंरहतजुकेसे, भनतपरस्पर
होरे ॥ ६ ॥ एकसखीसियासेबोली, मंत्रजुअद्भुत
ठान्यो ॥ कछुललचाईलालकेढिगसो, भरतआपमेंआ
न्यो ॥ ७॥ अवहमकहेंसोईतुमकरिहो, कह्योजुहमरो
मानो ॥ तुमअग्रजजेसेतेसेकर, हमरेनिकटजुआ
नो ॥ ८ ॥ भरतचतुरचित्तचोरलालको, कछुयेकरु
चिउपजाई ॥ वेरंगकोलियेनारिरंगीली, झुमकीपियापै
आई ॥ ९ ॥ धाईउमिलागह्योपीतपट, अंजनआंखिअं
जाई ॥ रारिकरिमुखमण्डनकीन्हो जनकसुतासुस
काई ॥ १० ॥ सियानयनकीसैनदईजब, लक्ष्मणकोप
करायो ॥ आरियेसवहीसैमहाढीठहै, करोसखिमनभा

यो ॥ ११ ॥ शत्रुजीतछलसोंगहिआन्यो, वाकेढिंगबैठा
यो ॥ राजकुंवरिदोरीधरोभरतनैं, दावभलोवनिआयो
॥ १२॥ चहुंभाइनकोअबमुखमांडो, सखिरीपकरिनचा
वो॥कैतुमउनसोंकहोलडैती, संगहमारेगावो॥१३॥कैतु
मजायकहोमहारानी, तुमकोआनछोडावौ ॥ केहाहा
करोपांयपरोसियाके, मन्त्रजूभलोवतावौ ॥ १४ ॥ मा
नोघनदामिनीदमके, नवललालढिंगडोले ॥ छाडतन
हींछबिलीपियाको, कामिनिकरतकिलोले ॥१५॥ अव
यहबानिकवनतनकाहूं, परेआनवशिभोले ॥ करतक
टाक्षपरस्परयुवती, हंसिहंसिप्रतिमावोले ॥ १६ ॥ बीच
कियोकौसल्यारानी, फागलोगकोदियावै ॥ भूषणव
सनमंगाईभवनसों, सकलवधूपहिरावै ॥ १७ ॥ श्रीनरह
रिवपुधारिअवनिपर, अवधपुरीचलिआवै ॥ चिरंजीवहु
कौशल्यानंदन, विष्णुदासगुणगावै ॥ १८ ॥ २ ॥

रागसारङ्ग ॥ खेलतरामअवधपुरहोरी, जोडीपरम
सुहाईहो ॥ इतहिंसखिनमध्यसियाबिराजै, उतहिंस
खासुखदाईहो ॥ टेक ॥ बाजतढोलदुंदुभीभेरी, महुअरि
अरुसहनाईहो ॥ गावतगीतपुनीतफगुवाके, वहुविधि
सबहरषाईहो ॥ १ ॥ गजगामिनिभामिनिदामिनिसी,
होहोकरिकरिधाईहो ॥ उतदौरेरघुवीरलक्ष्मण, भरतश
त्रुहनभाईहो ॥ २ ॥ अबीरगुलालकुमकुमाभरिभरि, पो
टनिमारमचाईहो ॥ इतहिजयतिजयजनकललीकी,

उतदशरथसुतधाईहो ॥ ३ ॥ उडतगुलाललालभयेअँबर, धुंधचहूंदिशिछाईहो ॥ मृगमदकेसरभरिभरिछोडत, यंत्रनयुक्तिलगाईहो ॥ ४ ॥ एकसखीपीछेतेलक्ष्मण, गहेअचानकजाईहो ॥ दौरीबालतालदैहंसिके, गहिलालनकोल्याईहो ॥ ५ ॥ अबसबभयोभावतोमनको, राखौंगीउरलपटाईहो ॥ अबकरिहैंहममनकोभायो, ह्यांनचलचतुराईहो ॥ ६ ॥ तुमजिनजानोहमछुटिजैहैं, छांडौंगीबहुतरिझाईहो ॥ व्यंगवचनसुनिगयेकूदिकै, सबैरहीखिसियाईहो ॥ ७ ॥ जानकीवल्लभफगुवादीन्हो, मेवासरसमिठाईहो ॥ चलीकिशोरीभरिभरिझोरी, संतदासबलिजाईहो ॥ ८ ॥

॥रागसारंग॥ खेलतरामरघुपुरीरुचिसो, बहुभांतिनसुखदाईहो ॥ इतहैजानकीयुवतियूथमे, उतसोहैसंगभाईहो ॥ टेक ॥ चँवरछत्रवरध्वजापताका, रचनारुचिरचनाईहो ॥ सकलफागकोसाजसज्योहै, कबहुंनिकटनजाईहो॥१॥ बाजेबजनलगेचहुंदिशिते, गावतगाइसुहाईहो ॥ मानोद्विरदछूटेमदमाते, धरतपरस्परधाईहो ॥ २ ॥ केसरघोरीकुमकुमाभरिभरि, छुटतछबिपिचकारीहो ॥ प्रेरितपवनमनहुंपावसऋतु, घनवरषतयेकवारीहो ॥३॥ मृगमदमलयअबीरसखासब, अरगनकीचमचाईहो ॥ उमंगचलेअरगजापनारे, वीथिननदीबहाई

हो ॥ ४ ॥ केसररंगसोभरेहेचहवचा, धूपधूमछविछाई हो ॥ सोधेंलहरमहोदधिमानो, पुरजनप्रीतिवढाईहो ॥ ५ ॥ चोवाचंदनछलबलकरिकै, प्रीतमसुखलपटाई हो ॥ राजिवनयनलेतजवबदलो, तवसीयदेतदुहाईहो ॥ ६ ॥ श्रुतिकीरतिऊर्मिलामांडवि, रघुवरघेरेजाईहो ॥ हाहाकियेतबैभलछुडिहो, कैसियाशीशनवाईहो ॥ ७ ॥ भरतभरावतकुवरिकुंवरपै, होलेदेकिलकाईहो ॥ मानोघनध्वनिव्यापिरहीहै, उठतमहलमझाईहो ॥ ८ ॥ खंभखंभप्रतिबिंवरामको, जहाँतहाँदेत दिखाईहो ॥ कुसधुजकुंवरिभरतभ्रंतिसों, हांसिकरतखिसियाईहो ॥९॥ पटाकेपकरेजायशत्रुहन, काजरआंखिअँजवाईहो ॥ करतसकलभामिनिमनभायो, वंधुतोलेहुंछुडाईहो ॥ १० ॥ पकरोतोवीरनमेंपक्षी, मिसकरिहाथदिवाईहो ॥ खेलनलगेउडिगयेचिरैया, हरिहंसितालबजाईहो ॥ ११ ॥ जालरंध्रमुखनिरखतजननी, आनंदउरनसमाईहो ॥ तनमनप्राणकरतनौछावरि, बाटतबहुतबधाईहो ॥ १२ ॥ रंगरंगेडोलतरायअंगनमें, जनकसुतारघुराईहो ॥ रीझिसुमनवर्षतसुरसंघट, दिव्यदुंदुभीबजाइहो ॥ १३ ॥ बीचाकियोकौशल्यारानी, फगुवागोदभराईहो ॥ सीतारामविनोदफागुपर, अग्रअलीबलिजाईहो ॥ १४ ॥ ४ ॥

॥ रागकाफी ॥ खेलतरघुवररंगभरे, होहोमेरेप्यारेअ५

धपुरीकेप्राण ॥ घरघरतोरणध्वजापताका, मुक्ताबंधनवार ॥ इंदुवदनिमृगशावकनयनी, गावतगीतरसाल ॥ १ ॥ बाजेवहुविधिसाजबजावैं, मधुरमधुरसुरगान ॥ देखनआयेदेवतहाँवहु, चढिचढिव्योमविमान ॥२॥ उतरघुवरभूषणबहुभूषित, पीतांबरछबिदेत ॥ लछमनभरतशत्रुहनसुंदर, बोलिसखासबलेत ॥ ३ ॥ नखशिखकियोश्रृंगारलाडली, चलीहैसहचरिओट ॥ श्रुतिकीरतिउर्मिलामाँडवी, बनीछबिलीजोट ॥ ४ ॥ चोवाचंदनऔरकुमकुमा, अरगजामाटभराये ॥ वूकाचंदनकुमकुमकेशर, कुंवरिलियेअपनाये ॥ ५ ॥ भरिभरिलईकनकपिचकारी, अपनेअपनेहाथ ॥ मानोछुटीघनधाराचहुंदिशि, रंग्योसियाकोसाथ ॥ ६ ॥ रघुवरभयोंजबप्राणपियारी, बहुविधिरंगकेसार ॥ मानोसांवरगिरितेउतरी, रंगरंगीलीधार ॥७॥ वारिबहुविधिलईसामग्री, दुरिअनुहारीओर ॥ उडेगुलालछयेअरुणाई, मानहूंउगेउभोर ॥ ८ ॥ खेलतमगनभयेनरनारी, देतअरगजाडारी ॥ जहांतहांछुटचलेपनारे, मानोपावसवारी ॥ ९ ॥ करसोकरजवगहोलडैती, काजरआंखिअंजाई ॥ जोयेरघुवरतुम्हरेप्यारेहै, अबक्योंनलेहुछुडाई ॥ १० ॥ अहिवेली भाजनलियोरघुवर, दियोसहचरिहाथ ॥ जिनिछीयोयोयोकहेलडैती, छलकीन्होरघुनाथ ॥११॥ सजलअमीहंसिआंजेलोचन, हंसि

कराईदीन ॥ खंजनखरेकहातेनिकसै, जावकभीनेमी
न ॥ १२ ॥ सुखसागरपियनागरिझुलत, वादेउरंगअ
पार ॥ गहोअंचरागोरीकहैहरिसें, फगुवादेहुकुंवार
॥ १३ ॥ फगुवादियेमंगाईसवन्हको, अंगवनिताअनु
कूल ॥ जयजयसियारामधुनिउचरैं, सुरगणवर्षैफूल
॥१४॥ इन्द्रादिकयौं कहैपरस्पर, धन्यअयोध्यावास॥
क्योंनकियोविधनाहमनिजपुर, कहुंरघुवरकेदास
॥ १५ ॥ सुंदरदासचलेगुणगावत, सरजुकरिस्नान ॥ म
णिभूषणअवधेशयुगलपर, वारदेतहैदान ॥ १६ ॥ ५ ॥
॥ रागकाफी ॥ रघुवंशीसुंदरअतिवनेहो॥ वनेहोदश
रथराजकुमार ॥ टेक ॥ सरयूतीरअयोध्यानगरी, अधि
कराजबडभाग ॥ सुरनरमुनिअरुदेवलेतिसो, खेलन
आयेहैंफाग ॥ १ ॥ कनकखंभमिलिडोलरच्योहै,
झुलतसीताराम ॥ मानोसिंधुकिउठततरंगे, वर्षतकु
सुमविमान ॥ २ ॥ रामलक्ष्मणभरतशत्रुहन, राजतकुं
वरकिशोर ॥ खेलतफिरतसवैरंगभीने, इन्द्रखोकरजो
र ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, अलकभ्रमरभ्र
मभूल ॥ मृगमदतिलकमालमुक्ताहल, पीतवसनअनु
कूल ॥ ४ ॥ ढोलझांझसहनाईबाजे, यंत्रपखावजताल ।
मृदंगभेरिऔररायगिडगडी, विचविचवेणुरसाल ॥ ५॥
चोवाचंदनऔरअरगजा, केसरवहुतसुवास ॥ रंगभ
रखेलतरघुवंसी, मनोवर्षतभादोमास ॥ ६ ॥ सव

सखियनमिलिरच्योउपायो, लक्ष्मणपकरेधाय ॥ आं
जेनयनकपोलकरनगहै, लियोहैधनुषछिनाय ॥ ७ ॥
रघुवररीझिदेतपीतांबर, मेवाबहुतमंगाय ॥ वर्णवर्णप
हिरायपाटंबर, आनंदउरनसमाय ॥ ८ ॥ धन्यधन्यअ
योध्यानगरी, धन्यपुरवासीलोग ॥ लघुहरिदासधन्य
दशरथसुत, बारौकोटिइंद्रभोग ॥ ९ ॥ ६ ॥

॥ रागकाफी ॥ अविनासीदुलहकबमिलिहैहो, मेरेप्या
रेमिलिहैतोजानेनदेहुं ॥ टेक ॥ जलउपजीजलसेनहीने
हा, रटतपियासपियास ॥ मैविरहेनठाढीमगजोऊं, रा
समिलनकीआस ॥१॥ दिवसनभूखरैनिनहींनिद्रा, गृह
अंगनानसुहाय ॥ सेजरियावैरनभइमोको, जागतरैनि
विहाय ॥२॥ छोडोगृहनेहजोडोतुम, सोभईचरणलवली
न ॥ तलफितलफिमेप्रेमकीफासी, जैसेहोंजलविनमीन
॥ ३ ॥ हमतोतुम्हारीदासीहोमोहन, तुमहमरेसिरता
ज ॥ दीनदयालुदयाकरमाधो, करलीजोमनकाज ४॥
केहमप्राणतजतहूंहोमोहन, कैअपनीकरलेहु ॥ दासक
बीरविरहअतिबाढ्यो, हमहिकेदरसनदेहु ॥ ५ ॥ ७ ॥ इ०

॥ अथ कृष्णचंद्रकी होरी प्रारम्भः ॥

॥रागगुजरी॥ श्रीराधेनवलकिशोरडोलेगूजरी ॥ क
नकमथनियांशिरधरिबावा, नंदजीकेद्वारखरी ॥ टेक ॥
हरियेकुसुमकोघाघरो, ओढनकोचुनरी ॥ अंगियाब
निहैकटावकिमानो, फूलीचम्पकली ॥ १ ॥ अनवट

बिछुवाघुंघरुहो, जेहरअजबबनी ॥ चालचलेमदहस्ति किमानो, योवनगर्भभरी ॥ २ ॥ हारहियेहारेकीचौकी, बनीखंगुवारिढुलारी ॥ बिंदाबन्योहैजडावकोमानों, मोतियनमांगभरी ॥ ३ ॥ विद्यातपमेवर्णोकहांलौ, अंग अंगसुघरी ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ रागसारंग ॥ वाघंबरओढेसांवरोहोहो, मेरीआलि इनमैयोगिकोलक्षणकौन ॥ टेक ॥ शंखशब्दध्वनिसु निजिततितते, जुरिआईवृजनारि ॥ वदनविलोकि कुंवरराधेको, बैठेहैआसनमारि ॥ १ ॥ कौनदिशासू आयेहोरावर, कहांतेरिमयसाजाई ॥ आपनमोनग हेमनमोहन, दक्षिणदियोहैबताई ॥ २ ॥ हँसतबूझत वृषभानुनन्दनी, रावरउत्तरदेहु ॥ कारणकवनभेषतप सीको, वनतजिआयेहोगेहु ॥ ३ ॥ झोलीनपात्रविभू तिनबटवा, मुद्रानाहिनकान ॥ योगीनाहिंकोउबडोहै वियोगी, भोगीहैपरमनिधान ॥ ४ ॥ सिंगीननादन डँडकमंडलु, सिरचंदनकीखोरि ॥ मेरेमनअनुमानस खीरी, कंतविसारेहैगोरि ॥ ५ ॥ चुटकीविभूतिदईहै राधेकुं, चलेहैवाघंबरझार ॥ तनकचितवनमैमनह रिलीन्हो, गोहनलगिहैकुँवार ॥ ६ ॥ नगरनगर यो गीडगरमे, निसिदिनफिरतउदास ॥ नयनचकोर भयेराधेके, हरिमिलनकीआस ॥ ७ ॥ तीनलोकब्र ह्मांडखंडमे, घटघटरहेहैसमाय ॥ सोयोगीवृषभानु

कुंवरिके, ठाढेहैपौरजूआय ॥ ८ ॥ तनकतनककरिमन हरिलीन्हो, निरखीनयनकीकोर ॥ श्रीजगन्नाथजीवन धनमाधो, प्रीतिबढीदोउओर ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ रागसारंग ॥ मोहनखेलतहोरी, श्रीवृषभानुगोप कीपोरी ॥ टेक ॥ वंशीवटयमुनातटकुंजन, तरठाढेब नवारी ॥ इतसखियनकोमंडलजोरे, उतश्रीवृषभानुदु लारी ॥ होड़ाहोड़ीहोतपरस्पर, देतआंनंदकीगारी ॥ उ डतगुलालकुमकुमाकेसर, करकंचनपिचकारी ॥ १ ॥ बाजतवेणुबांसुरीकीगर, अरुमहुअरमुंरचंग ॥ अमृत कुंडलिसरमंडलमें, सबतेंसरसउपंग ॥ बाजततालमृ दंगझांझडफ, सुरकेउठततरंग ॥ नाचतहंसतकरतकौ तुहल, केसरछिरकतरंग ॥ २ ॥ तबहिश्यामसबसखा बुलाये, सबकोमतोसुनायो ॥ भैयारेतुमचौकसरहियो, मतकोऊदेहुगहायो ॥ जोवेतुमकोपकरिपावहिं, करि हैमनकोभायो ॥ तातेसावधानहोयरहियो, हमतुमको समुझायो ॥ ३ ॥ सबैकिशोरीराधागोरी, मनमैमतोजू कीन्हो ॥ सखीएकबोलायआपनी, भेषग्वालकोदी न्हो ॥ ताकोमिलनचलेमनमोहन, सखानकाहुचीन्हो ॥ एकनबातलगायलालको, पाछेसुगहिलीन्हो ॥ ४ ॥ आईसमिट सकल व्रजवनिता, मोहनपकरेजबही ॥ हमसांगतहैंयोंविधिनापै, दावपरेगोकबहीं ॥ जबतुम चीरहरेजुहमारे, हाहाखायहमसबहीं ॥ अबहमवसन

छीनसबलैहैं, हाहाखाइहोतुमहीं ॥ ५ ॥ एकसखीअ
चानकआई, मोरपिच्छगहिलीनो ॥ एकसखीपीछेतें
आई, पीतांबरगहिछीनो ॥ एकनेआंखआंजिमुखमां
ड़े, ऊपरगुलचादीनो ॥ मानतकौनफागमैंप्रभुता, मन
मानौसोकीनो ॥ ६ ॥ एकसखिदूरभईठाढी, घूंघटपट
मुखढांके ॥ एकसखीमधुरेसुरगावै, सुखसोंगारिनभा
के ॥ एकसखीहरिकोमुखनिरखै, तनुकीदशानताके ॥
गिरिधरचरित्रकोऊनहिंजाने, सबहुनकीदिशिताके ॥
॥ ७ ॥ एककहैवाकोबदनउघारो, हमहुंदर्शनपावै ॥
श्रीमुखकमलनयनमेरेमधुकर, तनकीतपतबुझावै ॥ ए
ककहैयाकिवेणीगुंथो, रुचिकरमांगवनावै ॥ ८ ॥ एक
कहैबोलोबलभद्रको वे तुमभलेछुडावै ॥ सखाएकतुमघ
रकोपठावो, यशुमतीहुंलेआवै ॥ जायनहोछलबलकर
छूटै, गहोनछूटनपावै ॥ पायनपरोकुंवरिराधेके, वोतुम्हें
भलेछुडावै ॥ ९ ॥ दूरहितेबलआवतदेखो, सबैसखि
उठजाई ॥ छलबलकरिजैसे अरुतैसे, उनहूंकोगहिला
ई ॥ आनकियेएकठोरठाढे, हरिहलधरदोउभाई ॥ वा
हुकिआंखिआंजिमुखमांडो, राधेजुशयनबताई ॥ १० ॥
हंसिहंसिकहतमोहनप्रीतमसों, मानोसुखकीभीजे ॥
छांडोहमैंजाईघरअपने, पीतांबरमेरोदीजे ॥ करजोरे
हरिहलधरजूठाढे, आज्ञाहमकोदीजे ॥ जोइजोइ
इच्छाहोइतुम्हारी, सोइसोइफगुवालीजे ॥ ११ ॥

तबदेखीब्रह्माशिवनारद, मनहीमनपछताई ॥ बडो
भाग्यहैब्रजवनितनको, हममुखकह्योनजाई ॥ जाका
रणहमध्यानधरतहैं, ध्यानहुंआवतनाई ॥ सोदेखेब्र
ज युवतिनआगे, जोरेठाढेवाई ॥ १२ ॥ तबैश्यामसब
सखाबुलाये, फगुवाबहुतमंगायो ॥ जोजाकेजैसोमन
भायो, सोइसोइताहिपहिरायो ॥ जगन्नाथरायचिर
जीवहुजोडी, सबकोभलोमनायो ॥ बाढ्योवंशनंदबा
बाको, माधोदासगुणगायो ॥ १३ ॥ ३ ॥

रागसारंग ॥ मेरेनयननिमेजिनमारोपिचकारी ॥
झीनेबसनअंगलपटाने, भीजरहीतनुसारी ॥ टेक ॥ खं
जनमीनमरालदधिसुत, मानोकनककुंवारी ॥ मृगरि
पुमगरपपैयाकोकिल, मनोविधिसांचेढारी ॥ १ ॥ ले
दर्पणकुंवरीकरअपने, मोतियनमांगसमारी ॥ तीन
लोककोरूपराधिका, रसवसकियोहैबिहारी ॥ २ ॥
केसरसोंमोरिअंगियासानी, सोंधेभीनीसारी ॥ कनक
कीनकवेसरभीनी, मोतियनकीलरन्यारी ॥ ३ ॥ केस
रघोरिमंगायलाडली, नवललालपरडारी ॥ गोरेसेबद
नभयेनंदनंदन, हसतत्रियादेतारी ॥ ४ ॥ मृगमदघो
रभरेहरिश्यामा, अंगअंगभयेकारी ॥ अरसपरसदो
ऊलालललाडली, रंगउपज्योरसभारी ॥ ५ ॥ ललनाधा
यगहेमनमोहन, नयनशयनदेप्यारी ॥ फगुवादेहोत
कैभलछुटिहो, कहैवृषभानुदुलारी ॥ ६ ॥ फगुवाब

मंगायलाडले हँसिहँसिदेईगिरिधारी ॥ यहसुखसिंधु कहांलौवर्णौं, लीलामंगलकारी ॥७॥ धन्यधन्यभाग्य भूब्रजबनिता, जासंगरमतमुरारी ॥ लाललाडलीकीछवि ऊपर, अग्रदासबलिहारी ॥ ८ ॥ ४ ॥

॥ रागसारंग ॥ सरहोरीखेलेसांवरोहो, अहोमेरीआ लीतटयमुनाकेतीर ॥ टेक ॥ लालगगनभये लालमग नभयेवृक्षलाल ॥ फलपातलालहिलालबनीब्रज, बनि तालालहिलालकोसाथ ॥ १ ॥ कंचनकेरकटोराकेसर, घसिललितालियेहाथ ॥ अंचलदेवृषभानुनंदनी, छिर कतहरिजीकोगात ॥ २ ॥ भरिपिचकारीसुघरसुदामा, देहैकृष्णजीकेओर ॥ चितवतचोटकरतमनमोहन, भीजगईमृगमदखोर ॥ ३ ॥ इतभयेग्वालउतैब्रजब निता, गयेहैनंददरबार ॥ बांसनमारपरतअतिभारी, जीतेहैनंदकुमार ॥ ४ ॥ विद्यापतिप्रभुफगुवादीन्हो, मे वासरसमंगाय ॥ देआशीशचलीब्रजबनिता, चिरंजी वोनंदलाल ॥ ५ ॥ ५ ॥ इतिकृष्णचंद्रकीहोरीसमाप्त ॥

॥ शेषाचलहोरी ॥ शेषाचलधामसुहावनोहो, होमे रेप्यारेजहांखेलतनिकटफाग ॥टेक॥ गिरिपर्वतकीकहाछ बिवर्णौं, विकटहिबैठेआय ॥ पुष्करणीजीनिकटबिरा जै, कोटिकतीरथमाझ ॥ १ ॥ कंचनमंडपछायरह्योहै, सन्मुखहैहनुमान ॥ इजैविजैदोउपौरियाबिराजै, भीर भईघनघोर ॥ २ ॥ गरुडवाहनअसवारीनिकसी, म

ईहैनगाराकीबंब ॥ रत्नजडितशिरमुकुटबिराजै, शोभावर्णीनजाय ॥ ३ ॥ मारिफलांगरथऊपरबैठे, इंद्रर ह्योघनघोर ॥ ब्रह्मादिकस्तुतिकरतहै, धन्यपुरवासी लोग ॥४॥ केसरियोबागोजूबन्योहै, लक्ष्मीरहैलवलाय ॥दासहाथीरामकोदरसभयोहै, चितवतसंतआय॥५॥१

इति शेषाचल होरी संपूर्ण.

॥गिरिहोरी॥ नवरंगीकेसरहमबोइहै ॥ अहोमेरीआली, अपने बालमजीकेकाज ॥ टेक ॥ गिरिपर्वतपरकेसरबोई, मिरगाचुगिचुगिजाय ॥ क्योंरेमृगातुंमानतनाहीं, मारौंगीधनुषचढाय ॥ १ ॥ आसपासहमकेसरबोई, बिचबिचबोयोहैगुलाब वाकोवाससुवासउडतहै, ऊथूंगीनवसरहार ॥ २ ॥ कनककटोराकेसरघोरे, औरयमुनाजिकोनीर ॥ कृष्णजिवनजीनोवागोअरु, रंगोंगी राधेजीकोचीर ॥ ३ ॥ वृंदावनवंशीबजीमोहन, ध्वनि सुनिरह्योनजाय ॥ बेगिमिलोहरिवंशकेस्वामी, रूठे कोलेहुमनाय ॥ ४ ॥ १ ॥

गिरिलालबिहारीहोरीखेलैहो ॥ अहोमेरीआलीखेलतसंतसमाज ॥ टेक ॥ निकटमहोदधिरतनसिंहासन, रथपरश्रीजगन्नाथ ॥ पुष्पविमानचढेबलदाऊ, देवीसहोद्राहैसाथ ॥१॥ दोनामरुवाअधिकबिराजै, पहिरेपुष्पअपार ॥ सखिनसहितलक्ष्मीसंगराजै, पहिरेनौतमचीर ॥ ॥२॥ जगजीवनखेलनहिपधारे, इंद्रदमनदरबार ॥ गोप

रूपसौंधेरंगभीने, चलेहैंभरिभरिथार ॥ ३ ॥ महिमाअधिकजातनहिबरणी, सबदेवनकेदेव ॥ आयेशरणदासजनमाधो, प्रभुअपनोकरिलेव ॥४॥२ ॥ इति गिरि०॥

॥ अथरामडोल प्रारंभः ॥

॥ राग धनाश्री ॥ बैठेडोलविराजे, आजुश्रीरघुवरजानकी ॥ नरअरुनारिसबैमिलिगावत, रागरागनीतानकी ॥ टेक ॥ पुरटजडितपटनीपटसोहै, रचनारचीहैवितानकी झलकिरहीकहिजातनझलरी, झुमकनिगजमुकतानकी ॥१॥ सखीसखिमिलीझुमकिझुलावत, बीरीखवावतपानकी ॥ सियपियपरहँसिचोटचलावत, लोचनकोयलबानकी ॥ २ ॥ अबीरगुलालअरगजासों, छबिछकिहैभानुकुलभानुकी ॥ युगलविलोकिवदनविधुसुंदर, गतिगइमदनगुमानकी ॥ ३ ॥ १ ॥

॥रागधनाश्री॥ खेलेंअरसपरसमिलिफाग, नागरनागरी ॥ दशरथसुतऔरजनकनंदनी, इनकोपरमसुहागरी॥टेक॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, भरिभरिकेसरगागरी ॥ पियप्यारीप्यारीपियऊपर, बाढ्योअतिअनुरागरी ॥ १ ॥ पकरिलालकेगाललपेटे, धोयेछुटेतनदागरी॥ होहोबोलेहोरीखेलै, तोयोंलाजकोतागरी ॥ २ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, मच्योधनाश्रीरागरी ॥ दोउमिलिफगुवारीझदतहै, लघुमोहनकोभागरी ॥ ३ ॥ २ ॥

॥राग सारंग ॥ झुलतडोलत्तअवधबिहारी ॥ अरुण

वसनअलबेलीबनिता, गावतकोकिलकारी ॥ टेक ॥
सबहिसखीदामिनिज्यौंदमकहिं, पहिरेअनूपमसारी
॥ अपनोअपनोमाटधरेसब, मृगमदकेसरिगारी ॥ १ ॥
आपआपकेझूमकेचालत, देतपरस्परतारी ॥ लाजका
हीनिकाहूंकिनमानत, प्रेमभरीमतवारी ॥ २ ॥ झूकिच
लतहैंतटसरयूके, गावतरागधमारी ॥ अलबेलीहट
क्योनहिंमानत, सियानिरखिरतिहारी ॥ ३ ॥ औरख्या
लकोकोगनिसकै, अनंगरतिदोउहारी ॥ कहींनपरत
कछुछबिराघोकी, शोभतरूपअपारी ॥ ४ ॥ फूलनहीकी
पागबिराजै, फूलनपेचसंवारी ॥ फूलनकीमालाबिराजै,
फूलीफिरतपुरनारी ॥ ५ ॥ फूलहिफूलबनेपुलिननमें, फू
लनकीपिचकारी ॥ फूलनहीकीअलकगुहाई, फूलनमां
गसंवारी ॥ ६ ॥ फूलनहीकीअंगीयाबिराजै, फूलनही
कीसारी ॥ फूलनहीकोबन्योघांघरो, फूलनछरीसंवा
री ॥ ७ ॥ फूलनहीकोअटारकटारी, फूलनफोलसंवा
री ॥ फूलनहीकोबन्योझरोखा, फूलनहीकीबारी ॥ ८ ॥
फूलनहीकीरौंसबनाई, फूलनकीचिकडारी ॥ सकल
फूलकीछातिबनाई, अरुणफूलडंडकारी ॥ ९ ॥ पीतफू
लकीझांकीराखी, फूलकुशुम्भाजारी ॥ नीलफूलकेपड
दाडारे, झूलतिजनकदुलारी ॥ १० ॥ फूलनहीकीभूमि
बिराजै, फूललताटकारी ॥ फूलनहीकेखंभबिराजै,
फूलनतनीसंवारी ॥ ११ ॥ फूलीनारिअद्भुतअतिगावहिं,

मानौमनोजलजाई ॥ दशरथनंदनजनकदुलारी, झूल तहैभुजजोरी ॥ १२ ॥ घनदामिनिद्युतिराजतदोऊ, क हिनपरतछबिभोरी ॥ अनंगलज्योरघुवरछबिदेखत, सियानिरखिरतिहारी ॥ १३ ॥ निशिदिनसुखब्रह्मादिक बांछित, संशयरहतसुरनारी ॥ विनपुरवासीकोउनहिं पावै, अवधआनसुखकारी ॥ १४ ॥ सीतारामअभयप दमोको,दीजेभक्तिसुभारी॥ निशिदिनध्यानधरौंहृदय बिच, तुलसीछबिपरवारी ॥ १५ ॥ इति रामडो०

॥ अथ कृष्णडोल प्रारंभः ॥

॥ रागधनाश्री ॥चलोसखीदेखनजईये, डोलसोहाव नो ॥ ऋतुवसंतफूलेपतिपतनी, गृहगृहआनंदवधाव नो ॥ टेक ॥ नववृन्दावननववंशीवट, बेलिसघनवन फूले ॥ धीरसमीरकुञ्जजहंयमुना, देखिमहामुनिभूले ॥१॥ तेहिमधडोलरच्योविश्वकर्मा, अद्भुतचित्रवनाई ॥ वर्णौकहाएकमुखरसना, शेषपेवरणिनजाई ॥ २ ॥ कन कखम्भनगजडितपिरोजा, लगेहैलालमणिमोती ॥ ही रानगनबनीचित्रामन, शशिउडुगणसमज्योती ॥ ३ ॥ रेसमडोरीलखमखतुलन्हि, नवललालल्पटावै ॥ झूलत श्रीराधेआनंदघन, गौतमनारिझुलावै ॥ ४ ॥ लहंगाला लकुसुंभीअंगिया, पहरिवसन्तीसारी॥चंद्रवदनिमृगलो चनिराधे, श्रीवृषभानुदुलारी ॥५॥ चोवाचंदनअरगजा कुमकुमा,अबिरगुलालउडावै ॥ खेलतव्रजवनितामोह

न, संगअंबरपुष्पवरषावे ॥६॥ तालमृदंगझांझडफबाजै, रंगरह्योरसभारी ॥ लाललाडिलीकीछबिऊपर, जनकेशवबलिहारी ॥ ७ ॥ १ ॥ इति कृष्णडोल समाप्त ॥

॥ अथअन्यविशेष होरी प्रारंभः ॥

दशरथकेद्वारमचीहोरी ॥ टेक ॥ आयेबशिष्टसंग द्विजसोहै ॥ केसरतिलकअबीरझोरी ॥ १ ॥ पुत्रनसहित उठेराजादशरथ ॥ सीसनायकहैकरजोरी ॥ २ ॥ हिलिमिलिफागपरसपरखेलै ॥ दानदीयेभयेमतिभोरी ॥३॥ ब्रह्माखेलैमहादेवखेलै ॥ सुरपतिखेलैरंगबोरी ॥४॥ कौतुकदेखिपतंगभुलाने ॥ सारदकीभईमतिभोरी ॥ ५ ॥ तुलसीदासआसारघुवरके ॥ चितवनमोररामकीओरी ॥ ६ ॥ १ ॥

होरीखेलतरामअवधवासी ॥ टेक ॥ कितसेआये रामरंगीले ॥ कितसेआईसियसुखरासी ॥ १ ॥ केतनेवरषकेरामरंगीले ॥ केतनेवरषकीसियसुखरासी ॥ २ ॥ वारहबरषकेरामरंगीले ॥ सातबरसकीसिय सुखरासी ॥ ३ ॥ उडतगुलाललालभयेबादर ॥ रंग वरसतकेसरखासी ॥ ४ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर ॥ अचलवसेतोरिअविनासी ॥ ५ ॥ २ ॥

होरीखेलतरामअवधखोरी ॥ टेक ॥ लखनरामदोउभरतशत्रुहन ॥ अबिरगुलालभरेझोरी ॥ १ ॥ चारोबरणघरनकीयुवती ॥ सकलजुवामदबोरी ॥ २ ॥ चलि

भलिबिधिफागुनकीमाहिमा ॥ कुसलबडीसबकेओरी ॥ ३ ॥ बाजैबिबिधिबजावतगावत ॥ होतसोरचहुंदिसि ओरी ॥४॥ मनमहंमदनरतिसैनापति ॥ कीन्होचोपन थोरिथोरी ॥५॥ चंदनकेसरमृगमदभाजन ॥ लीयेभरेस ब्रकरघोरी ॥६॥ लाजकाजमरजादलोककी ॥ सकलत जीयहमदबोरी ॥७॥ इतरघुबंसीछैलछबीले ॥ उतअल बेलीबेलोरी ॥ ८॥ खेलहिफागअबीरदोउदिसिते, ॥ बा ढ्योआनंदभोरी ॥९॥ अबीरगुलाललगाईभलीविधि ॥ रंगनतेअंगनबोरी ॥ १० ॥ रामसेवकएकरामपरसपर॥ धरतकरतबरजोरी ॥ ११ ॥ ३ ॥

होरिखेलतरामअवधपुरमै ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटम कराक्रुतकुंडल ॥ मोतियनमालबनीउरमै ॥ १ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ ॥ हनुमतनाचैडफकरमै ॥ ॥ २ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर ॥ यहजोरीबसो मेरेउरमै ॥ ३ ॥ ४ ॥

सरजुतटआजुमचीहोरी ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभ रतशत्रुहन ॥ खेलतहैजोरीजोरी ॥१॥ अबीरगुलालकुंम कुंमाघोरी ॥ केसरकीचमचीरोरी ॥२॥ क्रीटमुकुटमक राक्रुतकुंडल ॥ सीरसोहैसुंदरसारी ॥ ३ ॥ सुंदरस्यामरा मछबिराजत ॥ पीतांबरकटिकेसररोरी ॥ ४ ॥ उडतगु लाललालभयेबादर ॥ धनुषबानकोरंगबोरी ॥५॥ हिलि मिलिफागपरसपरखेलै ॥ अबीरगुलालभरेझोरी ॥ ६ ॥

रामसेवकरसरसिकसिरोमणि ॥ चितवतसोस्याम लगोरी ॥ ७ ॥ ५ ॥

होरीरचिरहिछैलछबीलेकी ॥ टेक ॥ रोकेघाटबाटज लऔरी ॥ मिलिमिलिजूथरंगीलेकी ॥ १ ॥ सरजूतीरनीर भरिवेको ॥ जनिजैहौरंगभीनेकी ॥ २ ॥ मिलिमिलि जूथअटारीनाचही ॥ चढिदेखहिफागरसीलेकी ॥ ३ ॥ कुंमकुंममाटहाथसरजुरज ॥ दैदैमारिअबीरोकी ॥ ४ ॥ रामसेवकरतिरामचरणसीया ॥ अद्भुतख्यालफनो सोकी ॥ ५ ॥ ६ ॥

दशरथकेलालखेलैहोरी ॥ टेक ॥ कौनकेहाथझांझ डफबाजै ॥ कौनकेहाथमंजीरजोरी ॥ १ ॥ लक्ष्मणहाथझांझ डफबाजै ॥ शत्रुहनहाथमंजीरजोरी ॥ २ ॥ कौनकेहाथ कनकपिचकारी ॥ कौनकेहाथअबीरझोरी ॥ ३ ॥ रामजी केहाथकनकपिचकारी ॥ भरतकेहाथअबीरझोरी ॥ ४ ॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलैं ॥ आनंदउमंगकौनकोरी ॥ ५ ॥ तुलसीदासछबिदेखिमगनभये ॥ चिरंजीरहो जुगलजोरी ॥ ६ ॥ ७ ॥

होरीखेलतफिरतअवधवासी ॥ टेक ॥ बाजततालमृ दंगझांझडफ ॥ नौबतमैचोपघोररासी ॥ १ ॥ अतरअबी रभरेकेसरघट ॥ फेंकतगुलालकरेहांसी ॥ २ ॥ सुररंज नभंजनमहिमारा ॥ करतचरित्रलागेहांसी ॥ ३ ॥ रघु वरलक्ष्मणभरतशत्रुहन ॥ अंसनसहितसिंधुरासी ॥

॥ ४ ॥ तुलसीदासछबिदेखिमगनभये ॥ देखतपरेप्रेम फांसी ॥ ५ ॥ ८ ॥

तुमकोहरिहोरीखेलावों ॥ टेक ॥ आजुतुमैधरिकै रघुनंदन ॥ मुखभरिरंगलगावों ॥ १ ॥ छीनिलेऊंकर सेपिचकारी ॥ तबसियसखियकहावों ॥ २ ॥ अनुज सहितधरिरामलषनको ॥ सुंदररूपबनावों ॥ ३ ॥ ले जैहौंमिथिलेसललीपहँ ॥ सियाजीकेपयनपरावों ॥४॥ तुलसीदासहँसिलखनकहैप्रभु ॥ सबसखियनधरि ल्यावौ ॥ ५ ॥ छिनिलेउंपटअंगबिभूषण ॥ रंगनसे नहवावौ ॥ ६ ॥ ९ ॥

दशरथसुतचारौखेलेहोरी ॥ टेक ॥ उडतगुलालला लभयेबादर ॥ घटाउमगिआयेदौरी ॥ १ ॥ कौनकेहा थरंगपिचकारी ॥ कौनकेहाथअबीरझोरी ॥ २ ॥ लक्ष्म णहाथरंगपिचकारी ॥ रघुवरहाथअबीरझोरी ॥ ३ ॥ इतरघुनाथसखासंगलीन्हे ॥ जनकसुतासखियनओरी ॥ ४ ॥ नौतमनारीअयोध्यापुरकी ॥ सुभगचालउ मगनथोरी ॥ ५ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा ॥ मटुकी मैकेसरघोरी ॥ ६ ॥ सीतासयनदियोसखियनको ॥ झुं डझुंडउठिधाईसगरी ॥ ७ ॥ फगुआदेवमंगायलालजु ॥ बहुमेवाभरोदेइझोरी ॥ ८ ॥ तुलसीदासछबिदेखिमग नभये ॥ गौरस्यामसुंदरजोरी ॥ ९ ॥ १० ॥

खेलतरसियासंगहोरी ॥ टेक ॥ पिचकारीछोडती

छबिछलसो ॥ चितवतचंद्रसखीचहुओरी ॥ १ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, केसरमाटभरिधरिघोरी ॥ २ ॥ पीयपियारीप्यारेकेऊपर ॥ भरतपरसपरकुंवराकिसोरी ॥ ३ ॥ तवमहारानीअतिअकुलानी ॥ साजलिये सनमुखदौरी ॥ ४ ॥ देतनिकंदसंकनहीमानत ॥ दीयोहैदावयोबरजोरी ॥ ५ ॥ इतहिरामउतसियासुंदरी॥ नयननसैनकरतइकसोरी ॥ ६ ॥ अतिआनंदनिरखियहसोभा ॥ तुलसीदाससरनागततोरी ॥ ७ ॥ ११ ॥

होरीखेलतरामलखनप्यारे ॥ टेक ॥ रविशशिकोटिबदनकीसोभा ॥ कोटिकामऊपरवारे ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ सोभास्यामरामप्यारे ॥ २ ॥ पीतांबरपगनूपुरबाजे ॥ चरणकमलमुनिमनधारे ॥ ३ ॥ तीनलोकअरुचौदमुवनमे ॥ रामनाममहिमाभारे ॥ ४ ॥ तुलसीदासकहैकरजोरी ॥ रामनामचितधरुप्यारे ॥ ५ ॥ १२ ॥

होरीखेलतअवधनगरमै ॥ टेक ॥ संगसखालीन्हेरघुबंसी ॥ सियसमाजमहलनमै ॥ १ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ ॥ अरुबाजेमहलनमै ॥ २ ॥ रंगभरेठाढेरघुबंसी ॥ सियठाढिआंगनमै ॥ ३ ॥ अबीरगुलालकिधूममचीहै ॥ पिचकारीहाथनमै ॥ ४ ॥ सखियनमिलिपीतांबरपकरे ॥ गारीलगाइमुखनमै ॥ ५ ॥ जगजीवनप्रभुकीछबिनिरखै ॥ यहजोरीमेरेमनमै ॥ ६ ॥ १३ ॥

होरीखेलोंगीदसरथलालसें ॥टेक॥ मेरेफागफागुरी तु आईलीपहुंगीउरमालासें ॥ १ ॥ केसरघोरिअंगछिर कूंगी ॥ मारौंगीलालगुलालनसें ॥ २ ॥ रामसेवक गहिबांहलेउंगी ॥ फगुवाकौसलपालनसें ॥ ३ ॥ १४ ॥

रामखेलतअनोखीहोरी ॥ टेक ॥ अविरगुलालआ खिनमैंमसलत ॥ बहियांपकरिझकझोरी ॥ १ ॥ ह मैंलाजतुमैंलाजनआवति ॥ करतफिरतवरजोरी ॥ २ ॥ अवधगलिनमैंछयलछकेफिरे ॥ सखियांस कलरंगबोरी ॥ ३ ॥ तुलसीदासप्रभुरूपनिरखिके ॥ डारतहैंतृणतोरी ॥ ४ ॥ १५ ॥

होरीखेलनरामलखणआये ॥ टेक ॥ लगेवसंतमौं रिगयेआमा ॥ चंपाकेसररंगछाये ॥ १ ॥ रघुवरल क्ष्मणभरतशत्रुहन ॥ संगसखाहनुमतआये ॥ २ ॥ फेंटगुलालहाथपिचकारी ॥ केसरकलसभरेआये ॥ ३ ॥ हिलिमिलिफागपरसपरखेलै ॥ रामलखनस खियनभाये ॥ ४ ॥ तुलसीदासछबिदेखिमगनभये ॥ चरणकमलपरचितलाये ॥ ५ ॥ १६ ॥

मिथिलापुरआजुमचीहोरी ॥ टेक ॥ इतकौसलप तिउतमिथिलापति ॥ खेलतहैंजोरीजोरी ॥ १ ॥ फे टगुलालहाथपिचकारी ॥ अविरगुलालभरीझोरी ॥ २ ॥ रघुबरलक्ष्मणभरतशत्रुहन ॥ झुंडझुंडउठि धाईगोरी ॥ ३ ॥ उडतगुलाललालभयेबादर ॥ की

चमचीखोरीखोरी ॥ ४ ॥ हिलिमिलिफागपरसपरखेलत ॥ फेंकतहैझोरीझोरी ॥ ५ ॥ तुलसीदासछबिदेखिमगनभये ॥ चितवनमोररामओरी ॥ ६ ॥ १७ ॥

अंजनीसुतहरिमनभाये ॥ टेक ॥ लाललंगोटबनैअतिसुन्दर ॥ तेलसिंदूरचढाये ॥ १ ॥ एकहाथगदाद्दुजेद्रोणगिरी ॥ भरताजिबाणचलाये ॥ २ ॥ लागेबानगिरेधरनिमे ॥ रामनामसुखआये ॥ ३ ॥ अचरजभयेभरतजीकेमनमे ॥ मैकोइदूतपड़ाये ॥ ४ ॥ कौनकेपुत्रकौनकेपायक ॥ कौनहिलेनपठाये ॥ ५ ॥ अंजनीकेपुत्ररामजीकेपायक ॥ लक्ष्मणलेनपठाये ॥ ६ ॥ कौनराजाकेकरतचाकरी ॥ कहँवांसेतुमआये ॥ ७ ॥ रामराजाकेकरतचाकरी ॥ लंकापुरीसेआये ॥ ८ ॥ आवोपवनसुतबैठबानपर ॥ बानबिमानबनाये ॥ ९ ॥ परवतसहितपवनसुतबैठे ॥ बानअकासचढाये ॥ १० ॥ तुलसीदासहनुमानजीभरोसे ॥ हरिअपनेमुखगाये ॥ ११ ॥ १८ ॥

श्रीठाकुरकलंगीआपुधरी ॥ टेक ॥ कवनमासमेंबनीकलंगी ॥ कवनमासहरिसीसधरी ॥ १ ॥ माघमासमेंबनीकलंगी ॥ फागुनमेंहरिसीसधरी ॥ २ ॥ काहेकीतेरिबनीकलंगी ॥ काहेरतनजडावजडी ॥ ३ ॥ मोरपंखकीबनीकलंगी ॥ हीरारतनजडावजडी ॥ ४ ॥ सूरदासछबिदेखिमगनभये ॥ हरिकेचरणपरसीसधरी ॥ ५ ॥ १९ ॥

गतिहोइगीरामगुणगायेसे ॥ टेक ॥ अवधपुरीपरिकरमाकरिके ॥ सरजूगंगनहायेसे ॥ १ ॥ जगन्नाथपरिकरमादेके ॥ सेतगंगाजूनहायेसे ॥ २ ॥ रामेस्वरपरिकरमादेके ॥ धनुषतीरथनहायेसे ॥ ३ ॥ द्वारकाधीसपरिकरमादेके ॥ गोमतीगंगनहायेसे ॥ ४ ॥ वद्रीनाथपरिकरमादेके ॥ तपतकुण्डनहायेसे ॥ ५ ॥ वृन्दावनपरिकरमादेके ॥ जमुनागंगनहायेसे ॥ ६ ॥ माधोदासआसरघुबरके॥हरिकेचरणचितलायेसे ॥ ७॥ २० ॥

उठिमिलिलेभरतरामआये ॥ टेक ॥ मकुनाहाथीजरदअंबारी ॥ ऊपरचँवरढुरतआये ॥ १ ॥ पीतांवरकीपरेबिछौना ॥ तापरचरणधरतआये ॥ २ ॥ रामजीहूआयेलक्ष्मणआये ॥ सखियनसंगसीताआये ॥ ३ ॥ भुजापसारीमिलेचारौभैया ॥ नयननीरझरतआये ॥ ॥ ४ ॥ तुलसीदासआसरघुवरके ॥ चरणकमलपरचितलाये ॥ ५ ॥ २१ ॥

शिवमठपरसोहैलालध्वजा ॥ टेक ॥ कौनकेसोहैहरिपिरिछुरिया ॥ कौनकेसोहैभस्मगोला ॥ १ ॥ गौरिकेसोहैहरिपिरीछुरिया ॥ सिवकेसोहैभस्मगोला ॥ २ ॥ कौनसिखरपरगौरिविराजै ॥ कौनसिखरपरबंभोला ॥ ३ ॥ उतरसिखरपरगौरिबिराजै ॥ दक्षिणसिखरपरबंभोला ॥ ४ ॥ मीरांकेप्रभुगिरिधरनागर ॥ हरिकेचरणपरचितमोरा ॥ ५ ॥ २२ ॥

शिवकेमनमाहिबसीकाशी ॥ टेक ॥ आधीकाशी ब्राह्मणवनिया ॥ आधीकाशीसन्यासी ॥ १ ॥ काहे करणकोब्राह्मणवनिया ॥ काहेकरणकोसन्यासी ॥२॥ नेमधरमकोब्राह्मणवनिया ॥ तपकरनेकोसन्यासी ॥ ॥ ३ ॥ कौनसिखरपरगौरिबिराजे ॥ कौनसिखरप रअविनासी ॥ ४ ॥ उत्तरसिखरपरगौरिबिराजे ॥ दक्षिणसिखरपरअविनासी ॥ ५ ॥ मीरांकेप्रभुगि रिधरनागर ॥ हरिकेचरणपरमैदासी ॥ ६ ॥ २३ ॥

प्रभुखेलतफागमचीहोरी ॥ टेक ॥ माघउत्तरिऋतु फागुनआये ॥ घरघरश्यामकरतफेरी ॥ १ ॥ फेंट गुलालहाथपिचकारी ॥ केसरिकेसुरंगबोरी ॥ २ ॥ ब्रह्माखेलैमहादेवखेले ॥ सुरपतिखेलैबरजोरी ॥ ३ ॥ सूरदासछबिदेखिमगनभये ॥ हरिकेचरणपरलगिडो री ॥ ४ ॥ २४ ॥

वेदरदीबांसुरीवाजी ॥ टेक ॥ राधेजीसोवैअपनेमह लमें ॥ कछुसोवैकछुजागै ॥१॥ कोनदिसामै बाजीबांसु री ॥ कौनदिसामैगाजै ॥ २ ॥ पूरवदिसामैबाजीबांसुरी ॥ पश्चिमदिसामैगाजै ॥ ३ ॥ इतमथुराउतगोकुलनग री ॥ बीचमैजमुनागाजै ॥ ४ ॥ वृंदावनमैरासरच्योहै॥ राधेमोहननाचै ॥ ५ ॥ सूरस्यामप्रभुतुमरेमिलनकों ॥ चरणकमलचितराचै ॥ ६ ॥ २५ ॥

मेरेआयोरेस्यामनटवरनिके ॥ टेक ॥ गादोबास

ढोलदमकावो ॥ चदिगयोबांसपकरीकै ॥ १ ॥ पीतांब रकीकरीधोती ॥ लालकछनीकछीकै ॥ २ ॥ हाथमैथार गुलालफैंटमे ॥ मारतमुट्ठीभरिकै ॥३॥ अबीरगुलालकि धूममचीहै ॥ कैसररंगवरषके ॥ ४ ॥ सूरस्यामहरिफगु वाखेलै ॥ दोउदोउमुठसवनपै ॥ ५ ॥ २६ ॥

रसियाबन्योमदनमोहनप्यारो ॥ टेक ॥ फेटगुला लहाथपिचकारी ॥ जुवतीजनमोहनवारो ॥ १ ॥ पीतां बरकीकछनीकाछै ॥ क्रीटमुकुटकुंडलवारो ॥ २ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ ॥ बीनाउपंगचंगन्यारो ॥३॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि ॥ तनमनधन तोपे वारो ॥ ४ ॥ २७ ॥

उडिजारेभँवरतोहिमारौंगी ॥ टेक ॥ उडिभँवरावा किछतियनबैठो ॥ तेरेकैसेबोझसह्मारौंगी ॥ १ ॥ एक भँवरसैंलगनहमारी ॥ दुजेकैसेऔरनिहारौंगी ॥ २ ॥ दयासखीधनिभँवरहमारी ॥ कोटिभँवरतोपैवारौं गी ॥ ३ ॥ २८ ॥

नेकठाढैरहोरसियारंगडारौ ॥ टेक ॥ अबिरगुला लमलौमुखतेरे ॥ गालनपरगुलचामारौ ॥ १ ॥ चोवा चंदनऔरअरगजा ॥ घिसिघिसिकेतोपेडारौ ॥ २ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि ॥ तनमनधन तोपेवा रौ ॥ ३ ॥ २९ ॥

बृजमैहरिहोरीमचाई ॥ टेक ॥ बाजततालमृदंगझां

खडफ ॥ संजीरासहनाई ॥ १ ॥ उड़तगुलालललभ येबादल ॥ रहतसकलब्रजछाई ॥ २ ॥ इतसेआईसु घडराधिका ॥ उतसेकुंवरकन्हाई ॥ ३ ॥ हिलिमिलि फागपरस्परखेलत ॥ सोभाबरणीनजाई ॥ ४ ॥ राधे जिसयनदईसखियनको ॥ झुंडझुंडउठिधाई ॥ ५ ॥ लपटिझपटिगईस्यामसुंदरको ॥ बरवसपकडिलेआ ई ॥ ६ ॥ छीनिलियेमुखमुरलिपीतांबर ॥ सीरसेचुन रीओढाई ॥ ७ ॥ बैंदीभालनयनबिचकाजर ॥ नक बेसरपहिराई ॥ ८ ॥ मुसुकतहैमुखमोरिमोरिके ॥ क हांगईचतुराई ॥ ९ ॥ कहांगयेतेरेनंदबाबाजु ॥ कहां जसोमतिमाई ॥ १० ॥ फगुवालियेबिनजानदैहो ॥ करिहोकोटिउपाई ॥ ११ ॥ लैहोचुकाईकसरसबदि नकी ॥ तुमहोचोरकन्हाई ॥ १२ ॥ सूरदासप्रभुचतु रकन्हैया ॥ स्यामनेराधेमनाई ॥ १३ ॥ ३० ॥

सांवरोकहांहोरिमचाई ॥ टेक ॥ मैजमुनाजलभरन जातरही ॥ मिलिगयेकंवरकन्हाई ॥ १ ॥ सनमुखआई गुलालनडारो ॥ बंसीकीचोरीलगाई ॥ २ ॥ पायपकरि ग्वालिनीजनबोली ॥ गुलच्याच्यारीलगाई ॥ ३ ॥ कंसरा यपकरिमंगावो ॥ तोवृषभानकीजाई ॥ ४ ॥ हरिमुस क्यायेचलेमनमोहन ॥ छातियनहाथचलाई ॥ ५ ॥ नंदरा यजीकेकान्हकहतहो ॥ जिनकेकुंवरकन्हाई ॥ गिरिधर ऐसीहोरिखिलाइ ॥ छूटेआनंदअघाई ॥ ६ ॥ ३१ ॥

वृन्दावनस्यामरचीहोरी ॥टेक॥बाजततालमृदङ्गझां झडफ॥बरषतरंगउडतरोरी ॥ १ ॥ कितसेंआयेकुंव रकन्हैया ॥कितसेंआईराधागोरी ॥२॥ वृन्दावनसेंकुंव रकन्हैया ॥बरसानेसेंराधागोरी ॥ ३ ॥ कोनकेहाथकन कपिचकारी ॥ कोनकेहाथअबीरझोरी ॥ ४ ॥ कृष्णके हाथकनकपिचकारी ॥ राधेकेहाथअबीरझोरी ॥ ५ ॥ अबीरगुलालकी धूममचीहै ॥ फेंकतहै भरभरझोरी ॥ ६ ॥ सूरदासछबिदेखिमगनभये ॥ राधेस्यामजुग लजोरी ॥ ७ ॥ ३२ ॥

डफबाजोछैलमतवारेको ॥ टेक ॥ डफकेधूमसेंसब घरहाल्यो ॥ हाल्योखम्मतेबारेको ॥ १ ॥ बाजुबंदखहे लसोहै ॥ गलेसोहैखगवारेको ॥ २ ॥ मैबरजोजनीजा हुअकेली ॥ ठाढोछैलनंदबारेको ॥ ३ ॥ सूरदासप्रभु मरेमिलनको ॥ तनमनधनचहुंवारेको ॥ ४ ॥ ३३ ॥

कान्हाधरेंमुकुटखेलैहोरी ॥ टेक ॥ कितसेआये कुंवरकन्हैया ॥ कितसेआईराधेगोरी ॥ १ ॥ इतसेआ येकुंवरकन्हैया ॥ उतसेआईराधेगोरी ॥ २ ॥ कितने बरसकेकुंवरकन्हैया ॥ कितनेबरसराधागोरी ॥ ३ ॥ बारबरसकेकुंवरकन्हैया ॥ सातबरसराधागोरी ॥ ४ ॥ हिलिमिलिफागपरसपरखेलत ॥ अबिरगुलालभरेझोरी ॥ ५ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबि ॥ जुगलचरण परचितमोरी ॥ ६ ॥ ३४ ॥

मृगनयनीनारिनवलरसिया ॥ टेक ॥ अतलसको जाकोलहंगासोहै ॥ झूमकसारीमखमलरसिया ॥ १ ॥ पीयरीगोरीपीयरोईरसिया ॥ लालपलंगपचरंगताकि या ॥ २ ॥ बाहबराबाजूबंदसोहै ॥ हीयेहमेलदीपेछ तिया ॥३॥ छोटिछोटिअंगुरीमैंमुदरीसोहै ॥ झलकेअर सीअद्भुतिया ॥४॥ सूरदासहरिकोरूपनिहारे ॥ चरणक मलपरचितबसिया ॥ ५ ॥ ३५ ॥

व्रजमैंसखिरंगमच्योरी ॥ टेक ॥ जातिरहीवंसीब टजमुना ॥ वीचमैरंगउडचोरी ॥१॥ काहूकेबसनकेसर सोभीजे ॥ काहूकेछींटपन्योरी ॥ २ ॥ एककहैमैंतो संगरीभीजिगई ॥ अबमैंकैसिकरूरी ॥३ ॥ सबसखिय नमिलिमतोकियोहै ॥ कृष्णकुजापकरोरी ॥४॥ फेंटप करीरंगछिटकनलागी ॥ राधेहंसेमुखमोरी ॥५॥ दामि नीसीदसकेद्युतिजमुना ॥ पूरणचंद्रउगोरी ॥ ६ ॥ रामप्रसादअनोखो रूपलखि ॥ मानो मरालकीजो री ॥ ७ ॥ ३६ ॥

जमुनातटआजुमचीहोरी ॥ टेक ॥ हलधरगिरिध रमदनमनोहर ॥ खेलतहैजोरीजोरी ॥ १ ॥ अबिर गुलालकुमकुमाकेसर ॥ कीचमचीखोरीखोरी ॥ २ ॥ मोरमुकुटमकराकृतकुंडल ॥ सोहतहैसुंदरजोरी ॥ ३ ॥ फेटगुलालहाथपिचकारी ॥ अबिरगुलालभरे झोरी ॥ ४ ॥ सुंदरस्यामकामछबिलाजत ॥ सीरसो

हैसुंदरसारी ॥ ५ ॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलत ॥ फेंकतहैझोरीझोरी ॥ ६ ॥ उडतगुलाललालभयेबाद र ॥ करमुरलीरंगमेबोरी ॥ ७ ॥ सूरदासप्रभुरसिक सिरोमणि ॥ चितवनमोरस्यामओरी ॥ ८ ॥ ३७ ॥

राधेफुलनमथुराछाई ॥ टेक ॥ कितोफूलसरगसोउ तरे ॥ कितोमालिनिल्याई ॥ १ ॥ नहितोफूलसरगसो उतरे ॥ नहितोमालिनिल्याई ॥ २ ॥ उडितउडिफूलपरे जमुनामे ॥ राधेजीबिननआई ॥ ३ ॥ चुनिचुनिकलियामे हारबनाये ॥ स्यामकेऊपरपहिराई ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि ॥ हरीकेचरणचितलाई ॥ ५ ॥ ३८ ॥

बरसानेमैमहललाढलिके ॥ टेक ॥ ऐबरसानेमैबा गबहुतहै ॥ बिचबिचपेडमालतीके ॥ १ ॥ ऐबरसा नेमैमहलबहुतहै ॥ बिचबिचचौकचांदनीके ॥ २ ॥ ऐबरसानेमैनारिबहुतहै ॥ बिचबिचझुंडग्वालिनीके ॥ ॥ ३ ॥ बसोरेआलीऐबरसानेमै ॥ पीयरराधेगोरीके ॥ ४ ॥ स्यामकन्हैयानिसिदिनविहरे ॥ जबसेदीनआ येहोरीके ॥ ५ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबि ॥ चरण कमलचितचोरीके ॥ ६ ॥ ३९ ॥

दधिपीलेस्यामसलोना ॥ टेक ॥ काहेकीतेरीबनीहै मथनिया ॥ कौनपत्रकेदोना ॥ १ ॥ आठकाठकेबनि हैमथनिया ॥ कदमपत्रकेदोना ॥ २ ॥ कौनघाटपर ग्वालजुरेहै ॥ कौनघाटपरकान्हा ॥ ३ ॥ चीरघाटपर

ग्वालजुरेहैं ॥ कालींद्रिपरकान्हा ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजु बालकृष्णछबि ॥ हरिकेचरणचितहोना ॥ ५ ॥ ४० ॥

वृन्दावनमोहनदधिलूटी ॥ टेक ॥ कहांतेरेहारकहां नकबेसर ॥ कोनगलीनमेंलरटूटी ॥ १ ॥ मथुराहारगोकुलनकबेसर॥कुञ्जगलीनमेंलरटूटी ॥ २ ॥ चंद्रसखिभजुबालकृष्णछबि ॥ हरिकेचरणग्वालिनिलूटी ॥३॥४१॥

मथुराजिनजाहुकान्हप्यारे ॥ टेक ॥ यहमथुराकीगयलबुरीहै ॥ औंघटघाटनदीनारे ॥ १ ॥ यहमथुराकेलोगबुरेहैं ॥ टेढिटेढिपागपेचन्यारे ॥ २ ॥ यहमथुराकिनारीबुरीहै ॥ लंबेलंबेकेसभंवरकारे ॥ ३ ॥ यह मथुराकीगलीबुरीहै ॥ बडेबडेकुलुफजडेतारे ॥ ४ ॥ सूरदासमथुराकेवासी ॥ राखेनारिप्रेमप्यारे ॥ ५ ॥ ॥ ४२ ॥ इति अन्यविशेषहोरीसमाप्त ॥

॥ अथ हिंडोरा (झुलण) प्रारंभः ॥

॥ रागमलार ॥जुगलवरझूलतफूलहिंडोरे ॥ श्रीवृखभानसुतानंदनंदन, फूलेलेतमच्योरे ॥ टेक ॥ फूलनकेखम्भफूलनकीडांडी॥फूलनकीगुहिंडोरे ॥ फूलनकीपटुलीअतिसुंदर ॥ तासधिफूलकीरोरे ॥ १ ॥ वेलनमरुवाअपारफूलनके, फूलनसाजसबधोरे ॥ फूलनकेफहरातझुमका, सोरसउडतझकोरे ॥ २ ॥ फूलनकोलेहैंगाऔरसारी, फूलनकंचुकीकोरे ॥ फूलनकीपागजामाफूलनको, फूलकोपटकासरोरे ॥ ३ ॥ नखशिखलौ

आभूषणफूलनके, सोभाहोतनथोरे ॥ अहोसुखजात कवनपेबरन्यो, सारदहूंमतिभोरे ॥ ४ ॥ १ ॥

॥रागमलार ॥हिंडोरेमाइझूलतराधागोपाल॥ नवजोबनीरूपगुणसुंदरि जुरिजुरिआईबाल ॥ टेक ॥ तैसिहिहरितभूमिअवनिद्रुम, तैसेवनहीबनहैतमाल ॥ तैसेहिघटाघुमंडघनछायो॥तैसेंहिबनीबनमाल ॥१॥ तैसोंहिबनकुसमितप्रफुल्लित, तैसेंहिखगरवजाल ॥ तैसोहिमंदसुगंधसीतयुत, पवनबहततेहिकाल ॥ २ ॥ तैसेंहिमणिकञ्चनआभूषण, तैसेंहिवसनसबलाल ॥ झुलीझुलायकियेमनपूरण, जनपरहोहिदयाल ॥ ३ ॥ २ ॥

॥रागमलार॥सरसहिंडोरनाछूखभानजूकेद्वार॥टेक॥ दोउखंभकनकजडावडांडी, लगेरतनअपार ॥ हीरापन्नामरुवामनोहर, कलसराजतचार ॥१ ॥ पटुलीजटीतमणिहेमचरचित, इंद्रनीलसुधार ॥ झूलतश्रीराधामदनमोहन, बाढ्योरंगअपार ॥ २ ॥ सावनसोहाईतीजआई, सखियनकियोहैसिंगार ॥ तनउबटनवसतभामिनिसजीपेहेरेबनहार ॥ ३ ॥ गुनरूपसीलसुहागसुंदर, नवबलजोबनभार ॥ गावतश्रीस्यामास्याम गुनगन, जम्योरागमलार ॥ ४ ॥ सुरपुरनरपुरनागपुरकी, तूकबनीवरनारी ॥ शब्दजयजयहोतचहुंदिशि, पुष्पअंजुलीडार ॥ ५ ॥ ३ ॥

॥रागमलार॥सुरंगहिंडोरगाआली, झूलतनंदकुमार

॥ टेक ॥ मृगनयनीमधुरबयनी, सजेसकलसिंगार ॥ सरसखंभकदम्बकेबने, मलयमरुवेसुढार ॥ १ ॥ लालडांडीलहलहीहैं, पचीरचिहैसुतार ॥ जडितपटुलीकनककीले, गद्दीसरसमुनार ॥ २ ॥ चहुंओरतरुअरुनबसनी, किंकिनीझनकार ॥ रंगभरेउतंगउरजनी, कंठझलकतहार ॥ ३ ॥ चलतकचफहरातअंचल, लसतलंबेबाल ॥ मृगमदअगरकपूरकुमकुम, वासकीउरगार ॥ ४ ॥ मुखभरेपाननस्यामस्यामा, दोउपरमउदार ॥ गीतगावतसुखदकेरस, रीतिकीटकसार ॥ ५ ॥ ग्रामसुरघटस्वाससीधे, तानतालअपार ॥ रीझिरीझेजलहिभीजे, जम्योरागमल्हार ॥ ६ ॥ मोरचकोरकोकिलासब, सुरनपरीहठताल ॥ मेघगरजतरसभरेआलि, वरखेअखंडितधार ॥ ७ ॥ लाजतजेलपटातलालही, तजेवेदविचार ॥ छविरहीफविमधुसूदनही, वलिहारिकोटिकवार ॥ चिरजीवोपरवतप्राणपति, सवजगतप्राणअधार ॥ ८ ॥ ४ ॥

॥रागरेखता॥आयोहैमाससावन, एकमानकह्योप्यारी॥चलझूलियेहिंडोरे, वृषभानुकीदुलारी॥टेक॥ यमुनाकेतीरवंसीवट, कैसीछविछाई ॥ शीतलसुगंधमंदपवन, चलतअतिसुहाई ॥१॥ करतीहैशोरयमुना, उठततरंगभारी ॥ प्रतिकुंजकुंजमेंछाय, रह्योहैपरागरी ॥ २ ॥ लागतपरमसुहाई, अवलोकोनागरी ॥ फुलीलताद्रुमन

की, धरणिझुकीहैडारी ॥ ३ ॥ जापैअलिंदघुमै, म
करंदहेतछाये ॥ नाचतहैंमोरवनमै, लागतपरमसुहाये॥
॥ ४ ॥ मतिकोयलपुकारे, बैठिकदमकीडारीतुमहंप्रिया
सिधारो, कीजैनअबअबेरी ॥ ५ ॥ कलिंदियाकेतटपे,
झूलतहैं सर्वसहेली ॥ नवसप्तसिंगारसाजे, एकएकतेन
वेली ॥ ६ ॥ झूलैंनिकुंजअपनी, अवहीचलोपियारे ॥
कीजे विहारहमसों, तुमनंदकेदुलारे ॥ ७ ॥ तवसंगले
पियाकोसुनि, कुंजमैसिधारीवैठोसुरंगपटली, डोरिग
होसंभारी ॥ ८ ॥ बैठोकुंवरहिंडोरेअव, मैंतुझेझुलाऊं ॥
गाऊंतुझेरिझाऊं, छविदेखदृगसराउं ॥९॥ बोदन रमक
मोहन, झुकिमंदझुलाओ ॥ डरपैहियोहमारोपिया,
रमकनाबढाओ ॥१०॥यहबातसुनप्रियाकी, उरसोंलइ
लगाई ॥ भीजेगीलालसारी, कारिघटाजोआई ॥ ११ ॥
लीजेउठायमोको, कामरकुंवरकन्हारी ॥ तवहंसिरसि
कविहारी, कामरउढाईकारी ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ रागमलार ॥ आजकछुकुंजनमैवरखासी ॥टेक॥
बादरगनमैदेखसखीरी, चमकतहैचपलासी ॥ नान्हि
नान्हीबुंदनकछुधुरवासी, पवनबहतसुखरासी ॥ १ ॥ मं
दमंदगर्जनसीसुनियत, नाचतमोरसभासी ॥ इंद्रध
नुषमैबगमिलडोलत, बोलतहैकोकलासी ॥ २ ॥ इंद्रव
धुविछायरहिहै, गिरिपरश्यामघटासी ॥ उमगीमहीस
मीरकंपत, फूलीमृगमालासी ॥ ३ ॥ रटतप्यासचातक
कीरसना, रसपीवतहौंप्यासी ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥रागमल्हार॥ व्रजपरनीकीआजघटा ॥टेक॥ नान्हि नान्हिबुंदसुहावनिलागत, चमकतविज्जुलीछटा ॥ १ ॥ गरजतगगनमृदंगवजावत, नाचतमोरनटा ॥२॥ गावतसुरहिदेतचातकपिक, प्रगटचोमदनभटा ॥३॥ सबमिलिभेटदेतनंदलालहिं, बैठेउंचीअटा ॥४॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरनलालशिर, कसूंबीपीतपटा ॥ ५ ॥ ७ ॥

॥रागमलार॥ तेरिझमकझुलनकटिलचकजात, प्यारिरसकरंगीलिअतिसोहै ॥ टेक ॥ तूगुणरूपयौवनरंगरसभरी, तेरिउपमाकोकोहै ॥ १ ॥ हाथनचूरीमहाउरमेहदि, चटकचौगनीसोहै ॥ २ ॥ रसिकगोविंदअभिरामश्यामघन, तूदामिनिमनमोहै ॥ ३ ॥ ८ ॥

॥रागमलार॥आईचदरियाबरसनहारी॥टेक॥गरजगरजदामिनिदमकावै, ज्यौंचूंदरिझलककिनारी ॥ १ ॥ मधुरमधुरकोयलबनबोलै, भवनभवनगावतव्रजनारी ॥ २ ॥ चलतपवनशीतलनारायण, परतफुहारलगत अतिप्यारी ॥ ३ ॥ ९ ॥

॥ रागमलार ॥ हर्षझुलाइयेमनभावन ॥टेक॥ उघरपऱ्योहियहेतगहगह्यो, झोटादियोचितचांमर ॥ १ ॥ यहजोकल्पतरुयहरविजो, तटवहवनझुकआमन ॥ वृंदावनहितरूपवलिगई, वहहरियालीसासन ॥२॥१०॥

॥रागमलार॥देखियुगलछबिसावनलाजै॥टेक॥उतघनइतघनश्यामलाडलो, उतदामिनीइतप्रियासंगराजै१

उतवर्षतबूंदनकीलरिया, इतगलमोतिनहारविराजै ॥२॥
उतदादुरइतबजतबांसुरी, उतगरजतइतनूपुरबाजै ॥३॥
उतरंगकेबादरइतबाजेउते, धनुषवनमालइतसाजै॥४॥उ
तघनघुमंडइतैदृगघूमत, नारायणवर्षासुखआजै॥५॥११॥
॥रागमलार॥श्यामसुननियरेहीआयोमेहु ॥ टेक ॥
भीजैगीमेरीसुरंगचुनरिया, ओढिपीतांबरलेहु ॥१॥ दा
मिनीसोडरपतहोमोहन, निकटआपनेलेहु ॥ २ ॥ कुंभ
नदासलालगिरिधरसो, बाढ्योअधिकसनेहु ॥ ३॥१२॥
॥रागदेसमलार ॥ सावनघरगरजै घूंमघूंम ॥ बरसत
शीतलजलझूंमझूंम ॥टेक ॥ कोयलकीरकोकिलाबोलै,
हंसचकोरचहूंदिशिडोलै ॥१ ॥ नाचतवनअतिकरतकि
लोलै, मोरमोरनीचूमचूम ॥ २ ॥ गावैरागरागनीभामि
नि, दमकरहीमानोछबिदामिनि ॥३ ॥ झोटादेतझपटग
जगामिनि, पायलबाजैछामछूमछूम ॥४॥ जयजयकरत
सुमनसुरवर्षत, ईंद्रनिशानबजावतहर्षत ॥ ५॥ दासगणे
शयुगलछबिनिर्खत, छायरह्योसुखरूमरूम ॥ ६॥१३॥
॥रागसोरठ॥ कौनसमयरुठनकोप्यारी, झूलोललित
हिंडोरै ॥ टेक ॥ रंगबेरंगघटानवछाई, बिचबिचचपला
चमकसुहाई ॥ १ ॥ परतफुहारपरमसुखदाई, चलतस
मीरझकोरै ॥ २ ॥ बिबिधभांतिपंछीवनबोलै, मृगिनस
हितमृगबिहरतडोलै ॥३ ॥ जलजंतुमिलकरताकिलोलै,
येहीअचरजमनमोरै ॥ ४ ॥ कुसुमचीरपहिरेव्रजनारी,
साजसमाजआजहैमारे ॥ ५ ॥ नारायणबलिजाउंति

हारी, प्रीतमकरतनिहारे ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ रागसोरठ ॥ झूलोमेरीराधाप्यारी, रंगीलोहिंडोरना ॥ टेक ॥ डांडीचारसुदेसबनाई, हीराखम्भनझुम्म कलाई ॥१॥ जगमगजगमगहोयरविशशिडोरना, उमंगीघटाघुमरथिरआई ॥ २ ॥ रिमझिमरिमझिमबूंदसुहाई, दमकदमकदामिनियांबोलैमोरना ॥ ३ ॥ गावत रागमलारअघाई, शीतलमंदसुगंधसुहाई, तानतरंगन ललितभानतृणतोरना ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ रागसोरठ ॥ धवलमहलचढरत्नबंगला, झूलोसुरंगहिंडोर ॥ टेक ॥ नवकिशोरसुकुमारछबीली, नेहनवलमझुजोर ॥१॥ सुरंगकुसुमीसारिप्यारी, हरतझझ्झाली कोर ॥ २ ॥ हितअलीरुपलालरुचऔर, पियाछबिउठत हिलोर ॥ ३ ॥ १६ ॥

॥रागखेमटा॥युगलवर झूलत डारिगलबाहीं ॥टेक॥ रत्नजडितकोबन्यौहैहिंडोरा, सघनकुञ्जकेमाहीं ॥१॥ रेशमडोरपवनपुरवैया, लखिरतिकामलजाहीं ॥ २ ॥ सखीसखादोउओरझुलावत, मधुरमधुरसुरगाहीं ॥३॥ मध्यस्यामास्यामदोउहिलमिल, पुनिपुनिहियहर्षाहीं ॥ ४ ॥ उंचीडारतोरकलियनदोउ, निजनिजकलियनसराहीं ॥ ५ ॥ याछबिनिरखिप्रियाकीप्रीतम, मोहनमननअघाहीं ॥ ६ ॥ १७ ॥

॥राग खेमटा ॥ झूलनचलो हिंडोरने, वृषभानुनंदनी ॥ टेक ॥सावनकीतीजआई, नभ घोरघटा छाई, मे

घन झरीलगाई, परेबूंद मंदनी ॥ १॥ सुंदर कदमकीडारी, झूलापर्योहैप्यारी, देखोकुमरहाहारी, सबदुःखनिकंदनी ॥ २ ॥ पहरोसुरंगसारी, मानौविनयहमारी, मुखचंद्रकी उजारी, मृदुहासफंदनी ॥३ ॥ सनमानिसीखलीजे, सुंदरनदेरकीजे, हमतोविलोकीजे, तूहैगतिगयंदनी ॥ ४ ॥ शोभालखोबिपिनकी, फूलीलताद्रुमनकी, सुनअरजरसिकजनकी, करौचरणवंदनी ॥ ५ ॥ १८ ॥

॥ रागखेमटा ॥ हिंडोरेआजुझूलतरंगरह्यो ॥ टेक ॥ अचलसुहागशुभगस्यामाको, दिनप्रतिहोतनयो ॥ १॥ हरितभूमिबंसीबटयमुना, सोसुखदृगनलह्यो ॥ २ ॥ रसिकप्रीतमसिलगावतभावत, वृजसखरीझरह्यो॥ ३ ॥ १९ ॥

॥ रागखेमटा ॥ युगलवरझूलतदेगलबाहीं ॥ टेक ॥ बादरबरसैंचपलाचमकैं, सघनकदमकीछाहीं ॥ १ ॥ इतउतपेंगबढावतसुंदर, मदन उमंगनमाहीं ॥ २ ॥ ललिताकिशोरीहिंडोरेझूलैं, बढैयमुनालौजाहीं ॥ ३ ॥ २० ॥

॥ रागरेखता ॥ झूलनयुगलकिशोरकी, दिलमें मेरेबसी ॥ बैठेहैंरंगहिंडोरना, करतेहैंरसमसी ॥ टेक ॥ फहरातपीतपटुका, दुपटाजोछोरदार ॥ शिरपैसुरंगसारी, प्यारीकेक्याकसी, बेसरबुलाकबेनी, बेंदीजोभालपैं ॥ हीरोंकाहारउरपै, कटिकाछनीकछी ॥ जोबनकेजोरशोर, सौरमकेंबढावती ॥ ललिताकिशोरीश्यामकी, छबिदेखकेहँसी ॥ २१ ॥

॥ रागरेखता ॥ प्यारीप्रीतमकेसंगझूले, रंगहिंडोरना

॥ टेक ॥ दोखंभहैंजडाउजडे, चितकेचोरना ॥ डांडीम
रवेलगनलगी, बेलनअमोलना ॥ पटलीसंदलकीसाफ,
देखोखूबहैबनी ॥ लागेहैउसकेबीचमें, हीराचुनीमनी ॥
सुंदरीघुंघटकीओटसैं, नयनाबिशालहैं ॥ खंजनझुलाम
नको, घेरनकोजालहैं ॥ मुझकोरसिकगोविंदकी, छबि
हीमेंझूलना ॥ प्यारीअनूपरूपको, दिलसेनभूलना २२॥

॥ राग झिंझोटी ॥ श्यामाजीझूलैंपीरीपोखरपार ॥
॥ टेक ॥ गावतहैंउंचेस्वरकोकिल, रहीमौनसुखधार ॥
रसकनकी दमकननग भूषण, शोभा विपिननिहार १
चौकीकीचमकनपरडारें, श्वेतदामनीवार ॥ थरकतहैं
अतरस अतरोटा, शिरपर सुहीसुढार ॥ २ ॥ खुमक
बनी उरपीतकंचुकी, मुखपर श्रमकणबार ॥ सजनीरी
इकसांवरीआई, झूलनकोरिझवार ॥ ३ ॥ ताकेसंगझु
लतहैं प्यारी, करतअधिकमनुहार ॥ कौनगामकहा
नामतिहारो, कहियेकृपाविचार ॥ ४ ॥ तरुणनमे अति
सुंदरप्यारी, चतुरनमेंबरनार ॥ ललिताकहै बोलरीसाम
र, नातरदेहौं उतार ॥ ५ ॥ राजसुतासंग झूलनआ
ई, दियोढीठडरडार ॥ डोरीगहिलीनीललिताने,
दोउदियेउतार ॥ ६ ॥ हंसपनिचपलचलैयांलेवे, को
उपीवतजलवार ॥ सैननमेंसमझावतसुखसों, बच
ननसकेउचार ॥ ७ ॥ नंदगामकीओरबतावे, उंचे
हाथपसार ॥ अंचराकीसरकनमेंकौस्तुभ, माणकीप
ीचिन्हार ॥ ८ ॥ हेरिहेरिहसत ब्रजसुंदरी, यहबोहीखि

लवार ॥ नईपाहुनीआईझुलन, बैठीघुंघटमार ॥ ९ ॥ वृंदा बनहितरूबलिगई, छदमनसकतउघार ॥ १० ॥ २३ ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ बांकीछबिसोंझुलतप्यारी ॥ टेक ॥ बांकीआपबिहारीबांके, बांकीसंगसुकुमारी ॥ बांकी घटाघेरीइतचमकन, चपलाहूंकीन्यारी ॥ ललितकी शोरीबांकी मुसकन, वंकपेगपरवारी ॥ २४ ॥

॥ राग ईमन ॥ झूलतकोश्यामाकेसंग, सखीसा मरीप्यारीहै ॥ टेक ॥ कजरारेनयनसैनसोंबतियां, अंखियनकोरकटारीहै ॥ जोबनजोरमरोरेमौंह, कौल लितकिशोरीबारीहै ॥ ललितासेकरपकरिहांकरी, यह नागरनंददुलारीहै ॥ २५ ॥

॥ राग ईमन ॥ झोकादीजोसह्मार, मेरीसारिनलट के ॥ टेक ॥ सघनकुंजद्रूमडारकंटीली, काहुछोरजिन अटके ॥ उनबातनअबभेटनहीं कछु, औरधोखेजिन भटके ॥ ललिताकिशोरीलालजाओ, घरकोहेकोच टमटके ॥ २६ ॥

॥ राग कल्यान ॥ सोतुराखिलैरी झोटातरलभए ॥ टेक ॥ इतनवकुंजकदमलौं परसत, उतयमुना लौंगए ॥ आवतजातलतानिर्वारत, कुसुमबितानछए ॥ कल्याणकेप्रभुरीझविवसभये, झूलतनयनए ॥ २७ ॥

राग पीलु ॥ मेरोछांडदेअंचरवा, मैंतोन्यारीझूलौं गी ॥ टेक ॥ झोटनमिसमोहनलंगरीयां, अजहूंहांक तनाभुलौंगी ॥ ललितासंगरंगीलेझूलेंझूल, मेनहीमन

फूलौंगी ॥ ललितकिशोरीतरलपगकर, लालनतोसंग समतुलौंगी ॥ २८ ॥

॥राग पील॥ खेमटेकीराहमें ॥ कौनचढेपहले, सुरंग हिंडोरें ॥टेक॥ सोईकरतमनोहरहीये, हितरमकदेतजो राजोरें ॥ गावतरागतानमधुरेसुर, कोटिकामचितचो रें ॥ रसिकप्रीतमयहहोडपियापरी, रीझदेततृणतोरें ॥ २९ ॥ राग कालंगडा॥चलोपियावाही, कदमतरेझूलें ॥टेक॥ झूकीहैलताअतिसघनप्रफुल्लित, कालिंदीकेकूलें ॥बोलतमोरचकोरकोकिला, आलिंगनगुंजतभूलें ॥ ल लिताकिशोरीमगवतरावत, कहकहेबतियांफूलें ॥ ३० ॥

॥राग देश॥चलझुलियेहिंडोरे, श्रीवृषभानकीललीं॥ ॥ टेक ॥ तिहारेकाजआजइकमैने, विरचीकुंजभली ॥ रत्नजडितकोबन्योहिंडोरो, कैसीझलाझली ॥ ब्रजब नितझूलतअनेकतहां, एकएकनवली ॥ शब्दकरतजहँ कीरकोकिला, गुंजतमोरबली ॥ रसिकबिहारीकीसुन वानी, तुरतहिकुंवरिचली ॥ ३१ ॥

॥राग देस ॥ आजबन्योरसरंगहिंडोरो, कदमतरे ॥टेक ॥ सघनलताझुकसुमनसुगंधन, अलिगनगुंजकरें ॥वर्णवर्णतनुभूषणचुंदरी, श्यामाजूपहरें ॥ लाललडाय चायहितचितसों, रूपसमुद्रभरे ॥ ३२ ॥

॥ राग देस ॥ झूलौप्यारीआज, निकुंजहिंडोरना ॥टेक॥ बोलतचातकमोर, पवनझकझोरना ॥ सघनल

तानिधिबनकी, आजसुहाईहैं ॥ श्यामघटनसों, परत बूंदसुखदाईहैं ॥ तेसीहीदामिनिचमक, चमकछविछा ईहैं ॥ मानोडरत तुमतेज, लाजदरशाईहैं॥हरितभूमिहु लसातु, आगमजानके ॥ मानोबिछौनाकियो, मदन मदभानके ॥ ३३ ॥

राग देश ॥ चलोअकेलैंझूलें, वनमेंप्यारीमेरेप्राण ॥ टेक ॥ तुमनईनागररूपउजागर, सुखसागरछविखा न ॥ वर्णवर्णकेबादरछाये, मानोगगनवितान॥वर्पतबुंद सोइमोतियनकी, झालरसोभावान ॥ बोलतखगमृगडो लतइतउत, सोनहिंजातवखान ॥ रंगरंगकेफूलखिलेहैं भ्रमरकरतरसपान ॥ ऐसेसमयविपिनसुखविलसैं, एरीपरमसुजान ॥ नारायण उठिवेगिपधारौ, कुलदीप कवृषभान ॥ ३४ ॥

॥ राग देश ॥झूलतश्याम श्यामासंग ॥ अतितरंग शोभाकेमानो, लहतयमुनागंग ॥ झूलतमेंभूषणचित चोरत, स्यामगोरेअंग ॥ ललितकिशोरीहिंडोरनपै, आजबरसतरंग ॥ ३५ ॥

राग खेमटा ॥ आजदोउझूलतरंगभरे ॥ टेक ॥ झो टाखरेलेतकबहुंक, सखीकबहूंहरेहरे ॥ कर्णफूलकुंड लमिलभेटत, मानोशशिमीनलरे ॥ चंद्रमालहलकत उरराधे, हरिवनमालगरे ॥ विहसतदमकउठतदशना वलि, अवनीसुमनझरे ॥ ललिताकिशोरीटरतनलखि

छबि, दृगशशिअरनअरे ॥ ३६ ॥

राग दादरा ॥ सुनसखीआज झूलननहिंजेहौं ॥ स्यामसुंदरपियारसलंपटहै, अतिहीढीठयोदेत ॥ झोटातरलकरेपाछेतू, धायभुजनभरलेत ॥ चितवनचपलचुरावतअनतै, हमेंजनावतनेह ॥ रसिकगोविंदअभिरामस्यामसंग, क्योंनजायरसलेह ॥ ३७ ॥

॥ राग जंगलासिंध ॥ बलिबलिजादियांझूलनपर ॥ टेक ॥ प्यारीपहिरेकुसुमलसारी, प्यारेकेमनभांदियां ॥ चहूँओरसबसखिझुलावै, झुकझुकझूटेखांदियां ॥ पुरुषोत्तमप्रभुकीछबिनिरखत, तनमननयनसरांदियां ॥ ३८ ॥

॥कवित्त ॥ फूलनकीचंद्रकलाशीशफूलफूलनको, फूलनकेझूमकाश्रवणसुकुमारीके ॥ फूलनकीबंदनीबिसालनथफूलनकी, फूलनकीबिन्दीभालराजतदुलारीके ॥ फूलनकीचम्पाकलीहारगलेफूलनके ॥ फूलनकेगजरालिलितकरप्यारीके ॥ फूलनकीपगमेंपायलनारायण फूले फूलेभागसदालाडलीहमारीके ॥ २९ ॥

॥ राग सारंग ॥ फूलनकेबंगलेमेंराजेंपियाप्यारीहो ॥ टेक ॥ फूलनकेभूषण बिचित्रसोहैअंगअंग, फूलनकेबसनवदनछबिन्यारीहो ॥ फूलसेमुखारबिंदबचनफूलनसमफूलीसखी तनमनशोभा लखिभारीहो ॥ जैसोहीसमाज साजआज नारायणमानोकुञ्जभवनमें

फूलीफूलवारीहो ॥ ४० ॥

॥ राग सोरठ ॥ गायचराईगिरिधाऱ्योतुम, झूलनम मझकहाहै ॥ अतिसुकुमारप्रिया गौरांगी, तासंगझूलो हीचाहै ॥ हमजोसिखावेंतैसेहिसीखो, कहा फिरतहो भरे ॥ वृंदावनहितरूपबलिगई, ह्यांपायोकेवांहै ॥ ४१ ॥

॥ राग वडहंसमलार ॥ हिंडोलनामेंकाँईझूलोराज ॥ टेक ॥ म्हाराझूलतहीयालरजे ॥ रत्नजडितकेखं भजडाये, अगरचन्दनकेपटा ॥ रेशमडोरपवनपुरवैया, जुरआईसामनकीघटा ॥ स्यामाझूलेश्यामझूलावे, कालिन्दीकेतटा ॥ उडउडअंचरापरत सुजनपर, निर खतनागरनटा ॥ ४२ ॥

॥ राग गौरी ॥ झूलनहारनईकौनहै ॥ टेक ॥ स्यामाके संगरंगभरी, सोहतसखीनवेल ॥ अतिसुंदर तनुसाम मानो, नीलमणिनकीवेल ॥ १ ॥ स्वेदकम्परोमांचहै, जानपरतकछुतोय ॥ झुकझुकझोटनमेंमिलेहंसि, कुं वरिलजाईहोय ॥ २ ॥ निरखोझूलननेहकीसखी, चतुर सखीशिरमौर ॥ हमजानीछानीनहीसखी, यहझूलन कछुऔर ॥ ३ ॥ सखीछकाएनागरी, दृगनसुधारसप्याय ॥ कपटरूपधरमोहनी, प्रगटभईव्रजआय ॥ ४ ॥ ४३ ॥

॥ राग वरवासारंग ॥ तेरीझूलनअतिरससानसुखदा नी, श्रीराधावल्लभलाडले ॥ टेक ॥ गावतवजावतरिझा वत प्रियाको, तानतरंगन सवमिलआवरे ॥ सवश्रृङ्गार

हारफूलनके, प्यारीकोपहरावतमनमेंचावरे ॥ राधेवर कृष्णयहींकृपाकर, विपिनवसावोअंतनजावरे ॥ ४४ ॥

रागअसावरी

झुकि झुकि झमकि कदंब बिटपतर, सखिसियावर झूले ॥टेक॥ जनदुखदमनी मनप्रियपूरणी, श्रीसरयूकूले ॥ १ ॥ वनप्रमोदउरमोददेतसखि, नानातरुफूले ॥ चंदनचंपक कुन्दचमेली, लखिरतिपतिभूले ॥ २ ॥ गुलवास गुलाब कदंब सुगंधे, सुरतरुनाहितूले ॥ उमडि उमडि घन गरजत सुंदर, बरषत अनुकूले ॥ ३ ॥ मणिनजटितवर कनकहिंडोले, झूलतमनझूले ॥ कुसुमसिंगार कलित श्रीसीयपीय, हसतअधरमूले ॥ ४ ॥ गाय झूलावे झमकि झुकि सजनी, लखिमुनिमनइले ॥ लर आनन्द भरीसबसजनी, सुधिबुधिसबभूले ॥ ५ ॥ कोवर्णे छबि छबिपरसजनी, नहित्रिभुवनतूले ॥ रामनारायणस्वामिश्यामरो सबकेमनकूले ॥ ६ ॥ १ ॥

रतिमद दवनी कदंब तरुणि, बिच सोहतसिय सजनी ॥टेक॥ नखशिखसखि श्रृंगार अनूपम, मोहेश्याम घनी ॥ १ ॥ कुसुमकलीवर ग्रथित कचनविच, अरुणी मांगवनी ॥ चंद्रिक कलित शीसपर सुंदर, शोभासुभगबनी ॥ २ ॥ वेंदि ललितललाटलसतअति, चंदनखोर बनी ॥ भृगुटिकामकोदंड नयनशर, कजालललित बनी ॥ ३ ॥ कनककिंकिणी जटितमोतियुत, श्रवणफू

लसजनी ॥ ललित कपोललसतअलकेवर, मानहुं छौनफनी ॥ ४ ॥ दशनकुंदसरसाधरपल्लव, सोहतश शिवदनी ॥ चिबुकबीचअतिचारुसहजसखि, श्याम लबिंदुकनी ॥ ५ ॥ ग्रीवाकनकमालराजतअति, हांस कंठ किरनी ॥ भुजमणिकनकजटितकंकणयुत, परस सरसश्रवणी ॥ ६ ॥ कुचकंचुकी कलितजरतारिणी, प्रीतममनरंजनी ॥ पद अंबुजजावकयुतनूपुर, विहरत वरकारिणी ॥ ७ ॥ शुभषोडशशृंगारसहितधृत, सारी शुभअरुणी ॥ कोवर्णेछविछविलिमाधुरी, सीमारूपव नी ॥ ८ ॥ रामनारायणजयश्रीस्वामिनी, किरतिविशद घनी ॥ गावतसुनतसुखाकरपावनि, जनभवभयहर णी ॥ ९ ॥ २ ॥

स्मरमद दमन कदंब कुंवरबिच, सखिसियावरसोहै ॥ टेक ॥ नखशिखलोअंगअनूपमाधुरी, लखिमुनिमन मोहै ॥१॥ रुचिरचौतनी चमकशीसमहुं, कुसुमकली गोहै ॥ चिक्कनकचघुंघुवारेलसतवर, अलिगणमिलि सोहै ॥ २ ॥ केशरतिलककलितअतिभाले, कुटिल शुभगभौंहैं ॥ मानहुकामकोदंडसहितवर, हाटकशर सोहै ॥ ३ ॥ कुंडलकलितजडाउकरणयुग, नासाम णिसोहै ॥ रदनकुंदअरुणाधरपल्लव, हास्यमधुरमोहै ॥ ॥ ४ ॥ उरवरकनकमालराजतअति, मणिमुक्तापोहै ॥ भुजयुगअणतजडितधृतसुंदर, करधनुशरसोहै ॥५॥

नाभीगहरगंभीरउपरवर, मालपदिकसोहै ॥ कटिप
टपीतकनककिंकिणीयुत, लखिरतिपतिमोहै ॥ ६ ॥
चरणचारुनूपुरयुतराजत, जहाँमुनिमनपोहै ॥ कोव
र्णै छबिललितलालकी, अंतरूपकोहै ॥ ७ ॥ राम
नारायणजयश्रीस्वामिकी, वरजगजशगोहै, गावतसु
नतसुखाकरपावन, चितचिंतितदोहै ॥ ८ ॥ ३ ॥

दोहा—लावणी, शरदबिहार ॥

श्रीशिवाशिववंदिके, वर्णौं शरदबिहार ॥
उरआनंदउमगेअति, निर्मलशशिनिहार ॥ १ ॥

लखो सखि सरसशरदआई ॥ बिगतघननिर्मलनभ
छाई ॥ चलो सखिचलिये चितचाई ॥ जहां सियश्याम
सहितराई ॥ बोलि एक अपरसखिधाई ॥ कहीनिकि
नागरिमनभाई ॥

दो॰उठिआतुरआनंदमें, आई जोरि जोहारि ॥
शुचिशुभगाबैठीसबै, प्यारीरूपनिहारि ॥

विहारिणि सुनिये बलिजाई ॥ चलो॰ ॥ २ ॥ अली
सब बोलिउठीप्यारी ॥ लखोनेलाडलिबलहारी ॥ शर
दऋतुसबको सुखकारी ॥ आईअतिनिर्मलमनहारी ॥

दो॰रतनमणिनमयपावती, सोहतसरयूतीर ॥
श्वेतकुमुदफूलीकली, लखिमोहेमनवीर ॥ ३ ॥

समीर सरस वहे सुखदाई ॥ लखो॰॥३॥ विविधफूल
फूलेतरु सोहै ॥ ललितलतावलिवनगोहै ॥ शरदशशि

सकलकलासोहै ॥ लखिशुभसोभासुरमोहै ॥
दो॰सियहियकीप्रभुजानिके, जनहितपूरणहार ॥
रामनारायण परसपर, कीनोंशुभशृंगार ॥
रह्योभरिआनंदउरछाई ॥ लखो॰ ॥ ४ ॥ १ ॥
लखोसखिसियशोभाकोरे । रचेकचचिकनचितचोरे ।
गुहीकलिकुसुमनकीकोरे । मांगरचिमुक्तावलिसोरे ॥
पुहेवर जलजमणिदोरे, दियेशिरचन्द्रिकके जोरे ॥
दोहा॰वैंदीललितललाटदिये, शोभावरणिनजाय ॥
पंकजलोचनबीचवर, कज्जलरेख बनाय ॥
कर्णफुलझुमकाझलकोरी ॥ लखो॰ ॥ १ ॥ सरसमणि
नकवेसरसोहै ॥ अधरवरहास्यमधुरमोहै ॥ कनकलर
मणिमोतिनपोहे । कलितवरकंठरुचिरसोहै ॥
दोहा॰भुजजुगबाजूबंदवर, करकंकणकरजाल ॥
कुचकंचुकीकलितअति, पदिकसहितहियमाल ॥
शोभायेसुरवधुमदमोरी ॥ लखो॰ ॥ २ ॥
जावक युत नूपुर मनहारी । दियेयुगचरणकमलना
री । धरेतनसरसधवलसारी । रचेवरपल्लवजरतारी ॥
दो॰कोवर्णेछबिमाधुरी, कोटिमदनरतिवारी ।
रामनारायणस्वामिनी, जनभवभंजनिहारी ॥
सोहेमहा सियपियकीजोरी ॥ लखो॰ ॥ ३ ॥ २ ॥
लखो सखि श्रीसियावरकोरे । दियेशिर चौतनी चि
तचोरे ॥ मंजुमणि मुक्तावलिकोरे । गुहीकलिकुसुमन

कीजोरे ॥ लखतअलिअलकावलिभोरे । मनोललि
अलिमिलिइकठोरे ॥

दोहा०ललितललाटेतिलकदिये, शोभावरणीनजाय ॥
रतनजडितसुंदरयुगल, कुंडलकर्णसोहाय ॥
शोभाये मनसथमदमोरी ॥ लखो० ॥ १ ॥ श्वेतशु
भनासाजलजमणि ॥ मोहेमनमधुरमधुरहसनी ॥ चि
बुक बिच बिंदु कनकबनी ॥ ग्रीववरमाला मंजुमणी ॥
दोहा०श्वेतपट्टकाकंधपर, लगिजरतारिकिनारि ॥
भुजअंगददोउकरपहुंची, करलियेकमलविहारि ॥
सोहेवरश्यामल छबिलोरी ॥ लखो० ॥ २ ॥ झलकत
जरि जामा अतिसोहै ॥ धवलद्युति सुंदर सखि मोहै ॥
युगलपदनूपुरवरसोहै ॥ जेहिचरणेमुनिमन पोहै ॥
दो०कोवर्णेछबिमाधुरी, सीमारूपअपार ॥
रामनारायणरसिकप्रभु, जनभवभंजनहार ॥
सोहेसंगसुंदरसियगोरी ॥ लखो० ॥ ३ ॥ ३ ॥ चलेसु
खसागर रघुराई ॥ सोहेसंग सीयदिये गलबांई । स
खीचहुं ओरबनीआई । चंद्रकला छत्रलियेछाई । सु
धामुखि कमला हरखाई । लियेकर चमरे करे चाई ॥
दो०हंस प्रसंशीचंद्रमुखी । दोउलियेछरीसोहाति ॥
अपरसेवालियेअपरअली, चलीसखीसबगाति ॥
भरीउरआनंद अधिकाई ॥ चले० ॥ १ ॥ लखत स
रयूतट सुखकारी ॥ लगे वर उपवनमनहारी ॥ सर

सफूलफूलीलतासारी ॥ सुरभिशीतमंद वहेव्यारी ॥
दोहा०बिहरतसंगसखीसिया, कुंजनकुंजविहारी ।
वनप्रमोदआयेप्रभु, सुंदरसुखदनिहारी ॥
शोभाये सुंदर मनभाई ॥ चले० ॥ २ ॥ फटिकमणि
वेदीबनीसारी ॥ उपरलगी चांदनि चमकारी, मंजुमणि
चोपबनेचारी ॥ सपेतीसरसबनीभारी ॥
दो०मंजुल गुल्म ऊपरपुनी, मलमल फरज बिछाई ॥
रामनारायण प्रभुप्रिया, सहित बिराजे आई ॥
शोभालखिसुरवधूलजवाई ॥ चले० ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोहे
महासुंदर सखिजोरी । धरेफुलमालाउरधोरी । स्व
भावेसुंदर सखियोरी ॥ धरेवरभूषणवसनोरी ॥ पू
र्णशशिसुंदर झलकोरी ॥ सरसबनिशोभाचहुंओरी ॥
दो०श्वेतयुगलअरुश्वेतसखी, श्वेतनिशासुखदाइ ॥
श्वेत बिछौना श्वेतपर, चन्द्रमरीची छाइ ॥
रच्योवर रासरसनकोरी ॥ सोहे० ॥ १ ॥ नटत
वर नागरि गतिसारी ॥ मधुरस्वर गानकरेनारी ॥
नूपुरधुनिछुमछुमछमकारी ॥ सुनिमुनिध्यानछुटेभारी ॥
दो०सारंगि मृदंग मजीरकी, स्वरगति एकहितार ।
सुनकेमधुरधुनिसाजकी, मोहेकोटिनमार ॥
छायोउर आनंद भइ भोरी ॥ सोहे० ॥ २ ॥ विलास
रसनमे सीयसांई ॥ विगत निशिजानी मनभाई ॥

पायो विश्रामसवेजाई ॥ यथामतिमोरीशरदगाई ॥
दो० गावेप्रीतेसुनेजेई, पावनशरदविहार ।
रामनारायणकेप्रभु, चितचिंतितदातार ॥
वसोताकेउरदोऊजोरी ॥ सोहे ॥ ० ३ ॥ ५ ॥

मनहरछंद ॥ जैसीश्रीजनकराज लाडिली ललित भ्राज कोटि रति लखिलाज रूपकी सीमाईहै ॥ तैसे घनश्याम राम सुघडसुशील धाम लाजेलखि कोटि काम उपमान पाईहै ॥ रूपसेअनूप दोउ वयसो विशेषसोउ कुलसे कुलीन दोउ सखिसुख धामहै ॥ राम नारायण कहि सखिने विचारोसहि दुलहिनी लाय कहिदूलह श्रीरामहै ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥ फूलनचन्दोआतने फूलनफरशबिछी, फूलनकीसेजऔर फूलनछबिछैरही ॥ फूलनकीगरेमालफूलनकरनफूल, फूलनकोटीकोमांग फूलनभरैरही ॥ फूलनकेवस्त्रऔरश्रृङ्गार सबफूलनके विक्रमसिरगेश मनउपमानैरही ॥ फूलीफूलवारीजामें बैठीप्राण प्यारीदेखतवसंतया वसंतऋतुह्वैरही ॥ ४५ ॥

॥ कवित्त ॥ फूलनकेखंभपाटपटरीसुफूलनकी फूलनकेफुंदनाफंसेहैं लालडोरेमें ॥ कहैपदमाकरवितानतनेफूलनके, फूलनकीझालरेसु झूलतझकोरेमै ॥ फूलरहीफूलनसुफूलफूलवारीतहां फूलहीकेफर्शफबेहै कुंजकोरेमै ॥ फूलझरीफूलभरीफूलजरीफूलनमें फूलही

सीफूलरहीफूलकेहिंडोरेंमैं॥४६॥इतिहिंडोरा (झूलण)

॥गजल॥ जिनप्रेमरस चाख्यानहीं अमृतपियातो क्याहुआ ॥ जिनइश्कमैशिरनादिया, जुगजुगजिया तोक्याहुआ ॥ मशहूरहूआपंथमे, साचितनकीयाआपको ॥ आलिमऔरफाजिलबना, दानाहुआतोक्या हुआ ॥ दिलमैदरदनाहिपियाको, वेठामुशाइखहोयके ॥ दिलकाहरटफिरतानहिं, तसवीफिरीतोक्याहुआ ॥ औरांनसीहततुंकरें, आपअमलकरतानहीं ॥ दिलका कुफरटुटानहीं, हाजीरहुआतोक्याहुआ ॥ जवइश्कके दरियावमैं, गर्कावतुहोतानहीं ॥ गंगायमुनगोदावरी न्हाताफिरातोक्याहुआ ॥ वलीरामपुकारतहैयही, पीपीजोकरतेनादिया ॥ मतलवहासिलनाहुआ, रोरो मुआतोक्याहुआ ॥ ३ ॥ १ ॥

॥ काफी ॥ नाजानुंमेरारामकैसाहै ॥ मुल्लांहोकेवांग जोदेवै, क्यातेरासाहिवबहिराहै ॥ कीडीकेपगनूपुरवाजै, सोभीसाहिवसुनताहै ॥ १ ॥ मालापहिरीतिलक लगाया, लंबीयाजटाबढाताहै ॥ अंतरतेरेकुफरकटारी, यूंनहिंसाहिबमिलताहै ॥ २ ॥ कौडीकौडीमायाजोडी, जोडजमीपरधरताहै ॥ चलनेकीजवत्यारीहोगई, हाथपसारेचलताहै ॥ ३ ॥ हीराहोवैपरखदिखावा, कौडीपरखनतेसाहै ॥ कहतकबीरसुनोभाइसाधो, हरि जैसेकोतैसाहै ॥ ४ ॥ २ ॥

अथजगन्नाथजीकेभजन ॥

ठाकुरभलेबिराजोजी ॥ ओडीसाजगन्नाथपुरीमेंभलेबिराजोजी ॥ बलभद्रजीकेभैया० ॥टेक॥ कबसेछोडीमथुरानगरी, कबसेछोडीकाशी ॥ झारखंडमेंआयबिराजै, बिंद्राबनकेबासी ॥ १ ॥ शतयुगछोडीमथुरानगरी, द्वापरछोडीकाशी ॥ कलियुगमेंतोआयबिराजे बिंद्रावनकेबासी ॥ २ ॥ उडियामांगेखिचडी, गालीमाँगेभात ॥ साधुमाँगेदर्सन, महाप्रसाद ॥ ३ ॥ दालरांधूभातरांधू, परवरकीतरकारी ॥ मीनमारिके भोगलगावै, अधमजातबंगाली ॥ ४ ॥ गांवगांवमें बागबगीचा, गलीगलीफुलवारी ॥ घरघरदेखोकेलानरियल, घरघरठाकुरबारी ॥ ५ ॥ दोदोकोसपरहाटलगायी, पांचकोशपरचट्टी ॥ चलतेचलतेपांवपिराने, सरीरहोगयेमट्टी ॥ ६ ॥ चट्टीचट्टीबनियालूटे, औरलूटेफिरंगी ॥ सिंहदरवाजेपंडालूटे, जात्रीभयेउदासी ॥ ७ ॥ सोलाहाथकीसाडीपहिरे, ऊपरधरेकिनारी ॥ सासुससुरकीलाजनराखै, अरधीटांग उघारी ॥ ८ ॥ बंगालीबेटीपरमसुंदरी, उनकीलंबीचोटी ॥ भावभक्तिकोमर्मनजाने, उनकीगरदनमोटी ॥ ९ ॥ नीलचक्रपरध्वजाबिराजै, मस्तकसोहैहीरा ॥ ठाकुरआगेदासीनाचै, गावैदासकबीरा ॥१०॥१॥

॥ अथ बावनद्वारेकीनामावलिप्रारंभः ॥

ओंकर्तारामनामानिरमलपद सबसंतनमिलिप्रेमपि

यारा ॥ करोंदंडवतकरजोरी निसदिनवर्णोंवारंवारा ॥ १ ॥ चारौजुगकीभक्तिअखंडित आदिअंतमध्य लागीं ॥ कलियुगछापतिलकअरुमाला प्रगटभयेवै रागी ॥ २ ॥ गुरुरामानंदजीनिमानंदजी हैबडेसुख कारी ॥ विष्णुस्वामीमाधवाचारज आदिसंप्रदाचारी ॥ ३ ॥ चारौघरकाघनापसारा द्वाराबहुतबढाना ॥ऐसा सब्दसुनोभाईसाधो बावनद्वारावखाना ॥ ४ ॥ अनंतानंदकब्बीरअरुसुखानंद नरहरिया ॥ भावानंद सुर सुरानंद पीपाजीकाद्वारिया ॥ ५ ॥ अग्रकीलकेभये अनंता जिनकाघनापसारा ॥ खोजीजीके वीरमत्यागी देवाकाहरिप्यारा ॥ ६ ॥ राघोचेतन अनभानंदजी अभयमुरारीकुबा ॥ परसुरामअरु राम रंगीपूरण वैराठिअजूबा ॥ ७ ॥ लाहा टीला जनसोमु कालुनेंनघमंडी ॥ ज्ञानी नाभा तत्ववेत्ता राधावल्लभबंदी ॥ ८ ॥गोकुल विठ्ठल नामविमलहै जिनकोयशजगछाया ॥ जनभगवान हठि नारायण जोगानंदगुणगाया ॥ ९ ॥ अलखरामअरु कंचनस्वामी रामरावल परमाने ॥ माधवदासअरु लालतुरंगी गोविंदासुखजाने ॥ १० ॥ आत्मारामअरुदासमलुका गोरखमलेवखाने ॥ रामरमानी बनखंडीनागा जीकोमाने ॥ ११ ॥ नित्यानंदजि दासमडंगी औरचतुरभुजिस्वामी ॥ चेतन स्वामी देवमुरारीदास विमलयशनामी ॥ १२ ॥ रा

मरावलअरु दुंदुस्थंभन हनुमानजगजाना ॥ तनतु
लसीजीबावनद्वाराभाषाभणीवखाना ॥ १२ ॥ इति
श्रीबावनद्वारासंपूर्ण ॥

अथद्विपञ्चाशद्वाराचार्याः ॥ ५२ ॥

योगानन्तसुखास्तथानरहरिर्भावस्तथागालवो, ह्या
नंदेतिपदान्तकाः सुरसुरश्शिष्याश्चसप्ताभवन् ॥ पी
पासेनधनारमाश्च कबिरःपद्मावतीचापरे, सार्द्धैर्द्वाद
शशिष्यकैस्तुगुरवः कुर्वन्तुनो मंगलम् ॥ १ ॥

रामानन्दो निम्बादित्योविष्णुस्वामीश्रीमाधवः ॥
चत्वारोभगवद्भक्ताजगतीधर्मस्थापकाः ॥ २ ॥ एते
षामनुयायिनोद्विपंचाशद्विजज्ञिरे ॥ अनन्तश्चा लखं
रामौ सुखानन्दोनरहरिः ॥ ३ ॥ कीलाग्रौसुसुरानन्दो
भावानन्दस्तथैवच ॥ देवांकरानभानंदोपीपाविरमथं
भणाः ॥ ४ ॥ नाभाटीलोतथाखोजीकूबालालतुरंगि
णौ ॥ मलूकश्चेतनस्वामी योगानन्दभंडंगिनौ ॥ ५ ॥
श्रीभगवन्नारायणौ रामरंगीचतुर्भुजः ॥ पूर्णविराठी
हनुमान्रामरावल एवच ॥ ६ ॥ कबीरदेवमुरारी दुं
दुरामस्तथैवच ॥ माधवोज्ञानिनामाश्च श्रीतनतुलसी
तथा ॥ ७ ॥ रांघोचेतनकालुश्च रामरमाणिरेवच ॥
रामानन्दानुयायिनांद्वाराः सप्तत्रिंशन्मताः ॥ ८ ॥
नागाख्यऋषोसुरामश्च वनखंडीधमंडीच ॥ परशुराम
श्चगोविन्दस्त्यागीकर्मचन्दस्तथा ॥ आत्मारामश्च

नवमोनिम्बार्कस्यानुयायिनां ॥ ९ ॥ नित्यानंदः श्यामानन्दः श्रीराधावल्लभस्तथा ॥ श्रीमाध्व संप्रदायिनांत्रयोद्वाराः सतांमताः ॥ १० ॥ सुभ क्तोनामदेवोवै गोकुलो विठ्ठलस्तथा ॥ विष्णुस्वाम्य नुयायिनां त्रयोद्वाराः सतांमताः ॥ ११ ॥ रामनाराय णेनेमेद्वारा अयोध्यावासिना चतुर्णांसंप्रदायिनां व र्णिताहिविभागशः ॥ १२ ॥

॥ अथसप्त, अखाडाः ॥

अखंडसंज्ञासंकेतः कृतोधर्मविवर्द्धये ॥
बालानन्दप्रभृतिभिः संप्रदायानुसारिभिः ॥ १ ॥

अर्थ-अखंड शब्दका अपभ्रंश अखाडा शब्दहै । संप्रदायानुसारी श्रीबालानंदादि वैष्णवोंने वैष्णवध र्मकी वृद्धिके लिये अखंड (अखाडा) इस संज्ञाका संकेत कियाहै ॥ १ ॥

॥ अखाडा ॥नाहमादिखंडोयत्र स अखंड उदाहृतः॥
चतुर्णांसंप्रदायिनामखंडाः सप्तवैमताः ॥ २ ॥

अर्थ-मैं मेरा ये खंडमाने भेदजिसमें न होय,उसको अखंड कहतेहैं ॥ चारों संप्रदायके सात अखाडे मा हात्माओंने अंगीकार कियेहैं ॥ २ ॥

तत्तदन्तर संज्ञानामर्थश्चैव यथाश्रुतः ॥
वर्णयामि वैष्णवानां पादपद्मं प्रणम्य वै ॥ ३ ॥

अर्थ-तीनतीन अखाडे कीदिगम्बरादि अंतरसंज्ञा

ओंका अर्थ जैसा मैंने माहात्माओंके मुखसे सुनाहै वैसा अर्थ, वैष्णवोंके चरण कमलमें प्रणामकरके वर्णन करताहूं ॥ ३ ॥

॥ दिगम्बर ॥ १ ॥ केवलंस्वेष्टदेवस्यस्मरणेवर्त्ततेसदा ॥
दिशोम्बराणियस्यस्यात्संमतस्सदिगम्बरः ॥ ४ ॥

अर्थ–केवल अपने इष्ट देवके स्मरणमें वर्त्तमान रहते हैं, औ दिशारूप वस्त्र जिसको है, उसको दिगम्बर अखाडा कहतेहैं ॥ ४ ॥

॥निर्वाण २ ॥ वानंविषयरूपंयच्छुष्कं फलमुदाहृतम् ॥
यस्माच्चुनिर्गतं वानं सनिर्वाणस्समीरितः ॥ ५ ॥

अर्थ–विषयरूप जो सूखाफल उसको वान कहाहै, वानमाने विषयरूप सूखाफल जिससे निकल गया होय उसको निर्वान अखाडा कहतेहैं ॥ ५ ॥

॥ निर्मोह ३ ॥ स्वस्यदेहानुवर्त्तिषु पुत्रवित्तगृहादिषु ॥
मोहोहिनिर्गतो यस्मात्स निर्मोहउदाहृतः ॥ ६ ॥

अर्थ–अपने देहके अनुवर्ति पुत्र धन गृहादिमें जो मोह है वह मोह जिससे निकल गया होय उसको निर्मोह अखाडा कहतेहैं ॥ ६ ॥

॥खाकी ॥ ४ ॥ खंब्रह्मण्यास्मरणेचकंसुखेचप्रकीर्त्तितं ॥
ब्रह्मणस्स्मरणेयस्यसुखं खाकीमतोबुधैः ॥ ७ ॥

अर्थ–खब्रह्मको कहतेहैं, आ स्मरणको, और कं सुखको कहतेहैं, खमाने ब्रह्मका आमाने स्मरणमें कं

माने सुख जिसको होय उसको खाकीअखाडाकहतेहैं ७
॥ निरालम्ब ५ ॥ देवान्तरेष्ववलंबोयश्चाल्पसुखसाधनः ॥
सनिश्शेषगतो यस्मान्निरालम्बोमतोहिसः ॥ ८ ॥
अर्थ-अल्पसुखकासाधन अन्य देवताओंके विषे जो अवलम्ब माने आश्रय है, वह निकलगया है जिससे उसको निरालम्ब अखाडा कहतेहैं ॥ ८ ॥
॥ संतोषी ६ ॥ स्वारब्धस्यतु संयोगात्स्वल्पेलब्धेपिवस्तुनि ॥ संतोषोविद्यतेयस्य ससंतोषीसदामतः ॥ ९ ॥
अर्थ-अपने प्रारब्धके संबंधसे थोडा प्राप्तवस्तुमें भी संतोष जिसको होय उसको संतोषी अखाडा कहतेहैं ॥ ९ ॥
॥ महानिर्वाण ७ ॥ निर्वाणं निवृत्तौनाशे मोक्षेचैवप्रकीर्त्तितम् ॥ महन्मोक्षसुखंयस्य समहानिर्वाणोमतः ॥ १० ॥
अर्थ-निर्वाणशब्द निवृत्तिनाश औमोक्ष अर्थमें कहा है, इहां निर्वाण शब्दका अर्थ मोक्ष है, बडाभारी निर्वाणमाने मोक्षरूप सुख जिसको होय उसको महा निर्वाण कहतेहैं ॥ १० ॥
छोरोबनागिरेदांरो होडदंघस्तृतीयकः ॥
मुदाठयश्चनागोवै षष्ठोऽतीतोमतोबुधैः ॥ ११ ॥
अर्थ-छोरा १ बनगीदार २ हूडदंघा ३ मुदाठिया ४ नागा ५ और अतीत ६ येछे संज्ञाओ सातो अखाडोमें हैं ॥ ११ ॥

प्रत्यखंडं च षट्संज्ञाविद्यंतेह्युत्तरोत्तराः ॥
तत्तत्सेवाविभागेन कृताः पूर्वैर्मुदावहाः ॥ १२ ॥

अर्थ-प्रति अखाडेमें उत्तरोत्तर क्रमसे एकएककी उपर एक एक ये छे संज्ञाओ विद्यमानहै। तीन तीन सेवाके विभागकरके आनंद देनेवाली छे संज्ञाओ पूर्वाचार्योंने कियेहै ॥ १२ ॥

तथात्र्यब्दान्तंत्र्यब्दान्तमेकैकातुप्रवर्त्तते ॥
पंचमीरविवर्षान्ता मताश्रीसुजनैस्सदा ॥ १३ ॥

अर्थ-तथा तीन तीन वर्षतक एक एक संज्ञा रहतीहै, पांचमी नागा यह संज्ञा रविवर्षमाने बारा वर्षतक रहतीहै, ऐसा सज्जन लोग मानते हैं, जिस कारणकि इस नागा संज्ञामें वैष्णव सेवाकी प्रधानता स्थितहै. नागा ही सेवकांसे मांग जाचके वैष्णव सेवा करतेहैं ॥ १३ ॥

अन्तिमायास्तुसंज्ञाया मरणावधिर्मतोबुधैः ॥
अस्यांभजननिष्ठाच हिताादिशश्चवर्त्तते ॥ १४॥

अर्थ-अंतवाली अतीतसंज्ञाकी अवधि मरणतक बुधलोगोंने मानीहै, इस अतीत संज्ञामें ही श्रीभगवद्भजननिष्ठा और नागादिके प्रतिहितोपदेश करना रहताहै ॥ १४ ॥

॥छोरा॥१॥ स्वपूर्वेषान्तुसेवायै दंतकाष्ठादिकंतथा॥
छरतितेन छोरेति संज्ञातस्यप्रकीर्तिता ॥ १५ ॥

अर्थ-अपनेसे बडे नागा अतीतोंकी सेवाके लिये जो दातून काटके लावे, जल देवे, स्नान करावे, झाडू लगावे, चौका लगावे, पत्ता दोना लगावे, उसकी छोरा संज्ञा कहीहै ॥ छुर छेदने धातुसे छोर शब्द बनताहै ॥ १५ ॥

॥बनगीदार ॥ २ ॥ सवनगिरिदारोवैरागद्येववनंचयः ॥
तृणातिप्रभुकैंकर्यैः कल्मषस्यगिरिंतथा ॥ १६ ॥

अर्थ-श्रीहनुमानजीके पट्टका धरना उठाना, पंगत मेंथार पहुचाना, बरतन मलना, छडी उठाना, इत्यादि भगवतकैंकर्यसे रागद्वेष लोभादि वनको और पापरूप पर्वतको जो नाश करताहै उसको बनगीदार कहतेहैं बनगिरि शब्दपूर्ववद्दविदारणे धातुसे बनगीदार शब्द बनताहै ॥ १६ ॥

॥हुडदंघा ॥३॥ अन्नपाकादिकैंकर्यैर्दुर्जनानामनादरात्।
पालयत्यात्मानंयस्तु होडदंघोमतो बुधैः ॥ १७ ॥

अर्थ-तवीपर बैठना, भोग लगाना, हरिहरकरना, घी सकर फेरना, रोटी फेरना, जयबोलाना, निशान उठाना, आर्तिकरना, ये रसोइआदि भगवत्कैंकर्या करके दुर्जनोंके तिरस्कारोंसे जो अपनेः आत्माका करताहै उसको हुडदंघा कहतेहैं ॥ होडृअनादरे, दधिपालने धातुसे होडदंघ शब्द बनताहै ॥ १७॥

॥ मुदाठिया॥४॥मुदमाप्नोतिसर्वत्रयतोदेवस्ततोमुदा

ठ्र। सेवार्थमयतेतंयो मुदाठयमतोहिसः ॥ १८ ॥

अर्थ-जिससे कि सर्वत्र आनंद प्राप्त होते हैं, उससे श्रीरामजीको मुदाठ कहतेहैं ॥ तिस रामजीकी सेवा केलिये, जो समीप प्राप्त होय और पूजा करे उसको मुदाठिया कहतेहैं ॥ मुदहर्षे, अठगतौ, अयगतौ ये तीन धातुओंसे मुदाठय शब्द बनताहै ॥ १८ ॥

॥ नागा ५ ॥ नगवदुपकारेयोवर्त्तते महतांसदा ॥

सम्यग्वचन चातुर्यैस्तेननागउदाहृतः ॥ १९ ॥

अर्थ-अच्छे वचनकी चतुराईसे सेवकोंको चेताय के वृक्षकीनाई जो महात्माओंके उपकारमें सदावर्त्तें और जगह जमींदारीदेखैं उसको नागा कहतेहैं॥१९॥

॥ अतीत६ ॥ पंचसंज्ञोक्तकैंकर्यमतिक्रम्यास्थितस्तुयः ॥

केवलंरामस्मरणे यत्तोऽतीतो मतो बुधैः ॥ २० ॥

अर्थ-पांचोसंज्ञाओंकी बनगी जो कही आयेहैं उससे छुट्टी पायके सावधान होके श्रीरामजीके स्मरणमें स्थित होय उसको बुधलोग अतीत कहतेहैं ॥ २० ॥

॥ अखाडमल्ल ॥ गुरुस्थानंमया सेव्यमित्यभिमानंसंत्यजन् ॥ अखंडंधरतेयश्चाखंडमल्लमतोहिसः ॥ २१ ॥

अर्थ-गुरुस्थान हमको सेवना चाहिये, इस अभिमानको छोडके जो अखाडाको धारण करताहै उसको अखाडमल्ल कहतेहैं ॥ २१ ॥

॥ स्थानधारी ॥ गुरुस्थानंमयासेव्यमितिधर्मंतुह्यत्यज

न्।।गुरुकृपावलंबीयः सहिस्थानधरोमतः ॥ २२ ॥
अर्थ-गुरुस्थान हमको सेवना चाहिये इस धर्मको नही त्याग करता हुवा केवल गुरुकृपा जो अवलंब करताहै उसको स्थानधारी कहतेहै ॥ २२ ॥

महानिर्वाण संतोषौ निर्मोहस्यानुयायिनौ ॥
निरालंबश्चखाकीच निर्वाणस्यानुयायिनौ ॥ २३ ॥

अर्थ-महानिर्वाण और संतोषी ये दोनों निर्मोह अखाडेके बगलमें चलतेहैं । निरालंब और खाकी ए दोनों निर्वाण अखाडेके बगलमें चलतेहैं ॥ २३ ॥

दिगम्बरश्चमध्यस्थोगमने वर्त्तते सदा ॥
निर्वाणश्चाग्रतोगच्छेन्निर्मोहस्तुपृष्ठतः ॥ २४ ॥

अर्थ-चलनेमें सबसमय दिगम्बर मध्यमें रहतेहै । जानेके समय निर्वाण, दिगम्बरके आगे चलतेहैं । और निर्मोह, दिगंबरके पीछे चलतेहै । लौटनेके समय निर्मोह, दिगंबरके आगे चलतेहै। और निर्वाणदिगंबरके पीछे चलतेहे ॥ २४ ॥

त्र्यनीकमेवंसबंधं सर्ववैष्णवसंमतं ।
वर्णितंचमयातत्तु पूर्वेभ्यश्चयथाश्रुतं ॥ २५ ॥

अर्थ-तीन अनी इसप्रकारसे बधीहै । सर्व वैष्णवों-के संमतसे, पूर्वमहात्माओंसे मैने जैसा सुना वैसा वर्णनाकिया ॥ २५ ॥

रामनारायणेनायं सुज्ञानायसतांसदा ॥

अखंडसंज्ञासिद्धान्तो वर्णितोवैमुदावहः ॥ २६ ॥

अर्थ-श्रीअयोध्यानिवासी श्रीभगवन्नारायण वंशोद्भव वैष्णव मूलग्रंथकृत पं० रामनारायण दासानुज पं० माधवदासने सज्जनोंके सहजसे । जाननेके लिये आनन्द देनेवाला सातो अखाडोंका सिद्धांत वर्णन किया ॥ २६ ॥

श्रीप्रयागकुंभ-मकरेचदिवानाथे अजगेचबृहस्पतौ ॥ कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः ॥ १ ॥ श्रीहरिद्वारकुंभ-पद्मिनीनायके मेषे कुंभराशिगते गुरौ॥ गंगाद्वारे भवेद्योगःकुंभपर्वस्ततोमतः ॥ २ ॥ कुंभराशिगते जीवे यद्दिने मेषगेरवौ ॥ हरिद्वारे कृतंस्नानं पुनरावृत्तिवर्जनं ॥ ३ ॥ श्रीगोदावरीकुंभ-सिंहराशिगतेसूर्ये सिंहराश्यांबृहस्पतौ गोदावर्यांभवेत्कुंभःपुनरावृत्तिवर्जनः ॥ ४ ॥ श्रीउज्जयिनीकुंभ-मेषराशिगते सूर्ये सिंहराश्यांबृहस्पतौ॥ उज्जयिन्यांभवेत्कुंभः सर्वसौख्यविवर्द्धनः ॥ ५ ॥

"माघेमेषगते जीवे मकरेचन्द्रभास्करौ अमावास्यातदायोगः कुंभाख्यस्तीर्थनायके ॥ ६ ॥

श्रीप्रयागकुंभ १.	श्रीहरिद्वार कुंभ २.	श्रीगोदावरीकुंभ ३.	श्रीउज्जयिनीकुंभ ४.
मेषके बृहस्पति और मकरके सूर्य होय तब कुंभ होता है.	कुंभके बृहस्पति और मेषके सूर्य होय तब कुंभ होता है.	सिंहके बृहस्पति और सिंहके सूर्य होय तब कुंभ होता है.	सिंहके बृहस्पति और मेषके सूर्य होय तब कुंभ होता है.

अथ गुरुमहिमा प्रारंः ॥

॥ दोहा ॥ अष्टअंगसोंदंडवत, प्रथमकियोपरणाम॥ जगन्नाथकरिहैगुरू, सबविधिपूरणकाम ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्रीगुरुदेवचरणचितलावौ, हृदयध्यानधरिशीशनवावौ ॥ करिकैस्तुतिपरकरमादीजै तनमनधनसबअर्पण किजै ॥ १ ॥ गुरुहैब्रह्मासुरतेतीसा गुरुविनुकोजानैजगदीसा ॥ गुरुहैनेमधर्मसबकेरा, गुरुहैआवागवननिवेरा ॥ २ ॥ गुरुहैज्ञानध्यानमसस्वामी, गुरुहैसबकेअंतरजामी ॥ गुरुविनुसबसूझतनहिंधंधा गुरुविनजगभटकतजिमिअंधा ॥ ३ ॥ गुरुहैसबतीरथव्रतपूजा, गुरुविनुऔरनहींहरिदूजा ॥ गुरुत्यागीऔरनगुणगावै, सोसूधोजमपुरकोजावै ॥ ४ ॥ गुरुमंत्रहृदयनहींधरही, सहजजाईनर्कमैपरही ॥ गुरुमंत्रनकोकरैजोत्यागा, निकसिकोदसोमरैअभागा ॥ ५ ॥ सातजन्मकोढीकेपावै, गुरुनिंदाजोसुनैसुनावै ॥ गुरुनिंदाजाकेमुखहोई, ताकोमुखदेखोमतिकोई ॥ ६ ॥ गुरुनिंदककामुखडाजारौ, आपमरौनिंदककोमारौ ॥ गुरुनिंदकजोबोलिदेखावै ताछिनकानमूंदिउठिजावै ॥ ७ ॥ गुरुनिंदाजोसुनैसयाना, शिशाओटिमरैतेहिकाना ॥ तब यहदोषमिटैवहुभारी, व्यासवचनसुनसाखिहमारी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ साखीस्मृतिऔरशास्त्रसब, आगमनिगमपुराण ॥ व्यासवचनसुनिमानिहै, हरिगुरुएकसमान ॥ २ ॥ चौपाई ॥

हरिरूठैतोगुरुवचावै, गुरुरुठैकहुँठौरनपावै ॥ जिमि नारदधीमरगुरुकिन्हा, पैमुखकहतश्रापहरिदिन्हा ॥१॥ कंपितबहुतदेवमुनिभयेऊ, अतीआतुरधीमरपहँगयेऊ॥मुनिवृतांतउपायबताया, चोरासीसेंतुरंतबचाया ॥ ॥ २ ॥ गुरुबिनुसकलक्रियाजगमाहीं, भक्तिमुक्तिफल उपजतनाहीं ॥ तातैप्रथमगुरुकोमानै, गुरुकौबचनहृदयमैंआनै ॥ ३ ॥ निसिदिनगुरुकोध्यानधरीजै, गुरुगुरुजापसदाजपीजै ॥ गुरुकेबचनमानियेप्यारे, गुरुगोविंदजानोमतिन्यारे ॥ ४ ॥ गुरुपदजलपियोमनलाई, गुरुउछिष्टपायेगतिहोई ॥ पदरजलायकरौनितसेवा, गुरुगोविंदएककहीदेवा ॥ ५ ॥ दोहा ॥ जपपूजादियोगक्रिया, करेअनिछीतजान ॥ अफलहोयऊगैनही, वोवोबीजपषान ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ कबहुकगुरुजोझूठवखानै, तोऊशिष्यसाचैकरिमानै ॥ गुरुसोउलटजवावनदीजै, संपतिजायपुन्यफलछीजै ॥ १ ॥ जोगुरुहोयकामलवलीना, क्रोधीकुटिलजातिमतिहीना॥लोभीलंपटकपटीकूरा, तोभीशिष्यजानैगुरुपूरा ॥२॥ कोढीकृष्णकुरूपकुजाना, महामूढमायालपटाना ॥ कातरकठीनमोहमेंक्रांती,तोउशिष्यजानेगुरुसांती ॥ ३ ॥ गुरुसोसनमुखवादनठानै, गुरुकोकष्टमंत्रसमजानै ॥ गुरुसोपरनप्रेमपदलेई, गुरुसेवाकौंमिथ्यानादेई ॥४॥ गुरुसोविमुखसोअतिअज्ञानी, विषयवासनासोरुचिमा

नी ॥ औरसजैअपलक्षनपावै, तोउताहिपरमेश्वर भावै ॥ ५ ॥ गरूजोबातअटपटीभाखै, शिष्यसदा मर्यादाराखै ॥ उत्तरफेरिकरैकछुनाही, हरिगुरुएकले खैमनमाही ॥ ६ ॥

दोहा ॥गुरुब्रह्मागुरुविष्णुशिव, पारब्रह्मगुरुदेव॥ गुरुते औरनदूसराजगन्नाथगुरुदेव ॥४॥ चौपाई ॥श्रीगुरुचरण जहांकहुंपावै, कौनोभांतिशिष्यजोहोवै ॥ त्रिविधप्रणा मतिहीछिनकरै, जैसेलकुटिहाथतेपरै ॥ १ ॥ गुरुप्रणाम सेंदुःखबहुनासै, गुरुप्रणामसुखसकलप्रकासै ॥ गुरुप्रणा मजमपुरनहींजावै, गुरुप्रणामपूरणगृहपावै॥२॥ दोहा ॥ रतनअमोलकमंजुहै, विविधभांतिकेचीर ॥ सर्वदेहिकी जेगुरुप्रशन्नताआधीर ॥५॥ चौपाई॥गुरुमहिमाकोकोक हिजावै, शेषमहेशपारनहिंपावै ॥ शिवसनकादिकमुनि सुखदेवा,नारदसारदउहैनभेवा ॥ १ ॥ मैकिमकहीमहा मतिहीना, जोकछुसुनासोईकहिदीन्हा ॥ जगन्नाथती नोपुरमाही, गुरुबिनुकाहूकीगतिनाही ॥ २ ॥ गुरुआवत आगेहोयलावै, बिदाहोतपहोचावनजावै ॥ सरधास हितकरैपरणामा, जोचाहैहरिपुरविश्रामा ॥ ३ ॥ जायगु रुआसनपुरबैठे, सोवतसेनभवनमैपैठे ॥ ताक्षनगु रुआगेसोटरिये, आज्ञाहोयतोआनंदकरिये ॥ ४ ॥ ध्यानमूलगुरुमूरतिजानै, पूजामूलगुरुपदमानै ॥ मंत्रमूलगुरुवाक्यविचारै, मोक्षअमलगुरुवाक्यनिहा

रै ॥ ५ ॥ नितउठिगुरुपादोदकपीवै, गुरुउच्छिष्टपाय
नितजीवै ॥ गुरुमूरतिकोकरियेध्याना, गुरुचरित्र
नितपढैसुजाना ॥ ६ ॥ गुरुसेंवादकरेनरकोई, इंकरतुंक
रजीतैजोई ॥ अगमघोरजंगलमैजावै, बिकटब्रह्मरा
क्षसगतिपावै ॥ ७ ॥ गुरुजोनपदारथहोई, गुरुसमान
जानोसबकोई ॥ तिनकाएककहैबीनुहरै, कुंभीपाक
नरकमैपरै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पीठासेनहीपावडीआसनसे
जसुजान ॥ हीननीरछायागुरु, निलंघनीगुरुनसमान
॥ ९ ॥ चौपाई ॥ वरणएकसबैकहिगुरुलिन्हा ॥ श्रवण
लागिकेजोगुरुदिन्हा ॥ भूमैअसघननदेखावै, जासोशि
ष्यहिरणहोईजावै ॥ १ ॥ आछेआछेमेहेलबनाई, दिन
दिनकीजेगुरुपधराई ॥ वछीयासहिदूधकीगाई, गुरुहि
देतआनंदसुखपाई ॥२॥ तनमनधनआपनोकछुनाहीं,
गुरुगुरुसुमिरिलेहुमनमाही ॥ औरौअधिकअमोलकही
रा, गुरुकेदियेमिटेजमपीरा ॥ ३ ॥ बसननयोदियो
गुरुहेता, मानौकनबोयोगुरुखेता ॥ काटैबहुतवेरनही
लावै, रतिएकलेमोहसमावै ॥ ४ ॥ भेटभक्तिसोआगेध
रीये, औरसकलसामग्रीकरिये ॥ मेवामधुरमिष्टपकवा
ना, गुरुजेवैजेवैभगवाना ॥ ५ ॥ अश्वमेधदससहस्रकरि
जै, वाजपेयसतकोटिपुरिजे ॥ सकलभूमितिरथकरि
आवै, सोफलगुरुचरित्रपढिपावै ॥ ६ ॥ संध्याप्रातदिव
ससध्याना, गुरुचरित्रकोकरैवखाना ॥ अगियारस

असावस्यापूनो, पढैपुण्यपावतफलदूनो ॥ ७ ॥ सातस मुद्रकरैमसीयानी, लेखनीभारअठारहजानी ॥ का गदभूमीसमस्तबनावै, सकलपातवृक्षनकेलावै ॥ ८ ॥ बरनैसहस्त्रसारदामाई, लिखैकोटिचतुराननधाई ॥ गुरुमहिमाकोपारनपावै, जगन्नाथजनकछुकगावै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ संवतसत्रहसोअरुसाठै, माघमासउ जियारीआठै ॥ भरणीइंद्रअरुमंगलवार, गुरुचरित्रभा षाबिस्तार ॥ ७ ॥ दोहा ॥ भूलाहोहुजोजानो, मात्रा बिंदुउच्चारि ॥ हाथजोरिविनतीकरौं, लीजोसंतसुधारि॥ स्वामीतुलसीदासके सेवकअतिहिनजगन्नाथ ॥ भाषा सरसगुरुचरित्र गुनकीनजलतेथलते ॥ ९ ॥ राखिलियो दीलाबंधनपार, मूरखहाथनदीजीयो, कहतचरीत्रपु कार ॥ १० ॥ इति जगन्नाथदासकृत गुरुमहिमा समाप्त॥

॥ अथ गुरुज्ञानध्यानमंगल ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुध्यानसुमिरनकरो, गौतमकोशिर नाय ॥ भक्तियोगविज्ञानको, याकोजानोभाव ॥ १ ॥ सुमरनसीतारामको, नरहरिकोधरिध्यान ॥ हनुमत कोशिरनायके, करौंरामगुणगान ॥ २ ॥ ध्यानधरो अवधूतको, जोजानततुमसंग ॥ भक्तियोगविज्ञानके तीनोसाधेअंग ॥ ३ ॥ अलखनिरंजनपरमात्मा, गु नातीतभगवंत ॥ रामचन्द्रतनुधारिप्रभु, कीन्हेचरित अनंत ॥ ४ ॥ भक्तियोगविज्ञानके, यह नहिधारोद्व

त्त ॥ येहिकारणइच्छारही, चिदानंदको चित्त ॥ ५ ॥
भक्तियोगविज्ञानको, कैसेधारोवृत्त ॥ सकलत्यागनि
वारणतन, करणिहोयनिवृत्त ॥ ६ ॥ कलियुगपापकठोर
अति, व्याकुलग्रसितसुमोह ॥ कृपासिन्धुताकेवति,
करिकेटेरीभोह ॥ ७ ॥ गरुड़लक्ष्मीत्यागिके, उठिधाये
सुरभूप ॥ दीनबन्धुआयेअवनि, धरीनरतनअवधूत
॥ ८ ॥ भक्तियोगविज्ञानको, सबकोजानतअंत ॥ नि
ष्ठाविचारसाधनसहित, करिहैकमलाकंत ॥ ९ ॥ शि
वविरंचिसनकादिमुनि, नारदादिमुनिधीर ॥ गणपति
शारदशेषश्रुति, सबकेमनभईपीर ॥ १० ॥ गरुड़लक्ष्मी
त्यागके, कहांगयेकृपाल ॥ खोजतव्याकुलदेवसब, स्व
र्गमृत्युपाताल ॥ ११ ॥ देखाव्याकुलदेवसब, शंभूना
शमनकाम ॥ ध्यानधरिकरिदेखिवो, काशीआवाहिरा
म ॥ १२ ॥ प्रयागजन्मपुनीतअति, चलिआयेगिरि
नाल ॥ गुरुदिक्षाकोधारिके बासकीन्हकुछकाल ॥ १३ ॥
राघवानन्दप्रतापते, जीत्योकालकराल ॥ गुरुआएवा
राणसी, आयेप्रभुतेहिकाल ॥ १४ ॥ संगसंतसबदेखि
के, हृदयअतिअनुराग ॥ आयेकाशीनाथयह, प्रभुवर
नीनिजभाग ॥ १५ ॥ आयेदेखेदेवसब, स्तुतिकरिब
नाय ॥ विश्वनाथसोभेटकरि, बैठेआनन्दपाय ॥ १६ ॥
देखासोचिमहेशतब, हृदयअतिहर्षाय ॥ गुणातीतअ
वधूततन, मम्मपुरपैठेआय ॥ १७ ॥ गोचरकरहिदेवस

व, अजसनकादिपुरारी ॥ गणपतिशारदशेशश्रुति, सो नहिपावहिपार ॥ १८ ॥ भक्तियोगविज्ञानयुत, नरत नउत्तमसंत ॥ बोलेविहसिमहेशतव, सेवकहोउअनंत ॥ १९ ॥ इच्छारुपशाकेतपती, श्रीगुरुरामानन्द ॥ जगतारणआयेअवनि, जगतपतिसुखकन्द ॥ २० ॥ प्रथमभक्तिधारणकरी, गुरुवरकरुणासिन्धु ॥ दृष्टिउठायदेखाप्रभू, परेप्रेमकेसिन्धु ॥ २१ ॥

प्रथमसुमिरिगुरुदेव, श्रीगुरुरामान्दजी, राजतकाशीमध्य, संतसबसाथजी ॥१॥ विश्वनाथदरबार, ज्ञानकीखानजी, करिगंगास्नान, रामकोध्यानजी ॥ २ ॥ मूंजजनेउधारी, मूंजकोपिनजी ॥ मुंजकोआरबंडधारि, उरवरमालजी ॥ ३ ॥ सिद्धजटाशिरधारि, रूपअवधूतजी ॥ हीराराजतकंठ, खेचरीकानजी ॥४॥ भालतिलकशुभधारि, द्वादशगातजी ॥ करतुलसीकीमाल, नामआधारजी ॥ ५ ॥ पद्मासनआरूढ, गायत्रिन्यासजी॥ मुद्राबहुतप्रकार, आचवनसाथजी॥६॥ राममन्त्रकोजाप, पापजरिखाकजी ॥ आचार्यकोवाक्य, वेदकीसाखजी॥७॥मानसउरधरिध्यान, सुपूजारामकी, क्रीटमुकुटवनमाल, वामदिशिजानकी॥८॥ भूषणविविधिप्रकार, मूरतिध्यानकी ॥ धूपदीपनैवेद, आरतिप्रेमकी ॥९॥ परदक्षिणाप्रणाम, स्तुतिज्ञानकी ॥ हृदयपरमउछाह, छटालखिरामकी ॥१० ॥ चर्णामृतप्रसाद, संतजनपाव

ही ॥ प्रसन्नसीताराम, भक्तिवरमागही ॥ ११ ॥ यहसर्गु
णकोज्ञान, भक्तिकोमूलजी ॥ निर्गुणकोप्रकाश, योग
कीबातजी ॥ अष्टक्रियाकोभेद, नौलीसाथजी ॥१२॥
आसनविविधप्रकार, मुद्रापांचजी ॥ यमसंयमदृढ
धारि, तत्वगुणवाचजी ॥ १३ षट्चक्रकोज्ञान, कमल
दूजसाथजी ॥ लालरंगकोध्यान, पाखुरीचारजी ॥१४॥
गणपतिकरईनिवास, चक्रआधारजी ॥ जेस्वाधिष्ठा
न रंगतहँपीतजी ॥१५॥ षट्दलब्रह्मावासे, देवसबसाथ
जी ॥ तीजेमनपूरक, रंगतहंनीलजी ॥१६॥ दशदलवि
ष्णु देव, लक्ष्मीवामजी ॥ द्वादशदलऔश्वेत, हृदयके
मध्यजी॥१७॥शिवशक्तिकोवास, सो अनहदनामजी॥
पंचमचक्रविशुद्ध, कंठकेबीचजी ॥१८॥ षोडशदलप्रमा
 ।जीवकोवासजी ॥ छट्ठा आज्ञाचक्र, भौंहकेमध्यजी
॥१९॥ दोदलज्योतीदेव, करतप्रकाशजी ॥ कमलसह
सदलसात, शीशकेमध्यजी॥२०॥सतगुरुकोस्थान, उ
र्द्धकीवाटजी॥उहांसुखमनशीश,शीशकेबीचजी ॥२१॥
अमृतकरतीपान, योगसरदारजी॥ हैसातोकीनाल, ना
गकेसाथजी ॥ २२ ॥ लिंगगुदाकेबीच, पोछलखुतासकी
॥मूलबंदतूजान, सुएडीवामेपांवकी ॥ २३ ॥ दहिनेलिंग
स्थान, आसनसिद्धजी ॥ कायासुधीराख, उनमुनि
ध्यानजी ॥ २४ ॥ पूरककुंभकधारि, मात्राबहुतजी ॥
उठीअपानवहराये, गगनकोचढगई ॥ २५ ॥ कमलन

कोप्रकाश, प्राणमेमिलगइ ॥ अनहदखुलोकपाट, कुंड
लनीशक्तिजी ॥ २६ ॥ शब्दकरतझंकार, जीवभयोब्रह्म
जी ॥ इंगला पिंगलाथाक, सुखमनासाथजी ॥ २७ ॥
भ्रमरगुफाकोद्वार, परमप्रकाशजी ॥ पूरकरेचकत्याग,
सुकुंभकचढिगई॥२८॥लागीवज्रकपाट, खेचरीद्वारजी॥
लगीअखंडसमाधि,श्रीगुरुरामानन्दकी॥२९॥ मेटीसक
लउपाधि, नाशभईकर्मकी ॥ नाहिनजीवस्वभाव, भा
वकछुअन्यजी ॥३०॥सोहँब्रह्मप्रकाश, मोक्षकोरूपजी॥
षट्शास्त्रहैनाहि,अष्टादशनामजी॥३१॥नाहिनचारोवेद,
ब्रह्ममेलीनजी ॥ नाहिनचारीवरण, नाहिकछुजातजी
॥ ३२ ॥ कर्मधर्मकछुनाहि, नाहीकछुजापजी ॥ घडीप
हरकछुनाहि, नाहीदिनरातजी ॥३३॥ चन्द्रसूर्य्यकोट
नाहि, नहिसुरवासजी ॥ ब्रह्माविष्णुतहांनाहि, नही
शिवधामजी ॥ ३४ ॥ नाहिनगणपतिदेव, शक्तिप्रका
शजी ॥ तिथिवारकछुनाहि, नहीशंक्रान्तजी ॥ ३५ ॥
अमावसपुनोनाहि, नाहिनवग्रहनामजी ॥ रासवरग
कछुनाहि, नाहिकछुयोगजी ॥ ३६ ॥ लग्नमुहूर्तकछु
नाहि, नक्षत्रनामजी ॥ मासवर्षकछुनाहि, नाहिग
हियुगचारिजी ॥ ३७॥ कल्पभयेसबलोप, सुन्यको
रूपजी ॥ नाहित्रिगुणप्रकाश, तत्वनहीपांचजी ॥ ३८ ॥
रूपरंगकछुनाहि, नामभयोलीनजी ॥ हैवहआपाआ
प, सुपूरणपूरजी ॥ ३९ ॥ अलखनिरंजनआप, गुरु

रामानन्दजी ॥ श्रीगुरुमंगलदास, इष्टईशसबजीव
को ॥ ४० ॥ भक्तियोगकोधाम, रूपविज्ञानको ॥
सिद्धनकौशिरमौर, दीपअज्ञानको ॥ ४१ ॥ दासन
कोप्रतिपाल, कालभयोकालको ॥ आचार्यकोज्ञान,
भक्तिकोथूलजी ॥ ४२ ॥ रामलियेअवतार, भेषअ
वधूतजी ॥ श्रीरामहिरामानन्द, रामकोरूपजी ॥ ४३॥
श्रीरामहीरामकोनाम, करतगुणगानजी ॥ श्रीराम
हीलिङ्गशरीर, रामस्थूलजी ॥ ४४ ॥ श्रीरामहीसू
क्ष्मसान, अमितप्रकाशजी ॥श्रीरामहीआत्मज्ञान, आ
त्मारामजी ॥ ४५ ॥ श्रीरामहीशुद्धस्वरूप, अलखभग
वानजी ॥ श्रीरामहीज्योतीज्ञान, रामवैराटजी ॥ ४६॥
श्रीरामहीपूरणब्रह्म, परेभगवानजी ॥ अमितरूपभग
वान, अमितप्रकाशजी ॥४७॥ अमितरूपकोधाम, रा
मरघुनाथजी ॥ रामानुजनिजदास, छत्रगहिठारजी
॥४८॥ शंकरधरिउरध्यान, चरणशिरनायजी ॥ इन्द्रा
दिसबदेव, पुष्पवर्षावेजी ॥ ४९ ॥ पूरणपरमानंद, गुरू
रामानंदजी ॥ नियमानुजआरतिसाज, माधोकरेचँव
रजी ॥५०॥ वल्लभशंखबजाय, हृदयअनुरागजी ॥ गो
रखआदिनवनाथ, सिद्धसबसाथजी ॥ ५१ ॥ पीपाकरई
प्रणाम, कबीररैदासजी ॥ नानकदादुआदि, औरसबपं
थजी ॥ ५२ ॥ चरणनकेसबदास, सबदासकरतप्रणाम

जी ॥ श्रीगुरुरामानन्दजीकोध्यान, सुनैऔरगावही ॥ ५३ ॥ परमधामकोवास, वहुरिनहिआवही ॥ यहमंगलगुरुज्ञान, संतगुणगावही ॥ ५४ ॥ उपजई परमविवेक, परमपदपावहीं ॥ भक्तियोगविज्ञान, संतजनधारही ॥ ५५॥ गोकुलदासधरिध्यान, चरणशिरनावही ॥ श्रीनरहरिपूजाजाप, नरसिंहकोपाठजी ॥ ॥५६॥श्रीनरहरिकोधरिध्यान, हृदयप्रकाशजी ॥ श्रीहनुमतकोप्रताप, अनुभवकेसाथजी ॥५७॥ सबसंतनको प्रणाम, करौशिरनायजी ॥ श्रीगुरुरामानंद, मंगलको रूपजी ॥५८॥ श्रीमंगलकोरिध्यान, मंगलप्रकाशजी ॥ श्रीगंगासरजुधाम, सुगोदनाग्रामजी ॥ ५९ ॥ श्रीगौतमकोस्थान, वसैवहांदासजी॥ गुरुपदचित्तलगाइ, परमसुखपावैजी ॥६०॥ इति श्री गुरुज्ञानध्यान मंगलसंपूर्ण

अथ रामजन्म मंगल ॥

प्रथम सुमिरि गुरुदेव, रामरघुनाथजी ॥ मंगलमये तिहुंलोक, दसाननकालजी ॥ १ ॥ अवधपुरीसुखधाम, चैतको अंतजी ॥ तिथि नौमी गुरुवार, रामको जन्मजी ॥ २ ॥ कौशल्यादिकमातु, सुद्रव्यलुटावही ॥ भामिनिरूपनिहारि, चकितमनभावही ॥ ३ ॥ अवधपुरीनरनारि, यूथमिलिआवही ॥ विविधिभांतिकरि गान, सुमंगलसाजही॥ ४ ॥ तोरणकेतुपताक, ध्वजागडवावही ॥ गजमणि चौकपुराय, सुकलशधरवावही

॥ ५ ॥ वीथीवगरबजार, सकलबनवावही ॥ नानावि
धिकेरंग, सुगन्धसिंचावही ॥६॥ गोरीश्यामा धौल,गौ
मगवावही ॥ रेशमझूलओढाय, सुसिंगमढवावही॥७॥
गजरथतुरंगमगाय, बहुतसजवावही ॥ गुरुवसिष्ठउप
देश, दानकरवावही ॥८॥ रघुवंशीआनन्द, तुरंगकुदा
वही ॥ विविधिभांतिदियेदान, सुनाचकरावही ॥ ९ ॥
बाजाबहुतप्रकार, अरावेझारिरहै ॥ वीणाशंखउपंग,
अवधपुरछइरहै ॥ १० ॥ ब्रह्मादिकसबदेव, रामकौताकि
रहै ॥ ठगकेलड्डुखाय, मनहुसबछाकिरहै ॥ ११ ॥ सन
कादिकमुनिवृन्द, सकलमिलिआवही ॥ रामरूपको
ध्यान, ज्ञानगुणगावही ॥ १२ ॥ गणपतिनाचहिद्वार,
शारदासंगरही ॥ शंकरकरेगुणगान, सुरतकछुनारही
॥ १३ ॥ सुरपतिमनआनन्द, अप्सरानाचरही ॥ दुंदु
भीबजहिंआकाश, पुष्पवर्षावही ॥ १४ ॥ निकटहिसर
जुनीर, सुनिर्मलवहिरहै ॥ विविधभांतिकेघाट, सुनीस
बछाकिरहै ॥ १५ ॥ ठौर ठौर बहुबाग, विविधबैठकर
है ॥ नानातरुफलफुल, डारसबझाकिरहै ॥ १६ ॥ बोल
तमोरचकोर, कोलाहलकरिरहै ॥ मानहुमुनिजनवृन्द,
वेदसबपढिरहै ॥ १७ ॥ कंचनकेसबमहल, तिवारेझु
किरहै ॥ बैठेहैबहुरूप, अरावेझुरिरहै ॥ १८ ॥ रतनज
डितमणि खंभ, सुपलनाजडावको ॥ शारदकरइवखा
न, झुलावतरामको ॥ १९ ॥ भरतशत्रुहनलषण,

पलनाझूलही ॥ भूषणविविधिप्रकार, कामलखिझल ही ॥ २० ॥ स्वर्गमृत्युपाताल, वधाइवजिरहे ॥ नाच हिनागिननाग, छत्रशिरकररहै ॥ २१ ॥ नारद परम उछाह, सुबेणुबजावहीं ॥ रामचरणशिरनाइ, नामगुण गावहीं ॥ २२॥ बहुमेवापकवान, मीठाईलावहीं॥२३॥ धूपदीपनैवेद, आरतीलगिरहे ॥ दामिनिदमकतरूप, भूपसबतकिरहे ॥ २४ ॥ ब्रह्मादिकमुनिदेव, सकलस्तु तिलये ॥ जन्मसुफलकरजानि, रामदर्शनभये ॥ २५ ॥ दशरथभयेविदेह, सुरतिनहिदेहकी ॥ गुरुकोकिन्हप्र णाम, छटालखिरामकी ॥२६ ॥ जननीसवआनन्द, प्रे समंगलभरी ॥ कंचनदीनोदान, जानकेसुभघरी॥२७॥ अवधपुरीनरनारि, अमितछबिसोभरी ॥ मानहुफुले फूल, सकलसोभाखडी ॥ २८ ॥ भूषणविविधिप्रका पीतपटछइरहे ॥ नानाविधिदियेदान, अजाचककैरहें ॥ २९ ॥ कपिलआदिसबसिद्ध, सुद्वारविराजहीं॥ दशर थकेदरबार, महाछबिछाजहीं ॥ ३० ॥ भृगुअगस्त्यमु निसंग, सकलमंगलभरे ॥ विश्वामित्रवसिष्ठ, करतस्तु तिखडे ॥ ३१ ॥ रामजन्मसुखधाम, कौनवर्णनकरै ॥ शारदभईमतिभोर, शेषसेनहीसरै ॥ ३२ ॥ यहमंगल प्रभात, सुनेयोगावहीं ॥ रामधामकोवास, बहुरिनहीं आवहीं॥३३॥मंगलरामस्वरूप, संतगुणगावहीं ॥ गोकु लदासधरिध्यान, सुमंगलगावहीं॥३४॥इतिश्रीरामज०

॥ अथ रामकृष्ण युगलमंगल ॥

प्रथमसुमिरीरघुनाथ, कृष्णगोपालजी ॥ मंगलमथु
रारूप, अयोध्याधामजी ॥ १ ॥ पावनसरजुनीर, सुनि
र्मलवहिरहै ॥ यमुनाकरतकलोल, मुनीसबछईरहै॥२॥
तिथिनौमी गुरुवार, अष्टमीबुधजी ॥ शुक्लपक्षरघुनाथ
कृष्णयदुनाथजी ॥ ३ ॥ धन्यदशरथमहाराज, कौश
ल्यामातुजी॥ धन्यदेवकीवसुदेव, यशोदानन्दजी॥४॥
रामलषणछविधाम, संगदोऊभ्रातजी ॥ कृष्णचन्दब
लराम, गोपकरगानजी॥५॥क्रीटमुकुटवनमाल, धनुष
सरकरधरै ॥ मोरमुकुटगलेमाल, वेणुधुनिमनहरै ॥ ६॥
भालतिलकशुभराज, पीताम्बरकछिरहै ॥ कछनीराज
तलाल, तिलकछविछकिरहै ॥७॥ संगसखासबवीर, ती
रसरजुखडे॥ग्वालबालनन्दलाल,शुयमुनातटखडे ॥८॥
धनुषबाणलियेहाथ, निशानावेधिरहे ॥ हाथलकुटमु
खवेणू, धेनुसंगरमिरहै ॥९॥ दशकन्धरकरकाल, रामके
हाथजी॥कंसहिकरिहैविध्वंस, कृष्णगोपालजी ॥ १० ॥
विदितलोकतिहुसूर्य्य, वंशप्रकाशजी ॥ सोमवंशयदु
नाथ, नन्दगृहवासजी ॥ ११ ॥ पूरनपरमानन्द, रामर
घुनाथजी ॥ बृजमें कीन्ह विलास, कृष्णयदुनाथजी
॥ १२ ॥ कौसल्यादिकमातु, आरतीरामकी ॥ देवकी
परमानन्द, कृष्णछविधामकी ॥ १३ ॥ दशरथमन
आनन्द, सुद्रव्यलुटावही ॥ विविधिभांतिदियेदान, न

न्दमनभावही ॥ १४ ॥ किन्नरकरतगान, अप्सरानाच ही॥दुंदुभीबजहीअकाशी,पुष्पबर्षावही ॥ १५ ॥ ब्रह्मादि कमुनिदेव, दरशहितआवही ॥ युगलसुमूरतिदेख, जन्मफलपावही ॥१६॥गणपतिशारदशेष, विमलयशगावही ॥ रामकेचरितपरपारनहीपावही ॥१७॥रामकृष्ण कोध्यान, शंकरहृदयधरे ॥ नारदकरेगुणगान, इंद्रपूजा करे॥१८॥यहमंगलयुगध्यान, संतगुणगावही ॥ उपजहि विमलविवेक, परमपदपावही ॥१९ ॥ करैश्रवणअज्ञान, बहुरिनहीआवही ॥ गोकुलदासधरिध्यान, सुमङ्गल गावही ॥ इतिश्रीरामकृष्णयुगलमङ्गल ॥

॥ अथ काया काशी अष्टक ॥

प्रभुअविनासी यहितनवासी, अलखरूप कोइल खिनसको ॥ कायाकाशी सबसुखरासी, निशिदिनम नजहांवासकरे ॥ टेक ॥ आधारचक्रपरजगतविरा जै, जापरगणपतिवासकरो ॥ रिद्धिसिद्धिदोउसन्मु खठाढी, गणपतिरजापकरो ॥ स्वाधिष्टानपरब्रह्मारा जै, सकलदेवजहांछायरहो ॥ विषयवासछूटेनहिमनसे मदनरूपजहांदरसपरो ॥ मनपूरकविष्णूकीवासा, म हालक्ष्मीबामलसो ॥ सुरनरमुनिसबअस्तुतिकरते, विष्णू २ जहांजपनकरो ॥ हृदयमध्यशिवशारदराजे, निशिदिनअनहदउठाकरो ॥ कंठमध्यखोडसदलरा जै, भ्रमररूपहोयजीववसो ॥ इंगलापिंगलामारगथाके,

सुखमनतालाजायखोलो ॥ इंगलापिंगला गंगावरूणा, असिसुखमनाजानिपरो ॥ विश्वनाथत्रिवेनीवासी, ज्योतिरूपजहँझलकपरो ॥ सहसपद्मदलतामेसतगुरू, अगमधामजिहि निगमकहो ॥ नागिननागभेदखेंच कर, अमरापुरमेजायवसो ॥ पूरकरेचकदोंनोंत्यागि, कुम्भकउपरजाईचढो ॥ खैचखेचरीद्वारेदिन्ही, ब्रह्मरूप जहांआपभयो ॥ वेदपुराणसकलसुरगावत, गणपतिशारदशेशकहो ॥ गोकुलदासगुरुमूरतशंभु, चरणकमल कोध्यानधरो ॥ इति काश्याष्टक संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मप्रकाश योग ॥

ओं अवधुतसतशब्दविचारोभाई ॥ पांचतत्व की कायावनाई, तीनगूणनकरसबविस्तारा ॥ जामेअवधुतकरोविचारा ॥ सहजहिभवनिधिउतरोपारा, अष्ठअंगसोभेदलखिपटचक्रकोसारा ॥ १ ॥ एसीधरोधारणाछूटे, सकलविकार ॥ अष्ठक्रियासुद्धकरि आसनविविधप्रकार ॥ १ ॥ मारेकपालीसाधके, आसनपद्महिधार ॥ यमसंयमदृढधारिये, क्षमाशीलसंतोष ॥ २ ॥ भलीबूरीसबकोसहे, तननहीपावेदोष ॥ जिनइन्द्रीआसनअचल, रहेआत्मालीन ॥ ३ ॥ योगी मुंजेवासना, सुनहुसंतप्रवीन ॥ आधारचक्रकोभेदसुनि, गणनायककोवास ॥ ४ ॥ रिद्धसिद्धसनमुखखडी, सकलबुद्धप्रकाश ॥ दूजे स्वाधिष्ठान, पुनीब्रह्मासुर

पतिसाथ ॥ ५ ॥ सुरक्रिडातामेलखी, मदनरूपप्रकाश ॥ तिजेमनपूरकतहां लक्ष्मीपतिकोवास ॥ ६ ॥ सकलअस्तुतिकरै, सकललोकप्रकास ॥ शिवशक्तिकोवासकरि, हृदयअनहदमाई ॥ ७ ॥ ध्यानीधारै धारना, शब्दरूपहोइजाई ॥ पंचमचक्रविशुद्धसुन, प्रणवकोप्रकाश ॥ ८ ॥ षोडसदलकेबीचमे, जीवकरै तहांवास ॥ त्रिवेनीकेबीचमे, भ्रमरगुफाकोद्वार ॥ ९ ॥ छठवीआज्ञाजानिये, ज्योतिरूपप्रकाश ॥ कमलसहसदलउर्द्धमुख, सोसुखमनकोसाथ ॥ १० ॥ सतगुरुकोप्रतापसुनि, अमितभानुप्रकाश ॥ सुखमननागिननागहै, कबहूनछांडे साथ ॥ ११ ॥ सीसलगी आकाशमे, पूछलगीपाताल ॥ मूलद्वारको वंदकरि, आसनसिद्धलगाव ॥१२॥ कायासुधीराखिके, धरोनसुनिध्यान॥अपानवायूसूधीभई,मिलिप्राणसोजाय॥१३॥ अनहदकोद्वाराखुलो शब्दरूपझनकार॥इंगलापिंगलाहैही, केवलसुखमुनिसाथ ॥१४॥ भ्रमरगुफाकेद्वारपर, देखीप्रेमप्रकाश ॥ कुंभकसुखमनसाथकरि, उपरपहूंचीजाय ॥ १५ ॥ पूरकरेचकत्यागके, दईखैचरीद्वार ॥ जैसेगंगासकलमिलि, गइसागरकीधार ॥१६॥ सकलनीर एकईभयो, कोचीन्हेगोताहि ॥ जैसेध्यानीध्यानमें, मिल्योब्रह्मसोजाहि ॥१७॥ नामरूपएकहीभयो,कोचीन्हे गोताहि ॥ अलखजाइअलखेमिल्यो, अलख २ भयो

ध्यान ॥ १८ ॥ वेदपुरानवर्णनकरे, ऐसेआत्मज्ञान॥ आ तमतत्वविचारके, भयेआत्मारूप ॥१९॥ गोकुलदासव र्णनकरै, सुनहुसंतसुरभूप ॥ २० ॥ इतिआत्मप्रकाश योगसंपूर्णम् ॥

॥ अथ जानकीमंगल ॥

❀ चौपाई ॥ प्रथमसुमिरिगुरुदेव, गणेशमनाइये ॥ शारदकोशिरनाइ, रामगुणगाइये ॥ प्रभुगुणसिंधुस मान, कौनवर्णनकरै ॥ जैसीजाकीबुद्धि, तैसीहृदय धरै ॥ तवबोलेऋषिराय, अवधपुरजाइये ॥ रामभये अवतार, यज्ञहितलाइये ॥ करिसरयूस्नान, नृपतिगृह आइये ॥ वहुविधिपूजाकरि, सिंहासनबैठाइये ॥ छंद ॥ कहततपोधनअवधपति, दोउकुँवरहमकोदीजिये ॥ यज्ञपूरणहोइहमरो, विप्रकोयशलीजिये चौपाई ॥ सुनिऋषिकेवचन, नृपशोचकीनोघनी ॥ कीजैकौन उपाय, वातगाढीवनी ॥ तबबोलेगुरुवशिष्ठ, नृपति शोचनहिंकीजिये ॥ येपूरणअवतार, यज्ञहितदीजिये ॥ छंद ॥ प्रेमकोउपकारकर, नृपसुतदोऊगोदीलिये ॥ म हामुनिनकीभेंटलै, श्रीरामअरुलक्ष्मणदिये ॥ चौपाई॥ रत्नजडितपटवांध, धनुषलियो हाथसों ॥ कीनोबहुत प्रणाम, पिताअरुमातसों ॥ नयनरहेजलपूरि, पिता अरुमातके ॥ इनकोनीकेराखियो, येपुत्रअना थके ॥ छंद ॥ आगेआगे विश्वामित्रमहामुनि, पी

छैलक्ष्मण रामजी ॥ सजलतनघनश्यामसुंदर, सक लपूरणकामजी ॥ चौपाई ॥ राजतवदनविशाल, बाँके हगसोहना ॥ नाशापरमसुढार, मदनमनमोहना ॥ यह छबिविविधप्रकास, रामगुण गायहैं ॥ गौरश्यामदो उभ्रात, मुनिकेमनभायहैं ॥ छंद ॥ उठिराक्षिसीघोर महाप्रभु, बाणएकैसोहनी ॥ विप्रकोयज्ञकियोपूरण, कृपाकरिकोशलधनी, चौपाई ॥ मारोगर्वशुमान, ध्या नहरिसोंधरो ॥ चौंकिपरीजियमांझ, रामशरसोंडरो ॥ ब्रह्मअस्त्रकरधारी, मारीचसुमारियो ॥ सौयोजन तनु परयो, सुरतिबिसराइयो ॥ छंद ॥ मारीचटारिसुबाहु मारे, मुनिनकेमंगलभये ॥ सुरविमानपुष्प वर्षं, हर्ष जैजैजैकिये ॥ चौपाई ॥ रच्योहैस्वयंवरजनक, रामच लिदेखिये ॥ आयेहैंबहुभूप, सबैमिलीपेखिये ॥ मलिक हीऋषिराय, जनकपुरजाइये ॥ शिवधनुकठिन कठोर, दरशादिखाइये ॥ छंद ॥ चरणकीरजलागि, अहल्या तुरतही, छबिसोंभरी ॥ करजोरिअंजलिभईठाढी, श्रीरामकीअस्तुतिकरी ॥ चौपाई ॥ चरणपरशिकुलता री, तुरतपतिपुरकोगई ॥ ऐसोकौतुकदेखि, केवटनौका गही ॥ टेरतहैंरघुनाथ, तीरनौकाल्याउरे ॥ वेगिउता रोप्रभुपार, डरौजिनबावरे ॥ छंद ॥ करजोरिकेवटयोंक हैप्रभु, बांहनपैपारउतारिहौं ॥ शिलाज्यौंउडिजाय नौका, कुटुंबकिसाविधिपालिहौं ॥ चौपाई ॥ जोनौ

काउडिजाय, धूरिलगिपाँयकी ॥ तातेदूनीहेंहुँ, गढाई नावकी ॥ केवटचरणप्रक्षालि, श्रीरामबैठाइयो ॥ क्षणमहँनौकाखेयके, पारलगाइयो ॥ छंद॥ करुणासिंधुदयालु रघुवरतारि, दासअपनोकियो ॥ योगेश्वरन कोहोतदुर्लभ, सोईपदकेवटकोदियो॥ चोपाई नौकाउतरेपार, श्रीरामजनकपुरकोचले ॥ तोरेंगेशिवधनुष, सगुणभेंटेभले ॥ वनउपवनबहुबाग, विविधबैठकबनी ॥ कंचनहूमैजटित, हेमरचनाबनी ॥ छंद ॥ ठौरठौर बहुभूपउपमा, जनकपुरअतिसोहना ॥ बसेजनकपुर लोगसुंदर, मदनकोमनमोहना ॥ चौपाई ॥ जनकसभाकेमध्य, भूपलखिछाकिरहे ॥ ठगकेलाडूखाय, मनोसबथकिरहे ॥ पूछतहैमिथिलेश, कुँवरऋषिकोनके ॥ पूरणाजिनकेभाग्य, दोऊसुतजोनके ॥ महासुभटरणधीर, दोऊगुणलायके ॥ रघुवंशीमहाराज, श्रीदशरथरायके ॥ नरनारीयोंकहैं, येदोऊवयकिशोरहैं ॥ शिवधनुकठिनकठोर, कैसेकरितोरिहैं ॥ छंद ॥ येछविश्यामलगोर, हरषिनिरखिकरलीजियै ॥ वारैकामकोटिस्वरूपसुंदर, नयनभरिभरिपीजियै ॥ अछसौमलकष्टकरिकै, धनुसभामध्यआनियो ॥ लागेहैं वडेबडेभूप योधा, धनुषकाहुनतानियो ॥ चौपाई ॥ कहतासियासुनुतात, धनुषप्रणजिनकरो ॥ नातरतजिहौंप्राणकि, एहीवरसैंबरो ॥ करुणासागरराम, जा

नकीजानिये ॥ पीतांबरकटिबांधि, धनुपलैतानिये ॥ छंद ॥ जयजयकारभईतिहुँलोक, भूपसबैमुरझाइये ॥ श्रीरामचंद्रमुखनिरखी सियनसुमनमालपहराइये ॥ चौपाई ॥ सोहतसीताराम, कनकमंडपतरैं ॥ शिरसोनेकोमुकुट, मंजुमुक्तागरैं ॥ राजतअमलकपोलु, किमुक्तामोलके ॥ सुंदरलोचनलोल, कमलजनुभोरके ॥ सुरंगचूनरीनिपट, पीतपटछारही ॥ मानोअरुणघनश्याम, चपलताछैरही ॥ यहभूषणप्रतिबिंब,रामछबिउरधरैं ॥ मनौयमुनाजलमध्य, दीखदीपकबरैं॥ रामभुजाकेनिकट, सियाभुजयों लसे ॥ मरकतमणिकेखंभ, मानोकंचनकसे ॥ रामभयेतनुगौर, सियाभई साँवरी ॥ सादरसोबुधिवन्त, वधूभईबावरी ॥ रामभयेघनश्याम, सियाभईदामिनी ॥ मुनिभयेचंद्रचकोर, चकितभईभामिनी ॥ पुष्पनवर्षतमेघ, मुनिसबथरहरैं ॥ होतजनकपुरव्याह, रामभंवरिफिरैं ॥ रामसियाको, ध्यान सदाशंकरधरैं ॥ ब्रह्मारूपनिहार, इंद्रपूजाकरैं ॥ सुरनरमुनिआनंद, सुमनवर्षाकरैं ॥ ब्रह्मआदिसबदेव, मुदितजयजयकरैं ॥ तुलसीसीताराम, सहितउरआनिये ॥ रामभजनबिनुजन्म, सुमिथ्याकरिजानिये ॥ इति श्रीजानकीमंगल ॥ ॥ ॥

॥ अथ राम मंगल ॥

जन्मे श्रीरघुनाथ, अवधपुर आयके ॥ आये हे

सब देव, दरसहित धायके ॥ १ ॥ तिथि नौमि गुरु
वार, पूनरवसुशुभघरी ॥ सुकलपक्ष मधुमास, दिवा
कर नौघरी ॥ २ ॥ निरमल अमल अनंद, महा
मंगलभरी ॥ करुणा पूरण राम, जन्म लियो
शुभघरी ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिक सबदेव, दरशहित
आवही ॥ नीरखि रामजीको रूप, सुमनझरि
लावही ॥४॥ विविधि भांति रस धारि, परस्पर
परखहीं ॥ कुंकुम अगर कपूर, नारिनरबरषहीं ॥ ५ ॥
बाजत ताल मृदंग, झांज डफ बांकुरे ॥ वीणा शंख
उपंग, अवधपुर मांघुरे ॥ ६ ॥ अवधपुरी अतिधन्य,
जहां प्रभु अवतरे ॥ विश्वामित्र वसिष्ठ, करत मंगल
खरे ॥ ७ ॥ दशरथके बडे भाग्य, कहे शिवआयके ॥
विप्रनदिये हैं असीस, दान बहुपायके ॥ ८ ॥ कौ
शल्यादिमातु, महा मंगल भरी ॥ विप्रनदिये हैं दान,
जानिके शुभघरी ॥ ९ ॥ अवधपुरी नरनारी, अमित
छवि सोभरी ॥ मंगल करत अपार, भूपगृह पग धरी
॥ १० ॥ पीतांबर वनमाल, कमर गाढी कसे ॥
धनुषबाण लीये हाथ, मुकुट सिरपें लसे ॥ ११ ॥
सोहत चँवर सिर छत्र, कुंडल झिलमिल करैं ॥ नू
पुर बाजूबंध, जननके मनहरैं ॥ १२ ॥ महिमा अगम
अपार, भक्त दुःखखंडनी ॥ सोहैं बामे अंग, जन
कजीकी नंदनी ॥ १३ ॥ भरत शत्रुघन लखन,

सखा संग सोहही ॥ बिहरत सरजूतीर, मुनिनमन मोहही ॥ १४ ॥ पावन सरजू तीर, नित्य मंजन करें॥ उपवन बिहरत राम, धनुष शर कर धरें ॥ १५ ॥ वनके खग मृग जीव, दरश पावैं भले ॥ पाये चतुर भुज रूप, देवपुरको चले ॥ १६ ॥ सुंदर बदन विलोकि, ध्यान उरलावहीं ॥ नाचहिं गावहिं गीत, परम सुख पावहीं ॥ १७ ॥ यह मंगल नरनारि, सुने अरु गावहीं ॥ धरें रघुवरजीको ध्यान, परम सुख पावहीं ॥ १८ ॥ मंगल गावहिं संत, परम पद पावहीं ॥ जन मुकुंद करजोरि, यथा मति गावहीं ॥ १९ ॥ इति श्रीमुकुंददासकृत राममंगल ॥

॥ अथ राम अष्टक ॥

अवधपुरी निज धाम कहिये, निकट सरजू गंग है ॥ दशरथनंदन असुर भंजन ॥ सीया रामजी पुरण ब्रह्म है, राघो रामजी पुरण ब्रह्म है ॥ १ ॥ सती सीता भ्रात लक्ष्मण, धनुष धारी सीतारामजी है॥ चीत्रकोट तप लोक कहिये ॥ सीया० राघो० ॥ २ ॥ भालतिलक विशाल लोचन, आनंद कारी सीतारामजी है ॥ सामली सुरति मधुरी सुरति ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ३ ॥ लंकापुरी छीन माहिजारे, आज्ञाकारी हनुमानजी है ॥ रावण मारी बिभिषण थाप्यो ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ४ ॥ अष्ट

सिद्धि नवनिधिकेदाता, भक्ति मुक्ति वरदायकं ॥ ज्ञान जोग स्वरुपसुंदर ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ५ ॥ ब्रह्माशेष महेश नारद, कोटी अठ्ठासी मुनिदेवता ॥ इंद्रादिक सनकादिक ध्यावै ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ६ ॥ अनंत कला जुग चार प्रगटे, सप्तदीप नव खंड है ॥ आद्य अंत मध्य खोजि देखो ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ७ ॥ श्रीराम अष्टक पठत निशदिन, विष्णुलोक सगच्छति ॥ श्रीरामानंद अवतार अद्भुत ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ८ ॥ इति श्रीरामअष्टक संपूर्णम् ॥

अथ कृष्णमंगल ॥

❀ छंद ॥ जनमें श्रीकृष्णमुरारी, भक्तहितकारने ॥ मथुरालियोअवतार, गोकुलझुलैंपालने ॥ तिथि अष्टमीबुधवार, भादोंवदिकीकरी ॥ रोहिणीनक्षत्र आधीरात, जनमलियोशुभघरी ॥ धनिदेवकीवसुदेव, जहाँप्रभु अवतरे ॥ धन्ययशोदानंद, महरघर पगधरे ॥ धन्यधन्यसुरनरमुनि, सकलजयजयकरैं ॥ दुंदुभिवजतअकाश, सुमनवर्षाकरैं ॥ ब्रजबासीगोरस, भरिभरि करिल्यावहीं ॥ दधिकांदौंबाबा नंद, सुकीचमचावहीं ॥ बाजततालमृदंग, बीन और बाँसुरी ॥ निरततगोपीग्वाल, चरणाचितचावरी ॥ यशुमतिचीरपहिराय, नौरंगभईग्वालिनी ॥ सुंदरवदननिहारी, चक्रतभईभामिनी ॥ श्रीबलभद्रजीके

बीर, असुरदलखंडना ॥ भक्तवत्सलमहाराज यादव कुलमंडना ॥ शंकरधरतहैध्यान, सुगोदखिलावहीं ॥ सोमुखचूमतिमाई, सुपलनाझुलावहीं ॥ श्रीनंदयशोदा सेनेह, चरणचितल्यावहीं ॥ हरिगुणमंगलगाय, गोविंदगुणगावहीं ॥ इति श्रीकृष्णमंगल संपूर्णम् ॥

॥ अथ हनुमान अष्टक ॥

चरचीत चंदन सिंदुर भूषन, नपसिपरूपअपंडितं ॥ अपरबलभुजदंडबाहु ॥ श्रीहनुमंतदेवमहाबलं ॥ श्रीरामदुतमहाबलं ॥ १ ॥ श्रीरामतेजप्रतापराजत, राघवंकुलसेवितं ॥ पवननंदनवीरबाहु ॥ श्रीहनु० ॥ २ ॥ उदीतदीनकरदेवसुरपति, कंपतेसवहुरजनं ॥ अग्रसुषश्रीरामपुजा ॥ श्रीहनु० ॥ ३ ॥ जुधमध्येह तेदानव, सैलवृक्षउखाडितं ॥ देवसुरपतिकरतजय जय ॥ श्रीहनु० ॥ ४ ॥ श्रीरामदुतप्रचंडजोधा, सागरसैलउलंघनं ॥ लंकाप्रजारीसियासुधिलाये ॥ श्रीहनु० ॥ ५ ॥ नीलनलरणधीरजोधा, सुग्रीवराज्यकपीश्वरं ॥ जामवंतअरुबालीनंदन ॥ श्रीहनु० ॥ ६ ॥ सींघरूप निशंकगर्जत, डगमगेमहिभूधरं ॥ हाकदेतदिगपालकंपै श्रीहनु० ॥ ७ ॥ वीररूपनिशंकगरजत, दुष्टदानवमर्दनं ॥ भूतप्रेतपिशाचकंपै ॥ श्रीहनु० ॥ ८ ॥ दुविदमयंदअसंकजोधा, केसरीअतिमहाबलं ॥ देवअंसअवतारधारे ॥ श्रीहनुमंत ॥ ९ ॥ हनुमानअ

ष्टक पढतनिसीदिन, विष्णुलोकसोगछितं ॥ दासतुलसीशरनआये ॥ श्रीह० ॥ १० ॥ इतिश्रीहनुमान अष्टक

॥ अथ कृष्ण अष्टक ॥

नंदनंदन जगतबंदन, चरणरज कुबजातरी ॥ जुग चारो पुरण ब्रह्मकहिए ॥ श्रीकृष्ण राजतमधुपुरी ॥ श्रीगोपालजी राजत मधुपुरी ॥ १ ॥ बंसी बट तट निकट जमुना, स्यामरे मुरली धरी ॥ मुरलीकी धुनि सुनि, तीनलोक मोहै ॥ श्रीकृष्णरा० श्रीगो० रा० ॥ २ ॥ मुकुटलट पट पीतपट रस, खोर चंदनकी बनी ॥ वनवारीलालजी गोपालजी कहिए ॥ श्रीकृष्ण रा० श्रीगो० रा० ॥ ३ ॥ रासरमनी शेष संकर, रटतहै छीन छीन घरी ॥ इंद्र चंद्र कुनेर ब्रह्मा ॥ श्रीकृष्ण रा० श्रीगो० रा० ॥ ४ ॥ ब्रंदावनमेंमदनमोहन, अष्टसिद्धिनवनिधिभरी ॥ कालीनागघनस्यामनाथ्यो ॥ श्रीकृष्णरा० ॥ श्रीगो० रा० ॥ ५ ॥ गोपगोपी संगलीन्हे॥ कुंजनवन क्रीडाकरी ॥ रासरच्यो वसुदेव नंदन श्रीकृष्ण रा० ॥ श्रीगो० रा० ॥ ६ ॥ कंसवंशविध्वंसमोहन, ब्रजबधुपावनकरी ॥ उग्रसेनकोराजदीन्हो ॥ श्रीकृष्णरा० ॥ श्रीगो० रा० ॥ ७ ॥ श्रीकृष्णअष्टक पढत निसदिन ॥ विष्णु लोक सिधा वही ॥ श्रीनिमानुजअवतारअदभुत ॥ श्रीकृष्ण राजतमधुपुरी ॥ श्रीगोपालजी राजतमधुपुरी ॥ ८ ॥ इति कृष्ण अष्टक ॥

॥ अथ बद्रिनाथ अष्टक प्रारंभ ॥

पवनमंदसुगंधसीतल, हेमसंदीरशोभीतं ॥ निकटगं गावहतनिरमल ॥ श्रीबद्रिनाथविसंभरं ॥ श्रीयोगध्या नविसंभरं ॥ १ ॥ शेषसुमीरनकरतनिसदिन, धरतध्या नमहेश्वरं ॥ वेदब्रह्माकरत अस्तुति ॥ श्रीबद्रिनाथ० ॥ २ ॥ इंद्रचंद्रकुबेरदिनकर, धूपदीपप्रकासितं ॥ सक लमुनिजनकरतजयजय ॥ श्रीबद्रिनाथ० ॥३॥ दक्षकेल लकरतकौतुक, ग्यानध्यानप्रकाशितं ॥ श्रीलक्ष्मीक मलाचँवरढोले ॥ श्रीबद्रि० ॥ ४ ॥ शक्तिगौरीगणेशसा रद, नारदमुनिधुनीउचरे ॥ जोगध्यानअपारलीला ॥ श्रीबद्रि० ॥ ५ ॥ कैलासमेंएकदेवनिरंजन, शैलशिखर महेश्वरं ॥ राजायुधीष्टिरकरतअस्तुती ॥ श्रीबद्रि० ॥६॥ श्रीबद्रीनाथजीकेपंचरतनं, पठतपापविनाशनं ॥ को टितीरथभयपुण्यं, प्राप्यतेफलदायकं ॥ श्रीबद्रि० ॥७॥ श्रीबद्रिअष्टकपढतनिशिदिन, विष्णुलोकसोगछिति ॥ श्रीदयारामसिद्धकहिये ॥ श्रीबद्रिनाथविसंभरं श्री जोगध्या० ॥ ८ ॥ इति बद्रिनाथ अष्टक ॥

॥ अथ गुरु अष्टक प्रारंभ ॥

आनंदकंद अलोल अचवन, ब्रह्मवेदसनातनम् ॥ सकल मुनिजन चरणवंदे ॥ श्रीगुरुजीचरनप्रणाम्यह म ॥ श्रीस्वामीजी चरण प्रणाम्यहम् ॥ १ ॥ आकाश ज्योतिप्रकासपूरण, त्रिवेणितीरथसंगमम् ॥ नीरालंब जस कोटी अंग ॥ श्रीगुरु० ॥ श्रीस्वा० ॥ २ ॥ धर्मधीर

सीर धीरज, ज्ञानगम्यस्वरूपिणम् ॥ बाललीला मदन मोहनं ॥ श्रीगुरु० ॥ श्रीस्वा० ॥३॥ मेरुदंडसचेत काया उनमुनि मुद्रालिये ॥ चाचरीस्नाननित्यम् ॥ श्रीगुरु० श्रीस्वा० ॥ ४ ॥ ब्रह्मअमृतनयनपूरण, सोहंतीलक श्रीराजितम् ॥ श्रवणकुंडल अजामस्तक ॥ श्रीगुरु० ॥५॥ सिद्धबुद्धि सीद्धांतवाणी, आपदामवभंजनम् ॥ कमलपत्र यथायुक्तम् ॥ श्रीगुरु० श्रीस्वा० ॥ ६ ॥ दीव्य रूपप्रभेतुभानु, सकलवीघ्न विनाशनम् ॥ नीराधार आधार स्वामी ॥ श्रीगुरु० श्रीस्वा० ॥७ ॥ श्रीरामानं ददयाल आतुर, ध्यान सुन्य समाधीनम् ॥ अखीललो कतीहुलोकगम्यता ॥ श्रीगुरु० श्रीस्वा० ॥ ८ ॥ श्रीगुरु अष्टक पढत निसदिन, प्राप्यते फलदायकम् ॥ अथ स्वामी चरण बंदे ॥ श्रीगुरुजी चरणप्रणाम्यहम् ॥ श्री स्वामीजीचरणप्रणाम्यहम् ॥ ९॥ इति श्रीगुरु अष्टक ॥

॥ अथ चारधामकी महिमा ॥

चलोहो साधुचलोहो संतो, सेतगंगानहाईये ॥ दरसनकरं जगन्नाथस्वामी ॥ बहुरीनाभवजन्मआईये ॥ रामजीफेरिजन्मना पाइये ॥ १ ॥ चलोहोसाधुचलोहो संतो, धनुपतीरथनहाइये ॥ दरसनकरंरामनाथस्वामी ॥ बहुरिनावभवजन्म आइये ॥रामजी फेरिजन्मनापाइ ये॥२॥ चलोहोसाधु चलोहो संतो, गोमती संगमनहा ये ॥ दरसनकरे रणछोरतीकम, बहुरिनाभवजन्मआ ॥ रामजी फेरिजन्मनापाईये॥३॥चलोहो साधु चलो

हो संतो, तपतकुंडनहाइये ॥ दरसन केरे बद्रिनाथ स्वामी ॥ बहुरिनाभवजन्म आईये ॥ रामजी दरस जन्मनापाईये ॥ ४ ॥ कौनदिशाजगन्नाथस्वामीध्या नदिशा रामनाथहै ॥ कौनदिशारणछोरतध्या कौनदिशा बद्रिनाथहै ॥ ५ ॥ पूर्वदिशा जगन्नाथ स्वामी, दक्षिणदिशारामनाथ है ॥ पश्चिम सक रणछोरटीकम, उत्तराखंडबद्रिनाथ है ॥ ६ ॥ सेवन करत जगन्नाथ, स्वामी कहाकरत रामनाथस्वामी कहाकरत रणछोरटीकम, कहा करत बद्रिनाथसा ॥ ७ ॥ भोगकरत जगन्नाथ स्वामी, जोगकरत रा नाथ है ॥ राजकरत रणछोरटीकम, तप करत बद्रि नाथ है ॥ ८ ॥ कहाचढत जगन्नाथ स्वामी, कहा चढत रामनाथ है ॥ कहा चढत रणछोरटीकम, कहा चढत बद्रिनाथ है ॥ ९ ॥ अटकाचढत जगन्नाथ स्वामी, जलचढत रामनाथ है ॥ माखन मी सरी चढत रणछोरटीकम, दालचढत बद्रिनाथ है ॥ १० ॥ चार धामकी अधिक महिमा, शेष महेश नगाइये ॥ दासमाधो सरण आयो, आवागमनमी टाईये ॥ ११ ॥ इति चारधामकी महिमा ॥

॥ इति श्रीभजनरत्नावलि मोटी समाप्त ॥

रामं श्रीजानकीशं, मनुकुलतिलकं, नागरीमोदयंतं, राजन्यागर्भवातं, यज्ञ निरतं, नम्रशक्रादिदेवम् ॥ द्वारोद्धारं जनेशं सकलगुणगणं, नेत्रजाम शोभ हव्यंवरसन्तं, धरणिपतिपतिं, दीनबंधुं विवंदे ॥ १ ॥

डाकोरकी (रणहर पुस्तकालयका) सूचीपत्र.

नाम	किं० रु०
चारों संप्रदायी ग्रंथा.	
श्रीभगवत्पूजनक्रम भाषा (पूजापद्धति भ.पामें)	०-२
वृहद्वैराक्तरामपद्धती-श्रीवैष्णवादि चारोंसंप्रदायी वैष्णवोंपयोगी	०-८
रामपद्धति-रामपटल-सिद्धान्तपटल-मंत्रमुक्तावली-चारोंगायत्री-ए पांचोपुस्तकका एक गुटका वैष्णवोपयोगी (कर्मकांड ग्रंथ) ...	१-०
रामपद्धति-श्रीरामानंदीय-वैष्णवोपयोगी	०-४
रामपटल-चारोंसंप्रदायी (वैष्णवोपयोगी)	०-४
सिद्धांतपटल-(अवधूतामरगका)	०-४
चौबीसगायत्री-(मंत्र और २४ मुद्राविधिसहित)	०-४
मंत्रमुक्तावली-मन्त्रसंग्रह (सर्वोपयोगी)	०-३
रकारादिश्रीरामसहस्रनाम-बड़ाअक्षर	०-३
मकारादिश्रीरामसहस्रनाम बड़ाअक्षर	०-३
[रका]रादिश्रीराम सहस्र-	

नाम	किं० रु० आ०
नाम तथा मकारादि-श्रीराम सहस्रनाम ए दोनौका एक गुटका	०-६
श्रीरामानंद जन्मोत्सव भा० टी० श्रीरामानन्दी वैष्णवोपयोगी	०-६
रामस्तवराज-अक्षर थंदीप भाषाटीका बारमासकी पाठविधीसहित अयोध्यानिवासी श्रीरत्नरंगमणिकृत	०-३
श्रीरामतापनीयोपनिषद्-भाषाटीका शेषउपनिषद् तथा श्रीरामयोपनिषद् सटीका यन्त्रराजकी पूजाका अनुक्रमणिकासहित	१-०
रामरक्षा श्रीरामानन्द स्वामीकृत (और) रामरक्षा रामकबीरजी कृत भाषा	०-१
श्रीविष्णुसहस्रनाम तथा विष्णोरष्टाविंशतिनाम स्तोत्र और नारायणकवचसहित	०-१॥
श्रीविष्णु सहस्रनामावली	०-१
श्रीरामसहस्रनामावली	०-१॥
शिव सहस्रनामावली	०-१
भजन रामायण गोस्वामी तुलसीदासजीकृत बड़ा अक्षर	०-१॥
दानलीला बड़ा अक्षर	०-॥।

नाम.	की. रु. आ.
एकादशस्कंध भाषा चतुरदासजीकृत	१–०
विचारमालासटीक गोविन्ददासजीकीटीकासहित	७–१२
अभिलाखसागर भाषा वेदांत	१–८
सुंदरविलास (ज्ञानसमुद्र) ज्ञानविलास, सुन्दराष्टकादि सहित, सटिप्पण	१–०
पक्षपातरहितअनुभव प्रकाश भाषा काली कमलीवाले बावाकृत	२–८
दशोपनिषद्र भाषा स्वामि अच्युतानंदकृत	२–०
तत्त्वानुसंधान भाषा स्वामि चिद्घनानन्दजीकृत ...	२–०
मनुस्मृति सान्वय भाषाटीका	२–८
निर्णयसिंधु भाषाटीका सहित	६–०
दयानन्द तिमिरभास्कर भाषा टीका पं. ज्वालाप्रसादजी कृत (दयानन्दमतखण्डन)	३–०

योग ग्रंथ.

[illegible]तंजलयोगदर्शन भाषाटीका	१–०
[illegible]ख्यदर्शन भाषाटीका	१–८
[illegible]शेषिकदर्शन भाषाटीका	०–१२
हठयोगप्रदीपिका भाषाटीका	१–४
[illegible]स्वरोदय भाषाटीका ...	०–८
[illegible]संहिता भाषाटीका	१–०
[illegible]रसपद्धति भाषाटीका	०–१२
[illegible]गतत्वप्रकाश भाषा	०–२
[illegible]संहिता भाषाटीका	०–१०
[illegible] भाषा चरण[illegible] बडाअक्षर(८) ग्रंथ [illegible]	१–१२
[illegible] चरणदास[illegible]	०–२

वैद्यक ग्रंथ।

नाम.	की. रु. आ.
बृहन्निघंटुरत्नाकर सप्तमअष्टम भाग भा०टी० वैद्यकका कोष	८–०
बृहन्निघंटुरत्नाकर संपूर्ण आठों भाग भा० टी० ...	३०–०
कामरत्न योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत भा० टी०.... ...	१–१२
आयुर्वेद चिंतामणि भा० टी०	२–०
अंजननिदान भाषाटीका	०–८
हंसराजनिदान भाषाटीका....	१–०
चर्य्याचंद्रोदय भाषाटीका [व्यंजनबनानेका] ...	१–८
योगतरंगिणी भाषाटीका समेत	२–०
राजवल्लभनिघंटु भाषाटीका	१–८
वैद्यकपरिभाषाप्रदीप भा०टी०	०–१२
वैद्यरत्न भाषा टीका	०–१४
वैद्यवल्लभ भाषा टीका	०–६
वैद्यविनोद भा० टी०	१–१२
लोलिंबराजकृतवैद्यजीवन संस्कृतटीका और भाषाटीका	१–०
वैद्यरहस्य भाषा टीका ...	२–०
रसेंद्रचिंतामणि भाषा टीका	१–८
अर्कप्रकाश भा०टी० [रावणकृत]	१–०

पुष्टिमार्गीय ग्रंथ.

दोसौबावन वैष्णवकी वार्त्ता बडा अक्षरव्रजभाषामें उत्तम ग्लेज कागद	४–०
तथारफकागद उत्तमजिल्द	३–०
चोराशी वैष्णवकी वार्त्ता बडा अक्षर व्रजभाषामें उत्तम ग्लेज कागद	२–०

नाम.	की. रु. आ.	नाम.	
" तथा रफ कागद उत्तम	१॥-०	शिवमहिम्न अन्वय शिवपंचाक्षर स्तोत्र सहित गु० टी० उत्तम ग्लेज कागद ...	
दोसौबावन वैष्णवकी वार्त्ता और चोरासी वैष्णव की वार्त्ता व्रजभाषामें बडा अक्षर उत्तम ग्लेज कागद दोनों पुस्तककी एक जिल्द	६-०	गरुडपुराण मूल श्लोक अने गु० टी० शुद्ध गुजराती टीका छुटां पानां ग्लेज	
तथा उपरमुजब रफ कागद दोनौ पुस्तककीएक जिल्द	४-८	" तथा उपरमुजब रफ	
पंचमुखीहनुमत्कवच और एकमुखीहनुमत्कवच	०-१॥	सत्यनारायण पूजा तथा कथा गु० टी० छुटां पानां	
रुद्राऽष्टाध्यायी शुक्ल यजुर्वेदीय बडा अक्षर स्वर सहित	०-३	मुहूर्त दीपक ज्योतिष सटीक संस्कृत टीका	
बृहत्शब्दरूपावली और समासचक्र ये दोनो एकमें	०-१॥	मुहूर्त दीपक ज्योतिष मूल श्लोक अने गुजराती टीका	
पुरुषसूक्त-श्रीसूक्त-लक्ष्मीसूक्त.	०-॥।	क्रियमाण प्रयोग संग्रह मुंबईनु	
नारदगीता भा० टी० पं० राम नारायण दासजीकृत ...	०-१	विष्णुसहस्रनाम मूलश्लोक अने शुद्ध गुजराती टीका	
गुजराती टीकासहित पुस्तक.		लेवा पुराण पद्यबंध दोहरा चौपाईमे लेव्वा पाटीदार गुजरात देशनाने उपयोगी....	
श्रीविष्णुसहस्रनाम मूल श्लोक अने गुजराती टीका	०-१॥		

इत्यादिक पुस्तकोंके शिवाय हमारे इहां वेद, वेदान्त, कर्मकांड, पुराण, शास्त्र, न्याय, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, मार्ग ग्रन्थ, पुष्टिमार्गीयग्रन्थ, रामानुज संप्रदायीग्रंथ जैसे संस्कृत, हिंदुस्तानी, गुजराती, पुस्तकें हमारे पास हर वक्त तयार रहते हैं और मंगानेवाले महाशय दामसे कमिशन काटके और भेटकी पुस्तक विना मूल्य लिये साथ भेजते हैं चाहिये सो पुस्तकें मंगवाना तुरंग भेज देंगे. पुस्तकें मंगवानेवाले पुस्तकें चाहिये उनके नाम लिखके अपना नाम, ठिकाना, गांव, डाकघर, साफ २ देवनागरी अक्षरोंमें लिखें पत्र तो पुस्तकें भेजनेको देरी न होगी.

सर्व प्रकारके पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

वैष्णव. रामदासजी गुरु श्रीगोकुलदासजी

(रणछोड़ पुस्तकालय) डाकोर.